रजिस्ट्री सं० डी- 222

REGISTERED No. D-222

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 26] नई दिल्ली, शनिवार, जून 29, 1974 (आषाढ़ 8, 1896)

No. 26] NEW DELHI, SATURDAY, JUNE 29, 1974 (ASADHA 8, 1896)

197

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

नोटिस
NOTICE

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 28 फरवरी 1973 तक प्रकाशित किए गए हैं--

The undermentioned Gazettes of India Extraordinary were published up to the 28th February 1973:—

अंक Issue No.	संख्या और तिथि No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject

----शून्य----

----Nil----

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां, प्रकाशन नियन्त्रक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांग-पत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी। मांग-पत्र नियन्त्रक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तिथि से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिएं।

Copies of the Gazettes Extraordinary mentioned above will be supplied on indent to the Controller of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Controller within ten days of the date of issue of these Gazettes.

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं . .	609
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं .	1025
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं .	—
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं .	719
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्ट . .	—
भाग II—खंड 3—उपखंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं)	1559
भाग II—खंड 3—उपखंड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं . .	1633
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश .	243
भाग III—खंड 1—महालेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के अधीन तथा संलग्न कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं .	3723
भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिस	401
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं	—
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विधिक अधिसूचनाएं जिनमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	309
भाग IV—गैर सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिस .	105
पूरक संख्या 26—	
22 जून, 1974 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी संबंधी साप्ताहिक रिपोर्ट .	751
1 जून, 1974 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म तथा बड़ी बीमारियों से हुई मृत्यु-संबंधी आंकड़े	773

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	609
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	1025
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence	—
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Officers issued by the Ministry of Defence	719
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—
PART II—SECTION 3.—SUB. SEC. (i).—General Statutory Rules (including orders, bye-laws etc., of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	1559
PART II—SECTION 3.—SUB. SEC. (ii).—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	163
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence ..	243
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India ..	3723
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta ..	401
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners ..	
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	309
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies	105
SUPPLEMENT NO. 26	
Weekly Epidemiological Reports for week ending 15th June 1974	751
Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week ending 1st June 1974	773

भाग I—खण्ड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 17 जून 1974

सं० 84-प्रेज/74—राष्ट्रपति निम्नलिखित सेनानियों को उनकी असाधारण कर्तव्यपरायणता अथवा साहसपूर्ण कार्यों के लिए "सेना मैडल"/"आर्मी मैडल" प्रदान करते हैं :—

1. लेफ्टिनेन्ट कर्नल एन्थोनी ब्राज़ सीग्रोल डी मेलो (आई० सी०-4912) सिख लाइट इन्फैन्ट्री ।

लेफ्टिनेंट कर्नल एन्थोनी ब्राज़ सीग्रोल डी मेलो 6 दिसम्बर, 1971 को एक बटालियन की कमान कर रहे थे, जिसे जैसूर क्षेत्र में दुर्गाबारकटी नामक बहुत महत्वपूर्ण और काफी रक्षित स्थान पर कब्जा करने का आदेश दिया गया था। इनकी बटिालियन आक्रमण के लिए जैसे ही तैयार हो रही थी कि शत्रु ने तोपों और मशीनगनों से उस पर भारी गोलाबारी शुरु कर दी। इससे विचिलित हुए बिना इन्होंने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए और बडी वीरता दिखाते हुए अपनी बटालियन को लेकर स्वंय आगे बढ़े। इनके उत्साहवर्धक नेतृत्व में बटालियन नें उस स्थान पर कब्जा कर लिया और शत्रु की लगातार गोलाबारी के बावजूद वे उस स्थान पर जमे रहे और शत्रु को भारी नुकसान पहुंचाते हुए उस पर जवाबी हमला करते रहे। किसी हद तक दुर्गाबारकटी के पतन के ही कारण जैसूर में शत्रु की सुरक्षा व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गयी।

इस कार्रवाई में लेफ्टिनेंट कर्नल एन्थोनी ब्राज़ सोग्रोल डी मेलो ने साहस और नेतृत्व का परिचय दिया।

2. लेफ्टिनेन्ट कर्नल हरीश चन्द्र सचदेव (आई सी-6848) मराठा लाइट इन्फैन्ट्री।

लेफ्टिनेन्ट कर्नल हरीश चन्द्र सचदेव, मराठा लाइट इन्फैन्ट्री की उस बटालियन की कमान कर रहे थे, जिसने पश्चिमी क्षेत्र में बुर्ज चौकी पर पुनः कब्जा कर लिया था और उस पर अपना नियंत्रण रखे हुए थे। 9 दिसम्बर, 1971 को शत्रु ने उस क्षेत्र में एक के बाद दूसरा आक्रमण जारी रखा और तोपखाने की भारी गोलाबारी की सहायता से आगे बढ़ कर उसने वीरा और बुर्ज पर अपना अधिकार जमा लिया और फिर भिडी पुलाख में स्थित हमारी फौज को खतरा पैदा हो गया। ऐसे समय में लेफ्टिनेन्ट कर्नल सचदेव ने स्थिति का नियत्रण अपने हाथ में ले लिया और सर्वदा उपस्थित रहते हुए तथा अपने उत्साहवर्धक नेतृत्व से इन्होंने शीघ्र ही स्थिति को अपने अनुकूल बना लिया। इन्होंने शत्रु द्वारा बार-बार किये जाने वाले आक्रमणों को विफल किया और उसे भारी नुकसान पहुंचाया। शत्रु की बटालियन पूर्णतः छिन्न-भिन्न हो गई उसके सैनिक आंतकित होकर अपने पीछे अपने कमांडिग अफसर की जीप छोड़ कर भाग खड़े हुए।

इस कार्रवाई में लेफ्टिनेन्ट कर्नल हरीश चन्द्र सचदेव ने साहस, नेतृत्व और पहल-शक्ति का परिचय दिया।

3. मेजर विजय सिंह अबासाहेब मिसल (एस० एस०-19456)

मराठा लाइट इन्फैन्ट्री।

17 दिसम्बर, 1971 को मेजर विजय सिंह अबासाहेब मिसल अपनी बटालियन की उस कम्पनी की कमान कर रहे थे जिसे लीपा घाटी में 10,000 फुट से अधिक ऊंचाई पर स्थित एक ठिकाने पर कब्जा करने का काम सोंपा गया था ताकि उस क्षेत्र में शत्रु की संचार व्यवस्था को भंग किया जा सके। बहुत ऊंचाई पर खतरनाक और दुर्गम रास्तों को पार करते हुए मेजर मिसल ने कम्पनी के लिए एक सुरक्षित स्थान पर कब्जा कर लिया। शत्रु ने कम्पनी पर तोप और मोर्टार से भारी और सही गोला-बारी शुरू कर दी। इससे विचलित हुए बिना इन्होंने सफलतापूर्वक शत्रु के आक्रमणों को विफल कर दिया और काफी कठिनाइयों के बावजूद इन्होंने उस स्थान को 12 घन्टे से अधिक समय तक उपने कब्ज में रखा। परिणामस्वरूप यह स्थान युद्ध विराम हमारे कब्जे में रहा और सामूहिक दृष्टि से हमारे लिये काफी उपयोगी सिद्ध हुआ।

इस कार्रवाई में मेजर विजय सिंह अबासाहेब मिसल ने साहस, दृढ़ निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

4. एविएटर मेजर कल्प नाथ राय (आई सी-20515) जाट रेजिमेंट।

7 दिसम्बर 1971 को मेजर कल्प नाथ राय एक बटालियन की उस कम्पनी की कमान कर रहे थे, जिसे कोमिला पर कब्जा करने का आदेश दिया गया। वह बटालियन 8 दिसम्बर को 0230 बजे कोमिला के दक्षिण में पहुंच गई और वह शत्रु के एक ऐसे मोर्चे के सामने आ गई जो पक्के मकानों और चारों ओर से सुरक्षित बंकरों से युक्त था। मेजर कल्पनाथ ने शत्रु के इस मोर्चे पर आक्रमण का नेतृत्व किया। जैसे ही इनकी कम्पनी ने आक्रमण

शुरु किया, शत्रु ने इन पर स्वचालित और अर्ध-स्वाचालित हथियारों से भारी गोलाबारी कर दी जिससे एक मिनट में ही तीन व्यक्ति वीरगति को प्राप्त हुए और पांच अन्य घायल हुए। इससे जरा भी विचलित हुए बिना उन्होंने अपने सैनिकों को उत्साहित करते हुए पुनः शत्रु पर भारी हमला बोल दिया। बायीं ओर से इन पर मझोली मशीनगन से भारी गोलाबारी की गई लेकिन इनके उत्साहजनक नेतृत्व में इनके सैनिक शत्रु की तोपें शांत करने में सफल हो गए, भले ही इसके लिए कई जाने देनी पड़ीं। लेकिन उसी समय कम्पनी पर बायीं ओर से मझोली मशीनगन से भारी गोलाबारी शुरू हो गई। जब इहोंन्ने देखा कि शत्रु के उस बंकर पर सामने से नहीं पहुंचा जा सकता तो ये अकेले ही एकदम दायीं ओर से रेंगते हुए उस बंकर की ओर बढ़े और बंकर के अन्दर से ग्रिनेड फेंक कर बाद में स्टेनगन से गोलियां चलाईं और शत्रु की मशीनगन को बंकर से बाहर खींच निकाला। इस साहसपूर्ण कार्रवाई में इनकी कम्पनी ने शत्रु के 23 सैनिक मार डाले और भारी मात्रा में राइफलें और गनें अपने कब्जे में कीं।

इस पूरी कार्यवाई में मेजर कल्प नाथ राय ने साहस, दृढ़ संकल्प और नेतृत्व का परिचय दिया।

5. मेजर शिवीन्द्र पाल सिंह (आई सी-16144) (मरणोपरान्त)
5 गोरखा राइफल्स

1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध सक्रियाओं के दौरान मेजर शिविन्द्र पाल सिंह अपनी बटालियन की उस कम्पनी की कमान कर रहे थे जो कपोड़ा और राधानगर में शत्रु की स्वचालित गनों और तोपखाने की भारी गोलाबारी की चपेट में आ गई थी। लेकिन मेजर शिवीन्द्र पाल सिंह इससे विचलित न हुए और अपने सैनिकों को साथ ले अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते चले गए और शत्रु के बिलकुल पास पहुंच कर बंकरो में उनसे जूझ गए। जब उनका एक प्लाटून कमान्डर गम्भीर रूप से घायल हो गया तो उन्होंने उसकी मरहम-पट्टी करके उसे वहां से पीछ भेज कर पुनः फिर शत्रु पर आ टूटे। यद्यपि वे स्वंय भी गम्भीर रूप से घायल हो गए थे लेकिन फिर भी अपने घावों की चिन्ता न करते हुए वे अपने सैनिकों को उत्साहित करते रहे और उन्हें प्रेरणा देते रहे। उन्होंने शत्रु के पांच बंकरों का सफाया कर के और उसके लगभग 30 सैनिकों को धराशायी कर शानदार ढंग से अपना कार्य पूरा किया। शत्रु से जूझते हुए वे तब तक आगे बढ़ते रह जब तक कि घावों के कारण वीरगति को प्राप्त नहीं हो गए।

इस कार्रवाई में मेजर शिवीन्द्र पाल सिंह ने वीरता, नेतृत्व और दृढ़निश्चय का परिचय दिया।

6. मेजर प्रकाश सिंह राजपूत (आई सी -17822)
जाट रेजिमेंट।

मेजर प्रकाश सिंह राजपूत, चिटगांव की ओर बढ़ने वाली बटालियन की एक कम्पनी की कमान कर रह थे। 13 दिसम्बर 1971 को जब वह बटालियन कुमारीघाट की ओर बढ़ रही थी तो इन्हें यह आदेश मिला कि ये शत्रु का सामना करने के लिए रेल की पटरी के साथ साथ आगे बढ़े। जैसे ही इनकी कम्पनी एक सैनिटोरियम के पास पहुंची इनपर शत्रु ने 150 मीटर दूर एक बंकर से जो गोली से अवैध था, मझोली मशीनगन द्वारा गोलाबारी कर दी गई। इन्होंने अपनी बायी ओर से आगे बढ़ती हुई प्लाटून को यह आदेश दिया कि वे इन्हें आगे बढ़ते समय पीछ से रक्षा-आवरण दे, और उसके बाद इन्होंने अपने साथ दो प्लाटून लीं और शत्रु के बंकरों पर जा टूटे और फिर एक-एक कर उन्हें नष्ट करना शुरू कर दिया। उन्होंने स्वंय दो बंकर नष्ट किये और मुठ-भेड़ में शत्रु के एक सैनिक को मार गिराया। अपने मजबूत बंकरों को एक-एक करके नष्ट होते देख शत्रु भाग खड़ा हुआ। इस हमले में शत्रु के 13 सैनिक मारे गए और भारी मात्रा में हथियार और गोला बारूद हाथ लगा और इससे कुमारीघाट में शत्रु की स्थिति काफी कमजोर पड़ गई।

इस कार्रवाई में मेजर प्रकाश सिंह राजपूत ने साहस, दृढ़ निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

7. मेजर नरेन्द्र मोहन शर्मा (आई सी० 15082)
इंजीनियर्स।

1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान मेजर नरेन्द्र मोहन शर्मा, जयन्तीपुर सिलहट अक्ष की ओर बढ़ती हुई सेना की एक फील्ड कम्पनी की कमान कर रहे थे। शत्रु ने यह सोचा कि हमारी फौज उस अक्ष के साथ-साथ आगे बढ़ेगी इसलिए उसने 100 फुट से 400 फुट तक के चौड़े 8 बड़े पुलों को गिरा दिया, इससे हमारी फौज का आगे बढ़ना रुक गया, क्योंकि गिराए गए पुलों से फील्ड गनें नहीं गुजारी जा सकती थीं। आगे बढ़ते हुए सैनिकों के लिए सड़कें और नौकाएं तैयार करने के काम में मेजर शर्मा ने असाधारण उत्साह, कर्मठता और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया। दूसरी ओर जाने के लिए पहुंच मार्ग और 150 फुट पार करने के लिए एक नौका चार घन्टे के अन्दर तैयार हो गई और उसके बाद शेष सात जगहों पर 42 घन्टे में इसी प्रकार की व्यवस्था बना ली गई। ये बिना आराम किये लगातार काम करते रहे और अपेक्षित उपस्करों के उपलब्ध न होने के कारण इन्हें हर बार काम चलाऊ व्यवस्था करनी पड़ी। गिरे हुए पुलों की सही स्थिति जानने के लिए शत्रु की गोलाबारी के होते रहने के बावजूद भी ये बार-बार आगे गये। पुलों के गिराये जाने के बाद भी फौज की आगे बढ़ते रहने की द्रुत गति को बनाए रखने का श्रेय मुख्यतः मेजर शर्मा की नेतृत्व शक्ति, दूरदर्शिता और योजना कुशलता को ही है। इस तरह हमारी गनें और गाड़ियां आगे बढ़ती हुई इन्फैन्ट्री को पीछे से बराबर रक्षा आवरण दे सकी। 14 दिसम्बर, 1971 को खादिम नगर में जब शत्रु के सुदृढ़ मोर्चों से हमारी फौज का आगे बढ़ना रुक गया, तो मेजर नरेन्द्र मोहन शर्मा ने अपनी फील्ड कम्पनी की एक प्लाटून को लेकर एक ओर से शत्रु के ठिकाने पर कब्जा करने के लिए अपनी सेवाएं अर्पित की। इन्होंने स्वयं अपनी प्लाटून

का नेतृत्व किया और इन्फैन्ट्र कम्पनी के साथ शत्रु पर हमला कर दिया। इस प्रकार खादिम नगर पर कब्जा करने में इन्होंने काफी बड़ा योगदान दिया।

आद्योपान्त मेजर नरेन्द्र मोहन शर्मा ने साहस, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

8. मेजर सुरिन्द्र प्रकाश मरवाह (आई०सी०-15918)
ब्रिगेड आफ गार्डस

8 दिसम्बर, 1971 को मेजर सुरिन्द्र प्रकाश मरवाह को, जो एक बटालियन की एक कम्पनी की कमान कर रहे थे, जिसे गौरनगर क्षेत्र में एक हैलीपैड बनाने और रसूलपुर और गौसाईपुर में पगला नदी पर उपयुक्त नौका स्थलों की टोह लगाने का काम सौंपा गया था। अपनी कम्पनी का नेतृत्व करते हुए इन्होंने 18 घन्टों में 50 किलोमीटर रास्ता तय किया और अपना कार्य पूरा किया। लेकिन तब तक योजनाएं बदल चुकी थी, क्योंकि शत्रु पीछे हट चका था और इन्हें आशुगंज की ओर कूच करने के आदेश मिले। मेजर सुरिन्द्र प्रकाश मरवाह जब अपनी कम्पनी को पुन: ग्रुपों में बांट रहे थे तो शत्रु ने इनकी कम्पनी को चारो ओर से घेर लिया। इन्होंने निर्भीकता से शत्रु पर धावा बोला और उनमें से तीन को मृत्यु के घाट उतार कर घेरे को तोड़ डाला और एक मझौली मशीनगन, एक मशीनगन और कई राइफलें कब्जे में कर ली। एक और मौके पर इन्होंने शत्रु के ठिकाने पर आक्रमण किया। शत्रु के हल्के हथियारों और मोर्टार फायर की चिन्ता न करते हुए इन्होंने बड़ी निर्भीकता से उस आक्रमण का संचालन किया और उस ठिकाने को अपने कब्जे में ले लिया।

मेजर सुरिन्द्र प्रकाश मरवाह ने प्रशंसनीय, साहस, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

9. मेजर बहादुर सिंह भट्टी (आई सी-22548)
जाट रेजिमेंट

13 दिसम्बर 1971 की रात्री को मेजर बहादुर सिंह भट्टी जिस कम्पनी का नेतृत्व कर रहे थे तो उसे यह आदेश मिला कि वह उस बटालियन की रक्षा व्यवस्था में खाली जगहों की रक्षार्थ जो लालभाई हिल क्षेत्र में हमला करने से पूर्व अपने सैनिकों का पुन: नियोजित कर रही थी। उस खाली जगह में जब ये लोग पहंच ही रहे थे कि शत्रु ने दुसरी ओर से इन पर छोटे हथियारों से भारी गोलाबारी की। 18 व्यक्तियों के हताहत होने के पश्चात भी मेजर भट्टी बड़ी निर्भीकता से खुली जगह में अपने सैनिकों का नेतृत्व करते रहे और अपनी वीरता और व्यक्तिगत उदाहरण पेश कर इन्होंने केवल भारी रुकावटों के बावजूद उस स्थान पर अपना कब्जा किया अपितु शत्रु के काफी सैनिको को हताहत करने और उसके चार बंकरों को नष्ट करने में सफलता प्राप्त की।

इस कार्रवाई में मेजर बहादुर सिंह भट्टी ने साहस, दृढ़-निश्चय और प्रेरणापद नेतृत्व का परिचय दिया।

10. मेजर बिक्रम सिंह (आई० सी-14632)
मराठा लाइट इन्फैन्ट्री।

1 दिसम्बर 1971 को जब मेजर बिक्रम सिंह, मराठा लाइट इन्फैट्री की एक बटालियन की एक कम्पनी की कमान कर रहे थे, उस समय उसे अरपाड़ा के निकट सुरक्षात्मक मोर्चाबन्द शत्रु की एक प्लाटून से उसका सामना हो गया। शत्रु की प्लाटून के चारों ओर सुरक्षात्मक सुरंगे बिछी हुई थी। जब शत्रु ने गोला-बारी शुरू की और हमारे काफी सैनिक हताहत होने लगे तो ये बड़ी कुशलता से आगे बढ़ते रहे और शत्रु को अपने मोर्चे से हटाते हुए अरपाड़ा में शत्रु की फौज के पास आ पहुंचे। ये जब इस स्थिति में मोर्चाबन्दी कर रहे थे तो इनकी प्लाटून पर तोपों और मशीनगनों से भारी गोलाबारी होने लगी और हमारे लगभग 10 सैनिक हताहत हो गए। इस नाजुक स्थिति को देखते हुए, ये अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए एक खाई से दूसरी खाई में जा-जा कर अपने सैनिकों में साहस और आत्म विश्वास की भावना बढ़ाते रहे। शत्रु की भीषण गोलाबारी के होते हुए भी ये चलते रहे और अपनी कम्पनी को संगठित और उत्साहित करते रहे और अपने व्यक्तिगत उदाहरण पेश कर बहुत जटिल परिस्थितियों में एक सुरक्षित स्थिति लेने में सफल हो गए।

इस कार्रवाई में मेजर बिक्रम सिंह ने अनुकरणीय साहस, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

11. मेजर अखोड़ी अनिल शेखर सिन्हा (आई सी-16553)
कुमाऊं रेजिमेंट।

मेजर अखोड़ी अनिल शेखर सिन्हा कुमाऊं रेजिमेंट की एक बटालियन की उस कम्पनी की कमान कर रहे थे, जो बंगलादेश में दाऊद कंडी पर कब्जा करने वाली टास्क फोर्स का एक अंग थी। 7 दिसम्बर 1971 को 1700 बजे के लगभग जब यह टुकड़ी एक पुल के पास पहुंची तो सड़क के साथ-साथ बने बंकरों में से शत्रु ने इस पर स्वचालित हथियारों से भारी गोलाबारी की। सड़क के दोनों ओर बने नालों और इमारती इलाके के कारण टैंक आगे न बढ़ सके और रोशनी के मद्धम पड़ने से बंकरों पर भी सही निशाना लगाना कठिन हो गया था। स्थिति की पूरी टोह न लगने के कारण उस मद्धम रोशनी में मेजर सिन्हा टैंक से नीचे उतरे और शत्रु के बंकरों पर तुरंत आक्रमण करने के लिए अपनी कम्पनी को आग ले गए। इन्होंने कृत-संकल्प और निर्भीक होकर अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए अपनी कम्पनी की कमान संभाले रखी और बड़ी संख्या में अपने सैनिकों के हताहत होने के बावजूद भी इन्होंने शत्रु को वहाँ से पीछे खदेड़ दिया। 8 दिसम्बर 1971 को पुन: जब एक जीर्ण पुल और नालों की वजह से टैंकों का आगे बढ़ना रूक गया तो इन्होंने हर ऐसी इमारत से शत्रु को मार भगाया, जहा से कि वह गोली बरसा रहा था। वहा की जनता जब इनकी कम्पनी का स्वागत करने के लिए इकट्ठी हुई तो शत्रु ने उन पर जबर्दस्त हमला बोल दिया, परन्तु

मेजर सिन्हा ने हिम्मत और धैर्य से काम लिया और घर-घर जाकर शत्रु का पीछा किया और टैंकों से उन्हें रोंद डाला शत्रु पक्ष को काफी नुकसान उठाना पड़ा। 12 दिसम्बर 1971 को जब इन्हें पीछे हटती हुई शत्रु सेना की एक टुकड़ी को घेरने और उन्हें आत्म-समर्पण के लिए मजबूर करने के लिए आदेश मिला तो मेजर सिन्हा शत्रु की तीन बटालियन और कुछ अर्ध-सैनिकों को देख कर दंग रह गए। लेकिन ये इससे जरा भी नहीं घबराए और निश्चत मन से अपने कुछ ही सैनकों की सहायता से शत्रु की पूरी टुकड़ी निरस्त्र करने में सफल हुए।

आथोपान्त मेजर अखौड़ी अनिल शेखर सिन्हा ने साहस, पहलशक्ति और नेतृत्व का परिचय दिया।

12. मेजर यूस्टास विलियम फर्नांडिस (आई० सी०-12335) आर्टिलरी।

मेजर यूस्टास विलियम फर्नांडिस बंगलादेश में दो अलग छोरों पर संक्रियारत इन्फैन्ट्री यूनिटों को पीछे से सहायता देने के लिए एक माऊंटन बेटर की कमान कर रहे थे। 7 दिसम्बर, 1971 को उनकी एक टुकड़ी को जयन्तीपुर-सिलहट क्षेत्र में इन्फैन्ट्री की सहायता के लिए आग बढ़ने का आदेश मिला। इसके लिए इन्हें गनों गोला-बारुद और गाड़ियों को एक बड़ी नदी के दूसरी ओर पचाहुंना था जिस पर न कोई पुल था और न नदी पार करने के लिए कोई साधन ही। इन्होंने बड़ी कुशाग्र बुद्धि का परिचय देकर एक काम चलाऊ नौका बनाई और रात ही रात में सभी गनों और गाड़ियों को निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचा दिया और शत्रु की दूर मार करने वाली गनों से बरसते गोलों के बावजूद भी इन्होंने अपनी गनों को "गन क्षेत्र" में उपयुक्त स्थानों में लगा दिया। 12 दिसम्बर 1971 को शत्रु के स्वचालित हथियारों और मोर्टार गनों की भारी गोलाबारी होते रहने पर भी इन्होंने बालीपाड़ा में शत्रु के एक मजबूत ठिकाने पर गोलाबारी की और पिस्तोल निकाल एर शत्रु के बंकरों पर सीधा निशाना लगाया। इससे शत्रु का मनोबल टूट गया और वह उस मोर्चे को छोड़ कर जल्दी पीछे हो गया। पुनः खादिमपुर पर आक्रमण के दौरान इन्होने आगे बढ़ती हुई सेना को पीछे से लगातार और प्रभावी तोपखाना सहायता देते रहे और सिहलट में शत्रु के महत्वपूर्ण ठिकानों पर भी गोले बरसाते रहे। इस कार्रवाई में उस क्षेत्र में शत्रु के आत्म समर्पण में अधिक योग मिला।

इन सभी संक्रियाओं के दौरान मेजर यूस्टास विलियम फर्नांडिस ने साहस, नेतृत्व और कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

13. मेजर हरीश चन्द्र शर्मा (आई० सी०-14766) पंजाब रेजिमेंट।

18 दिसम्बर, 1971 को पांच मझौली मशीनगनों के साथ पाकिस्तानी सैनिकों की एक प्लाटून ने हमारी सीमा में घुसपैठ कर ममदोत बुलगे में युद्ध विराम का गम्भीर उल्लंघन किया। 10 जवानों के साथ गश्ती ड्यूटी पर निकले मेजर हरीश चन्द्र शर्मा की नजर शत्रु की उस प्लाटून पर पड़ी जो कि तब तक अपने लिए सुरक्षित स्थिति बना चुकी थी। ये शीघ्र ही शत्रु के ठिकाने के पीछे चले गए और उसे यह विश्वास दिलाने के लिए कि वह चारों ओर से काफी बड़ी फौज से घिर चुका है, इन्होंने काल्पनिक सब-यूनिटों को आदेश दिया और तोपखाने को फायर करने के लिए आवाज लगाई शत्रु ने मझौली मशीनगन से गोलियां बरसानी शुरु कर दी यद्यपि मेजर शर्मा के सैनिकों की संख्या शत्रु की सैनिकों की संख्या से बहुत कम थी फिर भी इन्होंने शत्रु पर संगीनों से आक्रमण कर दिया। उनकी इस वीरोचित कार्रवाई से ग्रस्त शत्रु के कुछ सैनिकों के अपने हथियार गिरा दिये और बाकी बच निकलने का प्रयास करने लगे लेकिन मेजर शर्मा और उनके सैनकों ने उन का पीछा किया और उन पर हावी हो गए। इन्होंने 26 शत्रु के सैनिक, उनकी सभी पांचों मझौली मशीनगनो और अन्य हथियार तथा गोलाबारुद पकड़ा।

इस मुठभेड़ के तुरन्त बाद इन्हें शत्रु के एक अधिक शक्तिशाली दल का सोमना करना पड़ा और इस बार भी इन्होंने आक्रमक एवं निर्भिक कदम उठाकर शत्रु के उद्देश्य को नाकाम कर दिया।

इस कार्रवाई में मेजर हरीश चन्द्र शर्मा ने साहस, पहल-शक्ति और नेतृत्व का परिचय दिया।

14. कैप्टेन मुक्तीरा अय्यैपा करियप्पा (आई०सी० 14600) पैरा रेजिमेंट।

कैप्टन मुक्तीरा अय्यपा करियप्पा मुनब्बर तवी के पार सुख ताउ नाले की सुरक्षा करने वाले कमांड ग्रुप को एक प्लाटून की कमान कर रहे थे। 5 दिसम्बर 1971 को शत्रु ने इन ठिकाने पर दो बार हमला किया और इनकी प्लाटून की आगे की कुछ खाईयों को कब्जे में कर लिया। लेकिन कैप्टन करियप्पा इससे जरा भी विचलित नहीं हुए और इन्होंने थोड़े से सैनिको को साथ लेकर शत्रु पर जबाबी हमला कर दिया और खोये हुए ठिकानों को वापस ले लिया। यद्यपि वे स्वंय घायल हो चुके थे, फिर भी ये तब तक अपने सैनिको को अपने-अपने ठिकानों पर डटे रहने के लिए उत्साहित करते रहे, जब तक कि शत्रु का आक्रमण विफल नहीं कर दिया गया।

इस कार्रवाई में कैप्टन मुक्तीरा अय्यैपा करियप्पा ने साहस, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

15. कैप्टन बालकर सिंह (एस० एम०-21201) इंजिनियर्स।

13 दिसम्बर 1971 को जब जम्मू और कश्मीर क्षेत्र में शत्रु की सुरंगों के कारण, हमारी एक इन्फैन्ट्री ब्रिगेड का आगे बढ़ना रुक गया तो कैप्टन बालकर सिंह को सुरंग क्षेत्र की टोह लेने के लिए नियुक्त किया गया। इन्होंने शत्रु की भारी गोलाबारी के होते रहने के बावजूद 200 गज तक के क्षेत्र की जांच टोह ली। चूंकि यह क्षेत्र शत्रु की

नजर में था और जहां भारी गोलाबारी हो रही थी, इसलिए दिन की रोशनी में वहां सुरंगों का पता लगाना लगभग असंभव था। लेकिन चूंकि उस सुरंगक्षेत्र से पार होने के लिए तुरंत ही एक रास्ता बनाना आवश्यक था इसलिए ये दिन में ही सुरंग साफ करने के लिए आगे बढ़े और अपने दल को सुरंग-क्षेत्र में ले गए। शत्रु द्वारा उस क्षेत्र में गोलियां बरसाने के बावजूद भी इन्होंने दिन की रोशनी में ही सुरंगों को तोड़ने में लगे रहे और स्वयं भी इन्होंने कई कार्मिक-रोधी और टैंक-भेदी सुरंगों को बाहर निकाल कर निष्क्रिय किया। यद्यपि बहुत बड़ा खतरा होने के कारण इन्हें केवल 2 फुट चौड़ा रास्ता साफ करने के लिए कहा गया था ताकि जवान उससे निष्कंटक होकर बढ़ सकें, लेकिन इन्होंने गाड़ियों के गुजरने के लिए रास्ता साफ करने का प्रयास किया और 400 गज और 24 फुट चौड़ा रास्ते से सुरंग हटाने में सफलता प्राप्त की। ये 24 घण्टे तक सुरंग सफा करने के काम पर लगे रहे और जब ये घायल हो गए तो इन्हें अस्पताल पहुंचाया गया।

कैप्टन बालकर सिंह सराहनीय साहस, दृढ़निश्चिय और नेतृत्व का परिचय दिया।

16. कैप्टन राजिन्द्र सिंह जमवाल (आई० सी०–19390) इंजीनियर्स।

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान गंगा नगर क्षेत्र में चल रही लड़ाई के दौरान कैप्टन राजिन्द्र सिंह जमवाल 4 पैरा में थे। कैप्टन जमवाल को इन्फैन्ट्री और गाड़ियों के लिए शत्रु के सुरंग-क्षेत्रों में से सुरक्षित मार्ग निकालना था। शत्रु के तोपखाने और मशीनी गन से इन पर की जा रही भारी गोला-बारी के बावजूद, इन्होंने इस कार्य को सफलतापूर्वक पूरा किया। इससे प्रहार करने वाली यूनिटों को समय पर सामान और गोला-बारूद मिल सका। अपने निर्धारित कार्य से बाहर और निजी रूप से खतरा मोल लेकर, इन्होंने शत्रु की अनेक रुकावटों के बावजूद सुरंग-क्षेत्रों में घायल पड़े हुए अपनी बटालियन के सैनिकों को बाहर निकालने का भी काम किया।

इस कार्रवाई में कैप्टन राजिन्द्र सिंह जमवाल ने साहस, दृढ़ निश्चय और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

17. कैप्टन दिब्येन्दू कुमार सेनगुप्ता (एम० आर०–2909) आर्म मेडिकल कोर।

कैप्टन दिब्येन्दू कुमार सेनगुप्ता पूर्व क्षेत्र में रक्षात्मक संक्रियाओं के दौरान उस क्षेत्र में तैनात बटालियन में थे। इन सारी संक्रियाओं में शत्रु की मशीनगन और तोपों की भीषण गोलाबारी के होते रहने के बावजूद इन्होंने हताहतों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने और उनका उपचार करने में उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया। इनका काम काफी कठिन था क्योंकि हताहतों की संख्या काफी अधिक थी और वे काफी विस्तृत क्षेत्र में बिखरे पड़े थे और साथ ही उन्हें वहां से निकालने के लिए पर्याप्त साधन भी तत्काल उपलब्ध नहीं थे।

आद्योपान्त कैप्टन दिब्येन्दू कुमार सेनगुप्ता ने साहस और कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

18. कैप्टन हरगोपाल मुखोपाध्याय (एम० आर०–2632) आर्मी मेडिकल कोर।

दिसम्बर 1971 में संक्रियाओं के दौरान कैप्टन हर गोपाल मुखोपाध्याय बंगला देश में अपनी बटालियन में थे। 2/3 दिसम्बर 1971 की रात्रि को एक आक्रमण के दौरान, शत्रु द्वारा की जा रही तोप और छोटे हथियारों की गोलाबारी के बावजूद ये प्रहार करने वाली अपनी फौजी टुकड़ियों के बिल्कुल पीछे घायलों की देखभाल कर रहे थे। पुनः 15 दिसम्बर 1971 को जब इनकी बटालियन ने पीछे हटते हुए शत्रु के लिए घात लगाई हुई थी तो लड़ाई के दौरान ये हताहतों की देखभाल में लगे रहे।

आद्योपान्त कैप्टन हर गोपाल मुखोपाध्याय ने साहस और कर्तव्य परायणता का परिचय दिया।

19. कैप्टन सुव्रत राय (एस० एस०–22471) आर्टिलरी।

दिसम्बर 1971 में संक्रियाओं के दौरान कैप्टन सुव्रत राय बंगलादेश में दाऊद कंडि क्षेत्र में एक आर्टिलरी रेजीमेंट में थे। 12 दिसम्बर 1971 को उनके सैनिकों को गोलाबारूद सहित हेलीकाप्टर से विद्या बाजार के निकट उतारा गया। तीनो गनों और गोलाबारूद को 42 किलोमीटर के फैले हुए इलाके में जगह-जगह उतारा गया जहां कि शत्रु अभी भी अपना अधिकार जमाए हुए था। इन्होंने कृत संकल्प होकर अपनी पहल-शक्ति और कर्तव्य-निष्ठा की भावना से इन गनों को इकट्ठा किया और उन्हें उपयुक्त स्थान पर लगाया। छः घन्टे से भी कम समय के भीतर इन्होंने अपने सैनिकों को और गोला-बारूद को एक स्थान पर एकत्रित किया और बाद में की जाने वाली संक्रियात्मक कार्रवाई के लिए उन्हें जगह-जगह तैनात किया।

इस कार्रवाई में कैप्टन सुव्रत राय ने साहस, पहल-शक्ति और नेतृत्व का परिचय दिया।

20. कैप्टन पालघट सुब्रहमण्यम सुरेन्द्रनाथ (एम० आर०–2691) आर्मी मेडिकल कोर।

दिसम्बर 1971 की संक्रियाओं के दौरान कैप्टन पालघट सुब्रहमण्यम सुरेन्द्रनाथ बंगलादेश में खुलना क्षेत्र में तैनात थे। इन्हें 13 और 15 दिसम्बर 1971 को 26 मद्रास बटालियन की दो आक्रमणों के दौरान डाक्टरी सहायता देने के लिए उस बटालियन के साथ लगा दिया गया था। दोनों अवसरों पर इन्होंने शत्रु द्वारा की जा रही गोलाबारी के बावजूद काफी अग्रिम क्षेत्र में डाक्टरी सहायता केन्द्र स्थापित किया जिससे कि हताहतों को तत्काल डाक्टरी सहायता उपलब्ध की जा सके। भारी और छोटे हथियारों से की जाने वाली लगातार गोलाबारी के बावजूद इन्होंने दोनों आक्रमणों के दौरान अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए लगभग 100 हताहतों का उपचार किया।

इन कार्रवाइयों में कैप्टन पालघट सुब्रहमण्यम सुरेन्द्रनाथ ने साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

21. कैप्टन हरदेव सिंह क्लेयर (एस० एस०-2032 4) 3 गोरखा राइफल्स।

कैप्टन हरदेव सिंह क्लेयर, पूर्वी क्षेत्र में एक इन्फैन्ट्री बटालियन में एक मोर्टार प्लाटून कमांडर के रूप में तैनात थे। सक्रियाओं के पहले दौर में इन्हें 4.2 मोर्टार दी गई, जब कि इनके सैनिक उन्हें चलाने में पूरी तरह प्रशिक्षित नहीं थे। इन्होंने अपने सैनिकों को उन्हें चलाना सिखाया और बाद की संक्रियाओं में इन्होंने उनसे बड़ी कुशलता से काम लिया। ये अक्सर अपनी मोर्टार प्लाटून को शत्रु की गोलाबारी की चिन्ता न करते हुए पेड़ों के ऊपर से होते हुए शत्रु की काफी अग्रिम खाइयों पर गोलाबारी करने को कहते। 15 दिसम्बर 1971 को अवतरण पोत टैंकों में उखिया बीच पर उतरने के बाद इन्हें काक्स बाजार तक जाने वाले एक गश्ती दल का नेतृत्व करना था। घटिया किस्म की रस्सियों का उत्तम ढंग से प्रयोग करते हुए इन्होंने तेज धारा में से अपने सैनिकों को किनारे पहुंचाया और जगह जगह नदी, नालों को पार करते हुए पहाड़ों और जंगलों के बीच से गुजरते हुए शत्रु के 28 मील इलाके को पार कर ये निर्धारित समय से पूर्व ही काक्स बाजार पहुंच गए।

इस कार्रवाई में कैप्टन हरदेव सिंह क्लेयर ने साहस, पहल-शक्ति और दृढ़ता का परिचय दिया।

22. कैप्टन शिव राम पाठक (आई० सी०-21591) आर्टिलरी।

कैप्टन शिवराम पाठक, पूर्व क्षेत्र में रक्षात्मक संक्रियाओं के दौरान वहाँ तैनात थे। इन्हें कुमाऊं रेजीमेंट की एक बटालियन के साथ अग्रिम प्रेक्षण अधिकारी के रूप में सम्बन्धित किया गया था। 14 दिसम्बर 1971 को जब ये अपनी कम्पनी के साथ जा रहे थे तो इन पर शत्रु ने तोप, मशीनगन और छोटे हथियारों से गोलाबारी कर दी। जिससे इनका आगे बढ़ना रुक गया। अपनी जान को जोखिम में डालते हुए ये शत्रु द्वारा की जाने वाली भारी गोलाबारी में बिना किसी उपर्युक्त रक्षा साधन के एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाते रहे जिससे कि वे अपनी गन से शत्रु के हथियारों पर सीधा निशाना ले सके। इन्होंने बड़ी कुशलता से यह सब कर दिया। और शत्रु की कई मशीनगनों को निष्क्रिय कर डाला।

इन कार्रवाइयों में कैप्टन शिवराम पाठक ने साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

23. कैप्टन जगदीश चन्द्र शर्मा (एस० एस०-19458) आर्टिलरी।

कैप्टन जगदीश चन्द्र शर्मा पूर्वी क्षेत्र में रक्षात्मक संक्रियाओं के दौरान एक माउंटेन रेजीमेंट में तैनात थे। इन्हें एसी मोर्टार फायर कम्पनी में अग्रिम प्रेक्षण अधिकारी के रूप में लगाया गया था जिसे करबा नगर पर आक्रमण करना था। आक्रमण करने वाला दल अभी कुछ ही आगे बढ़ा था कि शत्रु ने इस पर छोटे हथियारों और तोपों से गोलाबारी शुरू कर दी। कैप्टन शर्मा ने भारी गोलीबारी के बीच घिरे होने पर भी अपनी गनों को इस प्रकार कारगर ढंग से चलवाया कि शत्रु शांत हो गया और इनकी कम्पनी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो गई। पुनः एक आक्रमण के दौरान एक इन्फैन्ट्री बटालियन की एक कम्पनी में अग्रिम प्रेक्षण अधिकारी के रूप में इन्होंने शत्रु को शांत किया और उस कार्रवाई में कम्पनी कमांडर के मारे जाने और उप-कमान अफसर के कम्पनी से अलग-थलग पड़ जाने पर इन्होंने आक्रमण का संचालन बड़े कारगर ढंग से किया।

इन कार्रवायियों में कैप्टन जगदीश चन्द्र शर्मा ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

24. कैप्टन कुट्टन महादेवन (एस० एस०-20538) आर्टिलरी।

दिसम्बर 1971 की संक्रियाओं के दौरान कैप्टन कुट्टन महादेवन पूर्वी क्षेत्र में एक माउंटेन रेजीमेंट में तैनात थे। 3 दिसम्बर 1971 को डोगरा रेजीमेंट की एक बटालियन की प्रहार-कम्पनियों में एक में अग्रिम प्रेक्षण अधिकारी के रूप में कार्य करते हुए वे घायल हो गए थे। घाव के बावजूद ये अपनी कम्पनी का साथ देते रहे और शत्रु के ठिकाने पर गोले बरसाते रहे और अन्ततः कम्पनी को उस ठिकाने पर कब्जा करने में सहायक सिद्ध हुए।

इस कार्रवाई में कैप्टन कुट्टन महादेवन ने साहस और कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया।

25. कैप्टन पालाइहोदियिल मोहम्मद हमीद (आई० सी०-23401) आर्टिलरी।

कैप्टन पालाइहोदियिल मोहम्मद हमीद पूर्वी क्षेत्र में रक्षात्मक संक्रियाओं के दौरान लगभग दो कम्पनियों के एक मिले जुले दल की कमान कर रहे थे। इस दल का कार्य भेद प्राप्त करना और शत्रु को काबू में करने के लिए घात लगाना और उसके पीछे से सड़क पर रुकावट खड़ी करना था। इस दल के अर्द्ध प्रशिक्षित दल होने के कारण कैप्टन हमीद ने व्यक्तिगत उदाहरण स्थापित करने के लिए जानबूझ कर अपने आप को खतरे में डाला और इस प्रकार अपने साथियों को प्रेरित किया और इस प्रकार संक्रियात्मक योजनाओं की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इस प्रकार कैप्टन पालाइहोदियिल मोहम्मद हमीद ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

26. कैप्टन सुभाष चन्द्र कालरा (एस० एस०-21546) आर्टिलरी।

दिसम्बर 1971 की संक्रियाओं के दौरान कैप्टन सुभाष चन्द्र कालरा पूर्वी क्षेत्र में एक इन्फैन्ट्री बटालियन में तैनात थे। 11 दिसम्बर 1971 को एक नदी के पार दिन के समय आक्रमण के दौरान कैप्टन कालरा एक अग्रिम प्रेक्षण अधिकारी थे और अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए शत्रु के ठिकाने के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए ये आगे बढ़ते चले गए। ऐसा करते हुए ये और इनके दल का एक सदस्य घायल हो गया था। उस घायल सैनिक का प्राथमिक उपचार करने के पश्चात्, अपने घावों की चिन्ता न करते हुए, ये अपनी गन से शत्रु पर गोलाबारी करते रहे जिससे शत्रु को मजबूर

होकर पीछे हटना पड़ा और इनकी कम्पनी ने उसके ठिकाने पर कब्जा कर लिया।

इस कार्रवाई में कैप्टन सुभाष चन्द्र कालरा ने साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

27. कैप्टन धोगले अरविन्द वासुदेव (एस० एस०–21162) आर्टिलरी।

कैप्टन धोगले अरविन्द वासुदेव पूर्वी क्षेत्र में एक इन्फैन्ट्री बटालियन में एक अग्रिम प्रेषण अधिकारी के रूप में लड़ रहे थे। शत्रु के साथ एक भुठभेड में आमने-सामने की लड़ाई हो रही थी जिससे कम्पनी कमांडर, प्लाटून कमांडर और प्लाटून हवलदार मारे गए। कैप्टन वासुदेव ने बाकी प्लाटून को संगठित किया और बहादुरी से अपने चारों ओर सुरक्षात्मक गोलाबारी की और गोलियों की बौछार से युक्त एक खुले क्षेत्र में शत्रु से जूझते रहे।

इस कार्रवाई में कैप्टन धोगले अरविन्द वासुदेव ने साहस, पहलशक्ति और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

28. कैप्टन अवतार सिंह (आई० सी०–16120) आर्टिलरी।

कैप्टन अवतार सिंह पूर्वी क्षेत्र में रक्षात्मक संक्रियाओं के दौरान एक माउंटेन रेजीमेंट में तैनात थे। इन्हें शत्रु की पंक्तियों के पीछे घुसपैठ करने और शत्रु को यथा सम्भव अधिक से अधिक हानि पहुंचाने का काम सौंपा गया था। शत्रु के पीछे पांच दिन तक रह कर इन्होंने इस काम को सफलतापूर्वक पूरा किया। इन्होंने शत्रु के गोदाम तोपें, रेल-डिब्बों और एक इंजन तथा कई गाड़ियों को नष्ट किया। इसके अतिरिक्त इन्होंने शत्रु सैनिकों को भी हताहत किया।

कैप्टन अवतार सिंह ने इन संक्रियाओं के दौरान असाधारण साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

29. कैप्टन हरीश चन्द्र सेठ (आई० सी०–19966) आर्टिलरी।

कैप्टन हरीश चन्द्र सेठ पूर्वी क्षेत्र में रक्षात्मक संक्रियाओं के दौरान एक माउंटेन रेजीमेंट में तैनात थे। ये एक कम्पनी में अग्रिम प्रेक्षण अधिकारी के रूप में कार्य कर रहे थे। 5/6 नवम्बर 1971 की रात्रि को जब कम्पनी शत्रु के पीछे एक गोलाकार ब्लाक में पहुंची तो शत्रु ने जवाबी हमला कर दिया और उसके पश्चात् गोले बरसाने शुरू किए। इस भारी गोली-बारी और विकट स्थिति को देखते हुए इनके सैनिक पीछे हटने लगे, लेकिन कैप्टन सेठ ने स्वयं उन्हें एकत्र करके पुनः संगठित किया। इन्होंने इस और इसके बाद के कई आक्रमणों को सफलतापूर्वक विफल कर दिया और शत्रु अपने पीछे अपने मृत और घायल सैनिकों और हथियारों तथा गोलाबारूद को छोड़ कर भाग गया।

इस कार्रवाई में कैप्टन हरीश चन्द्र सेठ ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता न करते हुए अद्वितीय साहस, और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

30. कैप्टन इन्द्र पाल शर्मा (आई० सी०–20632) आर्टिलरी।

कैप्टन इन्द्र पाल शर्मा दिसम्बर 1971 में पश्चिमी क्षेत्र में संक्रियाओं के दौरान एक मीडियम रेजीमेंट में तैनात थे। राजा-मोहताम की सीमा चौकी पर पुनः कब्जा करने के लिए इन्हें सीमा सुरक्षा दल की एक बटालियन में अग्रिम प्रेक्षण अधिकारी के रूप में सम्बन्धित किया गया था। 6/7 दिसम्बर 1971 की रात्रि को 0330 बजे जब आक्रमण किया जा रहा था तो शत्रु ने हमारी फौज पर मशीनगन से गोलियां बरसा दीं जिससे हमारी फौज आगे न बढ़ सकी। अपने सैनिकों को वहां से निकालने के लिए कैप्टन शर्मा ने शत्रु पर तोपों से गोले बरसाने शुरू किए। इसके बाद जब एक अन्य दिशा से आक्रमण किया गया परन्तु इन्हें पुनः आगे नहीं बढ़ने दिया गया। इस पर कैप्टन शर्मा एक ओर गए और वहां से शत्रु पर गोले बरसाने लगे और शत्रु को शांत कर डाला और फिर हमारे सैनिक शत्रु के ठिकाने पर कब्जा करने में सफल हो गए।

इस कार्रवाई में कैप्टन इन्द्र पाल शर्मा ने साहस, सूझबूझ और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

31. लेफ्टिनेन्ट शिव शंकर कुन्दु (आई० सी०–24551) इंजीनियर्स।

दिसम्बर 1971 की संक्रियाओं के दौरान लेफ्टिनेन्ट शिव शंकर कुन्दु पश्चिमी क्षेत्र में हुसैनीवाला में एक इंजीनियर प्लांट कम्पनी में तैनात थे। 8 दिसम्बर 1971 की रात्रि को ये उन दो दलों के साथ गए जिन्हें हुसैनीवाला हेडवर्क्स की नहर के दरवाजे खोलने का काम दिया गया था। वह दूर एक छोर में था जिस पर शत्रु का कारगर नियंत्रण था। जैसे ही इनका दल नहर के दरवाजे के निकट पहुंचा कि शत्रु ने इन पर भारी गोलीबारी कर दी लेकिन फिर भी इन्होंने बड़े धैर्य और दृढ़ता से निर्धारित कार्य को शत्रु के छोटे हथियारों एवं तोपखाने की भारी गोलीबारी के बावजूद शानदार ढंग से पूरा कर डाला। इस कार्य को करते हुए, ये गम्भीर रूप से घायल हो गए थे।

इस कार्रवाई में लेफ्टिनेन्ट शिव शंकर ने साहस और नेतृत्व का परिचय दिया।

32. लेफ्टिनेन्ट अखिलेश कुमार दुबे (आई० सी०–24409) 63 कैवलरी।

दिसम्बर 1971 की संक्रियाओं के दौरान लेफ्टिनेन्ट अखिलेश कुमार दुबे पूर्वी क्षेत्र में एक आरमर्ड कोर यूनिट में तैनात थे। 7 दिसम्बर 1971 को जैसूर एयर फील्ड की ओर बढ़ते टैंकों के ट्रूप कमांडर थे। घने जंगलों में शत्रु की गनों की मौजूदगी और अंधा धुंध रूप से बिछी सुरंगों के बावजूद इन्होंने बहादुरी से अपनी टुकड़ी का नेतृत्व किया। राकेट लांचर की सहायता से शत्रु के एक बंकर का पता लगने पर इन्होंने उसे तुरंत नष्ट कर दिया और शत्रु की अग्रिम रक्षात्मक पंक्तियों पर मशीनगन से गोलियों की बौछार की। इस तरह इन्होंने शत्रु को आतंकित कर दिया।

इस कार्रवाई में लेफ्टिनेन्ट अखिलेश कुमार दुबे ने साहस, पहलशक्ति और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

33. 2/लिफ्टिनेन्ट जयपाल सिंह सिसोदिया (आई० सी०—24017)
जाट रेजीमेंट।

दिसम्बर 1971 की संक्रियाओं के दौरान 2/लिफ्टिनेन्ट जयपाल सिंह सिसोदिया पुंछ क्षेत्र में एक इन्फैन्ट्री बटालियन में तैनात थे। 4 दिसम्बर 1971 को इनकी प्लाटून ने हमारी एक चौकी को ठीक समय पर कुमुक दी जिससे शत्रु के आक्रमण को विफल करने में सहायता मिली। उसी रात को शत्रु ने चौकियों पर पुनः तीन बार आक्रमण किया और 2/लिफ्टिनेन्ट सिसोदिया की कमान में उनकी प्लाटून ने शत्रु को काफी नुकसान पहुंचाया। इनकी प्लाटून को पुनः उस क्षेत्र पर कब्जा करने का आदेश दिया था, जहां शत्रु हमारी चौकियों को अलग-थलग पड़ जाने के लिए प्रयास कर रहा था। इन्होंने बड़ी तीव्रता से कार्रवाई की और शत्रु को अपनी जगह छोड़ने के लिए बाध्य किया।

इस कार्रवाई में 2/लिफ्टिनेन्ट जयपाल सिंह सिसोदिया ने साहस, पहल-शक्ति और नेतृत्व का परिचय दिया।

34. 2/लिफ्टिनेन्ट रोशन लाल मान (आई० सी०—24385)
ब्रिगेड आफ गार्डस्।

दिसम्बर 1971 की संक्रियाओं के दौरान 2/लिफ्टिनेन्ट रोशन लाल मान सियालकोट क्षेत्र में एक इन्फैन्ट्री बटालियन में तैनात थे। 14 दिसम्बर 1971 को जब ये एक प्लाटून की कमान कर रहे थे, तो इन्हें एक दूसरी प्लाटून में जाने का आदेश दिया गया था, जो शत्रु की मशीनगन की गोलाबारी में घिरी पड़ी थी। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए केवल दो अन्य जवानों के साथ इन्होंने शत्रु की एक चौकी पर यकायक आक्रमण कर अदम्य साहस का परिचय दिया। इनकी कार्रवाई को देखकर इनकी प्लाटून को बड़ी प्रेरणा मिली और उन्होंने शत्रु की मझौली मशीनगनों पर प्रहार कर शत्रु के कई सैनिकों को मार गिराया और उसकी तीन मशीन गनों को अपने कब्जे में ले लिया। इस साहसपूर्ण कार्रवाई से शत्रु की सुरक्षित चौकी से मझौली मशीन गन से हो रही गोलीबारी की चपेट से हमारी एक और प्लाटून को मुक्त कराया जा सका।

इस कार्रवाई 2/लिफ्टिनेन्ट रोशन लाल मान ने साहस और नेतृत्व का परिचय दिया।

35. 2/लिफ्टिनेन्ट पुषपिन्दर (आई० सी०—24378)
सिख रेजीमेंट।

2/लिफ्टिनेन्ट पुषपिन्दर ने 6/7 दिसम्बर 1971 की रात्रि को पश्चिमी क्षेत्र में कैयान पर कब्जा करने के बाद वहां पर अपनी स्थिति मजबूत की और शत्रु के एक जबरदस्त हमले को नाकाम किया। पुनः 15/16 दिसम्बर 1971 की रात्रि को इन्होंने नौकोट पर शत्रु की एक चौकी पर हमला बोल दिया। इस हमले में इन्होंने अपनी प्लाटून का बड़े साहसपूर्ण ढंग से नेतृत्व किया और उस चौकी पर अपना कब्जा कर दिखाया।

इन कार्रवाइयों में 2/लिफ्टिनेन्ट पुषपिन्दर ने साहस, दृढ़ता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

36. 2/लिफ्टिनेन्ट विक्रम चन्द राणा (आई० सी०—23677)
डोगरा रेजीमेंट।

दिसम्बर 1971 की संक्रियाओं में 2/लिफ्टिनेन्ट विक्रम चन्द राणा, फरीदकोट क्षेत्र में एक इन्फैन्ट्री बटालियन में तैनात थे। उक्त क्षेत्र में इनकी बटालियन द्वारा महत्वपूर्ण चौकियों पर कब्जा करने में इनका मुख्य योगदान था। प्रारम्भिक स्थितियों में इन्होंने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए शत्रु के निकट जाकर और उसकी सुरक्षा व्यवस्था पर नजर रखते हुए उपयोगी जानकारी हासिल की। आक्रमण के दौरान इनका कम्पनी कमांडर गम्भीर रूप से घायल हो गया था। इन्होंने स्वयं कमान संभाली और बड़ी निर्भीकता और साहसपूर्ण कार्रवाई से अपने साथियों को प्रेरित कर शत्रु के ठिकाने पर कब्जा करने में सफलता प्राप्त की। एक बार इन्होंने के बल अपने ही निजी प्रयास से शत्रु की एक टैंक रोधी सुरंग-क्षेत्र के बारे में उपयोगी जानकारी हासिल की, लेकिन उस क्षेत्र से वापस लौटते हुए सुरंग के फट जाने से इनके बाएं पैर पर घाव हो गया। अपने इस घाव की चिन्ता न करते हुए ये तब तक अपने अन्य घायल साथियों का प्राथमिक उपचार करते रहे जब तक कि इनके स्थान पर दूसरा दल न पहुंच गया।

आद्योपान्त 2/लिफ्टिनेन्ट विक्रम चन्द राणा ने साहस, पहल-शक्ति और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

37. 2/लिफ्टिनेन्ट क्लेटन सोलोमन (एस० एस०—24345)
ब्रिगेड आफ गार्डस्।

दिसम्बर 1971 की संक्रियाओं के दौरान 2/लिफ्टिनेन्ट क्लेटन सोलोमन पूर्वी क्षेत्र में ब्रिगेड आफ गार्डस् की एक बटालियन की एक कम्पनी की कमान कर रहे थे। 3/4 दिसम्बर 1971 की रात्रि को इन्हें शत्रु की तीन पूर्ण सुरक्षित चौकियों का सफाया करने का आदेश मिला। हल्की मशीन गन की प्रभावी गोलाबारी होने पर भी 2/लिफ्टिनेन्ट सोलोमन अपनी प्लाटून के साथ एक बंकर से दूसरे बंकर तक रेंगकर गए और उन्हें निष्क्रिय किया। इन गनों में से दो को इन्होंने स्वयं नष्ट किया। इस कार्रवाई से इनकी कम्पनी ने बड़ी आसानी से अपना लक्ष्य पूरा कर दिया।

इस कार्यवाही में 2/लिफ्टिनेन्ट क्लेटन सोलोमन ने साहस, दृढ़ता और नेतृत्व का परिचय दिया।

38. 2/लिफ्टिनेन्ट समीर राममोहन चन्दावरकर (एस० एस०—23578) (मरणोपरान्त)
45 कैवलरी।

दिसम्बर 1972 की संक्रियाओं में 2/लिफ्टिनेन्ट समीर राममोहन चन्दावरकर, राजपूत रेजीमेंट की एक बटालियन में तैनात सैनिकों की कमान कर रहे थे। इन्हें पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के एक पूर्ण सुरक्षित ठिकाने पर आक्रमण करने का काम सौंपा गया था। निर्धारित लक्ष्य के निकट पहुंचने पर इनका टैंक शत्रु का निशाना बन गया और उसमें आग लग गई। आग और भारी गोलाबारी की चिन्ता न करते हुए इन्होंने अपने साथियों को टैंक से बाहर निकालने में सहायता दी। इसके पश्चात् ये अपने साथियों को शत्रु के ठिकाने की ओर ले गए और उस पर कब्जा कर लिया गया। इस कार्रवाई में वे घातक रूप से घायल हो गए।

इस कार्रवाई में 2/लेफ्टिनेन्ट समीर राममोहन चन्दावरकर ने साहस, दृढ़ता और नेतृत्व का परिचय दिया।

39. 2/लेफ्टिनेन्ट बलबीर सिंह (आई० सी०-24401) डोगरा रेजीमेंट।

1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान 2/लेफ्टिनेन्ट बलबीर सिंह कोमिला क्षेत्र में एक इन्फैन्ट्री बटालियन की एक प्लाटून की कमान कर रहे थे। इनकी कम्पनी को शत्रु के सैनिकों के पीछे से एक सड़क अवरोध खड़ा करने का काम दिया गया था। ये इस कार्रवाई में सबसे आग रहे और सड़क अवरोध खड़ा करने में इनका सबसे बड़ा योग था। यद्यपि इन पर शत्रु ने काफी बड़ी संख्या में हमला किया, लेकिन इन्होंने शत्रु के हमले को नाकाम कर दिया और अपने सैनिकों का हौसला बढ़ाने तथा शत्रु पर प्रहार करने के लिए दिशा निर्देशन देने के लिए ये एक खाई से दूसरी खाई में जाते रहे। इस कार्रवाई के दौरान ये घायल हो गए लेकिन जब तक शत्रु का आक्रमण विफल नहीं हो गया, ये अपने काम पर डटे रहे।

इस कार्रवाई में 2/लेफ्टिनेन्ट बलबीर सिंह ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

40. 2/लेफ्टिनेन्ट बोट्टालंदा मेकइया मुथापा (एस० एस०-22909) इंजीनियर।

दिसम्बर 1971 की संक्रियाओं के दौरान 2/लेफ्टिनेन्ट बोट्टालंदा मेकइया मुथापा एक इंजीनियर रेजीमेंट में तैनात थे। 4 दिसम्बर 1971 को 7वीं कैवलरी पूर्वी क्षेत्र में मियां बाजार में शत्रु के साथ उलझी हुई थी क्योंकि उनके दो टैंक शत्रु के सुरंग-क्षेत्र में फंस गए थे 12/लेफ्टिनेन्ट मुथापा को उन सुरंगों को हटा कर टैंकों के लिए मार्ग बनाने के लिए आदेश दिया गया था। उन टैंकों में से एक टैंक सुरंग युक्त धान के खेत में जल रहा था और उसके बिलकुल निकट एक व्यक्ति पड़ा हुआ था। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता न करते हुए ये सुरंग-क्षेत्र में दाखिल हो गए और सुरंगों को हटाते हुए उस घायल व्यक्ति तक जा पहुंचे और उसे एक सुरक्षित स्थान पर ले आए। इन्होंने बिना पूरे औजारों और दल के सुरंगों को हटाने का काम किया जब कि दूसरी ओर टैंक में रखे गोलाबारूद के फटने का खतरा बराबर मौजूद था। घायल व्यक्ति निकाल लाने के तत्पश्चात ही टैंक में विस्फोट हो गया।

इस कार्रवाई में 2/लेफ्टिनेन्ट बोट्टालंदा मेकइया मुथापा ने साहस, दृढ़ता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

41. 2/लेफ्टिनेन्ट विष्णुकांत चतुर्वेदी (आई० सी०-25135 आर्टिलरी।

2/लेफ्टिनेन्ट विष्णुकांत चतुर्वेदी एक इन्फैन्ट्री बटालियन में एक अग्रिम प्रेक्षण अधिकारी के रूप में तैनात थे जिसे पूर्वी क्षेत्र में रक्षात्मक संक्रियाओं के दौरान सिलहट क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण ठिकाने से शत्रुओं को खदेड़ने का काम सौंपा गया था। आक्रमण के दौरान इन्होंने शत्रु द्वारा की गई भारी गोलाबारी की चिन्ता न करते हुए खुले स्थान में आकर अपनी तोपों से शत्रु पर बहुत जोरों से प्रहार किया। जब आक्रमण के अन्त में कम्पनी का कम्पनी कमांडर मारा गया तो इन्होंने कमान संभाल ली और अपने प्रेरणादायक नेतृत्व से शत्रु को उसके ठिकानों से खदेड़ने में सफलता प्राप्त की

इस कार्रवाई में 2/लेफ्टिनेन्ट विष्णुकांत चतुर्वेदी ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

42. 2/लेफ्टिनेन्ट जोहन टरेस डी सौजा (आई० सी०-23758)
7 कैवलरी।

दिसम्बर 1971 की संक्रियाओं के दौरान 2/ लैफ्टिनेंट जोहन टैरेस डी सौजा पूर्वी क्षेत्र में एक ईडिपेंडेंट आरमर्ड स्क्वाड्रन में तैनात थे। 4 दिसम्बर 1971 को जब ये मियां बाजार में शत्रु की ओर बढ रहे थे तो इन्होंने देखा कि इनके साथी का टैंक शत्रु की गोली का शिकार हो गया है। शत्रु द्वारा की जाने वाली भारी गोलाबारी के होते रहने के बावजूद अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता न करते हुए इन्होंने उक्त अधिकारी और उनके टैंक के कर्मीदल को वहां से निकाला। जब ये वापिस हो रहे थे तो शत्रु ने इनका टैंक भी उड़ा दिया। शत्रु की गोली बारी बिचलित हुए बिना और गम्भीर रुप से घायल होने के बावजूद इन्होंने एक और अफसर को वहां से उठाया और उसे सुरक्षित स्थान पर लाए।

इस कारवाई में 2/ लेफ्टनेन्ट जोहन टैरस डी सोजा ने साहस दृढता और नेतृत्व का परिचय दिया।

43. 2/लिफ्टिनेन्ट अशोक वासुदेव तस्कर (आई० सी०-25280) पैराशूट रेजिमेन्ट।

दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान 2/लिफ्टिनेन्ट अशोक वासुदेव तस्कर पुंछ क्षेत्र में तैनात थे। 3/4 दिसम्बर, 1971 की रात्रि को शत्रु के सैनिकों ने इतनी अधिक ऊंचाई पर कब्जा कर लिया था जहां से कि नीचे नागली साहिब सामने दिखाई देता था। हमारे सैनिक इससे कुछ कम ऊंचाई पर थे और शत्रु इस स्थिति में उन पर ऊपर से भारी गोलाबारी कर रहा था। स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए 2/लिफ्टिनेन्ट तस्कर ने दृढ़ संकल्प होकर शत्रु पर शीघ्र के आक्रमण कर दिया। ऐसा करते हुए वे घायल हो गये लेकिन फिर भी इन्होंने आक्रमण जारी रखा और शत्रु को वहां से खदेड़ने में सफल हुए और भारी संख्या में शत्रु के सैनिक हताहत हुए तथा उनके काफी हथियार और उपस्कर हाथ लगे।

इस कार्रवाई में 2/लेफ्टिनेन्ट अशोक वासुदेव तस्कर ने साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

44. जे० सी० 36215 सूबेदार गंगे गुरुंग,
4 गोरखा राइफल्स।

दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं में सूबेदार गंगे गुरुंग पश्चिमी क्षेत्र में एक इन्फैन्ट्री बटालियन में तैनात थे। 10 दिसम्बर, 1971 को जब इनकी कम्पनी डाढ़ क्रासिंग पर शत्रु पर प्रहार कर रही थी तो इन्हें बायीं ओर शत्रु की एक इन्फैन्ट्री टुकड़ी दिखाई दी। इन्होंने तत्काल अपने सैनिकों को वहां भिड़ा दिया। इस तत्काल कार्रवाई से शत्रु घबरा गया और पीछे हट गया। कम्पनी कमाण्डर के मारे जाने के पश्चात सूबेदार गुरुंग शत्रु से भिड़े रहे। जब शत्रु टैंकों ने इन्हें चारों ओर से घेर लिया तो इन्होंने बड़ी कुशलता और सूझबूझ से काम लेकर अपनी कम्पनी को वहां से निकाला। शत्रु द्वारा की जाने वाली हवाई गोलाबारी के बावजूद ये अपने सैनिकों को सुरक्षित स्थान पर लाने में सफल हुए।

इन कार्रवाइयों से सूबेदार गंगे गुरुंग ने साहस और दृढ़ता का परिचय दिया ।

45. जे० सी० 19772 सूबेदार अयुध बीर सिंह
पंजाब रेजिमेन्ट ।

दिसम्बर, 1971 की संक्रियायों के दौरान सूबेदार अयुधबीर सिंह पूर्वी क्षेत्र में एक इन्फैन्ट्री बटालियन में तैनात थे । 7 दिसम्बर, 1971 को इनकी बटालियन सुलतानपुर के ब्राह्मण बाड़िया की ओर आगे बढ़ रही थी । वे सबसे आगे वाली प्लाटून की कमान कर रहे थे जिस पर अचानक शत्रु ने भारी गोलीबारी कर दी । अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए और जबरदस्त गोलाबारी होने पर भी वे खुले स्थान में इधर-उधर चलते रहे और अपने सैनिकों को एक सुरक्षित स्थान पर ले गये, जहां बाद में शेष बटालियन भी आ गई थी ।

इस कार्रवाई में सूबेदार अयुधबीर सिंह ने साहस, संगठन, कुशलता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

46. जे० सी० 19027, सूबेदार (सर्वेयर फिल्ड) अमरीक सिंह
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स ।

दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान सूबेदार अमरीक सिंह पूर्वी क्षेत्र में अगरतल्ला में एक निर्माण कम्पनी में तैनात थे । इनकी कम्पनी को अगरतल्ला हवाई अड्डे को बढ़ाने का काम दिया गया था । शत्रु की भारी गोलाबारी के बावजूद सूबेदार अमरीक सिंह विचलित हुए बिना अपने साथियों के साथ अपने काम पर डटे रहे । उसी रात को जब हवाई अड्डे पर शत्रु ने पुनः गोले बरसाये तो स्वयं किसी सुरक्षित स्थान पर जाने से पूर्व इन्होंने पहले अपने साथियों की सुरक्षा की व्यवस्था की । इन्होंने रनवे को बढ़ाने का काम बिना विश्राम किए साठ घन्टे तक लगातार काम करके पूरा किया ।

यह इनके व्यक्तिगत उदाहरण का ही परिणाम था कि इनके अधीनस्थ कार्मिकों ने पूरे उत्साह से काम करके नियत समय के अन्दर ही काम को पूरा कर दिया । इस कार्य को करने में इन्होंने पहल-शक्ति, दृढ़ता और असाधारण कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

47. जे० सी० 31463 सूबेदार साधु सिंह हीरा (मरणोपरान्त)
सिख लाइट इन्फैन्ट्री ।

सूबेदार साधु सिंह हीरा 15 दिसम्बर, 1971 को पूर्वी क्षेत्र में अरपारा पर आक्रमण करने वाली सिख लाइट इन्फैन्ट्री की एक बटालियन की राइफल कम्पनी की सबसे आगे बढ़ने वाली प्लाटून की कमान कर रहे थे । शत्रु ने अपने ठिकाने से अपनी भारी मशीनगन से गोले बरसा कर आक्रमण को रोक दिया । यह जूनियर कमीशन्ड अफसर अपनी प्लाटून के साथ दबे पांव चलकर शत्रु की मशीनगन के निकट पहुंच ही रहे थे तो शत्रु की एक गोली इन पर आ लगी । लेकिन फिर भी ये आगे बढ़कर शत्रु की मशीनगन पर टूट पड़े । उस मशीनगन को नष्ट करने के पश्चात् ही ये घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए ।

इस कार्रवाई में सूबेदार साधु सिंह हीरा ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया ।

48. जे० सी० 23817 सूबेदार विक्रमजीत सिंह,
पंजाब रेजिमेन्ट ।

सूबेदार विक्रमजीत सिंह 7 दिसम्बर, 1971 को पंजाब रेजिमेन्ट की एक बटालियन की एक प्लाटून की कमान कर रहे थे । इनकी कम्पनी जब एक मजबूत मोर्चा बना रही थी तो इन्हें शत्रु के बिल्कुल पास तक पहुंच जाने का आदेश मिला, जोकि छोटे हथियारों से भारी और प्रभावी गोलाबारी कर रहा था । अपनी प्लाटून का नेतृत्व करते हुए ये शत्रु के उस ठिकाने के निकट पहुंच गये, जहां से मशीनगन द्वारा लगातार गोलीबारी की जा रही थी । ये निर्भीक होकर अपने एक सेक्शन के साथ मशीनगन की ओर झपटे और उसे खामोश कर दिया । ऐसा करते हुए इन्होंने शत्रु को भारी हानि पहुंचाई लेकिन शत्रु की एक गोली से स्वयं भी घायल हो गये ।

इस कार्रवाई में सूबेदार विक्रमजीत सिंह ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

49. जे० सी० 44936 अजायब सिंह
सिख लाइट इन्फैन्ट्री ।

सूबेदार अजायब सिंह 6 दिसम्बर, 1971 को सिख लाइट इन्फैन्ट्री की एक बटालियन की एक कम्पनी के द्वितीय कमान अफसर के रूप में पूर्वी क्षेत्र में दुर्गाबारकटी पर आक्रमण के समय बटालियन के बाँये बाजू का नेतृत्व कर रहे थे । शत्रु ने मशीनगन से जबरदस्त गोलीबारी करके इस आक्रमण को लगभग रोक ही दिया था । शत्रु की भारी गोलीबारी के बीच अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा और अपने घाव की बिल्कुल परवाह करते हुए भाग कर मशीनगन वाले बंकर की ओर गए और उसमें एक ग्रिनेड फेंक कर शत्रु की मशीनगन को शांत कर दिया जिससे बटालियन को अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सहायता मिली ।

इस कार्रवाई में सूबेदार अजायब सिंह ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

50. जे०सी० 20128 सूबेदार पकलापति जोज़ेफ डेविड सुन्दरा राजू
सिगनल ।

3 दिसम्बर, 1971 की रात्रि को सूबेदार पकलापति जोज़ेफ डेविड सुन्दरा राजू को पुंछ बनावत क्षेत्र में, जिस पर कि शत्रु गोले बरसा रहा था, इन्फैन्ट्री बटालियन की संचार-व्यवस्था के पुनर्स्थापना का काम सौंपा गया था । शत्रु की भारी गोलीबारी से विचलित हुए बिना ये अपने दल को लेकर अपने काम पर आगे बढ़े और उसे पूरा किया और साथ ही संचार की नई लाइन बिछायी जो संचार-व्यवस्था के एक विकल्प के रूप में काफी उपयोगी सिद्ध हुई ।

दुर्गम भूभाग और शत्रु की जबरदस्त गोलाबारी होते हुए इस कार्य को पूरा करने में सूबेदार पकलापति जोज़ेफ डेविड सुन्दरा राजू ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

51. जे० सी० 59195 नायब सूबेदार करनैल सिंह (मरणोपरान्त)
कोर आफ इंजीनियर्स ।

8 दिसम्बर, 1971 की रात्रि को नायब सूबेदार करनैल सिंह को, जो एक इंजीनियर दल की कमान कर रहे थे, सतलुज नदी में बाढ़ लाने के लिए हुसैनीवाला हैडवर्क्स की नहर के दरवाजे खोलने का आदेश दिया गया । जिस गैलरी से होकर इस दल को अपना काम करना था, वह काफी नष्ट हो चुकी थी और उस पर शत्रु द्वारा भारी गोलीबारी हो रही थी । लेकिन फिर भी अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए इन्होंने काम को सफलता पूर्वक पूरा करने के लिए अपने दल का नेतृत्व किया । वापस लौटते समय इन्हें शत्रु की तोप का एक गोला लगा उसी स्थान पर ये वीरगति को प्राप्त हो गए ।

इस कार्रवाई में नायब सूबेदार करनैल सिंह ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

52. जे० सी० 51857 नायब सूबेदार एन्थोनी हीरो (मरणोपरांत)
बिहार रेजिमेन्ट ।

9 दिसम्बर, 1971 को नायब सूबेदार एन्थोनी हीरो बिहार रेजिमेन्ट की एक बटालियन के एक मशीनगन सैक्शन की कमान कर रहे थे । पूर्वी क्षेत्र में सोहागपुर पर कब्जा करने के पश्चात् वहां पर बटालियन का पुनर्गठन किया गया । आक्रमण के दौरान हताहत सैनिकों को एक गांव में एक स्कूल की बिल्डिंग में छोड़ दिया गया था । चूंकि शत्रु इस गांव पर भारी गोलीबारी कर रहा था । अतः इन लोगों को एक सुरक्षित स्थान पर ले जाना आवश्यक हो गया था । शत्रु की गोलीबारी से विचलित हुए बिना स्वार्थ रहित कर्तव्यनिष्ठा से इन्होंने इन हताहतों को स्कूल बिल्डिंग से निकालने के काम का बीड़ा उठाया । ऐसा करते हुए शत्रु की मशीनगन की एक गोली इनकी छाती पर आ लगी और उसी स्थान पर ये वीरगति को प्राप्त हो गये ।

इस कार्यवाही में नायब सूबेदार एन्थोनी हीरो ने असाधारण साहस, मैत्री भावना निःस्वार्थ कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

53. 3943841 नायब सूबेदार रछपाल सिंह
डोगरा रेजिमेन्ट ।

16 दिसम्बर 1971 को नायब सूबेदार रछपाल सिंह पूर्वी क्षेत्र में सिरामणी पर आक्रमण के समय डोगरा रेजिमेन्ट की एक बटालियन की एक कम्पनी में प्लाटून कमाण्डर थे । आक्रमण किया ही जा रहा था कि शत्रु ने भारी और प्रभावी गोलीबारी कर दी । यद्यपि ये उस ग्रनेड के एक टुकड़े से घायल हो गए थे कि जो शत्रु की खाई में से इन पर फैंका गया था । तब भी इन्होंने उस खाई में जाकर शत्रु के दो सिपाहियों को बायोनेट से मार गिराया । इनके इस साहसपूर्ण कार्य को देखकर इनके साथी अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये इनके पीछे होकर शत्रु पर टूट पड़े ।

इस कार्रवाई में नायब सूबेदार रछपाल सिंह ने अनुकरणीय साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

54. जे० सी० 39317 नायब सूबेदार रमेश्वर सिंह
कुमाऊं रेजिमेन्ट ।

6 दिसम्बर, 1971 को कुमाऊं रेजिमेन्ट की एक बटालियन के नायब सूबेदार रमेश्वर सिंह को शत्रु के मोर्चे से केवल 15 गज की दूरी पर शत्रु की गोलीबारी में घिरी हुई एक प्लाटून को वहां से सुरक्षित बाहर निकालने का काम सौंपा गया था । ये असाधारण कुशलता और साहस से अपने साथियों को आगे ले गए और शत्रु की मशीनगनों को दोनों छोरों से उलझाए रखा । शत्रु की भारी गोलाबारी के बावजूद भी इन्होंने अपनी उस प्लाटून से सम्बन्ध स्थापित कर लिया और न केवल उसे शत्रु के चंगुल से निकाला अपितु घायल कार्मिकों को भी वहां से बाहर निकालने में सफल हुए ।

इस कार्रवाई में नायब सूबेदार रमेश्वर सिंह ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

55. जे० सी० 57352 नायब सूबेदार रामा चन्द्रन
कोर आफ इंजीनियर्स ।

10 दिसम्बर, 1971 की रात्रि को इंजीनियर रेजिमेन्ट के नायब सूबेदार रामा चन्द्रन को पूर्वी क्षेत्र में पारीकोट-लक्षम मार्ग से सुरंगें हटाने का काम सौंपा गया था, जोकि शत्रु ने पीछे हटते समय भारी संख्या में इस मार्ग में बिछा दी थी । दो इंजीनियर सैक्शनों को साथ लेकर इन्होंने शीघ्र काम शुरू कर दिया, इन्होंने सुरंगें नष्ट करने वाले दल के आगे रहकर इस काम को पूरा करने के लिए दल के सदस्यों को प्रेरणा दी और उन्हें उत्साहित किया ।

घने अन्धेरे में और असाधारण कुशलता से सुरंगें हटाने में नायब सूबेदार रामा चन्द्रन ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

56. 4154794 लांस हवलदार यशवन्त सिंह
पैराशूट रेजिमेन्ट ।

4 दिसम्बर 1971 की रात्रि को पाकिस्तानी कमाण्डों ने ऊंचाई पर स्थित इलाके पर धावा कर उसे अपने कब्जे में कर लिया, जहां से कि पश्चिमी क्षेत्र में पुंछ में नागली साहिब सामने ही नजर आता था । इन ऊंचाइयों पर से शत्रु ने हमारे सैनिकों पर भारी और प्रभावी गोलाबारी की । इस नाजुक स्थिति में पैराशूट रेजिमेन्ट (कमाण्डों) के लांस हवलदार यशवन्त सिंह एक अन्य पैराशूट को साथ लेकर रेंगते हुए शत्रु के पीछे हो लिए और उन पर हावी हो गये । बाद में हुई मुठभेड़ में इन्होंने और इनके साथी ने शत्रु के चार सैनिकों को मार गिराया और मशीनगन पर कब्जा कर लिया ।

इस कार्रवाई में लॉस हवलदार यशवन्त सिंह ने अनुकरणीय साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

57. 2947852 हवलदार छोटे सिंह,
राजपूत रेजिमेन्ट ।

4 दिसम्बर, 1971 को हवलदार छोटे सिंह एक प्लाटून के कमांडर थे जिसे पूर्वी क्षेत्र में अखौड़ा में बटालियन द्वारा कब्जा

करने के शीघ्र पश्चात् टीटास पुल पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था। शत्रु ने इस पुल को नष्ट करने के लिए तैयारियां कर रखीं थी । सामने शत्रु के होते हुए भी ये अपनी प्लाटून को लेकर पुल के दूसरी ओर निकल पड़े जिससे शत्रु अचम्भित रह गया । खाइयों में से यद्यपि शत्रु इन पर भारी गोलीबारी कर रहा था फिर भी इन्होंने अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाया और चार्जों को काट डाला ताकि इनकी कम्पनी पुल के पार आ सके ।

इस कार्रवाई में हवलदार छोटे सिंह ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

58. 5435167 हवलदार नारायण सिंह गुरुंग
5 गोरखा राइफल ।

पूर्वी क्षेत्र में रक्षात्मक संक्रियाओं के दौरान हवलदार नारायण सिंह गुरुंग उस कम्पनी में प्रतिक्षेप रहित राइफल टुकड़ी के कमांडर थे जिसने शत्रु को एक सुरक्षित ठिकाने से पीछे खदेड़ दिया था । जब शत्रु ने ती. सौ गज दूर से मशीन गन और मोर्टार से गोली चलानी शुरू कर दी तो ये शत्रु के दो बंकरों को नष्ट कर दिया । इसके पश्चात् राइफल में कुछ खराबी आ जाने के कारण ये उसे छोड़ कर तीसरे बंकर की ओर रेंगकर गए और उसमें एक ग्रेनेड फेंककर शत्रु के सभी सैनिकों को मार डाला ।

इस कार्रवाई में हवलदार नारायण सिंह गुरुंग ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

59. 1025792 दफादार मीत सिंह
63 कैवलरी ।

11 दिसम्बर, 1971 को 63 कैवलरी के दफादार मीत सिंह पूर्वी क्षेत्र में एक इन्फैन्ट्री बटालियन की सहायता के लिए एक टैंक कमान्डर के रूप में तैनात थे । इस बटालियन के पिछले भाग को काटने के लिए शत्रु ने एक कम्पनी भेजी । ये अपने टैंक के साथ इन्फैन्ट्री प्लाटून के साथ-साथ शत्रु की टुकड़ी को रोकने के लिए आगे बढ़े । शत्रु द्वारा की जाने वाली भारी गोलाबारी के बावजूद ये अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए अपनी इन्फैन्ट्री प्लाटून के साथ अपने टैंक को लेकर शत्रु के ठिकाने की ओर बढ़े । शत्रु अपने पीछे काफी संख्या में मृत सैनिकों और बड़ी मात्रा में हथियार छोड़ कर भाग गया था ।

इस कार्रवाई में दफादार मीत सिंह ने साहस, और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

60. 1141436 हवलदार बस्ती राम
रेजिमेन्ट आफ आर्टिलरी ।

9 दिसम्बर, 1971 को एक माउंटेन रेजिमेन्ट की उन दो गनों को हैलोपेड से एक ढके हुए स्थान पर ले जाना था जिन्हें उससे पिछली रात को ही हैलिकाप्टर से वहां उतारा गया था । शत्रु ने तोपखानों की जबरदस्त और प्रभावी गोलाबारी करके उस क्षेत्र में हमारा आगे बढ़ना मुश्किल कर दिया । हवलदार बस्ती राम ने, जो गन के चालक-दल के साथ थे, अपने साथियों को प्रेरित और उत्साहित किया और गन को एक आड़ पर ले गए । अपने साथियों को दूसरी गन लाने में सहायता करने के लिए भेजने के पश्चात् शत्रु के ठिकाने पर सीधा गोलाबारी करने के लिए इन्होंने अकेले अपनी गन को चलाया ।

इस कार्रवाई में हवलदार बस्ती राम ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

61. 1563252 हवलदार सुरिन्दर दास
कोर आफ इंजीनियर्स ।

12 दिसम्बर, 1971 को एक इंजीनियर टुकड़ी के साथ हवलदार सुरिन्दर दास को पूर्वी क्षेत्र में सादी नदी के ऊपर एक काम चलाऊ पुल बनाने का काम सौंपा गया था । इस पुल को शत्रु ने पीछे हटते हुए उड़ा दिया था । इस पुल की अत्यन्त आवश्यकता को समझते हुए, ये तत्काल काम में जुट गए । शत्रु की गोलाबारी के बावजूद इन्होंने असाधारण कुशलता और पटुता दिखायी और काम चलाऊ पुल बना दिया और गन और गाड़ियों को अविलम्ब नदी पार करवाया ।

इस कार्रवाई में हवलदार सुरिन्दर दास ने व्यावसायिक कुशलता, नेतृत्व और उच्च कोटि की कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

62. 2847486 हवलदार लटूर सिंह राणा
राजपूताना राइफल्स ।

6 दिसम्बर, 1971 को हवलदार लटूर सिंह राणा को पूर्वी क्षेत्र में बहादुरगढ़ पर आक्रमण के समय राजपूताना राइफल की एक बटालियन को एक कम्पनी में प्रक्षेपरहित राइफल टुकड़ी के कमाण्डर थे । शत्रु ने आक्रमणकारी सैनिकों पर भारी मशीनगन और मोर्टारों से गोलाबारी की । अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए ये अपनी टुकड़ी को सड़क पर एक ऐसे स्थान पर ले गए, जहां शत्रु प्रभावशाली ढंग से गोलाबारी कर रहा था । असाधारण साहस और कुशलता दिखाते हुए इन्होंने शत्रु के तीन बंकरों को नष्ट कर दिया । घायल होने के बावजूद भी ये तब तक अपनी टुकड़ी को उत्साहित और प्रेरित करते हुए उसका नेतृत्व करते रहे, जब तक कि लक्ष्य प्राप्त नहीं हो गया ।

इस कार्रवाई में हवलदार लटूर सिंह राणा ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

63. 3344915 हवलदार शमशेर सिंह, एस० एम०
सिख रेजिमेन्ट ।

15 दिसम्बर, 1971 को हवलदार शमशेर सिंह सिख रेजिमेन्ट की एक बटालियन की एक कम्पनी के प्रक्षेपरहित राइफल टुकड़ी के कमांन्डर थे, जिसे पूर्वी क्षेत्र में एक ठिकाने पर कब्जा करने के पश्चात् वहां पर अपनी स्थिति मजबूत करने का काम सौंपा गया था । इस स्थान पर शत्रु के जवाबी हमले के होते हुए भी इन्होंने राकेट लांचर उठाया और रेंगकर आगे बढ़ते हुए शत्रु के टैंक के निकट गये और टैंक को राकेट से नष्ट कर दिया ।

इस कार्रवाई में हवलदार शमशेर सिंह ने साहस और कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया ।

64. 1315998 हवलदार जार्ज,
कोर आफ इन्जीनियर्स ।

10 दिसम्बर, 1971 को हवलदार जार्ज एक इन्जीनियर दल के साथ थे । जब यह दल पूर्वी क्षेत्र में हाजीगंज को जाने वाली सड़क पर पहले से बने हुए एक पुल की मरम्मत करने जा रहा था, तो शत्रु ने घात लगाकर उस पर हमला कर दिया । असाधारण सूझ-बूझ और साहस का परिचय देते हुए, हवलदार जार्ज ने अपने साथियों से नीचे उतरने और शत्रु का मुकाबला करने के लिए कहा और पुश्ते की ओर आगे आकर स्वयं शत्रु की गोलीबारी के सामने आ गए और इससे शत्रु का ध्यान बट गया । पार्श्व में मोर्चा लेकर इन्होंने अपने साथियों के साथ शत्रु पर गोलीबारी की और उसे अपना घात-स्थान छोड़ना पड़ा । ऐसा करने में वे गम्भीर रूप से घायल हो गए ।

इस कार्रवाई में हवलदार जार्ज ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

65. 1152901 हवलदार (गनर) गुरुबख्श सिंह,
आर्टिलरी ।

दिसम्बर 1971 की संक्रिया में हवलदार गुरुबख्श सिंह पूर्वी क्षेत्र में बुरची इलाके में एक मीडियम रेजिमेन्ट के साथ थे । 8 दिसम्बर 1971 को लगभग 1000 बजे एक माउंटेन आर्टिलरी ब्रिगेड की वैगनों पर शत्रु की गोलाबारी के कारण गोलाबारूद से भरे हुए वाहनों में आग लग गयी । हवलदार गुरुबख्श सिंह ने, जो इस घटना स्थल से 30 गज की दूरी पर एक गन का संचालन कर रहे थे, तत्काल कार्रवाई की ओर इन्होंने फटते हुए गोलाबारूद के बीच अपने साथियों की मदद से आग को फैलने से रोका और इस प्रकार अपनी गन, सैनिकों गोलाबारूद तथा उपस्कर को नष्ट होने से बचा लिया ।

इस कार्रवाई में हवलदार गुरुबख्श सिंह ने साहस, सूझ-बूझ तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

66. 6759456 हवलदार नर्सिंग असिस्टेन्ट
कुसुम कुमार दास,
आर्मी मेडिकल कोर ।

हवलदार नर्सिंग असिस्टेन्ट कुसुम कुमार दास 1 नवम्बर से 16 दिसम्बर 1971 तक पूर्वी क्षेत्र के एक जनरल अस्पताल के अत्यावश्यक सर्जिकल वार्ड में नर्सिंग ड्यूटी के इंचार्ज थे । उस समय तक अस्पताल में कोई नर्सिंग अफसर नहीं रखा गया था और उनके अधीन जो नर्सिंग सिपाही थे वे अनुभवहीन थे । इन कठिनाइयों के बावजूद हवलदार कुसुम कुमार दास ने बड़ी कुशलतापूर्वक अपने कर्तव्य को निभाया और बड़े कारगर ढंग से अपने कनिष्ठ कर्मचारियों का मार्ग-दर्शन किया । नर्सिंग ड्यूटी के अलावा इन्होंने अस्पताल में लड़ाई से लाए गए हताहतों की सुख-सुविधा की ओर भी ध्यान दिया ।

इस प्रकार हवलदार कुसुम कुमार दास ने व्यावसायिक कौशल, पहलशक्ति और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

67. 4150390 हवलदार दीवान सिंह,
कुमायूं रेजीमेन्ट ।

दिसम्बर 1971 की संक्रिया में हवलदार दीवान सिंह पूर्वी क्षेत्र में एक इन्फैन्ट्री बटालियन के साथ थे । यह अपनी कम्पनी के एक पुल पर हमले के समय एक प्लाटून का नेतृत्व कर रहे थे । जब इनकी प्लाटून पुल से 50 गज की दूरी पर रह गयी तो शत्रु ने उस पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी । यह शत्रु की इस कार्रवाई से घबराये नहीं और अपने सैनिकों को शत्रु के विभिन्न बंकरों तक बढ़ते रहने के लिए प्रोत्साहित करते रहे तथा उनमें से अनेक बंकरों को नष्ट कर दिया । बहुत भारी जोखिम उठाकर इन्होंने शत्रु के बंकरों को नष्ट करने के लिए अपनी ग्रेनेड टीमों का स्वयं नेतृत्व किया ।

इस कार्रवाई में हवलदार दीवान सिंह ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

68. 6271672 हवलदार बख्शीश सिंह,
सिगनल ।

दिसम्बर 1971 की संक्रिया में हवलदार बख्शीश सिंह पूर्वी क्षेत्र में एक सिगनल रेजीमेन्ट के साथ थे । इन्हें मुख्य केबल मार्ग बनाने का काम सौंपा गया ताकि एक माउंटेन डिवीजन शत्रु के क्षेत्र में घुस सके । इन्होंने यह कार्य अनथक परिश्रम तथा बड़ी बहादुरी और साहस से किया । इन्हें ऐसे क्षेत्रों में काम करना पड़ा जो शत्रु के भटके हुए लोगों और उखाड़ी न गयी सुरंगों से भरा पड़ा था । इस केबल मार्ग को बनाने के लिए यह कभी-कभी दिन में 18 घंटे तक काम करते रहे, जिससे इनके साथियों को इससे बड़ी प्रेरणा मिली ।

इस कार्य में हवलदार बख्शीश सिंह ने साहस, पहल-शक्ति और नेतृत्व का परिचय दिया ।

69. 6588234 हवलदार बमन चन्द्र महापात्र,
इन्टैलीजेन्स कोर ।

दिसम्बर 1971 की संक्रिया में हवलदार बमन चन्द्र महापात्र पूर्वी क्षेत्र में एक माउंटेन डिवीजन की खुफिया और क्षेत्र सुरक्षा कम्पनी के साथ थे । इन्होंने स्थालाकृति (टोपोग्राफी), शत्रु की शक्ति और व्यूह-रचना के सम्बन्ध में काफी सही जानकारी प्राप्त की जो कि सामर्थ्य का अनुमान लगाने में डिवीजन हैडक्वार्टर के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुई । इन्हें ऐसे क्षेत्रों में काम करना पड़ा जहां शत्रुदल के तोड़-फोड़ करने वाले ऐजेन्ट और रज़ाकार बड़े सक्रिय थे । इन्होंने अपने काम को त्याग की भावना और निजी सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए पूरा किया ।

इस काम में हवलदार बमन चन्द्र महापात्र ने साहस और कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

70. 6872884 हवलदार (एस० के० टी०/एम्यूनीशन)
कृष्ण पिल्ले,
आर्मी आर्डनेन्स कोर ।

दिसम्बर 1971 की संक्रिया में हवलदार कृष्ण पिल्ले पूर्वी क्षेत्र में गोलाबारूद स्टोरकीपर के रूप में एक कोर आर्डनेन्स मेन्टेनेन्स

प्लाटून के साथ थे। 19 दिसम्बर 1971 को जब वह अपनी यूनिट लाइनों में वापस लौट रहे थे तो इन्होंने एक विस्फोट की आवाज सुनी। यह विस्फोट शत्रु से पकड़े गए गोलाबारूद के पांच वाहनों में हुआ था। हवलदार पिल्ले अपनी जान को खतरे में डालकर रेंगते हुए घटनास्थल पर पहुंचे जहां गोले फट रहे थे और मलवा तथा प्रक्षेपणास्त्र इधर-उधर उड़ रहे थे। इन्होंने एक शव को आग में से बाहर निकाला और अन्य लोगों की सहायता से इस भीषण आग को बुझाया और घायलों को वहां से बाहर निकाला।

इस कार्रवाई में हवलदार कृष्ण पिल्ले ने साहस, दृढ़ता और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

71. 2838433 कम्पनी हवलदार मेजर जय लाल, राजपूताना राइफल्स। (**मरणोपरान्त**)

दिसम्बर 1971 की संक्रिया में कम्पनी हवलदार मेजर जय लाल पूर्वी क्षेत्र में एक इन्फैन्ट्री बटालियन के साथ थे। 15 दिसम्बर 1971 को शत्रु के कड़े प्रतिरोध तथा सही गोलीबारी के कारण रेल अक्ष के समानान्तर तांगी की ओर बटालियन का बढ़ना रुक गया। कम्पनी हवलदार मेजर जय लाल ने दो राइफलमैनों के साथ प्रचण्ड वेग से शत्रु के एम० एम० जी० बंकरों पर धावा बोल दिया और उसके पांच सैनिकों को मार डाला और मझौली मशीनगन को अपने कब्जे में ले लिया। इस मुठभेड़ में वह स्वयं भी बुरी तरह घायल हो गए लेकिन फिर भी वह 20 मिनट तक अपनी प्लाटून के साथ आगे बढ़ते गये और वीरगति प्राप्त करने से पूर्व शत्रु का सफाया करते हुए उसके ठिकाने तक पहुंच गए। शत्रु दल जिसमें 100 से अधिक सैनिक थे, दहशत में अपने सभी मृत और घायल सैनिकों को छोड़कर भाग खड़ा हुआ।

इस कार्रवाई में कम्पनी हवलदार मेजर जय लाल ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

72. 2944513 हवलदार प्रयाग सिंह, राजपूत रेजीमेन्ट।

दिसम्बर 1971 की संक्रिया में हवलदार प्रयाग सिंह पूर्वी क्षेत्र में एक इन्फैन्ट्री बटालियन के साथ थे। ये एक इन्फैन्ट्री कम्पनी के सैक्शन कमाण्डर थे और इन पर एक फौज की सुरक्षा का भार सौंपा गया था जो कि दिघी में एक सड़क पर रुकावट पैदा किए हुए वहां डटे हुए थे। जब पाकिस्तानी सेना ने वहां पर हमला किया तो फौज पीछे हट गयी। हवलदार प्रयाग सिंह ने शत्रु को पीछे खदेड़ने/भगाने के लिए अपने सैनिकों को प्रोत्साहित किया। जब शत्रु का एक मशीनगनर अपनी मझौली मशीन गन के साथ उनकी खाई के पास आया तो ये खाई से बाहर निकल आए और इन्होंने गनर को मार कर उसकी मझौली मशीनगन को अपने कब्जे में ले लिया। यदि वह इतना अदम्य साहस न दिखाते तो शत्रु सड़क में पैदा की गई रुकावट को साफ कर देता और समूची योजना को खतरा पैदा हो जाता।

इस कार्रवाई में हवलदार प्रयाग सिंह ने सेना की सर्वोत्तम परम्परा के अनुरूप अदम्य साहस और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

73. 1138323 हवलदार राम चन्द्र, आर्टिलरी।

पूर्वी क्षेत्र में रक्षात्मक संक्रिया के दौरान हवलदार राम चन्द्र एक माउंटेन रेजीमेन्ट के साथ थे। इन्हें शत्रु से उलझने का आदेश दिया गया जो कि एक रेलवे स्टेशन की रक्षा कर रहा था और सुदृढ़ तथा अभेद बंकरों से छोटे हथियारों व मशीनगनों से कारगर गोलीबारी द्वारा हमारे सैनिकों को आगे बढ़ने से रोके हुए था। ये बड़े साहस के साथ अपनी गन को आगे ले गए और उसे शत्रु के बिल्कुल पास लाकर चलाना शुरू किया। इन्होंने शीघ्र ही शत्रु के तेरह बंकरों को नष्ट कर दिया, उसके काफी सैनिकों को हताहत और हथियारों को बेकार कर दिया। शत्रु अपने मोर्चों को छोड़ने तथा लड़ाई से पीछे हट जाने पर विवश हो गया।

इस कार्रवाई में हवलदार राम चन्द्र ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

74. 1028678 दफादार उत्तम सिंह, 70 आरमर्ड रेजीमेण्ट।

दिसम्बर 1971 की संक्रिया में दफादार उत्तम सिंह फाजिल्का क्षेत्र में एक आरमर्ड रेजीमेण्ट के साथ थे। ये एक भू-प्रक्षेपणास्त्र टुकड़ी की कमान कर रहे थे। 7 दिसम्बर 1971 की सुबह जब इन्हें एक इनफैन्ट्री बटालियन के पास शत्रु के एक टैंक की मौजूदगी का पता चला तो यह अपनी गन टुकड़ी को वहां ले गये और शत्रु के टैंक को नष्ट कर दिया। बाद में उसी दिन एक पिल बाक्स से शत्रु के दो और टैंकों से भिड़ गए। इस कार्रवाई में उनकी रेजीमेण्ट के कुछ अफसर और सैनिक हताहत हुए। अपनी जान की परवाह न करते हुए वह अपनी रेजीमेण्ट के तीन घायल अफसरों को खतरे के क्षेत्र से बाहर निकाल ले गये और इस प्रकार उनकी जान बचा ली।

इस कार्रवाई में दफादार उत्तम सिंह ने साहस और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

75. 1169602 हवलदार (गनर) मुथिया नागालिंगन्, 63/45 एयर डिफैन्स रेजीमेण्ट।

दिसम्बर 1971 की संक्रिया में हवलदार (गनर) मुथिया नागालिंगन् पश्चिमी क्षेत्र में एक एयर डिफैन्स रेजीमेण्ट के साथ थे। इनकी टुकड़ी बख्तरबन्द ब्रिगेड टैंकों की शत्रु के हवाई आक्रमण से रक्षा कर रही थी। 14 दिसम्बर 1971 की शाम को शत्रु के चार मिग विमानों ने इन पर भारी गोले बरसाये। लेकिन इन्होंने बड़ी सूझ-बूझ से काम लिया और शत्रु के विमानों पर गोले फैंकते रहे तथा उनके एक विमान को मार गिराया जो आकाश में जलता हुआ देखा गया।

इस संक्रिया में हवलदार (गनर) मुथिया नागालिंगन् ने साहस और व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया।

76. 1120003 हवलदार (गनर) एन० जे० जार्ज, 63/65 एयर डिफैन्स रेजीमेण्ट।

दिसम्बर 1971 की संक्रिया में हवलदार (गनर) एन० जे० जार्ज पश्चिमी क्षेत्र में एक एयर डिफैन्स रेजीमेण्ट के साथ थे।

इनकी टुकड़ी बख्तरबन्द ब्रिगेड के कुछ टैंकों की शत्रु के हवाई हमले से रक्षा कर रही थी। 14 दिसम्बर 1971 को लगभग 1230 शत्रु के चार मिग विमानों ने इन पर हमला किया। हवलदार (गनर) जार्ज शत्रु के विमानों पर गोले फेंकते रहे और उनमें से एक को मार गिराया।

इस संक्रिया में हवलदार (गनर) एन० जे० जार्ज ने साहस और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

77. 4238627 लांस हवलदार राम कठिन पांडे, बिहार रेजीमेण्ट।

दिसम्बर 1971 की संक्रिया में लांस हवलदार राम कठिन पांडे अखोरा क्षेत्र में एक इन्फैन्ट्री बटालियन के साथ थे। 3/4 दिसम्बर 1971 की रात को एक गांव पर हमले के दौरान जब यह अग्रिम कम्पनी में अपने कमांडिंग अफसर के साथ जा रहे थे उनके सिर पर एक किरच आकर लगी और जोरों से खून बहने लगा। लेकिन इन्होंने वहां से हटाए जाने से इन्कार कर दिया और अनुरोध किया कि उनके जख्म पर पट्टी बांध दी जाय। खून बहने और उसके परिणामस्वरूप कमजोरी आ जाने के बावजूद वह तब तक अपने दल के साथ आगे बढ़ते रहे जब तक कि उसने अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लिया।

इस कार्रवाई में लांस हवलदार राम कठिन पांडे ने अनुकरणीय साहस, दृढ़ता और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

78. 1563792 लांस हवलदार राम राव मोरे, इन्जीनियर्स।

दिसम्बर 1971 की संक्रिया में लांस हवलदार राम राव मोरे पूर्वी क्षेत्र में एक इन्जीनियर्स रेजीमेण्ट के साथ थे। 6 दिसम्बर 1971 को ये एक इन्जीनियर प्लाटून के सैक्शन कमाण्डर थे जिसे एक सुरंग क्षेत्र में एक निरापद पथ बनाने का काम सौंपा गया था। जब यह दल उस क्षेत्र में 100 गज तक आ गया तो शत्रु ने उस पर स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी शुरू कर दी। लेकिन हवलदार राम राव मोरे आगे बढ़ते ही रहे। शीघ्र ही शत्रु ने बंकर से बी० एम० जी० से उन पर गोलीबारी शुरू कर दी। गम्भीर खतरे की परवाह किये बिना वह सीधे बी० एम० जी० तक गये और गोली चलाकर उसके पीछे बैठे शत्रु को मार डाला। जब शत्रु के एक और सैनिक ने बी० एम० जी० को चलाने की कोशिश की तो इन्होंने उसे भी मार डाला। शत्रु के कुछ हथियार और गोला-बारूद भी हमारे हाथ लगा।

इस कार्रवाई में लांस हवलदार राम राव मोरे ने साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

79. 4442263 नायक गुरबचन सिंह, सिख लाइट इन्फैन्ट्री। (**मरणोपरान्त**)

दिसम्बर 1971 की संक्रिया में नायक गुरबचन सिंह उड़ी क्षेत्र में एक इन्फैन्ट्री बटालियन के साथ थे। 4/5 दिसम्बर 1971 की रात को वे उस कम्पनी के अगले सेक्शन की कमान कर रहे थे जिसे एक हिमाच्छादित स्थल को अपने कब्जे में लेने का आदेश दिया गया। उन्होंने जबरदस्त लड़ाई के दौरान अपनी कार्रवाई में बाधक शत्रु के एक मशीनगन बंकर पर हमला किया और एक हथगोला फेंक कर उसे शांत कर दिया और स्वयं भी घायल हो गए और काफी खून बहने लगा। लेकिन फिर भी वे अपने उस कम्पनी कमाण्डर की मदद के लिए गए जिस पर कि शत्रु की मशीनगन की गोली लगी थी। जब यह अपने कम्पनी कमाण्डर को उठाकर ला रहे थे तो उन पर शत्रु की मशीनगन की गोलियों की बौछार आकर लगी और वे वहीं पर वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस कार्रवाई में नायक गुरबचन सिंह ने उत्कृष्ट साहस और दृढ़ता का परिचय दिया।

80. 6278578 नायक गोपाल सिंह, सिगनल्स।

दिसम्बर 1971 की संक्रिया में नायक गोपाल सिंह पश्चिमी क्षेत्र में सिगनल रेजीमेण्ट की एक इनफैन्ट्री ब्रिगेड सिगनल कम्पनी के साथ थे। 3/4 दिसम्बर 1971 की रात को शत्रु ने एक इनफैन्ट्री बटालियन की तीन प्लाटूनों पर तोपखानों से गोलाबारी की और हमारी सिगनल संचार-व्यवस्था को भंग कर दिया। नायक गोपाल सिंह अपनी जान की किंचित् परवाह किये बिना एक खम्बे से दूसरे खम्बे पर जा-जाकर टेलीफोन तार की जांच करते गये। इन्होंने शीघ्र ही संचार-व्यवस्था को ठीक करने में सफलता प्राप्त कर ली।

इस कार्रवाई में नायक गोपाल सिंह ने दृढ़ता और कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

81. 4336015 नायक लाल बुआंगा लुभाई, 2 असम।

दिसम्बर 1971 की संक्रियाओं में नायक लाल बुआंगा लुभाई एक कम्पनी में सैक्शन कमाण्डर थे जो पश्चिमी क्षेत्र में एक मोर्चा सम्भाले हुए थी। इस मोर्चे पर शत्रु से भिड़कर इन्होंने उसके सात जवानों को मार डाला। शत्रु के एक शव को उसके छः मैगजीनों सहित एक लाइट मशीनगन, एक राइफल तथा दो हथगोले से जाने में श्रेय इन्हीं को ही था।

इस कार्रवाई में नायक लाल बुआंगा लुभाई ने साहस और नेतृत्व का परिचय दिया।

82. 1320293 नायक गोविन्द रमाकान्त चन्द्र कामथ, 5 इन्जीनियर रेजीमेण्ट।

दिसम्बर 1971 की संक्रिया में नायक गोविन्द रमाकान्त चन्द्र कामथ एक ब्रीचिंग दल के इन्चार्ज थे जिसे पूर्वी क्षेत्र में बस्तर नदी के साथ-साथ शत्रु सुरंग क्षेत्र में से रास्ता निकालने का काम सौंपा गया था। तोपखाने से हो रही भारी गोलाबारी की परवाह किये बिना ये अपने दल को सुरंग क्षेत्र में ले गये और अपना काम पूरा कर दिया। चूंकि उस निरापद मार्ग के सीमांकन के लिए समय नहीं था, अतः इन्होंने टैंकों को पार कराने के लिए मार्ग के दोनों ओर अपने सैनिक खड़े कर दिये। इन्होंने यह काम तोपखाने की भारी गोला-बारी के होते रहने के बावजूद पूरा किया और सभी टैंकों को वहां से गुजार दिया।

इस कार्रवाई में नायक गोविन्द रमाकान्त चन्द्र कामथ ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

83. 1174635 नायक राम कृष्ण यादव,
आर्टिलरी।

8 दिसम्बर 1971 को लक्षम पर हमले में सहायता कर रही एक लाइट बटालियन के सामान ले जाने वाले वाहनों पर शत्रु की भारी गोलाबारी होने लगी। सामनपुर के पास गोलाबारूद से लदे एक वाहन में आग लग गयी। वह आग पास ही खड़े दूसरे वाहनों के साथ-साथ फूस की झोपड़ियों में भी फैल गयी जिसके फलस्वरूप गोलाबारूद में विस्फोट होने लगा। नायक राम कृष्ण यादव अपनी जान की परवाह किये बिना एक खाई से दूसरे खाई में गये और ड्राइवरों से अपने वाहन हटा लेने का अनुरोध किया। इस सामयिक कार्रवाई और पहल के कारण वह तीन वाहनों और अन्य महत्वपूर्ण उपस्करों को विनाश से बचाने में सफल रहे।

इस कार्रवाई में नायक राम कृष्ण यादव ने साहस और कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

84. 4155986 नायक नारायण सिंह, (**मरणोपरान्त**)
कुमाऊं रेजीमेण्ट।

दिसम्बर 1971 की संक्रिया में कुमाऊं रेजीमेण्ट की बटालियन की एक प्लाटून को कुमुक के रूप में कलिरहाट जाने का आदेश दिया गया। यह पूर्वी क्षेत्र को जोड़ने वाला एक महत्वपूर्ण स्थान था जिस पर शत्रु ने घेरा डाल रखा था और वहां जोरों की लड़ाई चल रही थी। नायक नारायण सिंह के अधीन इस प्लाटून का अगुवा सेक्शन तेजी से उस स्थान पर पहुंचा। जब इन्हें यह आदेश मिला कि वे घेरा डाले हुए शत्रु से दक्षिणी भाग से भिड़ जाय तो उन्होंने सेक्शन की हल्की मशीनगन उठाई और तुरन्त अपने सेक्शन को आगे ले गए भले ही उस समय शत्रु तेज गोलीबारी कर रहा था। जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गये, उन्होंने गोलीबारी जारी रखी। जब ये 500 गज से भी अधिक आगे बढ़ चुके तो इन्हें एक गोली आ लगी और ये घायल हो गये। गिरते-गिरते भी इन्होंने कारगर ढंग से गोली चलाना जारी रखा और मरते दम तक गोली चलाते रहे।

इस कार्रवाई में नायक नारायण सिंह ने उच्च कोटि के साहस, नेतृत्व और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

85. 3147611 नायक बजरंग लाल, (**मरणोपरान्त**)
जाट रेजीमेण्ट।

नायक बजरंग लाल पूर्वी क्षेत्र में बान्दर रेलवे स्टेशन पर हमले के दौरान जाट रेजीमेण्ट की बटालियन के एक सेक्शन का नेतृत्व कर रहे थे। जब वह अपने लक्ष्य से केवल 20 गज दूरी पर थे तो पश्चिमी की ओर से शत्रु मझौली मशीनगन से भारी गोलीबारी शुरू कर दी और बड़ी संख्या में हमारे सैनिकों को हताहत कर दिया। प्लाटून का नेतृत्व करते हुए उन्होंने निर्भीकतापूर्वक हमला किया और मझौली मशीनगन को शान्त कर दिया। लेकिन वह स्वयं घायल हो गये। फिर भी वे दिलेरी से अपने मूल लक्ष्य पर हमला करते रहे और उनकी प्लाटून ने उसे प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर ली। इसी बीच अत्यधिक खून बहने से उनकी मृत्यु हो गयी।

इस कार्रवाई में नायक बजरंग लाल ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यपरायणता परिचय दिया।

86. 2851602 नायक राम सिंह, (**मरणोपरान्त**)
राजपूताना राइफल्स।

पूर्वी क्षेत्र में संक्रिया के दौरान नायक राम सिंह अपनी कम्पनी की एक मझौली मशीनगन टुकड़ी के कमाण्डर थे। शत्रु की एक मझौली मशीनगन की गोलीबारी के कारण तालूतिया रेलवे स्टेशन के पास हमारी कम्पनी को रुक जाना पड़ा। नायक राम सिंह ने शत्रु की मझौली मशीनगन के ठिकाने पर हमला किया और आग बढ़ते-बढ़ते वह शत्रु के बंकर तक पहुंच गए। उन्होंने बंकर में हथगोला फेंक कर शत्रु की मझौली मशीनगन का मुंह बन्द कर दिया। इस कार्रवाई में इन्हें शत्रु को गोली लगी जिससे इनकी मृत्यु हो गयी।

इस कार्रवाई में नायक राम सिंह ने अति उच्च कोटि के साहस, दृढ़ता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

87. 3950128 नायक रोशन लाल,
डोगरा रेजीमेण्ट।

4 दिसम्बर 1971 को डोगरा रेजीमेण्ट की एक बटालियन को पूर्वी क्षेत्र में मदारबरे के उत्तर में रेलवे के पुल से शत्रु को हटाने का काम सौंपा गया। जब हमला किया गया तो शत्रु ने एकाएक चारों ओर से गोलीबारी शुरू कर दी। शत्रु की एक मझौली मशीनगन बड़ी संख्या में हमारे सैनिकों को हताहत कर रही थी। नायक रोशन लाल प्लाटून के एक सेक्शन का नेतृत्व कर रहे थे जिसे इस मझौली मशीनगन को नष्ट करने का आदेश दिया गया था। इन्होंने कूल्हे से अपनी हल्की मशीनगन से गोलीबारी करते हुए शत्रु पर हमला किया। जब ये शत्रु के बंकर से 100 गज दूर थे तो इनके एक गोला आकर लगा। घावों के बावजूद वह तब तक आगे बढ़ते रहे जब तक कि शत्रु का बंकर निष्क्रिय नहीं कर दिया गया।

इस कार्रवाई में नायक रोशन लाल ने साहस, दृढ़ता और नेतृत्व का परिचय दिया।

88. 2553087 नायक मथाई जैकब मैथ्यू,
मद्रास रेजीमेण्ट।

16 दिसम्बर 1971 को मद्रास रेजीमेण्ट की एक बटालियन का पूर्वी क्षेत्र में मिलातला ग्राम में शत्रु से सामना हुआ। जब डोगरो की एक कम्पनी इस जगह के पास हमले की तैयारी कर रही थी तो शत्रु ने उस पर तोपखाने से भारी और सही गोलाबारी शुरू कर दी जिसके परिणामस्वरूप हमारे बहुत से सैनिक हताहत हो गये। नायक मथाई जैकब मैथ्यू ने, जो मद्रास रेजीमेण्ट की बटालियन के साथ थे, आगे बढ़े और शत्रु की भारी गोलीबारी के बावजूद घायलों को घसीटते हुए पास ही सुरक्षित स्थानों में ले जाना शुरू किया। ऐसा करते हुए एक किरच के आ लगने से इनकी बायीं भुजा जाती रही।

अपनी जान पर खेलकर दूसरी बटालियन के घायल कार्मिकों को बचाने में नायक मथाई जैकब मैथ्यू ने भारतीय सेना की सर्वोत्तम परम्परा के अनुरूप साहस और मैत्री भावना का परिचय दिया।

89. 3145533 नायक बलजीत सिंह, जाट रेजीमेण्ट। **(मरणोपरान्त)**

6 दिसम्बर 1971 को नायक बलजीत सिंह और उनकी टैंकमार टुकड़ी को पूर्वी क्षेत्र में कण्डीरपुर के पास पीछे हटते हुए शत्रु के मार्ग में पड़ने वाली सड़क को रोकने का काम सौंपा गया था। पीछे हटते हुए शत्रु ने इस अवरोध को दूर करने के लिए पूरे जोर से हमला किया। नायक बलजीत सिंह ने अपनी हल्की मशीनगन से शत्रु के सैनिकों को कड़ी संख्या में हताहत किया और सड़क-अवरोध को हटाने से उसके प्रयत्न को विफल किया। इसी दौरान घायल होने पर इनकी मृत्यु हो गयी।

इस कार्रवाई में नायक बलजीत सिंह ने साहस और दृढ़ता का परिचय दिया।

90. 7044870 नायक राजपाल सिंह, कोर आफ इलैक्ट्रिकल एण्ड मैकेनिकल इन्जीनियर्स।

दिसम्बर 1971 की संक्रिया में हिल्ली क्षेत्र में रक्षात्मक कार्रवाई के दौरान नायक राजपाल सिंह ने शत्रु के नजदीक हमारे फंसे टैंकों को वापस निकाल लाने के लिए अपनी सेवायें अर्पित कीं। शत्रु के सामने ही उसकी लगातार तोपखाने और छोटे हथियारों की गोलाबारी के बीच ये दो टैंकों को वापस निकाल लाए। शत्रु द्वारा भारी और कारगर गोलीबारी के दौरान यदि नायक राजपाल सिंह तत्काल और त्वरित गति से यह कार्रवाई न करते तो शत्रु इन टैंकों को नष्ट कर देता।

इस कार्रवाई में नायक राजपाल सिंह ने साहस, दृढ़ता और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

91. 1518755 नायक बचन चवण, इंजीनियर्स। **(मरणोपरान्त)**

1971 की संक्रिया के दौरान नायक बचन चवण नौशेरा क्षेत्र में, जहां शत्रु की सुरंगें बिछी हुई थीं, एक निरापद पथ निकालने वाले एक दल का नेतृत्व कर रहे थे। इन्होंने अनेक स्थानों से सुरंगें साफ कीं। 5 दिसम्बर 1971 को उन्होंने राजौरी थानाभण्डी सड़क की एक पुलिया पर शत्रु के एजेन्टों द्वारा बिछाई गई सुरंगों के फ्यूज बड़ी कुशलता और फुर्ती से अलग कर दिए। बाद में 20 दिसम्बर 1971 को शत्रु से छीनी एक जगह पर इन्फैन्ट्री के लिए निरापद पथ बनाते समय एक सुरंग दुर्घटना में इनकी मृत्यु हो गयी।

नायक बचन चवण ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

92. 4240236 लांस नायक राम चन्द्र पाण्डे, बिहार रेजीमेण्ट।

15/16 दिसम्बर 1971 की रात को लांस नायक राम चन्द्र पाण्डे पूर्वी क्षेत्र में बाजल में शत्रु के एक ठिकाने पर एक कम्पनी द्वारा किये गये हमले के दौरान सैक्शन कमाण्डर थे। जब शत्रु की मशीनगन से भारी गोलीबारी के कारण इनके सैक्शन का आगे बढ़ना कठिन हो गया तो यह रेंगते हुए आगे बढ़े और एक हथगोला फेंककर शत्रु की मशीनगन को शान्त कर दिया।

इस कार्रवाई में लांस नायक राम चन्द्र पाण्डे ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

93. 4339957 लांस नायक सांगथंगा लुशाई, असम रेजीमेण्ट।

7/8 दिसम्बर 1971 को लांस नायक सांगथंगा लुशाई पूर्वी क्षेत्र में शत्रु की स्थितियों के बहुत भीतर टोह लगा रहे एक गश्ती दल के सदस्य थे। जब यह गश्ती दल अपना काम सफलतापूर्वक पूरा करके वापस लौट रहा था तो यह एक सुरंग क्षेत्र में भटक गया। सुरंग क्षेत्र को पार करते हुए गश्ती दल के नेता और एक और जवान घायल हो गए। लांस नायक लुशाई के भी मुंह, टांग और बाहों में किरच से चोटें आईं। अपनी चोटों की उपेक्षा करके और जान की परवाह न करते हुए इन्होंने गश्ती दल के नेता तथा उस जवान को सुरंग क्षेत्र से बाहर निकाला और उन्हें वहां से पीछे भेजने की व्यवस्था की। इस प्रकार उन्होंने अपने साथियों की बहुमूल्य जान की रक्षा की।

इस कार्रवाई में लांस नायक सांगथंगा लुशाई ने साहस और दृढ़ता का परिचय दिया।

94. 9405856 लांस नायक गुरुदास राय, 11 गोरखा राइफल्स।

पूर्वी क्षेत्र में रक्षात्मक संक्रिया के दौरान लांस नायक गुरुदास राय को एक विशेष गश्तीदल के कमाण्डो ग्रुप के साथ लगाया गया था जिसे एक मंझौली मशीनगन को नष्ट करने का काम सौंपा गया था। शत्रु के बंकर से लगभग 100 गज की दूरी पर गश्ती दल के नेता ने अपने दल को रोक दिया ताकि शत्रु को उसका पता न चल सके और वह स्वयं केवल लांस नायक राय को साथ लेकर आगे बढ़ा। अब उन्हें पता चला कि मंझौली मशीनगन के बंकर के साथ ही एक और बंकर से शत्रु हल्की मशीनगन से भी गोलीबारी कर रहा है और जब तक इस मशीनगन का मुंह बन्द नहीं किया जाता, आगे बढ़ना असम्भव है। लांस नायक राय रेंग कर आगे बढ़े और इन्होंने एक हथगोला फेंक कर हल्की मशीनगन को शान्त कर दिया। इस दौरान शत्रु के एक गोले से गश्ती दल के नेता गम्भीर रूप से घायल हो गये। लांस नायक गुरुदास राय तुरन्त उनकी मदद के लिए आये और उन्हें सुरक्षित कमांडिंग चौकी पर पहुंचा दिया।

अपने गश्ती दल के नेता की सहायता करने में लांस नायक गुरुदास राय ने बड़े साहस, अटूट दृढ़ता, अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की पूर्ण उपेक्षा एवं अगाध मैत्री भावना का परिचय दिया।

95. 1341568 लांस नायक रमण, 4 इंजीनियर रेजीमेण्ट।

13 दिसम्बर 1971 को लांस नायक रमण अपनी कम्पनी के साथ पूर्वी क्षेत्र में ब्राह्मण बारिया में पांच स्टीमर लांचरों के लिए रास्ता बनाने के काम में लगे हुए थे। तेज धारा और कड़ी सर्दी की परवाह किये बिना ये लगातार 16 घण्टे तक पानी में रहे और मोटर लांचरों के लिए अपेक्षित नौसंचालन मार्ग की गहराई को बढ़ाने के लिए पानी में से पड़े-पड़े पत्थरों को निकालने के लिए बार-बार गोता लगाते रहे।

इस संक्रिया में लांस नायक रमण ने साहस, दृढ़ता और कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया।

96. 4158281 लांस नायक उमेद सिंह, (**मरणोपरान्त**)
14 कुमाऊं रेजीमेण्ट।

लांस नायक उमेद सिंह कुमाऊं रेजीमेण्ट में एक बटालियन की एक प्लाटून के एक सेक्शन के सेकण्ड-इन-कमाण्ड थे। इस सेक्शन को पूर्वी क्षेत्र में रक्षात्मक संक्रिया के दौरान, नीलाकायी में स्थित एक चौकी पर कब्जा करने का आदेश दिया गया था। हमले के दौरान शत्रु की तोपखाने और स्वचालित हथियारों की गोलीबारी के कारण उनका सेक्शन आगे नहीं बढ़ पा रहा था। लेकिन इन्होंने हल्की मशीनगन की गोलीबारी से शत्रु को उलझाए रखा। जब उनकी हल्की मशीनगन का चालक जख्मी होने से मारा गया तो वह रेंग कर गन के पास पहुंचे और स्वयं उस गन से शत्रु पर गोलीबारी करने लगे। यद्यपि गोली लगने से इनकी बांह में घाव हो गया था, लेकिन फिर भी यह शत्रु पर गोलीबारी करते रहे। तभी शत्रु की एक गोली उन पर आ लगी और वे वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस कार्रवाई में लांस नायक उमेद सिंह ने अनुकरणीय साहस और दृढ़ता का परिचय दिया।

97. 1526465 लांस नायक सम्भाजी भोंसले,
इंजीनियर्स।

13/14 दिसम्बर 1971 की रात को 9 पैरा कमाण्डोज़ को पश्चिमी क्षेत्र के पुंछ इलाके में मण्डहोल में स्थित शत्रु की गनों को नष्ट करने का आदेश दिया गया था। लांस नायक सम्भाजी भोंसले ने एक अन्य रैंक के साथ शत्रु की गनों पर हमला किया और शत्रु को तोपों से परे तक खदेड़ते हुए हुई मुठभेड़ में तीन को मृत्यु के घाट उतार दिया। हमला जारी रखते हुए इन्होंने शत्रु की 122 एम० एम० की एक और गन को नष्ट कर दिया तथा उसके गोलाबारूद के एक ढेर को उड़ा दिया।

इस कार्रवाई में लांस नायक सम्भाजी भोंसले ने साहस और दृढ़ता का परिचय दिया।

98. 3951963 लांस नायक रफी राम,
डोगरा रेजीमेन्ट।

14/15 दिसम्बर 1971 की रात को लांस नायक रफी राम डोगरा रेजीमेन्ट की एक बटालियन की एक कम्पनी में स्ट्रेचर स्कवाड के इंचार्ज थे। हमले के दौरान शत्रु की सुरंगों और स्वचालित तथा छोटे हथियारों की गोलाबारी से इस कम्पनी के बहुत से सैनिक हताहत हो गए थे। अपनी जान को हथेली में रखकर लांस नायक रफी राम सुरंग क्षेत्र में घुस गए और उन्होंने शत्रु की गोलाबारी के बावजूद हताहतों को वहां से निकालना शुरू कर दिया। जब वे सुरंग क्षेत्र से एक आहत सैनिक को ला रहे थे तो उनका पैर कार्मिक-रोधी सुरंग पर पड़ गया और उनका पांव उड़ गया।

इस कार्रवाई में लांस नायक रफी राम ने उत्कृष्ट साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

99. 6610254 लांस नायक (ड्राइवर एम० टी०)
सुरेश पाल,
आर्मी सर्विस कोर।

17 दिसम्बर 1971 को शंकरगढ़ क्षेत्र में हमारी एक इन्फैन्ट्री बटालियन पर शत्रु ने बहुत दबाव डाल रखा था। लांस नायक सुरेश पाल को इस बटालियन को सुरंगें पहुंचाने का काम सौंपा गया। जब ये सुरंगें को वाहन में ले जा रहे थे तो शत्रु ने इन पर जबरदस्त हवाई हमला किया और ये गम्भीर रूप से घायल हो गए। अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए इन्होंने अपने घावों की परवाह नहीं की और अपने वाहन को लेकर तब तक आगे बढ़ते रहे जब तक कि शत्रु के एक और गोले के सीधे आ लगने से वह वाहन नष्ट नहीं हो गया।

इस कार्रवाई में लांस नायक सुरेश पाल ने अनुकरणीय साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

100. 2963472 सिपाही मकसूद खान,
राजपूत रेजीमेण्ट।

13/14 दिसम्बर 1971 की रात को सिपाही मकसूद खान राजपूत रेजीमेण्ट की एक बटालियन की एक कम्पनी के साथ थे जिसने फाजिल्का क्षेत्र में शत्रु के एक ठिकाने पर हमला किया। जब हमले का दबाव बढ़ाया गया तो शत्रु ने दोनों छोरों से मशीनगन से गोलाबारी की जिससे हमारे सैनिक बड़ी संख्या में हताहत होने लगे। सिपाही मकसूद खान ने हल्की मशीनगन पर हमला करके तथा उसके सैनिकों को मार कर अनुकरणीय साहस का परिचय दिया। इन्होंने हल्की मशीनगन को भी छीन लिया और इस प्रकार कम्पनी द्वारा किए जाने वाले हमले के लिए रास्ता खोल दिया।

इस कार्रवाई में सिपाही मकसूद खान ने सराहनीय साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

101. 3967854 सिपाही अंगत राम, (**मरणोपरान्त**)
डोगरा रेजीमेण्ट।

10/11 दिसम्बर 1971 की रात को डोगरा रेजीमेण्ट की एक कम्पनी की एक बटालियन ने फिरोजपुर क्षेत्र में शत्रु के एक ठिकाने पर हमला किया। थोड़ी जगह पर कब्जा कर लेने के बाद हमारी कम्पनी पर शत्रु की मशीनगन और छोटे हथियारों से भारी गोलाबारी शुरू हो गयी। सिपाही अंगत राम एक अन्य सिपाही को लेकर अपने कम्पनी कमाण्डर के साथ मशीनगन का मुंह बन्द करने के लिए गये। जब वे रेंग कर आगे बढ़ रहे थे तो उनके बायें कंधे पर आघात लगा लेकिन फिर भी अपनी जान पर खेल कर वे रेंगते हुए आगे की ओर बढ़ते रहे और मशीनगन पर ग्रेनेड फेंक कर उसे नष्ट करने में सफलता प्राप्त की। इस कार्रवाई में उनके एक और घाव लगा और वे वीरगति को प्राप्त हो गए। उनके साहसपूर्ण कार्य के फलस्वरूप ही कम्पनी ने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया।

इस कार्रवाई में सिपाही अंगत राम ने अनुकरणीय साहस, दृढ़ता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

102. 2451285 सिपाही चमेल सिंह,
पंजाब रेजीमेण्ट।

दिसम्बर 1971 की संक्रिया में रक्षात्मक कार्रवाई के रूप में पंजाब रेजीमेण्ट की एक बटालियन की एक कम्पनी ने अगरत्तला क्षेत्र में शत्रु के एक ठिकाने पर हमला किया। शत्रु की भारी गोलीबारी के कारण लक्ष्य के पास पहुंच कर हमारा हमला रुक गया। सिपाही चमेल सिंह दौड़कर शत्रु के पहले बंकर की ओर गये और वहां हल्की मशीनगन की नली को पकड़कर खींच लिया और फिर बंकर में एक हथगोला फेंक कर उसके सभी सैनिकों को मार डाला।

इस वीरतापूर्ण कार्रवाई में सिपाही चमेल सिंह ने सराहनीय साहस, बड़ी सूझ-बूझ और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

103. 3161165 सिपाही ऊधमी राम,
जाट रेजीमेण्ट।

दिसम्बर 1971 की संक्रिया में जाट रेजीमेण्ट पूर्वी क्षेत्र में रक्षात्मक कार्रवाई के दौरान एक रक्षित ठिकाने पर कब्जा किए हुए थी। सिपाही ऊधमी राम एक ऐसे सेक्शन के साथ थे जिसका संचार सम्पर्क टूट गया था और जो अलग-अलग पड़ गया था। ये उस समय सन्तरी की ड्यूटी पर थे जब इन्होंने कुछ व्यक्तियों को अपनी ओर आते देखा। जब शत्रु का एक सिपाही काफी नजदीक आ गया तो ये उस पर झपट पड़े और उसकी हल्की मशीनगन छीनकर इन्होंने तीन गैर-फौजी मार्गदर्शकों सहित उसे आत्मसमर्पण के लिए मजबूर कर दिया। 15 मिनट बाद इन्होंने बड़ी संख्या में शत्रु के सैनिकों को अपनी ओर आते देखा। शत्रु के नजदीक आने तक इन्होंने अपने सेक्शन को डटे रहने का सिगनल दिया जैसे ही शत्रु पास आया उन्होंने बड़े जोरों से गोलाबारी शुरू कर दी जिसके परिणामस्वरूप शत्रु के दस और सैनिकों को अपने हथियारों सहित आत्मसमर्पण कर दिया। इस कार्रवाई में सिपाही ऊधमी राम ने सराहनीय साहस और सूझबूझ का परिचय दिया।

104. 3960184 सिपाही राम चन्द्र,
डोगरा रेजीमेण्ट।

11 दिसम्बर 1971 को डोगरा रेजीमेण्ट की एक बटालियन की एक कम्पनी ने खुलना क्षेत्र में शत्रु के एक ठिकाने पर हमला किया। उन पर शत्रु की भारी गोलाबारी और छोटे हथियारों से गोलाबारी हो रही थी। शत्रु की एक हल्की मशीनगन हमें आगे नहीं बढ़ने दे रही थी और उसकी गोलियों से हमारे अनेक सैनिक हताहत हो गए थे। सिपाही राम चन्द्र, जो प्लारी हवलदार कम्पनी की प्लाटून के हल्की मशीनगन नम्बर एक के चालक थे अपनी जान हथेली पर रख कर शत्रु पर टूट पड़े और उसकी मशीनगन को शांत कर दिया। लेकिन इस कार्रवाई में उन्हें गम्भीर चोटें आयीं।

इस कार्रवाई में सिपाही राम चन्द्र ने सराहनीय साहस, दृढ़ता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

105. 13911001 सिपाही/नर्सिंग सहायक राम चन्द,
आर्मी मेडिकल कोर।

16 दिसम्बर 1971 को डोगरा रेजीमेन्ट की एक बटालियन को खुलना क्षेत्र में शत्रु के मोर्चे पर हमला करके उसे तोड़ने का काम सौंपा गया था। बटालियन ने यह काम कर डाला लेकिन उसके बहुत से सैनिक हताहत हो गये थे। शत्रु की गोलाबारी अभी भी चल रही थी। अतः सिपाही/नर्सिंग सहायक राम चन्द को अपने दल के साथ घायलों का प्रथमोचार करने और उन्हें वहां से निकालने का काम सौंपा गया। लड़ाई वाले क्षेत्र में वह शत्रु द्वारा जबरदस्त गोलाबारी के बीच में एक घायल से दूसरे घायल के पास पहुंचकर उसका प्रथमोचार कर उसका उत्साहवर्धन करते रहे। उनकी समयोचित एवं साहसपूण कार्रवाई के फलस्वरूप अनेक सैनिकों की जानें बच गयीं।

इस कार्रवाई में सिपाही/नर्सिंग सहायक राम चन्द ने साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

106. 13831396 सिपाही ड्राइवर (एम० टी०) नारायण सोनजी काकुल्टे,
आर्मी सर्विस कोर।

दिसम्बर 1971 में पूर्वी क्षेत्र में खासी हाट की संक्रिया के दौरान सिपाही ड्राइवर नारायण सोनजी काकुल्टे को सैनिक हथियार आदि लाने का काम सौंपा गया था। शत्रु भारी गोलाबारी कर रहा था। फिर भी सिपाही ड्राइवर नारायण सोनजी काकुल्टे ने अग्रिम स्थानों को यह समान पहुंचाने के लिए स्वेच्छा से अपनी सेवाएं समर्पित की। दूसरे फेरे में इनका वाहन कीचड़ में फंस गया लेकिन शत्रु द्वारा भारी गोलाबारी के बावजूद इन्होंने अपना वाहन बाहर निकाल लिया और अपने गंतव्य की ओर चल पड़े। अगले वाहन पर एक गोला सीधा आकर पड़ा और वह उड़ गया। इसके बावजूद वे अपने वाहन को नियत स्थान पर ले गये और सामान को वहां पहुंचा दिया। बाद में ये स्वेच्छा से अपने मृत साथी के शव की खोज के लिए गये और शत्रु द्वारा भारी गोलाबारी के बावजूद उसे खोज निकाला।

इस कार्रवाई में सिपाही ड्राइवर नारायण सोनजी काकुल्टे ने साहस और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

107. 1526174 सैपर बाबूराव पाटिल,
इंजीनियर्स।

1971 की संक्रिया में सैपर बाबूराव पाटिल एक इंजीनियर टास्क फोर्स के साथ थे जो खुलना में पंजाब रेजीमेण्ट की एक बटालियन को नजदीक से सहायता दे रहा था। 11/12 दिसम्बर 1971 की रात को बटालियन का आगे बढ़ना रुक गया क्योंकि पीछे हटती हुई सेना ने एक पुल उड़ा दिया था और साथ ही यह पुल शत्रु के छोटे हथियारों की गोलीबारी के रेंज में भी था। सैपर बाबूराव पाटिल को अन्य तीन सैपरों के साथ पुल की क्षति का जायजा लगाने का आदेश दिया गया। शत्रु द्वारा तोपखाने और छोटे हथियारों की भारी गोलीबारी के बीच में सैपर बाबूराव पाटिल रेंगते हुए पुल की ओर बढ़े। पुल से लगभग

50 गज की दूरी पर जब उनके एक साथी की गोला लगने से मृत्यु हो गयी तो इन्होंने अन्य सैपरों को जहां वे थे वहीं पोजीशन लेने के लिए कहा और स्वयं पुल की ओर रेंगते रहे। इस प्रकार इन्होंने पुल की हुई क्षति का पूरा जायजा लेने में सफलता प्राप्त की।

इस कार्रवाई में सैपर बाबूराव पाटिल ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

108. 2754589 सिपाही जानू आजगेकर,
मराठा लाईट इन्फैन्ट्री

13 दिसम्बर 1971 को मराठा लाइट इन्फैन्ट्री की एक बटालियन की एक कम्पनी को खुलना क्षेत्र में शत्रु के एक ठिकाने से 50 मीटर के भीतर जमे रहने का आदेश दिया गया। जब कम्पनी खाइयां खोद रही थी तो शत्रु की एक हल्की मशीनगन ने प्रभावी गोलीबारी करके कम्पनी की दाहिनी प्लाटून के दो सैनिकों को हताहत कर दिया। शत्रु की हल्की मशीनगन के कारण हमारे सैनिकों को काम करना, असम्भव हो रहा था। सिपाही जानू आजगेकर स्वेच्छा से, गोलीबारी की सहायता से, रेंगते हुए शत्रु के बंकर की ओर बढ़े और उसमें दो हथ गोले फेंककर शत्रु के दो सैनिकों को मार डाला तथा मशीनगन का मुंह बन्द कर दिया। इनके साहसपूर्ण कार्य से कम्पनी के और सैनिक हताहत होने से बच गए।

इस कार्रवाई में सिपाही जानू आजगेकर ने साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

109. 1039153 सवार दौलत सिंह, (**मरणोपरान्त**)
7 कैवेलरी।

4 दिसम्बर 1971 को सवार दौलत सिंह को पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के जबरदस्त मोर्चाबन्दी वाले रक्षात्मक क्षेत्र में से अपने बख्तरबन्द लड़ाकू वाहन को ले जाने का आदेश दिया गया। अपनी जान की बिल्कुल परवाह किये बिना वह बड़ी कुशलता से शत्रु के सुरंग क्षेत्र, गोलाबारी और टैंक-रोधी गन फायर से बचते हुए अपने वाहन को ले गये। इसी बीच इसी स्क्वाड्रन के एक और बख्तरबन्द लड़ाकू वाहन में गोला लगा और सवार दौलत सिंह ने अपनी जान को खतरे में डालकर उस वाहन के कार्मिकों को सुरक्षित स्थान पर निकालने में मदद की। वापसी में उनका अपना बख्तरबन्द लड़ाकू वाहन भी शत्रु की दो टैंक-रोधी सुरंगों से उड़ गया और वे वहीं वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस कार्रवाई में सवार दौलत सिंह ने अनुकरणीय साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

110. 7070418 क्राफ्ट्समैन/वाहन मैकेनिक लेजर नादर थोबियास,
इलैक्ट्रिकल एण्ड मैकेनिकल इंजीनियर्स।

क्राफ्ट्समैन/वाहन मैकेनिक लेजर नादर थोबियास बोगरा क्षेत्र में आर्मी सर्विस कोर की एक बटालियन का इलैक्ट्रिकल और मैकेनिकल की इंजीनियरी का काम सम्हाली हुई एक अग्रिम वर्कशाप टुकड़ी के सदस्य थे। इन्होंने प्रति दिन लगभग 16 से 18 घंटे तक काम किया ताकि प्रत्येक वाहन को अविलम्ब काम के लिए सुलभ कराया जा सके। ये कोई भी कार्य उत्साहपूर्वक स्वीकार करने के लिए सदैव तत्पर रहे। इन्होंने अपने काम के प्रति बड़ा उत्साह दिखाया और ये किसी भी समय किसी भी स्थान पर मरम्मत का काम करने के लिए तैयार रहे। यह इनके उत्साह और प्रेरणादायक उदाहरण का ही परिणाम था कि अग्रिम वर्कशाप टुकड़ी अपना काम बड़ी तेजी और कुशलता से कर सकी और आगे के दस्ते तेजी से आगे बढ़ सके।

क्राफ्ट्समैन/वाहन मैकेनिक लेजर नादर थोबियास ने साहस, सूझ-बूझ और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

111. 2459989 सिपाही मिलाप चन्द,
पंजाब रेजीमेण्ट।

सिपाही मिलाप चन्द फिरोजपुर क्षेत्र में एक गश्ती दल के सदस्य थे। एक भूभाग को अपने कब्जे में लेने के लिए पार्श्व सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से शत्रु एक प्लाटून सैनिक लेकर हमारे क्षेत्र में घुस आया। हमारा गश्ती दल शत्रु की प्लाटून के पीछे आ गया जो रक्षात्मक स्थिति बनाये हुए था। शत्रु की मझौली मशीनगन द्वारा गोलीबारी के बावजूद सिपाही मिलाप चन्द ने अपनी जान की बिल्कुल भी परवाह किये बिना अपनी संगीन को ताना और शत्रु पर हमला किया। इन्होंने शत्रु के एक मझौली मशीनगनर को पकड़ लिया। इससे शत्रु एक दम हैरत में आ गया और उसने गश्तीदल के सामने आत्म-समर्पण कर दिया।

इस कार्रवाई में सिपाही मिलाप चन्द ने साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

112. 2863656 सिपाही राम पाल,
राजपूताना राइफल्स।

3/4 दिसम्बर, 1971 की रात को मेघार क्षेत्र में राजपूताना राइफल्स की एक बटालियन की एक कम्पनी की एक रक्षित क्षेत्र पर कब्जा किये हुये थी। उस क्षेत्र पर पाकिस्तानी सेना ने हमला किया और रक्षित क्षेत्र के एक भाग पर अधिकार कर लिया। कम्पनी कमाण्डर ने तुरन्त अपने सैनिकों को इकठ्ठा किया और सिपाही रामपाल ने अपनी हल्की मशीनगन को संभाल कर शत्रु पर तेजी से गोलाबारी की। शत्रु दो हल्की मशीनगन और एक मझौली मशीनगन ले आया और इनकी ओर गोलाबारी शुरू कर दी। लेकिन ये तीन बार अपनी स्थिति बदलकर शत्रु पर भारी गोलाबारी करते रहे तथा हमलावर को पीछे खदेड़ दिया।

इस कार्रवाई में सिपाही राम पाल ने साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

113. 1280853 गनर (जी०डी०) राम मूर्ति,
आर्टिलरी।

गनर (जी०डी०) राम मूर्ति पुंछ क्षेत्र में कम रेंज पर शत्रु के बंकरों की सीधी मुठभेड़ के लिये लगायी गयी एक बैटरी के साथ थे। 9 दिसम्बर, 1971 को इन्हें शत्रु के पांच पिल बाक्सों और बंकरों

को नष्ट करने का काम सौंपा गया, इन्हें अगर नष्ट न किया जाता तो वे उसी रात को आयोजित एक आक्रमण में बाधा डालते। इस काम को करने के लिये जल्दी जल्दी बनाए गए मोर्चों पर गन फिट कर दी गयी। ये मोर्चे शत्रु की हल्की मशीनगनों और मार्टरों की रेंज के भीतर थी। ज्योंही गनर राम मूर्ति ने गोलाबारी शुरू की शत्रु ने इनके ठिकानों पर स्वचालित मशीनगन तोपों और मार्टरों से जोर की गोलाबारी शुरू कर दी। यद्यपि इनकी स्थिति बड़ी नाजुक थी फिर भी अपनी जान हथेली पर रखकर यह अपनी जगह पर तब तक डटे रहे जब तक कि इन्होंने शत्रु के पांचों पिल बाक्सों को नष्ट नही कर दिया।

इस कार्रवाही में गनर राम मूर्ति ने साहस, और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

114. 5237629 राइफलमैन देव बहादुर छेत्री,
3 गोरखा राइफल्स।

16 दिसम्बर, 1971 को गोरखा राइफल्स की एक बटालियन की एक कम्पनी ने कार्गिल क्षेत्र में एक चौकी पर हमला करना था जो कि मुख्य मार्ग पर अधिकार जमाए हुए थी। इस चौकी पर कब्जा किए बिना आगे की सक्रियाएं संभव नहीं थी। इस पर कब्जा करने के लिये पहले किये तीन प्रयास असफल रहे थे। राइफल्समेन देव बहादुर छेत्री एक तंग रास्ते से होते हुए कम्पनी के आक्रमण का नेतृत्व कर रहे थे। जब इनका सेक्शन अपने लक्ष्य के निकट पहुंच रहा था तो शत्रु ने उस पर मझौली मशीनगन से तीव्र और कारगर गोली-बारी शुरू कर दी। और ये आगे नहीं बढ़ सके। ये शत्रु की मंझौली मशीनगन को नष्ट करने के लिये आगे झपटे लेकिन बुरी तरह घायल हो गये फिर भी यह निर्भीक होकर रेंगते हुए आगे बढ़ते रहे और एक हथगोला फेंक कर शत्रु की मझौली मशीनगन का मुंह बन्द कर दिया इस प्रकार कम्पनी का आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त हो गया।

इस कार्रवाही में राइफलमैन देव बहादुर छेत्री ने साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

115. 4159154 सिपाही समाई सिंह
कुमाऊं रेजीमेंट।

5 दिसम्बर, 1971 को सिपाही समाई सिंह के दल को सुचेत-गढ़ क्षेत्र में शत्रु के एक ठिकाने पर हमला करने को कहा गया था। जब यह दल उस ठिकाने के पास पहुंचा तो सिपाही समाई सिंह के पास एक हथगोला गिरा जिससे इनकी दायीं जांघ पर बड़ा घाव हो गया। फिर भी यह विचलित नहीं हुए और शत्रु के बंकर की ओर बढ़े और एक झरोखे से इन्होंने उनके पास एक हथगोला फेंक दिया ज्योंही यह चौकी में घुसे शत्रु के दो सैनिक इन पर आ झपटे। वह पीछे हट गये और फिर हमलावरों पर आक्रमण करके इन्होंने दोनों को संगीन से मार डाला। घाव के दौरान इन्होंने शत्रु के तीन और सैनिकों को मार डाला। इस कार्रवाही में ये स्वयं भी घायल हो गये।

इस कार्रवाही में सिपाही समाई सिंह ने अनुकरणीय साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

116. 4153407 सिपाही जगत सिंह (मरणोपरान्त)
कुमाऊं रेजीमेंट।

छम्ब क्षेत्र में अपना हमला विफल हो जाने पर पाकिस्तानी सेना अपने छोटे छोटे दलों को हमारे सैनिकों पर घात लगाने के लिये छोड़ गयी थी। सिपाही जगत सिंह उनका पता लगाने वाले एक दल के सदस्य थे। जब वे उनका पता लगा रहे थे तो उन पर शत्रु की एक हल्की मशीन गन की गोली लगी और वे घायल हो गये। घाव के बावजूद उन्होंने शत्रु की हल्की मशीनगन वाले ठिकाने पर हमला किया और वहां हथगोले फेंककर उसके सैनिकों को मार डाला। लेकिन इसके तुरन्त बाद ही सिपाही जगत सिंह घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गये।

इस कार्रवाही में सिपाही जगत सिंह ने सराहनीय साहस, दृढ़ता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

117. 4243447 सिपाही प्रभुधन हेमब्रम, (मरणोपरान्त)
बिहार रेजीमेंट

दिसम्बर, 1971 की संक्रिया के दौरान सिपाही प्रभुधन हेमब्रम एक दल के सदस्य थे जिसकी संख्या एक कम्पनी के बराबर थी। इस दल को पूर्वी क्षेत्र में मैमन सिंह में एक महत्वपूर्ण स्थिति पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था जहाँ शत्रु ने जबरदस्त मोर्चाबन्दी की हुई थी। इस काम को सफलतापूर्वक पूरा कर लेने बाद यह दल अपने लक्ष्य पर फिर इकठ्ठा हो रहा था जब कि शत्रु ने उस जगह को पुनः अपने कब्जे में लेने का प्रयास किया। सिपाही प्रभुधन हेमब्रम ने आगे बढ़ते शत्रु पर कारगर गोलाबारी की लेकिन ऐसा करते हुए वे स्वयं शत्रु के सामने आ गये। बहुत पास से मंझोली मशीन गन का एक गोला उनपर आ लगा और बुरी तरह घायल हो गए। फिर भी वह निर्भीक होकर मशीनगन की ओर रेंगते रहे और उस पर एक हथगोला फेंककर उसे नष्ट कर दिया। इसके तुरन्त बाद घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस कार्रवाही में सिपाही प्रभुधन हेमब्रम ने साहस और दृढ़ता का परिचय दिया।

118. श्री धान बहादुर सुब्बा,
कमाण्डेंट, 73 बटालियन, सीमा सुरक्षा दल।

1971 की संक्रिया के दौरान सीमा सुरक्षा दल की एक बटा-लियन के कमांडेंट श्री धान बहादुर सुब्बा को अकेले ही अपनी दो कम्पनियों के पीछे से बिना तोपों की सहायता से अतबारी ठाकुरगांव अक्ष के किनारे किनारे आगे ले जाने का काम सौंपा गया था। वीरगंज पर कब्जा हो जाने के बाद इन्हें फिर अकेले विरल की ओर अपनी कम्पनियों को बढ़ाने का आदेश मिला। इन्होंने इन कार्यों को बड़ी तेजी के साथ पूरा किया और बलाईडांगी में शत्रु के 222 सैनिकों की एक टुकड़ी सहित उसके बहुत से अधिकार क्षेत्र से उनके स्थलों को खाली करा लिया। इस प्रकार नियमित सेना की टुकड़ियों के लिए अपना ध्यान मुख्य अक्ष पर केन्द्रित करना सम्भव हो गया।

इन संक्रियाओं के दौरान श्री धान बहादुर सुब्बा ने साहस, दृढ़ता और नेतृत्व का परिचय दिया।

119. श्री जोगिन्दर सिंह सिंधू,
डिप्टी कमाण्डेंट, 77 बटालियन, सीमा सुरक्षा दल।

श्री जोगिन्दर सिंह सिधु सीमा सुरक्षा दल की एक बटालियन की एक कम्पनी का नेतृत्व कर रहे थे। 12/13 नवम्बर, 1971 की रात को शत्रु ने खानपुर में अपनी चौकी से इनकी कम्पनी पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। यद्यपि शत्रु भारी गोलाबारी कर रहा था, फिर भी इन्होंने तुरन्त अपनी कम्पनी को यथा स्थान तैनात किया और शत्रु की चौकी पर धावा बोल दिया। इनके वीरतापूर्ण नेतृत्व में इनकी कम्पनी ने शत्रु के साथ घमासान लड़ायी करके उसके 13 बड़े मजबूत और गहरे खुदे हुए बंकरों का सफाया कर दिया और शत्रु की चौकी पर कब्जा कर लिया।

इस कार्रवाही में श्री जोगिन्दर सिंह सिन्धु ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

120. सं० 60844009 उप-निरीक्षक गोपाल सिंह (मरणोपरान्त)
86 बटालियन, सीमा सुरक्षा दल।

12 दिसम्बर 1971 को सीमा सुरक्षा दल की एक बटालियन को दावकी-सिलहट अक्ष पर हरिपुर-बेलीपाड़ा क्षेत्र में एक ऐसी जगह से शत्रु को दिन दहाड़े हटाने का काम सौंपा गया था जिस पर उसकी स्थिति बड़ी मजबूत थी। 1540 बजे हमला किया गया। शत्रु की तीव्र और सही गोलाबारी के कारण आक्रमण कर रही कम्पनी की दो प्लाटूनों को शत्रु के ठिकाने से लगभग 200 गज दूरी पर रुक जाना पड़ा। इस स्थिति में उप-निरीक्षक गोपाल सिंह अपनी प्लाटून के साथ आगे की ओर झपटे और इन्होंने शत्रु को दहला दिया। ये शत्रु की मशीनगन मार्टर गन की गोलाबारी के दायरे में आ गये लेकिन फिर भी ये निर्भीक होकर आगे बढ़ते रहे। जब वे झपटते हुए आगे बढ़ रहे थे, उन पर शत्रु की गोलियों की बौछार होने लगी और ये वहीं धराशायी हो गये। लेकिन उनके साहसपूर्ण धावे से हमले को पहले ही गति मिल चुकी थी जिसके कारण शत्रु अपनी स्थिति से भाग खड़ा हुआ और कम्पनी ने उस स्थिति पर कब्जा कर लिया।

इस कार्रवाई में उप-निरीक्षक गोपाल सिंह ने साहस, दृढ़ता और नेतृत्व का परिचय दिया।

121. सं० 49310004 उप-निरीक्षक इकबाल सिंह, (मरणोपरान्त)
31 बटालियन, सीमा सुरक्षा दल।

उप-निरीक्षक इकबाल सिंह उन प्लाटूनों में से एक प्लाटून के कमाण्डर थे जिन्हें ममदोत क्षेत्र में राजा मोहतम पर शत्रु की एक चौकी पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था। इस चौकी पर दिसम्बर 1971 की संक्रिया के दौरान शत्रु ने कब्जा कर लिया था। शत्रु मशीनगन से जबरदस्त गोलीबारी कर रहा था। फिर भी वह सुरंगों और कांटेदार तारों से भरे बाधापूर्ण क्षेत्र में से अपने सैनिकों को लेकर कृत संकल्प अपने लक्ष्य की ओर बढ़े। उन पर सभी दिशाओं से गोलियों की बौछार हो रही थी। फिर भी उन्होंने निर्भीक होकर शत्रु पर हमला किया और उसे भारी क्षति पहुंचाई आमने सामने की लड़ाई में उन्होंने स्वयं शत्रु के एक सैनिक को पकड़ लिया। उनकी कम्पनी के हमले ने पूरी तरह शत्रु का हौसला तोड़ दिया और वह भारी मात्रा में हथियार तथा गोलाबारूद छोड़कर भाग खड़ा हुआ। 10 दिसम्बर 1971 को शत्रु ने उस चौकी पर पुनः कब्जा करने का एक और प्रयास किया। उसने तोपखाने और मशीनगन से जबरदस्त गोलाबारी की। उप-निरीक्षक इकबाल सिंह, जिनकी प्लाटून इस चौकी की रक्षा कर रही थी, अपनी जान की बिल्कुल भी परवाह किये बिना अपने सैनिको का हौसला बढ़ाने के लिए वह एक बंकर से दूसरे बंकर में गये ताकि शत्रु के हमले को विफल किया जा सके। इस कार्य में वह शत्रु का एक गोला लगने से घायल हो गये और बाद में उनकी मृत्यु हो गयी।

इस कार्रवाई में उप-निरीक्षक इकबाल सिंह ने साहस, दृढ़ता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

122. सं० 667770423 हैड-कांस्टेबल देवी सिंह,
77 बटालियन, सीमा सुरक्षा दल।

1971 की संक्रिया के दौरान खानपुर में शत्रु की एक चौकी पर हमले के समय हैड-कांस्टेबल देवी सिंह सीमा सुरक्षा दल की एक प्लाटून के सैक्शन कमाण्डर थे। इनके वीरतापूर्ण नेतृत्व में इनका सेक्शन शत्रु की भारी गोलाबारी के बावजूद एक बंकर से दूसरे बंकर की ओर बढ़ता गया और जबरदस्त लड़ाई के बाद उसने शत्रु को वहां से खदेड़ दिया जब ये अन्तिम बंकर में शत्रु से जूझ रहे थे तो इनकी दायीं टांग पर एक गोली लगी। अपनी चोट की परवाह किये बिना ये अपने सैनिकों का मार्ग दर्शन और उत्साहवर्धन करते रहे और लक्ष्य की प्राप्ति तक इन्होंने वहां से हटाये जाने से इंकार कर दिया। इन्हें वहां से तभी हटाया जा सका जब ये बहुत खून बह जाने के कारण बेहोश हो गये।

इस कार्रवाई में हैड-कांस्टेबल देवी सिंह ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

123. सं० 66006559 हैड कांस्टेबल सुलतान सिंह,
103 बटालियन, सीमा सुरक्षा दल।

1971 की संक्रियाओं के दौरान हैड-कांस्टेबल सुलतान सिंह के नेतृत्व में सीमा सुरक्षा दल की एक बटालियन की मशीनगन टुकड़ी की एक प्रेक्षण चौकी की रक्षा का काम सौंपा गया था जिस पर शत्रु भारी गोलाबारी कर रहा था। जबरदस्त गोलाबारी के कारण चौकी की इमारत पूर्णतः ध्वस्त हो गयी। हैड-कांस्टेबल सुलतान सिंह अपनी टुकडी के साथ उस क्षेत्र में डटे रहे, हालांकि शत्रु उस पर जोरदार गोलाबारी कर रहा था और जब तक शत्रु की गोलाबारी बन्द नहीं हुई वह वहीं जमे रहे।

इस कार्रवाई में हैड-कांस्टेबल सुलतान सिंह ने उच्च कोटि के साहस, दृढ़ता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

124. सं० 713100120 कांस्टेबल राम सिंह, (मरणोपरांत)
31 बटालियन, सीमा सुरक्षा दल ।

कांस्टेबल राम सिंह सीमा सुरक्षा दल की एक प्लाटून के राइफलमैन थे जिसे 6/7 दिसम्बर, 1971 की रात को ममदोत क्षेत्र में राजा मोहतम फिगेट पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था । शत्रु द्वारा तोपखाने और मशीनगन की भारी गोलीबारी के बावजूद प्लाटून यथा स्थान तैनात हो गई और उसने हमला कर दिया । इस हमले में कांस्टेबल राम सिंह को गोली लगी । चोटों तथा शत्रु द्वारा जबरदस्त और सही गोलीबारी के बावजूद कांस्टेबल राम सिंह सुरंगों और कांटेदार तारों के भरे बाधापूर्ण क्षेत्र में से रेंगते हुए आगे बढ़े और शत्रु पर धावा बोल दिया । इन्होंने शत्रु को बड़ी क्षति पहुंचाई और उसकी एक मशीनगन को, उसके चलाने वाले सिपाही को मार कर, हथिया लिया । बाद में चोटों के कारण उनकी मृत्यु हो गई ।

इस कार्रवाई में कांस्टेबल राम सिंह ने साहस, दृढ़ता और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

125. जे० सी०—229 नायब सूबेदार अब्दुल गनी बख्शी,
जम्मू एण्ड कश्मीर मिलिशिया ।

8/9 दिसम्बर, 1971 की रात को नायब सूबेदार अब्दुल गनी बख्शी को अपनी प्लाटून के साथ जम्मू और कश्मीर में कलाल क्षेत्र में शत्रु की एक चौकी पर धावा करके उसे नष्ट करने का काम सौंपा गया था । शत्रु रात के समय इस चौकी पर आकर हल्की मशीनगन और छोटे हथियारों से गोलीबारी करके हमारे पिकेटों को परेशान किया करता था । नायब सूबेदार अब्दुल गनी बख्शी अपनी प्लाटून के साथ चोरी छिपे शत्रु के ठिकाने की ओर बढ़े लेकिन जब वह केवल 100 गज दूर थे तो शत्रु ने इन्हें देख लिया । जब शत्रु ने गोलीबारी शुरू की तो इन्होंने अपनी प्लाटून को चौकी पर जोर का हमला बोलने के लिए कहा । अपनी स्टेनगन से गोलीबारी करते हुए इन्होंने प्लाटून का स्वयं नेतृत्व किया । शत्रु के छक्के छुट गये और वह भाग खड़ा हुआ । शत्रु चौकी को नष्ट कर दिया गया । साथ ही अपनी रक्षित स्थिति पर वापस लौटते हुए इन्होंने तीन ऐसे घरों में भी आग लगा दी जहां छिपकर शत्रु दिन के समय हमारे गश्ती दलों पर गोली चलाया करता था ।

इस कार्रवाई में नायब सूबेदार अब्दुल गनी बख्शी ने अनुकरणीय साहस और सूझ-बूझ का परिचय दिया ।

126. सं० 68158006 जमादार जगमेहर सिंह,
केन्द्रीय आरक्षित पुलिस दल ।

जमादार जगमेहर सिंह जम्मू और काश्मीर में नारायणपुर क्षेत्र में, एक चौकी की कमाण्ड संभाले हुए थे । दिसम्बर 1971 की संक्रिया के दौरान इन्होंने असाधारण साहस और नेतृत्व का परिचय दिया । यह इनके प्रेरणादायक नेतृत्व का ही परिणाम था कि चौकी पर उनके सैनिक शत्रु की गोलाबारी, बमबारी और छोटे हथियारों से गोलीबारी का वीरतापूर्वक सामना करते रहे और अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से मुश्किल से 400 गज की दूरी पर इस बहुत कमजोर चौकी को इन्होंने बचा लिया ।

127. सं० 65016144 कांस्टेबल डेविड वर्गीज,
केन्द्रीय आरक्षित पुलिस दल ।

5 दिसम्बर, 1971 को कांस्टेबल डेविड वर्गीज को साम्बा के एक गोलाबारूद डिपो पर एक प्लाटून को एक सन्देश पहुंचाने का काम सौंपा गया । शत्रु के हवाई जहाजों ने गोलाबारूद डिपो पर राकेटों से हमला किया जिसके कारण इस महत्वपूर्ण प्रतिष्ठान के एकदम पास एक जगह पर आग लग गयी । कांस्टेबल डेविड वर्गीज ने सहज ही स्थिति की गम्भीरता को समझ लिया और वह सबसे पहले आग वाले स्थल की ओर दौड़े । वहां पहुंचकर इन्होंने अपनी जान की बिल्कुल भी परवाह किये बिना तेजी से फैल रही आग को बुझाना शुरू कर दिया । इन्होंने सराहनीय साहस और सूझबूझ का परिचय दिया जिसके कारण गोलाबारूद डिपो आग द्वारा नष्ट होने से बच गया ।

अशोक मित्र
राष्ट्रपति के सचिव

मंत्रिमंडल सचिवालय
(कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग)

नई दिल्ली-110001, दिनांक 29 जून 1974

नियम

सं० 11013/1/74-स्था० (ङ)—निम्नलिखित सेवाओं में ग्रेड II की रिक्तियों को भरने के लिये 1975 में संघ लोक सेवा आयोग द्वारा ली जाने वाली प्रतियोगिता परीक्षा के नियम आम जानकारी के लिये प्रकाशित किये जा रहे हैं :—

(i) भारतीय अर्थ सेवा, और

(ii) भारतीय सांख्यिकीय सेवा

2. इस परीक्षा के परिणाम के आधार पर भर्ती की जाने वाली रिक्तियों की संख्या का उल्लेख आयोग के द्वारा निकाली गई सूचना में किया जायगा । अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों के उम्मीदवारों के लिये आरक्षण भारत सरकार द्वारा निश्चित संख्या के अनुसार किया जायेगा ।

अनुसूचित जातियों/अनुसूचित आदिम जातियों से अभिप्राय निम्नांकित में उल्लिखित जातियों/आदिम जातियों से किसी एक से है, अर्थात संविधान (अनुसूचित जातियां) आदेश, 1950, संविधान (अनुसूचित जातियां) (भाग ग राज्य) आदेश, 1951, संविधान (अनुसूचित आदिम जातियां) आदेश, 1950 संविधान (अनुसूचित आदिम जातियां) (भाग ग राज्य) आदेश, 1951 (बम्बई पुनर्गठन अधिनियम 1960 और पंजाब पुनर्गठन अधिनियम, 1966 के साथ पठित अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों (सूचियों का संशोधन) आदेश, 1956 द्वारा यथा संशोधन संविधान (जम्मू और काश्मीर) अनुसूचित जातियां आदेश, 1956 संविधान (अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह) अनुसूचित आदिम जातियां आदेश, 1956 संविधान (दादरा और नगर हवेली) अनुसूचित जातियां आदेश, 1962 संविधान (दादरा और नगर हवेली) अनुसूचित आदिम जातियां आदेश, 1962 और

संविधान (पांडिचेरी) अनुसूचित जातियां आदेश, 1964 संविधान (अनुसूचित जातियां) (उत्तर प्रदेश) आदेश, 1967 संविधान (गोवा, दमन और दीव) अनुसूचित जातियां, 1968 संविधान (गोवा दमन और दीव) अनुसूचित आदिम जातियां आदेश, 1968 और संविधान (नागालैंड) अनुसूचित आदिम जातियां आदेश, 1970।

3. संघ लोक सेवा आयोग यह परीक्षा नियमों के परिशिष्ट-II में विहित रीति से लेगा।

परीक्षा की तारीख और स्थान आयोग द्वारा नियत किये जायेंगे।

4. उम्मीदवार को या तो :—

(क) भारत का नागरिक होन चाहिये या

(ख) सिक्किम की प्रजा, या

(ग) नेपाल की प्रजा, या

(घ) भूटान की प्रजा, या

(ङ) ऐसा तिब्बती शरणार्थी जो भारत में स्थायी रूप से रहने की इच्छा से 1 जनवरी, 1962 से पहले भारत आ गया हो, या

(च) मूल रुप से भारतीय व्यक्ति हो, जो भारत में स्थायी रूप से रहने की इच्छा से पाकिस्तान, बर्मा, श्रीलंका, (पहले सिलोन के नाम से विख्यात) और पूर्वी अफ्रीका के कीनिया, उगांडा तथा संयुक्त गणराज्य टंजानिया (भूतपूर्व टंगानिका और जंजीबार) देशों से आया हो।

परन्तु ऊपर की (ग), (घ) और (ङ) और (च) कोटियों के अंतर्गत आने वाले उम्मीदवार के पास भारत सरकार द्वारा दिया गया पात्रता (एलिजिबिलिटी) प्रमाण पत्र होना चाहिये।

परीक्षा में उस उम्मीदवार को भी बैठने दिया जा सकता है जिसके लिये पात्रता प्रमाण पत्र आवश्यक हो और उसे सरकार द्वारा प्रमाण पत्र दिये जाने की शर्त के साथ अंतिम रूप से नियुक्त भी किया जा सकता है।

5(क) इस परीक्षा में बैठने वाले उम्मीदवार के लिये आवश्यक है कि उसकी आयु 1 जनवरी, 1975 को 21 वर्ष की पूरी हो गई हो किंतु 26 वर्ष की न हुई हो, अर्थात उसका जन्म 2 जनवरी, 1949 से पहले और 1 जनवरी 1954 के बाद न हुआ हो।

(ख) ऊपर निर्धारित ऊपरी आयु सीमा में छूट दी जा सकती है :—

(i) यदि उम्मीदवार किसी अनुसूचित जाति या अनुसूचित आदिम जाति का हो तो अधिक से अधिक पाँच वर्ष,

(ii) यदि उम्मीदवार भूतपूर्व पूर्वी पाकिस्तान से 1 जनवरी, 1964 को या उसके बाद किंतु 25 मार्च, 1971 से पहले भारत में आया वास्तविक विस्थापित व्यक्ति हो तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,

(iii) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित आदिम जातियों का हो और वह 1 जनवरी, 1964 को या उसके बाद किंतु 25 मार्च, 1971 से पहले भूतपूर्व पूर्वी पाकिस्तान से आया वास्तविक विस्थापित व्यक्ति हो तो अधिक से अधिक आठ वर्ष,

(iv) यदि उम्मीदवार संघ राज्य क्षेत्र पाँडचेरी का निवासी हो तथा उसने किसी स्तर तक फ्रांसिसी के माध्यम से शिक्षा प्राप्त की हो तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,

(v) यदि उम्मीदवार अक्तूबर, 1964 के भारत श्रीलंका समझौते के अधीन 1 नवम्बर, 1964 को या उसके बाद, श्रीलंका (पहले सीलोन के नाम से विख्यात) से वास्तव में प्रत्यावर्तित होकर, भारत में आया हुआ मूल रूप से भारतीय व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक 3 वर्ष,

(vi) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित आदिम जाति का हो और साथ ही अक्तूबर, 1964 से भारत–श्रीलंका समझौते के अधीन 1 नवम्बर, 1964 को या उसके बाद श्रीलंका (पहले सिलोन के नाम से विख्यात) से वास्तविक रूप से प्रत्यावर्तित होकर भारत में आया हुआ मूल रूप से भारतीय व्यक्ति हो तो अधिक से अधिक आठ वर्ष,

(vii) यदि उम्मीदवार गोवा, दमन व दीव, संघ राज्य क्षेत्र का निवासी हो तो अधिक से अधिक तीन वर्ष।

(viii) यदि उम्मीदवार कीनिया, उगांडा, तथा संयुक्त गणराज्य टंजानिया (भूतपूर्व टंगानिका तथा जंजीबार) से आया मूल रूप से भारतीय व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,

(ix) यदि उम्मीदवार 1 जून, 1963 को या उसके बाद, बर्मा से वास्तव में प्रत्यावर्तित होकर, भारत में आया हुआ मूल रूप से भारतीय व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,

(x) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित आदिम जाति का हो और साथ ही 1 जून, 1963 को या उसके बाद, बर्मा से, प्रत्यावर्तित होकर, भारत में आया हुआ मूल रूप से भारतीय व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक आठ वर्ष,

(xi) यदि उम्मीदवार रक्षा सेवाओं में किसी बाह्य देश के साथ संघर्ष में या अशांति-ग्रस्त क्षेत्र में सैनिक कार्यवाही के समय विकलांग होकर निर्मक्त हुआ सैनिक हो तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,

(xii) यदि उम्मीदवार रक्षा सेवकओं में किसी बाह्य देश के साथ संकर्ष में या अशांतिग्रस्त क्षेत्र में सैनिक कार्यवाही के समय विकलांग होकर नियुक्त हुआ सैनिक हो और अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित

आदिम जाति का हो तो अधिक से अधिक आठ वर्ष ।

(xiii) भारत-संघर्ष, 1971 के दौरान हमलों में विकलांग हुए तथा उस के परिणामस्वरूप नियुक्त हुए सीमा सुरक्षा बल के कार्मिकों के मामले में अधिकतम तीन वर्ष, और

(xiv) भारत-पाक संघर्ष, 1971 के दौरान हमलों में विकलांग हुए तथा उसके परिणामस्वरूप निर्मक्त हुए सीमा सुरक्षा बल के कार्मिकों जो अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित आदिम जाति के हों, के मामले में अधिकतम आठ वर्ष ।

उपर्युक्त परिस्थितियों को छोड़कर निर्धारित आयु सीमा में किसी भी हालत में छूट नहीं दी जायगी ।

6. (क) भारतीय अर्थ सेवा के लिये उम्मीदवार के पास परिशिष्ट-1 में उल्लिखित किसी विश्वविद्यालय की अर्थशास्त्र या सांख्यिकी विषय सहित उपाधि होनी चाहिये ।

(ख) भारतीय सांख्यिकीय सेवा के लिये उम्मीदवार के पास परिशिष्ट-1 में उल्लिखित किसी विश्वविद्यालय की सांख्यिकीय या गणित या अर्थशास्त्र विषय सहित उपाधि होनी चाहिये, अथवा उसके पास परिशिष्ट-1 में उल्लिखित अर्हताओं में से कोई एक अर्हता होनी चाहिये ।

टिप्पणी (1)—यदि कोई उम्मीदवार किसी ऐसी परीक्षा में बैठ चुका हो जिसे उत्तीर्ण कर लेने पर वह इस परीक्षा में बैठ सकता है किन्तु अभी उसे परीक्षा परिणाम की सूचना न मिली हो तो ऐसी स्थिति में वह उस परीक्षा में बैठने के लिये आवेदन कर सकता है । जो उम्मीदवार इस प्रकार की अर्हता परीक्षा (क्वालीफाइंग एक्जामिनेशन) में बैठना चाहता हो, वह भी आवेदन कर सकता है, बशर्ते कि वह अर्हता परीक्षा इस परीक्षा के आरम्भ होने से पहले समाप्त हो जाये, ऐसे उम्मीदवारों को यदि वे अन्य शर्तें पूरी करते हों तो इस परीक्षा में बैठने दिया जायेगा । परन्तु परीक्षा में बैठने की अनुमति अनन्तिम मानी जायेगी और यदि वे अर्हता परीक्षा में उत्तीर्ण होने का प्रमाण जल्दी से जल्दी और हर हालत में इस परीक्षा के प्रारम्भ होने के पश्चात् अधिक से अधिक 2 महीने के भीतर प्रस्तुत नहीं करते तो यह अनुमति रद्द की जा सकती है ।

टिप्पणी (2)— विशेष परिस्थितियों में, संघ लोक सेवा आयोग द्वारा ऐसे किसी उम्मीदवार को भी परीक्षा में प्रवेश का पात्र माना जा सकता है जिसके पास उपर्युक्त अर्हताओं में से कोई भी अर्हता न हो बशर्ते कि उस उम्मीदवार ने अन्य संस्थाओं द्वारा संचालित कोई ऐसी परीक्षायें पास की हों जिनके स्तर को देखते हुये आयोग उसको परीक्षा में प्रवेश देना उचित समझे ।

टिप्पणी (3)— यदि कोई उम्मीदवार अन्यथा परीक्षा में प्रवेश का पात्र हो किंतु उसने ऐसे विदेशी विश्वविद्यालय से उपाधि ली हो जो परिशिष्ट-1 में सम्मिलित न हो तो वह भी आयोग को आवेदन कर सकता है और आयोग यदि उचित समझे तो उसे परीक्षा में प्रवेश दे सकता है ।

7. उम्मीदवारों को आयोग के नोटिस के परिशिष्ट-1 में निर्धारित शुल्क अवश्य देना होगा ।

8. जो उम्मीदवार स्थायी या अस्थायी रूप में अथवा नैमित्तिक या दिहाड़ी वाले कर्मचारी को छोड़कर कार्य प्रभारी कर्मचारी के रूप में पहले से ही सरकारी सेवा करता हो, उसे इस परीक्षा में बैठने से पहले अपने विभाग के अध्यक्ष की अनुमति अवश्य लेनी होगी ।

9. परीक्षा में बैठने के लिये उम्मीदवार की पात्रता या अपात्रता के बारे में आयोग का निर्णय अंतिम होगा ।

10. किसी उम्मीदवार को परीक्षा में तब तक नहीं बैठने दिया जायगा, जब तक कि उसके पास आयोग का प्रवेश प्रमाण पत्र (सर्टिफिकेट आफ एडमिशन) नहीं होगा ।

11. यदि किसी उम्मीदवार को आयोग द्वारा निम्नलिखित बातों के लिये दोषी घोषित कर दिया जाता है या कर दिया गया हो कि उसने :—

(i) किसी भी प्रकार से अपनी उम्मीदवारी के लिये समर्थन प्राप्त किया है, अथवा

(ii) नाम बदल कर परीक्षा दी है, अथवा

(iii) किसी अन्य व्यक्ति से छद्म रूप में कार्य साधन कराया है, अथवा

(iv) जाली प्रमाण-पत्र या ऐसे प्रमाण पत्र प्रस्तुत किये हैं जिन में तथ्यों को बिगाड़ा गया हो, अथवा

(v) गलत या झूठे वक्तव्य दिये हैं या किसी महत्वपूर्ण तथ्य को छिपाया है, अथवा

(vi) परीक्षा में प्रवेश पाने के लिये किसी अन्य अनियमित अथवा अनुचित उपायों का सहारा लिया है, अथवा

(vii) परीक्षा भवन में अनुचित तरीके अपनाये हैं अथवा

(viii) परीक्षा भवन में अनुचित आचरण किया है, अथवा

(ix) उपर्युक्त खण्डों में उल्लिखित सभी अथवा किसी भी कार्य के द्वारा आयोग को अवप्रेरित करने का प्रयत्न किया ह तो उस पर आपराधिक अभियोग (क्रिमिनल प्रासीक्यूशन) चलाया जा सकता है और उसके साथ ही उसे :—

(क) आयोग द्वारा उस परीक्षा से, जिसका वह उम्मीदवार है, बैठने के लिये अयोग्य ठहराया जा सकता है, अथवा

(ख) उसे अस्थायी रूप से अथवा एक विशेष अवधि के लिये (i) आयोग द्वारा, ली जाने वाली किसी भी परीक्षा अथवा चयन के लिये,

(ii) केंद्रीय सरकार द्वारा उसके अधीन किसी भी नौकरी से बारित किया जा सकता है, और

(ग) यदि वह सरकार के अधीन पहले से ही सेवा में है तो उसके विरुद्ध उपयुक्त नियमों के अधीन अनुशासनिक कार्यवाही की जा सकती है ।

12. जो उम्मीदवार लिखित परीक्षा में उतने न्यूनतम अर्हता अंक (क्वालीफाइंग मार्क्स) प्राप्त कर लेगा जितने आयोग अपने निर्णय से निश्चित करे, तो उसे आयोग मौखिक परीक्षा के लिये बुलायेगा ।

13. परीक्षा के बाद आयोग उम्मीदवारों के द्वारा अंतिमरूप से प्राप्त कुल अंकों के आधार पर योग्यता क्रम से उनकी सूची बनायेगा और उसी क्रम से उन उम्मीदवारों में से जितने लोगों को आयोग परीक्षा के आधार पर योग्य समझेगा नियुक्तियों के लिये सिफारिश करेगा । ये नियुक्ति उतनी अनारक्षित रिक्तियों पर की जायगी, जितनी का निर्णय परीक्षा के परिणाम के आधार पर किया जायगा ।

लेकिन शर्त यह है कि यदि स्तर के आधार पर अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों के लिये आरक्षित पद नहीं भरे जा सकते हैं तो आरक्षित कोटे को पूरा करने के लिये स्तर, में छूट देकर अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों के उम्मीदवारों को नियुक्त करने के लिये, सेवा के लिये योग्य होने पर, परीक्षा की योग्यता सूची में उनकी श्रेणी को ध्यान में रखे बिना ही आयोग द्वारा सिफारिश की जा सकती है ।

14. प्रत्येक उम्मीदवार को परीक्षाफल की सूचना किस रूप में और किस प्रकार दी जाय, उसका निर्णय आयोग स्वयं करेगा । आयोग परीक्षाफल के बारे में किसी भी उम्मीदवार से पत्राचार नहीं करेगा ।

15. यदि कोई उम्मीदवार दोनों सेवाओं के लिये प्रतियोगिता परीक्षा में बैठ रहा हो, तो उम्मीदवार द्वारा अपना आवेदन पत्र देते समय व्यक्त किये गये अधिमान क्रम (प्रेफरेंस) के अनुसार उस पर उचित रूप से विचार किया जायगा ।

16. परीक्षा में पास हो जाने से नियुक्ति का अधिकार तब तक नहीं मिलेगा जब तक कि सरकार आवश्यक जांच के बाद संतुष्ट ना हो जाय कि उम्मीदवार सेवा में नियुक्ति के लिये हर प्रकार से योग्य है ।

17. उम्मीदवार को मानसिक और शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ होना चाहिये और उसमें कोई ऐसा शारीरिक दोष नहीं होना चाहिये जिससे वह संबंधित सेवा में अधिकारों के रूप में अपने कर्त्तव्यों को कुशलता पूर्वक न निभा सके । यदि सरकार या सक्षम प्राधिकारी द्वारा निर्धारित शारीरिक परीक्षा के बीच किसी उम्मीदवार के बारे में यह ज्ञात हो कि वह आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता है तो उसकी नियुक्ति नहीं की जायगी । आयोग द्वारा मौखिक परीक्षा के लिये बुलायेगा गये किसी भी उम्मीदवार से शारीरिक परीक्षा की जांच करवाने की अपेक्षा की जा सकती है ।

नोट :—बाद में निराश न होना पड़े इसलिये उम्मीदवारों को सलाह दी जाती है कि वे परीक्षा में प्रवेश के लिये आवेदन पत्र भेजने से पहले सिविल सर्जन के स्तर के सरकारी चिकित्सा अधिकारी से अपनी जांच करवा ले । नियुक्ति पहले उम्मीदवारों की किस प्रकार की डाक्टरी जांच होगी और उसके लिये स्वास्थ्य का स्तर किस प्रकार का होना चाहिय, ऐसे ब्यौरे इन नियमों के परिशिष्ट में दिये गए है । रक्षा सेवाओं में विकलांग हुए भूतपूर्व सैनिकों के लिये स्वास्थ्य स्तर में सेवाओं की आवश्यकताओं के अनुसार छूट दी जायगी :—

18(क) जिसने ऐसी महिला/ऐसे पुरूष से विवाह करने का करार किया हो अथवा विवाह कर लिया हो जिसका पति/जिसकी पत्नी जीवित हो, अथवा

(ख) जिसने जीवित पत्नी / पति के होते हुए किसी अन्य व्यक्ति के साथ विवाह करने का करार किया हो अथवा विवाह कर लिया हो वह उक्त पद पर नियुक्ति का पात्र नहीं होगा/ होगी ।

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार इस बात से संतुष्ट हो कि ऐसा विवाह उस व्यक्ति पर अथवा जिससे विवाह किया गया हो उस पर लागू होने वाले वैयक्तिक कानून के अधीन अनुज्ञेय है और ऐसा करने के अन्य कारण भी हैं तो ऐसे व्यक्ति को ऐसे कानून से छूट दे सकती है ।

19. इस परीक्षा के द्वारा जिन सेवाओं के लिए भर्ती की जा रही है उनका संक्षिप्त ब्यौरा परिशिष्ट III में दिया गया है ।

एम० आर० भारद्वाज,
उप सचिव

परिशिष्ट-I

भारत सरकार द्वारा अनुमोदित विश्वविद्यालय की सूची

(नियम 6 के अनुसार)

भारतीय विश्वविद्यालय

कोई भी ऐसा विश्वविद्यालय जो भारत के केन्द्रीय या राज्य विधान मण्डल के अधिनियम से निगमित किया गया हो अथवा अन्य शिक्षा संस्थाएं जिन्हें संसद के अधिनियम द्वारा स्थापित किया गया है अथवा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम, 1956 की धारा 3 के अन्तर्गत विश्व-विद्यालय मान लिये जाने की घोषणा की जा चुकी है ।

बर्मा के विश्वविद्यालय

रंगून विश्वविद्यालय
मांडले विश्वविद्यालय

इंगलैण्ड के वेल्स के विश्वविद्यालय

बर्मिंघम, ब्रिस्टल, केम्ब्रिज, डरहम, लीड्स, लिवरपूल, लंदन, मैंचेस्टर, ऑक्सफोर्ड, रिडिंग, शेफिल्ड तथा वेल्स के विश्वविद्यालय

स्काटलैंड के विश्वविद्यालय

एबरडीन, एडिनबरा, ग्लासगो, और सैंट एन्ड्रूज विश्वविद्यालय

आयरलैंड के विश्वविद्यालय

डबलिन विश्वविद्यालय (त्रिनिटी कालेज)

आयरलैंड नैशनल विश्वविद्यालय

क्वीन्स विश्वविद्यालय, बैल्फास्ट

पाकिस्तान विश्वविद्यालय

पंजाब विश्वविद्यालय

सिंध विश्वविद्यालय

बंगला के विश्वविद्यालय

ढाका विश्वविद्यालय

राजशाही विश्वविद्यालय

नेपाल विश्वविद्यालय

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू

परिशिष्ट-I-'क'

केवल भारतीय सांख्यिकीय सेवा की परीक्षा में बैठने के लिए मान्यता प्राप्त अर्हताओं की सूची (नियम 6(ख) के अनुसार)

(I) भारतीय सांख्यिकीय संस्थान कलकत्ता का संख्याविद् - डिप्लोमा (स्टेटिस्टीशियन डिप्लोमा) और

(II) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के भारतीय कृषि अनुसंधान सांख्यिकीय संस्था का व्यवसायिक संख्याविद प्रमाण पत्र (प्रोफैसनल स्टेटिस्टिशियन सर्टिफिकेट)

परिशिष्ट II

खण्ड-I

लिखित परीक्षा की रूप रेखा

भारतीय अर्थ सेवा और भारतीय सांख्यकीय सेवा की परीक्षा के विषय :—

(क) लिखित परीक्षा :—

(I) निम्नलिखित खण्ड-2 के उपखण्ड क्रमश: (क) (क) और (ख) (ख) में दिये गये अनिवार्य विषय जिनके अधिकतम अंक 700 होंगे।

(II) निम्नलिखित खण्ड 2 के उप खण्ड क्रमश: (क) (ख) और (ख) (ख) में दिये गये ऐच्छिक विषयों में से चुने गये विषय। प्रत्येक सेवा के उम्मीदवार उन उपखण्डों के उपबन्धों के अधीन 400 अंक तक के ऐच्छिक विषय ले सकते हैं।

(ख) मौखिक परीक्षा :— (इस परिशिष्ट की अनुसूची के भाग (ख) को देखिए)।
उन उम्मीदवारों के लिये अधिकतम 250 अंक होंगे जिनको आयोग बुलाएगा।

खण्ड-II

परिक्षा के विषय

(क) भारतीय अर्थ सेवा

(क) अनिवार्य विषय (देखिये ऊपर खण्ड I का उपखण्ड (क) का खण्ड (I)।

	पूर्णांक
(1) सामान्य अंग्रेजी . . .	150
(2) सामान्य ज्ञान . . .	150
(3) अर्थशास्त्र-1 . . .	200
(4) अर्थशास्त्र-2 . . .	200

(ख) ऐच्छिक विषय (देखिए ऊपर खण्ड-1 के उपखण्ड (1) (1)

(1) तुलनात्मक आर्थिक विकास . .	200
(2) द्रव्य तथा लोक वित्त .	200
(3) ग्राम अर्थशास्त्र तथा सहकारिता .	200
(4) अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र . .	200
(5) सांख्यिकी -1 . . .	200
(6) सांख्यिकी -2 . . .	200
(7) गणितीय अर्थ-शास्त्र तथा ज्यामिति ,	200
(8) नमूना सर्वेक्षण . . .	200
(9) औद्योगिक अर्थशास्त्र . .	200
(10) व्यापार के सिद्धांत और अभ्यास .	200
(11) व्यवसाय वित्त तथा लेखा . .	200
(12) व्यवसाय प्रबंध तथा वाणिज्य नियम .	200

शर्त यह है कि किसी उम्मीदवार को 'अन्तर्राष्ट्रीय अर्थ-शास्त्र (4) और व्यापार के सिद्धांत तथा अभ्यास (10) दोनों विषय चुनने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

इस विषय में निम्नलिखित पांच शाखाओं में से प्रत्येक पर भिन्न भिन्न प्रश्न पत्र होंगे, अर्थात् (i) औद्योगिक सांख्यिकी, (सांख्यिकीय गुण नियंत्रण सहित) (ii) आर्थिक सांख्यकी (iii) शैक्षिक सांख्यिकी (मनोमिति सहित) (iv) जनन सांख्यिकी तथा (v) जनविद्या और जन्म मरण सांख्यिकी। इनमें से उम्मीदवार को किन्हीं दो का चुनाव करना है। प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिये अधिकतम अंक 100 होंगे।

(ख) भारतीय सांख्यिकी सेवा

(क) अनिवार्य विषय (ऊपर खण्ड-1) के उप खण्ड (क) के उपखण्ड (1) को देखिए)।

	पूर्णांक
(1) सामान्य अंग्रेजी . . .	150
(2) सामान्य ज्ञान . . .	150
(3) सांख्यिकी -1 . . .	200
(4) सांख्यिकी -2 . . .	200

(ख) ऐच्छिक विषय (ऊपर खण्ड 1 उप खण्ड (I) (II) को देखिये)।

(1) उच्च संभावित तथा यादृच्छिक प्रक्रिया .	200
(2) सांख्यिकीय अनुमीति . .	200
(3) प्रयोग अभिकल्पना . .	200
(4) नमूना सर्वेक्षण . . .	200
(5) अर्थशास्त्र -1 . . .	200
(6) अर्थशास्त्र -2 . . .	200
(7) गणितीय अर्थशास्त्र तथा अर्थमिति .	200
(8) तुलनात्मक आर्थिक विकास . .	200
(9) शुद्ध गणित -I . . .	200
(10) शुद्ध गणित -II . .	200
(11) शुद्ध गणित -III . .	200
(12) प्रयुक्त गणित . . .	200

इस विषय में निम्नलिखत पांच शाखाओं में से प्रत्येक पर भिन्न भिन्न प्रश्न पत्र होंगे, अर्थात् (i) औद्योगिक सांख्यिकीय (सांख्यिकीय गुण नियंत्रण सहित (ii) आर्थिक सांख्यिकी (iii) शैक्षिक सांख्यिकीय (मनोमिति सहित) (iv) जनन सांख्यिकी तथा (v) जन विद्या और जन्म मरण सांख्यिकीय। इनमें से उम्मीदवार को किन्हीं दो का चुनाव करना है। प्रत्येक प्रश्न-पत्र के लिए अधिकतम 100 अंक होंगे।

नोट :— इस खण्ड में दिये हुए विषयों का पाठ्य विवरण और स्तर इस परिशिष्ट अनुसूची के भाग (क) में दिया गया है।

खण्ड III

सामान्य

1. सभी प्रश्न पत्र के उत्तर अंग्रेजी में ही लिखने होंगे।

2. सांख्यिकी- II को छोड़कर उपर्युक्त खण्ड II में दिये गये प्रत्येक विषय के प्रश्न पत्र के लिए 3 घण्टे का समय दिया जायेगा। सांख्यिकी II में इस परिशिष्ट की अनुसूची के भाग (क) की मद (आइटम) 6 पर इस विषय के नीचे दिये गये नोट के अनुसार डेढ़-डेढ़ घंटे के पांच प्रश्न पत्र होंगे :

3. उम्मीदवारों को प्रश्नों का उत्तर अपने हाथ से लिखना होगा। उन्हें किसी भी हालत में उत्तर लिखने के लिये किसी अन्य व्यक्ति की सहायता लेने की अनुमति नही दी जायेगी।

4. आयोग अपने निर्णय से परीक्षा के किसी एक या सभी विषयों के अर्हक अंक (क्वालिफाइंग मार्क्स) निर्धारित कर सकता है।

5. भारतीय अर्थ सेवा के लिये केवल उन्हीं उम्मीदवारों के. दो एच्छिक प्रश्न पत्रों तथा निम्नलिखित अनिवार्य विषयों अर्थात् सामान्य अंग्रेजी तथा सामान्य ज्ञान के प्रश्न पत्रों को जांचा और अंकित किया जायेगा जो लिखित परीक्षा के अर्थशास्त्र-I और अर्थशास्त्र-II विषयों में एक निश्चित न्यूनतम स्तर प्राप्त करेंगे, जैसा कि आयोग द्वारा अपने निर्णय से निर्धारित किया जायेगा।

भारतीय सांख्यिकीय सेवा के लिये केवल उन्हीं उम्मीदवारों के दो ऐच्छिक प्रश्न पत्रों तथा निम्नलिखित अनिवार्य विषयों, अर्थात सामान्य अंग्रेजी तथा सामान्य ज्ञान के प्रश्न पत्रों को जांचा और अंकित किया जायेगा जो लिखित परीक्षा के सांख्यिकीय-I और सांख्यिकीय-II विषयों में एक निश्चित न्यूनतम स्तर प्राप्त करेंगे जैसा कि आयोग द्वारा अपने निर्णय से निर्धारित किया जायेगा।

6. यदि किसी उम्मीदवार की लिखावट आसानी से पढ़ने लायक नहीं होगी तो उसे अन्यथा मिलने वाले कुछ नम्बरों में से कुछ नम्बर काट लिये जायेंगे।

7. केवल सतही ज्ञान के लिए नम्बर नहीं दिये जायेंगे।

8. परीक्षा के सभी विषयों में इस बात का विशेष ध्यान रखा जायेगा कि अभिव्यक्ति कम से कम शब्दों में क्रमबद्ध तथा प्रभावपूर्ण ढंग से और ठीक-ठीक की गई हो।

9. उम्मीदवारों से तोल और माप की मीट्रिक प्रणाली की जानकारी की आशा की जाती है। प्रश्नों के उत्तर जहां कहीं ऐसा आवश्यक हो, तौल और माप की मीट्रिक प्रणाली का ही उपयोग किया जाये।

अनुसूची

(भाग क)

अंग्रेजी भाषा तथा सामान्य ज्ञान के प्रश्न पत्रों का स्तर यही होगा जिसकी भारतीय विश्वविद्यालय के स्नातक से अपेक्षा की जा सकती है।

अन्य विषयों के प्रश्न पत्र किसी भारतीय विश्वविद्यालय के संबद्ध व्यवस्थाओं के अंतर्गत 'मास्टर' डिग्री परीक्षा स्तर के होंगे। उम्मीदवारों के तथ्यों द्वारा सिद्धांत की व्याख्या करने और सिद्धांतों द्वारा समस्याओं का विश्लेषण करने की अपेक्षा की जाएगी उनसे अर्थशास्त्र सांख्यिकी के क्षेत्र (क्षेत्रों) में भारतीय समस्याओं से संबंधित विशेष रूप से निपुणता की अपेक्षा की जाएगी।

1—सामान्य अंग्रेजी

उम्मीदवारों को अंग्रेजी भाषा में एक निबंध लिखना होगा। अन्य प्रश्न उम्मीदवारों को अंग्रेजी संबंधी योग्यता एवं अंग्रेजी शब्दों के सामान्य प्रयोग की जांच करने के लिये रखे जाएंगे। साधारणतया सारांश अथवा सारलेखन के लिये गद्यांश रखे जायेंगे।

2—सामान्य ज्ञान

इस प्रश्न पत्र के दो भाग होंगे :—

पहले भाग में उम्मीदवारों से ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें सामयिक घटनाओं का और दिन प्रति दिन देखी और अनुभव की जाने वाली बातों के वैज्ञानिक पक्ष का ऐसा ज्ञान सम्मिलित है जिसकी किसी ऐसे शिक्षित व्यक्ति से अपेक्षा की जा सकती है जिसने वैज्ञानिक विषयों का विशेष अध्ययन न किया हो । इस प्रश्न पत्र में भारतीय इतिहास और भूगोल के ऐसे प्रश्न भी होंगे जिनका उत्तर उम्मीदवारों को विशेष अध्ययन के बिना ही आना चाहिए ।

दूसरे भाग में ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिनके द्वारा उम्मीदवारों को तथ्यों और आंकड़ों का प्रयोग करने तथा उनसे तर्क संगत निष्कर्ष निकालने, जटिलताओं को प्रत्यक्ष जान लेने की योग्यता एवं महत्वपूर्ण और कम महत्वपूर्ण के बीच अंतर करने की योग्यता की जांच की जा सके ।

3—अर्थ-शास्त्र—1

क्षेत्र तथा रीतिविधान
संतुलन विश्लेषण

उपभोक्ता की मांग का सिद्धांत । तटस्थ रेखाओं का विश्लेषण अधिमान संबंधी विचार धाराएं, उपभोक्ता की बचत, उत्पत्ति के सिद्धांत, उत्पत्ति के कारक । उत्पत्ति फलन । उत्पत्ति के नियम । फर्म तथा उद्योग के अन्तर्गत साम्य ।

विभिन्न प्रकार के बाजार संगठनों में मूल्य निर्धारण । समाजवादी अर्थ व्यवस्था में मूल्य निर्धारण । मिश्रित अर्थव्यवस्था में मूल्य निर्धारण ।

लोकोपयोगी सेवाएं : लोकोपयोगिताओं की आर्थिक विशेषताएं ।

लोकोपयोगिताओं में मूल्य निर्धारण, लोकोपयोगिताओं का नियतन ।

वितरण का सिद्धांत । उत्पत्ति कारकों का मूल्य निर्धारण लगान मजदूरी ब्याज तथा लाभ के सिद्धांत । समाविष्ट वितरण सिद्धांत । राष्ट्रीय आय में मजदूरी का भाग । लाभ और आर्थिक प्राप्ति । आय वितरण में असमानताएं ।

रोजगार और उत्पादन का सिद्धांत:—क्लासिकल तथा नव-क्लासिकल विचार धाराएं । कीन्स का रोजगार सिद्धांत । कीन्स के बाद के सिद्धांत । आर्थिक उतार चढ़ाव । व्यापार चक्रों के सिद्धांत । व्यापार चक्रों को नियंत्रित करने के लिये वित्तीय तथा मौद्रिक नीतियां ।

कल्याणकारी अर्थशास्त्र—कल्याणकारी अर्थशास्त्र का क्षेत्र, क्लासिकल तथा नव-क्लासिकल विचार धाराएं । नवीन कल्याण कारी अर्थशास्त्र तथा क्षतिपूर्ति के सिद्धांत । अनुकूलतम दशाएं, नीति संबंधी भाषाएं ।

4—अर्थशास्त्र—1

आर्थिक विकास की संकल्पना तथा उसका मापन सामाजिक लेखा राष्ट्रीय आय लेखा । निधि प्रवाह का लेखा, निर्दिष्ट नियम का लेख ।

सामाजिक विचारधाराएं तथा आर्थिक विकास ।

विकासोन्मुखी अर्थव्यवस्था की विशेषताएं तथा समस्याएं ।

जनसंख्या की वृद्धि तथा आर्थिक विकास ।

विकास के सिद्धांत । विकास के प्रतिमान ।

आयोजन—संकल्पना तथा विधियां । समाजवादी तथा पूंजीवादी आर्थिक संगठन के आयोजन । मिश्रित अर्थव्यवस्था के आयोजन । ठोस (पर्सपैक्टिव) आयोजन । क्षेत्रीय आयोजन । विनियोग के सिद्धांत तथा पद्धतियां का चयन । लागत लाभ विश्लेषण । योजना माडल ।

भारत में आयोजन । आयोजन का प्रारम्भ । पंचवर्षीय योजनाएं । उद्देश्य तथा पद्धतियां । संस्थानों की गतिशीलता, प्रशासन तथा जन सहयोग । मौद्रिक और वित्तीय नीतियों का योगदान । मूल्य नीति, नियंत्रण तथा बाजार विन्यास व्यापार नीति तथा भुगतान संतुलन । सार्वजनिक उद्योगों का योगदान ।

5—सांख्यिकी

विभिन्न प्रकार के सांख्यिकीय सन्निकटन, परिमित अंतर, मानक अंतर्वेशन, सूत्र तथा परिशुद्धताएं प्रतिलोग अन्तर्वेशन । अवकलन तथा समाकलन की सांख्यिकीय विधियां ।

संभविता की परिभाषा—क्लासिकल मत, कार्यसिद्ध मत । प्रतिचयन अवकास । पूर्ण एवं मिश्रित समाविता का सिद्धांत । प्रतिबंधी टोकिय की असमता । प्रतिबंधित बंटन । बृहत संख्याओं के नियम तथा केन्द्रीय सीमित प्रमेय ।

मानक बंटन: द्विपद न्यासें, प्रसामान्य, आयताकार, पातीय, विलोम द्वीप प्रतिगुणोत्तर, कोशी लापलास, वीटा तथा गामा बंटन । द्विचर तथा बहुचर प्रसामान्य बंटन ।

बृहत और लघु प्रतिचयन सिद्धांत:—प्रनन्त स्पर्शीय बंटन तथा बृहत प्रतिचयन परीक्षण । मानक प्रतिचयन बंटन जैसे टी, एक्स-2, एफ (tx^2, F) तथा उन पर आधारित सार्थकता-साहचर्य तथा आसंग सारणियों का विश्लेषण ।

सह-संबंध गुणांक तथा उसका बंटन । फिशर का 'जेड' स्थांतरण गुणांक ।

समाश्रवण:—प्रासंजन रेखा बहुपद । आंशिक समाश्रवण तथा आंशिक सह संबंध गुणांक—नल मामलों में उनका बंटन । अंतवर्गीय सह-संबध वक्र आसंजन तथा लम्बकोणीय को बहुपद ।

प्रसरण विश्लेषण । एक घातीय प्राक्कलन का सिद्धांत । अन्तक्रिया प्रभाग सहित दिक् वर्गीकरण । महप्रसरण विश्लेषण । प्रयोग अभिकल्पना के मूल सिद्धांत । सामान्य अभिकल्पनाओं का अभिन्यास तथा विश्लेषण जैसे यादृच्छिकीकृत खंड तथा लेटिन वर्ग चित्र । उपादानय प्रयोग तथा संकरण लुप्त क्षेत्र प्रविधियां ।

प्रतिचयन विधियां—प्रतिस्थापन युक्त तथा प्रतिस्थापन रहित सरल यादृच्छ प्रतिचयन समाश्रयण तथा अनुपात प्राक्कलन । सामुहिक प्रतिचयन बहुक्रम प्रतिचयन तथा व्यवस्थित प्रतिचयन । प्रतिचयन त्रुटियां ।

प्राक्कलन:—मूल संकल्पनाएं । एक अच्छे प्राक्कलन की विशेषताएं बिंदु प्राक्कलन तथा अंतराल प्राक्कलन । अधिकतम संभाविता प्राक्कलन तथा उनके गुण वर्ग ।

परिकल्पनाओं के परीक्षण—सांख्यिकीय परिकल्पनाएं। सरल तथा संयुक्त परिकल्पना। सांख्यिकीय परीक्षण की संकल्पना। त्रुटियों के दो प्रकार। घात फलन। संभाविता अनुपात परीक्षण विश्वास अंतराल।

प्राक्कलन। अनुकूलतम विश्वास परिबंध।

असमष्टीय परीक्षण जैसे-संकेत परीक्षण, माध्यिका परीक्षण तथा चाल परीक्षण। सरल विकल्पना के विपरीत सरल परिकल्पना परीक्षण के लिये वाल्ड का अनुक्रमिष्ट संभाविता अनुपात परीक्षण। 'ओ सी' तथा ए एस० एन० फलन तथा उनके सन्निकट।

6 सांख्यिकी II

नोट:—इस विषय में निम्नलिखित पांच शाखाओं में से प्रत्येक पर भिन्न प्रश्न पत्र होंगे, अर्थात् (i) औद्योगिक सांख्यिकी (सांख्यिकीय गुण नियंत्रण सहित) (ii) आर्थिक सांख्यिकी (iii) शैक्षिक सांख्यिकी (मनोमिति सहित) (iv) जनन सांख्यिकी तथा (v) जनविद्या और जन्म मरण सांख्यिकी।

जो उम्मीदवार इस विषय को अनिवार्य या ऐच्छिक विषय के रूप में लेंगे उन्हें उपर्युक्त किन्हीं दो का चुनाव करना होगा, जिसको उन्हें अपने प्रार्थना पत्र में बताना होगा। एक बार प्रश्न पत्र चुनने के बाद परिवर्तन की अनुमति प्रदान नहीं की जायेगी।

I सांख्यिकीय प्रकार नियंत्रण सहित औद्योगिक आंकड़े

उद्योग के अंतर्गत प्रकार नियंत्रण का सैद्धांतिक आधार। सहन सीमाएं विभिन्न प्रकार के नियंत्रण चार्ट ऐक्स और चार्ट 'पी' और सी चार्ट, वर्ग नियंत्रण चार्ट।

स्वीकार प्रतिचयन। एक पक्षीय, द्विपक्षीय, बहुपक्षीय तथा अनुक्रमिक प्रतिचयन योजना। 'ओ सी' तथा ऐ० एम० एन० फलन गुणों (Attributes) तथा चरों (Variables) द्वारा प्रतिचयन ग्रोजरो रोमिंग तथा अन्य सारणियों।

औद्योगिक सम्परीक्षण डिजाइन। उद्योगों में समाश्रयण विधियों का प्रयोग तथा प्रसरण विधियों का विश्लेषण। उद्योगों में एकजातिया कार्यक्रम सहित संक्रियात्मक अनुसंधान विधियों का प्रयोग।

II अर्थ-सांख्यिकी

मूल्य और परिमाण के सूचकांक। सूचकांको के विभिन्न प्रकार, जैसे:— थोक मूल्यों के सूचकांक तथा जीवन निर्वाह सूचकांक। सूचकांकों का सिद्धांत।

आय-वितरण। पैरेटो वक्र तथा अन्य वक्र। एक केन्द्रीय वक्र तथा उनके प्रयोग।

राष्ट्रीय आय। राष्ट्रीय आय के विभिन्न क्षेत्र। राष्ट्रीय आय के प्राक्कलन की विधियां। अंतर्क्षेत्रीय आय प्राक्कलन वर्ग समस्याएं। अन्तर्उद्योग सारिणी। निविष्ट-निष्ट विश्लेषण तथा एकजातीय कार्यक्रम का प्रयोग।

आर्थिक काल—श्रेणियों का विश्लेषण तथा निर्वचन आर्थिक काल श्रेणीयों के चार संघटक। गुणात्मक तथा संयोज्यात्मक माडल। वक्र आसंजन तथा चल माध्यविधि उपनति निर्धारण। स्थित तथा चल सामयिक सूचकांकों का निर्धारण। स्वसंबंध। आवर्तिनावर्क विश्लेषण। यदृच्छिका परीक्षण।

उपभोग और मांग का सिद्धांत मांग के कार्य, मांग की तोल, काल श्रेणी तथा पारिवारिक बजट आंकड़ों द्वारा मांग का सांख्यिकीय विश्लेषण।

III शिक्षा सांख्यिकी मनोमितिसहित :-

परीक्षण मदों का मापन। प्राप्तांक मानक प्राप्तांक सामान्य प्राप्तांक (ट) तथा 'सी' मान, स्टेमीन, मान, शततमकमान।

मानसिक परीक्षण, परिक्षणों की विश्वसनीयता और संसगति। विश्वसनीयता की संगणना की विभिन्न विधियां। विश्वसनीयता का सूचक। सुसंगति निर्धारण की प्रक्रियाएं। परीक्षण बैटरी को मान्यकरण। चाल बनाम घात परीक्षण।

उत्पादन विश्लेषण। मद विश्लेषण। अभिरुचि परीक्षाओं में सह-संबंध विधियों का उपयोग।

स्मरण तथा विस्मरण का माप, स्मरण माडल। अभिवृति तथा मत का माप। समूहगत व्यवहार के माप।

IV जनन आंकड़े :

आनुवंशिकता का भौतिक आधार। मेन्डल के नियम। लिंकेज। पृथकरण का विश्लेषण। लिंकेज की पहिचान तथा प्राक्कलन।

बहुजनन आनुवंशिकी। बृहत्तम विचलन के संघटक।
अनुवंशिकता का प्राक्कलन, चयन,। चयन का आधार। प्रजनन परीक्षण चरित्र सामिश्रण के लिये चयन।
जनसंख्या जनन। जनन बारंबारता। अपः प्रजनन। यादृच्छिक उपागम। लिंकेजस का विम्य।
मानक जनन के तत्व। रक्त वर्गों का अध्ययन। रोग विशेषताएं तथा विपथन।

V जनांकिकी तथा जन्म मरण संबंधी आंकड़े

जीवन सारिणी, उसका निर्माण तथा गुण। मेकेहम तथा गोमपर्ट्स वक्र, मृत्यु संख्या की वार्षिक तथा केन्द्रीय दरों की व्युत्पत्ति। राष्ट्रीय जीवन सारणियां। यू० एन० आदर्श जीवन सारणियां। संक्षिप्त जीवन सारणियां। स्थिर जनसंख्या /स्थावर जनसंख्या।

अशोधित प्रजनन दरें, विशिष्ट प्रजनन दरें, मूल और शुद्ध जन्म दरें। परिवार का आकार। अशोधित मृत्यु दरें, कुल और शुद्ध जन्म दरें। बाल मृत्यु दरें। सकारण मृत्यु संख्या। प्रमाणीकृत दरें।

आंतरिक तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रत्यावर्तन। विशुद्ध प्रत्यावर्तन, पिछली तथा उन्नत अतिजीविता अनुपात सिद्धांत।

जनांकीय संक्रमण। जनसंख्या निर्धारण के सामाजिक तथा आर्थिक निर्धारण। जनसंख्या प्रक्षेत्र। गणितीय तथा संघटक विधियाँ वृद्धि घातवक्र आसजन।

7. तुलनात्मक आर्थिक विकास

विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं के अन्तर्गत विशेष रूप से भारत, जापान, फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका तथा सोवियत रूस के संदर्भ में आधुनिक आर्थिक विकास का तुलनात्मक तथा ऐतिहासिक अध्ययन। उम्मीदवारों से विभिन्न प्रकार की अर्थ व्यवस्थाओं, जैसे क्रय विक्रय प्रधान स्वतंत्र उद्यम अर्थ व्यवस्था केन्द्रीय योजनाबद्ध अर्थ व्यवस्था उनमें हुए परिवर्तन, विशेष रूप से विकासशील अर्थ व्यवस्थाओं को प्रदान करने योग्य शिक्षाओं की दृष्टि से ऐतिहासिक विकास तथा क्रियात्मक लक्षणों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने की अपेक्षा की जायेगी।

8. मुद्रा तथा सार्वजनिक वित्त

मुद्रा का स्वरूप तथा कार्य। मुद्रा का मूल्य। मुद्रा उत्पति और मूल्य गुणक तथा आय उत्पादन की प्रक्रिया। व्यापारचक्र और मूल्य व्यापार। मुद्रा स्फीति।

मौद्रिक नीति के उद्देश्य तथा रचना। बैंक दर तथा खुले बाजार की कार्यवाही। केन्द्रीय बैंक पद्धति। सामान्य तथा सुविशिष्ट शाखा नियंत्रण विकासशील अर्थव्यवस्था के अंतर्गत अपनाई जाने वाली मौद्रिक नीति। विकसित तथा विकासशील अर्थव्यवस्था में मुद्रा तथा पूंजी बाजार। भारतीय मुद्रा बाजार का संगठन।

सार्वजनिक वित्त :—स्वरूप, क्षेत्र, महत्व और उद्देश्य।

कराधान के सिद्धांत:—करारोपण तथा महत्व परकर योग्य क्षमता तथा दोहरा कराधान, सार्वजनिक व्यय का प्रभाव और महत्व। पूर्ण रोजगार और आर्थिक विकास की वित्तीय नीति। घाटे की वित्त व्यवस्था। सार्वजनिक उद्यमों से प्राप्त आय।

सार्वजनिक ऋण के सिद्धांत। आन्तरिक और विदेश ऋण। ऋण व्यवस्था। संघीय वित्त व्यवस्था के सिद्धांत।

9. ग्रामीण अर्थ शास्त्र तथा सहकारिता

आर्थिक विकास में कृषि का योगदान।

कृषि उत्पादन तथा संसाधनों का उपयोग, उत्पादन फलन, उत्पादन माप, लागत और पूर्तिचक्र अनिश्चितता की स्थिति में उत्पादन कारकों का संयोजन तथा उत्पादन विधियों का चयन। फसल आयोजना।

उत्पादन कारकों का क्रय विक्रय :— भूमि का क्रय विक्रय, भूमि का मूल्य और लगान। श्रम का क्रय विक्रय। मजदूरी और रोजगार, बेरोजगार तथा अल्प रोजगार। पूंजी बाजार, बचत और पूंजी का निर्माण।

वस्तुओं की मांगें। खाद्यान की मांग।

कृषि अन्य पदार्थों का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मूल्य टैरिफ वस्तु संबंधी समझौते। कृषि विकास संबंधी अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम।

भारतीय ग्राम्य-अर्थव्यवस्था की समस्याएं

कृषि जोत। भूमि का अधिग्रहण। फसल पद्धति कृषि निपज की समस्याएं। भूमि सुधार। सामुदायिक विकास और पंचायती राज्य। कृषि संबंधी धंधे और ग्रामीण उद्योग। ग्रामीण ऋण प्रसनाना कृषि साख कृषि विपणन और मूल्य प्रसार। वस्तुओं की मांग और खाद्यानों की मांग। मूल्य आवलंब और स्थिरता। कृषि भूमि तथा कृषि आय कर करारोपण/आयोजन के अंतर्गत भारतीय कृषि को विकास कर।

पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि का स्थान। कृषि विकास के मूल्य कार्यक्रम।

सहकारिता: सिद्धांत, उद्गम तथा विकास। भारत तथा दूसरे देशों के सहकारिता आंदोलनों का तुलनात्मक अध्ययन। भारत में विभिन्न प्रकार की सहकारी संस्थाओं का रूप, संगठन तथा कार्यप्रणाली। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में इन संस्थाओं का महत्व। राज्य तथा सहकारी आंदोलन। रिजर्व बैंक आफ इंडिया का योगदान।

10. अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार क सिद्धांत। व्यापार के लाभ। व्यापार की शर्तें। व्यापार नीति। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और आर्थिक विकास। टैरिफ का सिद्धांत। परिभाषात्मक व्यापार नियंत्रण। सीमाशुल्क संघ। मुक्त व्यापार क्षेत्र। यूरोपीय साझा बाजार।

भुगतान शेष। भुगतान शेष के असंतुलन। समायोजन की प्रक्रिया। विदेशी व्यापार गुणक। विनिमय दर। आयात और निर्यात नियंत्रण। व्यापार समझौते। प्रमुख करेंसी प्रमाप। बाह्य और आंतरिक संतुलन।

अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं। अंतर्राष्ट्रीय वृणनिस्तारण और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष। अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक सुधार। विकासशील देशों के संबंध में भेदभाव रहित प्रवृत्तियां। निर्यात अस्थिरता और वस्तुओं के बाजार भाव की स्थिरता। अंतर्राष्ट्रीय निजी और सार्वजनिक पूंजी से संबंधित जी० ए० टी० टी० का योगदान। आर्थिक विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहायता। अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक (I.B.R.D.) एवं तत्संबंधी संस्थाएं। एशियाई विकास बैंक।

11. गणितीय अर्थशास्त्र और अर्थमिति

अर्थशास्त्र में गणित और सांख्यिकी का महत्व। अर्थशास्त्र में मापों का प्रयोग: अर्थशास्त्र में गणित का महत्व: आर्थिक सहयोग के मापन में सांख्यिकीय अनुमति की विधियों और पद्धतियों का प्रयोग।

मांग विश्लेषण:—मांग का सामान्य सिद्धांत और मांग की मान: गत्यात्मक और स्थैतिक मांग फलन: आयोजन की स्थिति में अंत:—संबंधित मांग और पूर्तिफलन: मांग और पूर्ति प्राक्कलन की विधियां। मांग प्रक्षेप तथा मांग और मूल्य के प्रति अल्पकालीन दृष्टिकोण।

उत्पत्ति फलन :—उत्पादन और उत्पादन संभावना फलन की संकल्पना, उत्पादन फलन लागू करने की विधियां। उत्पादन आयोजन और उत्पादन नियंत्रण की गणितीय विधियां।

एक घातीय कार्यक्रम:—क्रिया विश्लेषण। एक घातीय कार्यक्रम और उसका उपयोग। निविष्ट निपज विश्लेषण। गेम सिद्धांत के तत्व, आर्थिक आयोजन में उनका प्रयोग।

कीन्सवादी अर्थशास्त्र और क्लासिकल अर्थशास्त्र के गणितीयमाडल

गुणक संकल्पना। त्वरक सिद्धांत। साम्य विश्लेषण। उपभोक्ता साम्य। स्थिर दशाएं, आय और मूल्य वृद्धि की मांग पर प्रभाव, पूरक और स्थानापन्न वस्तुएं।

बाजार मांग:—विनियम संतुलन, व्यवसाय संतुलन। अर्थव्यवस्थापक के अन्तर्गत उत्पादन और विनियम का साम्य, मांग और पूर्ति का सामान्यीकृत नियम।

निर्मिति (Structure) और माडल की संकल्पना

निर्मिति की विभिन्न संकल्पनाओं—निर्मित और माडल में भेद। स्वतंत्र समीकरण और सम्मिलित समीकरण माडलों में समष्टि प्राक्कलन।

आयोजन माडल : —विभिन्न प्रकार के विकास माडल, पूंजी निपज अनुपात और आर्थिक आयोजन में उनका उपयोग। आयोजन माडल दीर्घकालीन प्रक्षेप और संदर्श। अल्पकालीन आर्थिक पूर्वानुमान।

12. प्रतिचयन सर्वेक्षण

जनगणना और सर्वेक्षण में प्रतिचयन का स्थान। ढांचे और प्रतिचयन ईकाई की संकल्पना।

प्रतिचयन की विधियां : यादृच्छिक प्रतिचयन, स्तरित प्रतिचयन, स्तरण का चयन, बहुखण्डीय प्रतिचयन, सामूहिक प्रतिचयन, क्रमबद्ध प्रतिचयन, दुहरा प्रतिचयन, चर-प्रतिचयन भिन्न आकार के अनुपात में संभाविता के साथ प्रतिचयन, बहुपदीय प्रतिचयन, प्रतिलोग प्रतिचयन।

प्राक्कलन की प्रक्रियाएं:—कुल और औसत जन संख्या का प्राक्कलन। प्राक्कलन में अभिनति। प्राक्कलन की त्रुटि। अनुपात समाश्रयण और गुणन प्रतिचयन।

अनुमूलतम अभिकल्पनाएं। लागत और प्रसरण फलन, पथप्रदर्शी सर्वेक्षण का उपयोग। परिचयन इकाइयों का अनुमूलतम आकार और गठन। स्तरित, बहुभेदीय, और बहुखण्डीय अभिकल्पनाओं में अनुकूलतम विनिवान आवृत्ति सर्वेक्षण में अनुकूलतम प्रतिस्थापन भिन्न।

गैर प्रतिचयन त्रुटियां और उनका नियंत्रण, अनुक्रिया अभाव का सिद्धांत अन्देशी प्रतिचयन।

अभिकल्पना और पथप्रदर्शी तथा बड़े पैमाने के आवृच्छिक प्रतिचयन का संगठन। प्रतिचयन के रेखांकन की परिचालन की प्रक्रियाएं यादृच्छिक प्रतिचयन संख्याओं का उपयोग। 'पी० पी० एस०' प्रतिचयन के रेखांकन की विभिन्न विधियां। आंकड़ों के संग्रहण और सारणयन की प्रक्रियाएं। सर्वेक्षण आंकड़ों का विश्लेषण और प्रतिवेदनों का निर्माण।

13. औद्योगिकी अर्थशास्त्र

उद्योग प्रतिस्पर्धी उद्योग का गठन। औद्योगिक इकाई के आकार का सिद्धांत। औद्योगिक स्थान का निर्धारण। क्षेत्रीय औद्योगिक विकास। औद्योगिक समाकलन। संघ और एकाधिकार।

औद्योगिक उत्पादन की समस्याएं : उत्पादकता —संकल्पना और मापन उत्पादकता वृद्धि की विधियां। लागत रचना और मूल्य निर्धारण की नीतियां।

भारतीय उद्योगों का गठन—आकार, स्थिति, एकीकरण और क्षेत्रीय संतुलन।

भारतीय उद्योगों की समस्याएं—वित्त, निविष्टियां, क्षमता का उपयोग। औद्योगिक नीति। सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्र। औद्योगिक लाईसेन्स की नीति। विदेशी पूंजी और तकनीकी सहयोग। सार्वजनिक उद्यम की समस्याएं। संगठन प्रबंध नियंत्रण और उनका लेखा-जोखा।

छोटे पैमाने के उद्योगों की समस्याएं और औद्योगिक संपत्ति।

श्रम और आर्थिक विकास। श्रम उत्पादकता और प्रेरण स्रोत। भारत औद्योगिक संबंध। मजदूर संघों का गठन और संगठन। मजदूर संघ और राज्य औद्योगिक झगड़ों का निपटारा। न्यूनतम और उचित मजदूरी। मजदूरी और कार्य करने की दशाओं का राज्य द्वारा निर्धारण। श्रम कल्याण।

14. व्यापार सिद्धांत और व्यापार कार्य

क्रय-विक्रय। क्रय विक्रय की संकल्पना। बाजार की विशेषताएं। विपणन कार्य। विपणन क्रिया। केन्द्रीयकरण और विस्तार, क्रय, विक्रय माल यातायात भंडारण, कोटीक्रम और वित्त। ग्राहक का स्वभाव और निर्णय। बाजार संबंधी जानकारी और अनुसंधान। वितरण के स्रोत। बाजार लागत और बाजार क्षमता। बिक्री पूर्वानुमान और आयोजन। बिक्री प्रोत्साहन विज्ञापन और विक्रेता के गुण। राज्य नियंत्रित बाजार।

भारतीय बाजार। कृषि उपज और औद्योगिक वस्तुओं का बाजार, भारत में संयुक्त बाजार। स्टाक एक्सचेंज और उपज एक्सचेंज, उनके कार्य और क्रियाविधि। सरकारी नीति। सरकारी विपणन, संगठन और राजकीय व्यापार।

विदेशी व्यापार। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की विशेषताएं : घरेलू, व्यापार के भिन्न व्यापार की विशेष समस्याएं। यातायात, वित्त और बीमा, साख से संबंधित जोखिम, विनियम दर में उतार चढ़ाव और भुगतान स्थान। विदेशी व्यापार में प्रयुक्त अभिलेख। आयात और निर्यात केन्द्रों का गठन और संगठन। निर्यात और आयात नियंत्रण के तरीके।

भारत के विदेशी व्यापार की मुख्य विशेषताएं —वस्तु संरचना, मुख्य दिशाएं गत दशक में निर्यात और आयात नियंत्रण

की क्रियाएं। लाइमेन्स प्रक्रियाएं और उसका आधार। विदेशी व्यापार वित्त। निर्यात जोखिम गारंटी पद्धति। हाल ही के वर्षों में निर्यात वृद्धि के लिये अपनाई गई विधियां भारत के व्यापार समझौते। राज्य व्यापार निगम के कार्य।

15. व्यवसाय वित्त और लेखे

आधुनिक उद्योग की वित्तीय आवश्यकताएं। भारत में औद्योगिक वित्त के साधन। भारतीय पूंजी बाजार। संस्थाओं द्वारा वित्त प्रबंध। विदेशी पूंजी, स्रोत, ब्याज की दरें और भुगतान की शर्तें। किसी एक फर्म की बजट पूंजी संबंधी आवश्यकताएं। पूंजी का उत्तम ढांचा किसी फर्म में अंतर्गत निधियों के स्रोत और उपयोग। निजी वित्त मूल्य ह्रास की नीति। संचित कोष और लाभांश। करारोपण और वित्तीय नीति।

पूंजी की बजट व्यवस्था। वित्तीय विवरणों की तैयारी, विश्लेषण और निर्वचन। साख और शेयरों का मूल्यांकन। पुनर्निर्माण एकीकरण और विलयन योजनाओं का निर्माण। लेखा बही में अनाहृत हुंडियों का इन्दराज।

लागत निवरणों का निर्माण :—खर्चे की व्यवस्था और नियंत्रण। बजटीय नियंत्रण के सिद्धांत। प्रमाणिक लागत। वित्तीय और लागत लेखों का मिलान।

16. व्यवसाय प्रबन्ध और वाणिज्य विधि

प्रबन्ध पद्धति और प्रबंधीय कार्य। नीति निर्धारण और व्यवसाय के उद्देश्य। नेतृत्व और साहस, नियंत्रण और निर्णय की शक्ति। प्राधिकारी संबंध, प्राधिकार शिष्टमण्डल, प्राधिकार के स्तर और उत्तरदायित्व, नियंत्रण का विस्तार, पर्यवेक्षक की भूमिका।

संचार और प्रेरणा स्रोत की समस्याएं।

उत्पादन और वस्तु सूचक नियंत्रण। प्रकार नियंत्रण। समय और गति का अध्ययन। संयम की स्थापना और कार्य की माप जोख।

17. उच्च संभाविता और यादृच्छिक क्रियाविधियां

(क) उच्च संभाविता, संभाविता माप, यादृच्छ पद, बंटन फलन का विघटन, यादृच्छ पदों की प्रत्याशी। प्रतिबंधी संभावित और प्रतिबंधी प्रत्याशाएं, अनुक्रम का एकीकरण और स्वतंत्र यादृच्छ पदों का योग कोलमोंगोरोव की विषमता, बहुत संस्थाओं का कठोर और कमजोर नियम बंटन में एकीकरण, अथविद्ता और सातत्य के सिद्धान्त गुणनफल अद्वितीय सिद्धान्त प्रतिव्योम सूच, केन्द्रीय सीमा सिद्धान्त, पूर्ण की समस्याएं।

(ख) **यादृच्छिक क्रियाविधियां**

यादृच्छिक क्रियाविधियों की परिभाषा और वर्गीकरण

अनुक्रम (वास्तविक समय का इंटरयल या विविकल) से इंडेक्स की हुई वास्तविक यादृच्छ पद के समूह के रूप में यादृच्छिक क्रियाविधियां/सीमित आयोग वितरण कार्यों की श्रेणी और उससे संबंधित कोलमोगोरोव का साक्षेपता संबंधी विवरण।

यादृच्छ पदों में निर्भरता के विभिन्न प्रकार, स्वतन्त्रता, स्वतन्त्र विकास मारटिंगेल्स। मार्को निर्भरता, विस्तृता और संकुचित प्रकार की अबलता।

मार्को व क्रियाविधियां :—डिस्क्रीट पैरोमीटर सहित और सीमित व डीन्यूमिरेबल्व स्टेट स्थेसिस सहित पूर्णतः अचल मार्कोव कार्याविधि (मार्कोव चेंस के नाम से भी विख्यात) संक्रमण संभावना, मैट्रिसेसस : स्थितियों का वर्गीकरण और स्थितियों की श्रेणियां।

लगातार पैरोमीटर सहित मार्कोव कार्याविधि डिस्ट्रीट स्टेट स्पेस : कोलमोंगोरोव का फोवर्ड और बैकवर्ड समीकरण, मोंगो

जनसंख्या की वृद्धि से संबंधित साधारण, समयोपेक्षी यादृच्छिक कार्य विधियां : मत्स्य कार्याविधि। विशुद्ध जन्म कार्यविधियां जन्म मृत्यु कार्य विधियां, जन्म मत्यु कार्याविधि (बाद के दो प्रकार की लाइनियर प्रोसेस के मामले में पूर्ण हल)।

विस्तृत कार्यों में अचल कार्याविधि और डिस्क्रीट पैरामीटर

सहविमेदीकरण कार्य, सहविमेदीकरण कार्य और कार्याविधि का स्पेक्ट्रेल रिप्रेजनटेशन, अचल कार्यविधियों के पारस्परिक निष्पादनों के उदाहरण सामान्य राशनल स्पेक्ट्रेल डेंसीटी के उदाहरण।

18. सांख्यिकीय अनुमान

नोट :—उम्मीदवार को खण्ड 'क' और 'ख' अथवा खण्ड 'क' 'ग' प्रश्नों का उत्तर देना होगा।

(क) (I) **प्राक्कलन**

प्राक्कलन की विभिन्न विधियां, अधिकतम संभाविता की विधि, न्यूनतम वर्ग विधि पूर्ण की विधि, लघुतम वर्गों की विधि, अधिकतम संभावित आगणक के अनंतस्पर्शयी गुण धर्म।

कमर राव असमता और बहु समष्टिक मामलों में उसका सामान्यीकरण भट्टाचार्य परिबंध। पर्याप्त सांख्यिकी गुण खण्डन प्रमेय, पिटमैन—कूपमेने—डरमोहस प्रकार के बंटलन पर्याप्त सांख्यिकी के न्यूनतम सेट, राव ब्लेक वेक्त का प्रमेय। संभाविता बंटन का पूर्ण परिवार पूर्ण सांख्यिकीय। न्यूनतम प्रसरण प्राक्कलन पर लेहमान शेफे का सिद्धान्त।

(II) **परिकल्पनाओं का परीक्षण**

परिकल्पना परीक्षण का नैमेनर्यिसन सिद्धान्त। यादृच्छिक अयादृच्छिक परीक्षण।

अति शक्ति और समानतः अधिशक्त परीक्षण। 'नेमेन पियर्सन की मूल प्रमेयिका। अनामिनत त्रुटि, परीक्षणों की सांमजस्यता और उक्षता। समान क्षेत्र, स्थानीय अनुकूलतम गुणधर्म सहित परीक्षा 'ए' 'ए' व 'ए'/'बी' 'सी' तथा 'डी' किसम के संशय अंतराल। पूर्णतया और एकरूपता वाले सिद्धातों में संबंध। परीक्षण विन्यास का संभाविता अनुपात सिद्धांत और उसके कुछ प्रयोग।

(III) **गैर-प्राचलिक परीक्षण**

क्रम आंकड़े लघु प्रति चयन और दीर्घ प्रतिचयन बंटन यक्त विश्वस्त अतराल। निम्नलिखित के लिए बंटन मुक्त क्षेत्र :—

(I) आसजन सोष्ठव का वर्गीय परीक्षण, कोलमोगोराव सिम्रनोव परीक्षण।

(II) दो जनसंख्याओं की तुलना : चाल परीक्षण, डिक्सन का परीक्षण, विलकाक्सन का परीक्षण, माध्यिका परीक्षण, लक्षण परीक्षण, फिसरपिटमैन का परीक्षण।

(III) स्वातंत्र्य, असंगता, का वर्ग स्पयरमेन और केंडल का कोटि सह संबंध गुणांक।

असमष्टीय परीक्षणों के बृहत् प्रतिचयन गुणधर्म। द्विशूलीय न्यास (यूस्टेटिक्टिस) और उनके सीमांत बंटन।

(**ख**) **निर्णय फलन**

सांख्यिकीय योजना और उससे संबंधित चयन के सिद्धांत। सांख्यिकीय योजना के रूप में सांख्यिकीय समस्याओं का निरूपण, निर्णय फलन, यादृच्छिक और अयादृच्छिक निर्णय के नियम। मिनियक्स बोर्ड के न्यूनतम खेद निर्णय नियम। वर्ग त्रुटि हानि फलन में ग्राह्म और मिनिमेक्स प्राक्कलन। परीक्षार्थी के बलिष्ट पूर्ण वर्ग।

पर्याप्त का सिद्धान्त और अप्रसरण का सिद्धांत। हंट स्टीम प्रमेय। मिनिमेक्स अप्रसरण निर्णय नियम।

(ग) **बहुचर विश्लेषण**

बहुचर सामान्य बंटन, माध्य सादिश और सह प्रसरण आव्यूह का प्राक्कलन, प्रतिचयन माध्य सादिश और अज्ञात आव्यूह का प्राक्कलन प्रतिचयन माध्य सादिश और अज्ञात आव्यूह के साथ माध्य सादिश से संबंधित अनिमिति का बंटन 'टी' के अनुकूलतम गणक। सामान्य सह संबंध में एक या और अनेकथा समाश्रयण गणंक वेहूरेनफिर का निर्मेय विशार्ट बंटन, विशार्ट का वर्धागुणधर्म प्रसरण का सामान्यीकृत विश्लेषण विहित चर और विहित सह संबंध अनेक सह प्रवरण आव्यूहों की समानता।

19. **प्रयोग अभिकल्प**

परीक्षण के सिद्धांत: यादृच्छिकरण पुनरावृत्ति और त्रुटि नियंत्रण, त्रुटि नियंत्रण के उपाय, परीक्षण इकाइयों के आकार-प्रकार और बनावट का चयन, परीक्षण इकाइयों का समूह।

प्रसरण विश्लेषण की मूल मान्यताएं। उप-संयोज्यता, प्रसरण विषमांग और अपसामान्यता का प्रभाव। स्थान्तरण/ शुद्ध और मिश्रित माडल। सहकर्ता चरों का उपयोग। सह प्रसरण विश्लेषण।

अपूर्ण खण्ड नमूनों का निर्माण और विश्लेषण (अंतर्खण्डीय जानकारी सहित या रहित) गवाक्ष नमूने आंशिक रूप से संतुलित खंड नमूने, कुछ दिशाओं में विषमांगता दूर करने के लिए हाड़पर ग्रेसियों लेटिन स्केवेयर और अन्य नमूने।

गुणनफलों के नमूनों का निर्माण और उनका विश्लेषण, समानांतरण श्रेणी में गुणनफलों के परीक्षण से प्राप्ति, पूर्ण और आंशिक, संतुलित भ्रांति। मुख्य प्रभावों की प्राप्ति विघटित क्षेत्र आवंटित क्षेत्र तथा अन्य नमूने। गुणनफल अभ्यावृद्धि। गुणात्मक और संख्यात्मक गुणनखंडों का परीक्षण।

लुप्त या मिश्रित उपजों के परीक्षण के लिये विश्लेषण की विधियाँ अलम्ब कोणीय आंकड़ों का विश्लेषण। परीक्षण वर्गों के परिणामों का संयोजन अनुक्रिया वक्र और अनुक्रिया या प्रमाणीकरण।

20. **शुद्ध गणित-I**

सहज धरों के कार्य डीड काईड-विधि से परिमेय संख्याओं में से सहज संख्याओं के निर्माण की प्रणाली। अनुक्रम और फलन की सीमाएं और प्रतिबंध अनुक्रम के क्रमिक और साध्य रूपक परिवर्तन अंगत श्रेणी और अनंत गुणनफल।

मीटर अवकाश खुले और बंद कुलक सतत फलन और समस्यता, अभिसरण और पूर्णता पूर्ण मीटर अवकाशों में समावेशी और बंद कुलकों का प्रमेय। मीटर अवकाशों में समावेशी और बंद कुलकों का प्रमेय। मीटर अवकाशों और यूक्लिडियन अवकाश। समस्त सातत्व और अरजका प्रमेय। मीटर अवकाशों में संबंध कुलक।

एक अथवा अनेक यथार्थ पदों के फूलन की अवकलनीयता। मध्य मूल प्रयोग एक अथवा अनेक पदों के फलन में टेलर वृत्त विस्तार। लंगरेंज गुणकों सहित फलनों का चरम मूल्य। अस्पष्ट और प्रतिलोमफलन प्रमेय। फलनीय आश्रितता और जेकोवियन।

रीमान अनुफलन, अनुफल फलनों के माध्य मूल—प्रमेय अनुफलन गणित। अनुचित अनुकल। अनुकलों का अभिसरण। बहुत अनुकूल ग्रीन औरस्टोक्स के प्रमेय। माप सिद्धांत : लेविसग्यु माप, मापयोग्य कुलक और उनके गुणधर्म। मापयोग्य फलन। परिमित माप के कुलकों पर परिसीमित फलनों कालेजिसग्यु अनुकल। अनृण फलन का अनुकल। सामान्य लेबिसग्यु अनुकल। माप में अभिसरण फलऊफी प्रमेयिका। एक दिष्ट प्रभावी और परिसीमित अभिरण प्रमेय। विटासी व्याप्ति प्रमेय। परिसीमित चरों का प्रसरण। निरपेक्ष सतत फलन। अनुकल कलन का आधार भूत प्रमेय स्टीलजेंस अनुकलन।

जटिल पदों का फलन :—वैश्लेषिक फलन। कोसी रोमन सभी जटिल फलनों का समाकलन। कोशी का मूलमूल प्रमेय और समाक्कलन सूच। मैरिरा प्रमेय। टेलर और लारेन्ट—विस्तार। शून्य और ध्रुव विचित्रताएं। अविशिष्ट प्रमेय और उसके उपयोग। तर्की सिद्धांत रोशी प्रमेय। अधिकतम मापांक सिद्धांत और स्वार्ज प्रमेयिका।

द्वियतीय स्थान्तरण। अनुकोण निरूपण। दूहरे आवती-फलन। वायरष्ट्रास फंलन। जकोबी के एस० एन०, सी० एम०, डी० एन०, (Sm, Cn, Dn) फलन। दीर्घ-वृत्तीय समाकल।

21. **शुद्ध गणित**-II

आव्यूह तथा सारणिकी सहित आधुनिक बीजगणित:—समूह और अद्ध समूह। समस्यता। स्थांतरण समूह। केले प्रमेय, चक्रीय समूह। क्रमचर्य सम और विषम क्रमचर्य। सहकूलक समूहों का विघटन। लेगरेज प्रमेय अचल उप समूह और गुणांक समूह। समस्थता और स्वस्थता। सयुग्मी तथ्य सामान्य श्रेणियां मिश्रित श्रेणियां और मोर्डन हाल्डर प्रमेय।

वलय :—अनुकल प्रान्स, भाग बलय क्षेत्र। आव्यूह कलय।
चतुष्ठय :—उप बलय।

आदर्श :—महिष्ठ प्रधान और मुख्य आदर्श। अद्वितीय गुणनखण्ड प्रान्त अन्तरवलय पूर्ण संख्याओं का आदर्श और अंतर वलय। फरमेट प्रमेय। वलयों की समस्थता।

क्षेत्र विस्तार—बीजगणित और बीजातीत क्षेत्र विस्तार। गैलाइंस सिद्धान्त के अवयव और अवयवों द्वारा समीकरण के हल में उसका उपयोग।

सदिश अवकाश क्षेत्र। उप अवकाश और उनका बीज-गणित। एक घातीय स्वायंत्रय, आधार, विस्तार, गुणक अवकाश। समस्यना और सादिश अवकाश।

एक घातीय समीकरण पद्धति। वाव्यूह पद। आव्यूहों के तुल्य संबंध प्रारम्भिक आव्यूह, श्रेणी तुल्यांक, तुल्यांक समस्तया।

सदिश अवकाशों पर एक घातीय स्थांतरण, उनकी कोटि और शून्यता द्वैत अवकाश और द्वैत आधार। एक घातीय, द्विघातीय और चतुष्ठयस्थ कोटि और चिह्न, चतुष्ठय रूप का विहित रूप का विहिन रूप में लघुकरण और दो चतुष्ठय रूपों का युगपन लघुकरण।

सारणिक फलन, उसका अस्तित्व अद्वितीयता। सारणिक विस्तार का सैप्लेस की विधि। दो सारणियों का गुणन फल। वीनेट—कोशी सूत्र सवण और अल्पिष्ठ बहुपद, प्रमयोत्पन्न मान और प्रथमल्फि सदिश। केले हैमिल्टन प्रमेय। विकर्णीकृत प्रमेय।

पम—विमितीय ज्यामिति : इन विमितीय ज्यामिति के अवयव। डेकसार्ग का प्रमेय। एकमातीय अवकाणों के स्वातंत्रय की माला। द्वैतता। समानान्तर रेखाएं। दीर्घवृत्तीय, अति-परवलीय, यूक्लीडियन और प्रक्षेपीय ज्यामितियां। सपाट धरातल (सम-1) के समानान्तर रेखा। एन-परिस्पारिका संकोण रेखाएं। सपाट अवकाशों के बीच का अंतर और कोण।

उत्तल कुलक और उत्तल शंकु। उत्तल आवरण अति-समतलों के पृथक् करने के प्रमेय। तत से प्रतिबंधित बंद उत्तल कुलांक का प्रमेय। जिनके प्रत्येक आलंबी अतिसमतलों में चरम विन्दु होते हैं। चरम विन्दुओं का उत्तल आवरण। उत्तर बहुतलशंकु। क्षेत्रों में एक घातीय स्थान्तरण। अवकल ज्यामित: अवकाण वक्र, वेष्टन। उन्नेय आधार। वक्र से सम्बन्धित उन्नेय। आधारग्रत वक्र घातीय निदेशांक। प्रथम और द्वितीय आधारभूत रूप। सामान्य खण्ड की वक्रता। वक्रकृति की रेखाएं। संयुग्म विधियां। अनंतस्पर्शी रेखाएं। गोल और काडाजो के समीकरण। धरातल पर दो विन्दुओं के बीच की सब से छोटी रेखा और दो विन्दुओं के बीच की सबसे छोटी समानान्तर रेखा रेखित आधार।

22. **शुद्ध गणित** -III

संख्यात्मक विश्लेपण और अवकल समीकरण। परिमित अवकल। अन्तर्वेशन। बहिर्वेशन। प्रतिलोप अन्तर्वेशन। संख्यात्मक अवकल और संख्यात्मक अनुकल। प्रथम श्रेणी के अवकल समीकरणों की उत्पत्ति, एक घातीय अवकल समी-करणों के सामान्य गुण धर्म। स्थिर गुणांकों के साथ एक घातीय अवकल समीकरण।

सामान्य अवकलन समीकरणों की उपपति। उपपति शुरू करने और उपपति जारी रखने की विधियां। सम्मिलित एक घातीय समीकरण और उनकी उपपत्ति बहुपत समीकरणों के मूल धन विधि द्वारा सामान्य नियमों की उपपत्ति। नोमोग्राम।

अवकलन समीकरण : डी वाई/डी एक्स=एफ (एक्सवाई) $dy/dx=f(xy)$ के हल का अस्तित्व प्रमेय।

प्रथम कोटि के एक घातीय और अघातीय समीकरण। स्थिर गुणांकों के साथ एक घातीय समीकरण। समस्त एक घातीय समीकरण। दूसरी कोटि के एक धारीय समीकरण। श्रेणीगत अनुकलों की फीवन साविध। लीजेन्डर और हरमिट समीकरणों की उपति। लीजेन्डु, और हरमिट बहुपदों और हरमिट फलनों के प्रारम्भिक गुण धर्म। सम्मिलित एक घातीय समीकरणों की विधियां। तीन तर्शी के साथ पूर्ण अवकल समीकरण।

आंशिक अवकल समीकरण : पहली और दूसरी कोटि के आंशिक अवकल समीकरण, लेगरेज, चारिमिव और मोगों की विधियां। स्थिर गुणांकों के साथ एक घातीय आंशिक अवकल समीकरण। पदों के पृथक्करण द्वारा लाप्लास तरंग और विचरण समीकरण की उपपत्ति।

विचरणों का फलन :—यलूर समीकरण के न्यूनतम व्युत्पत्ति की अनिवार्य शर्तें: हेमिल्टन का सिद्धांत। हेमिल्टन-वादी। समपरिमापी निर्भेय। पद और बिन्दु निर्भेद। अनुकल फलनों का लघुतम। बोल्जा। निर्भेय। बहुत अनुकल निर्भेय। विचरणों का फलन की प्रत्यक्ष विधियां। द्वितीय विचरण और लघुतम के लिए जीजेन्दू की अनिवार्य शर्तें।

हरात्मक विश्लेषण : केरियार श्रेणियों द्वारा फलन प्रदर्शन। डीरिचिले। समाकल। रोमन लेविसग्यू प्रमेय। रोमन का स्थानीकरण प्रमेय। फेरियर श्रेणियों (जोर्डन, डिनी, एण्ड डी० ला वल्ली पोलिन) के अधिमरण के लिए यथेष्ट शर्तें, केरियर अनुकूल प्रतिचयन प्रमेय। घात वर्णक्रम। स्वसह संबंध और अनुप्रबन्ध सह संबंध।

23. प्रयुक्त गणित

स्थैतिकी : असमततीय वलों में दृढ़ मिंड के साथ की सदिश प्रतिपादन। केन्द्रीय अक्ष। आभासी कार्य के सिद्धांत। स्थिरता। केन्द्रीय वलों की ज्याएं। सादा और समतली ों पर ज्या का साम्य। लचक ज्या। दण्ड, डिस्क और वलय के विभव और आकर्षण।

गति विज्ञान :—न्यूटन के गति नियम डी एलेम्बर्ट का सिद्धांत। रेखिक गति आवेगी कल और संवछूटन। संवकेग और ऊर्जा का सिद्धान्त। स्वातंत्र्य और निरूद्धता की मात्राएं। सामान्यीकृत निर्देशांक। समय स्वतन्त्र प्रणाली का लेगेरेज समीकरण। यूलर के गतिकीय और ज्यामित्तीय समीकरण। हैमिल्टन का सिद्धांत। हैमिल्टन का समीकरण। बहुपिंड का परिचय।

द्रव गति विज्ञान : यूलर और लेगरेज के गति समीकरण। ग्रोस रेखाएं। आवर्तिता और संचरण तथा आदर्श द्रवों में उनकी स्थिरता।

बरनौली का प्रमेय और उसका प्रयोग। सिलिंडरों और वलायों के चतुर्दिक विभव ब्लूशेम का प्रमेय और उसका प्रयोग। द्रेक्कतकीय नियमों की उपपत्ति की प्रतिबंध विधियां और अनुकोण स्थान्तरण। आर्वत्वगति के सामान्य गुणधर्म अद्वितीयता प्रमेय। सांद्र देव। नेपियर—स्टीक्स के समीकरण। सामान्तर दीवारों और सीधे पाइपों में प्रवाह। औसीन और स्टाक्स केसीम्रिकट वलय पूर्व मंद गति।

विद्युत् और चुम्बकत्व : कलोम्ब नियम। जार्जेज। घातक और धारित्र। विद्युत् पारक। स्थिर करेंट। करेंटों के चुम्बकीय प्रभाव प्रेरित करेंट और क्षेत्र। मेक्लेसेल समीकरण। दो माध्यमों के अंतः पृष्ठ की विद्युत् चुम्बकीय दशाएं। विद्युत् चुम्बकीय विभव, भार और ऊर्जा। पोयटिंग का प्रमेय। जूल उष्मा प्रत्यावर्ती करेंट समषणोधरमी विद्युत् पारक में विद्युत् चुम्बकीय तरंगें। विद्युत् चुम्बकीय तरंगों परावर्तन और वर्तन। चालित माध्यम तरंग।

ऊष्मागतिकी :—ऊष्मा, ताप और एन्ट्रोपी की परिभाषा की संकल्पना। ऊष्मागतिकी के प्रथम और द्वितीय नियम। विशिष्ट ऊष्मा। अवस्था परिवर्तन। वादप दबाव। ऊष्मा चालन। विकिरण। प्लेक का नियम। स्टीफन का नियम। ऊष्मागतिकी के फलन और विभव। विषम प्रणालियों और निबका व्यवस्था नियम।

सांख्यिकीय यांत्रिकी : आकृति अवकाश के ज्यामिति और प्रगतिकी : मेक्सवेल—वोल्जगेन, ग्रोस—आइंस्टीन और फर्मो—डिरेक के आंकड़े।

(भाग—ख)

मौखिक परीक्षा

उम्मीदवारों का साक्षात्कर सुयोग्य और निष्पक्ष विद्वानों के बोर्ड द्वारा किया जाएगा, जिसमें प्रख्यात शिक्षा शास्त्री भी होंगे। बोर्ड के सामने उम्मीदवार का सेर्वांगीण जीवन वृत्त होगा। साक्षात्कार का उद्देश्य यह है कि जिस सेवा या जिन सेवाओं के लिए उम्मीदवार में परीक्षा में सम्मिलित हुआ है, उसके/उनके लिए व्यक्तिगत की दृष्टि से वह उपयुक्त है अथवा नहीं। साक्षात्कार उम्मीदवार के सामान्य और विशिष्ट ज्ञान और योग्यता की जांच करने के लिए लिखित परीक्षा को सम्पूर्ण करने के उद्देश्य से लिया जाता है। उम्मीदवारों से आशा की जाएगी कि वे केवल अपने विद्याध्ययन के विशेष विषयों में ही सूझ-बूझ के साथ रुचि न लेते हों, अपितु उन घटनाओं में भी रुचि लेते हों, जो उनके चारों ओर अपने राज्य या देश की भीतर और बाहर घट रही हैं तथा आधुनिक विचारधाराओं में और उन नई खोजों में रुचि ले, जिनके प्रति एक सुशिक्षित व्यक्ति में जिज्ञासा उत्पन्न होती है।

साक्षात्कार जटिल परिमृच्छा की प्रक्रिया नहीं है अपितु स्वाभाविक निदेशन और प्रयोजन युक्त वार्तालाप की प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य उम्मीदवारों के मानसिक गुणों और समस्याओं को समझने की शक्ति का उद्घाटन कर करना है। बोर्ड द्वारा उम्मीदवारों का मानसिक सतर्कता आलोचनात्मक ग्रहण शक्ति संतुलित निर्णय की शक्ति और मानसिक सतर्कता, सामाजिक संगठन की योग्यता, चारित्रिक इमानदारी, नेतृत्व की पहल और क्षमता के मूल्यांकन पर विशेष बल दिया जाएगा।

परिशिष्ट—III

इस परीक्षा के द्वारा जिन सेवाओं में भर्ती की जा रही है, उनका संक्षिप्त ब्यौरा :—

1. जो उम्मीदवार दोनों से किसी भी सेवा के लिए सफल होंगे, उनकी नियुक्ति उस सेवा के ग्रेड—IV में परख पर की जाएगी जिसकी अवधि दो वर्ष होगी, और इस अवधि को बढ़ाया भी जा सकता है। सफल उम्मीदवारों की परख की अवधि में भारत सरकार के निर्णयानुसार निर्धारित प्रशिक्षण या पाठ्यक्रम और शिक्षण तथा परीक्षा पास करनी होगी।

2. यदि सरकार की राय में किसी परिवीक्षाधीन अधिकारी का कार्य या आचरण संतोषजनक न हो या उसे देखते हुए उसके कार्यकुशल होने की संभावना न हो, तो सरकार उसे तत्काल सेवा मुक्त कर सकती है।

3. परख अवधि या उसको बढ़ाई हुई अवधि की समाप्ति पर यदि सरकार की राय में उम्मीदवार स्थाई नियुक्ति के लिए योग्य नहीं है, तो सरकार उसे सेवा मुक्त कर सकती है।

4. यदि सरकार की राय में उम्मीदवार ने संतोषजनक रूप से अपनी परख अवधि समाप्त कर ली है, और यदि वह स्थाई नियुक्ति के लिए उपयुक्त समझा जाए तो उसे स्थाई पदों में मौलिक रिक्तियां उपलब्ध होने पर पक्का कर दिया जाएगा।

5. भारतीय अर्थ सेवा और भारतीय सांख्यिकीय सेवा के निर्धारित वेतनमान निम्नलिखित हैं :—

चयन ग्रेड (सलेक्शन ग्रेड) रु० 2000–125/2–2250
ग्रेड I–निदेशक रु० 1800–100–2000
ग्रेड–II–संयुक्त निदेशक रु० 1500–60–1800।
ग्रेड–III–उप निदेशक रु० 1100–50–1600
ग्रेड–IV–सहायक निदेशक रु० 700–40–900–द० रो०–40–1100–50–1300।

6. उक्त सेवा के अगले ग्रेड में पदोन्नति समय-समय पर यथासंशोधित भारतीय अर्थ सेवा/भारतीय सांख्यिकीय सेवा नियमों के उपबन्धों के अनुसार की जाएगी।

भारतीय अर्थ सेवा/भारतीय सांख्यिकीय सेवा के अधिकारी को केन्द्रीय सरकार के अन्तर्गत भारत में कहीं भी या भारत के बाहर कार्य करने के लिए नियुक्त किया जा सकता है। अथवा इनको निश्चित अवधि के लिए प्रतिनियुक्ति पर भेजा जा सकता है।

7. दोनों सेवाओं के अधिकारियों की छुट्टी पेंशन और सेवा की शर्तें उसी प्रकार होंगी जो भारत सरकार के मूल नियम (फंडामेंटल रूल्स) और सिविल सेवा विनियम (सिविल सर्विस रेगुलेशन्स) में दी गई हैं और जिनमें सरकार द्वारा समय-समय पर संशोधन हो सकता है।

8. समय-समय पर संशोधित समान्य भविष्य निधि (केन्द्रीय सेवाएं) नियमावली (जनरल प्राविडेंट फंड-सेन्ट्रल सर्विसेज रूल्स) के अन्तर्गत इस निधि में अभिदान कर सकेंगे।

परिशिष्ट–I

उम्मीदवारों की शारीरिक परीक्षा के बारे में विनियम

ये विनियम उम्मीदवारों की सुविधा के लिए दिए जा रहे हैं ताकि वे इस बात का पता लगा सकें कि उनका शारीरिक स्वास्थ्य अपेक्षित स्तर का है या नहीं। ये विनियम मेडिकल परीक्षणों के मार्गदर्शन के लिए है और जो उम्मीदवार इन विनियमों में निर्धारित की गई न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा नहीं करता, उसको मेडिकल परीक्षक स्वस्थ्य घोषित नहीं कर सकते। किन्तु जब मैडिकल बोर्ड की यह राय हो कि उम्मीदवार इन विनियमों में निर्धारित स्तर के अनुसार स्वस्थ्य नहीं है तो भी मैडिकल बोर्ड को यह अनुमति है कि वह भारत सरकार को विशेषकर लिखे हुए कारणों द्वारा सिफारिश कर सकता है कि उसको सरकार को हानि बिना नौकरी में लिया जा सकता है।

परन्तु यह साफ-साफ समझ लेना चाहिए कि भारत सरकार अपने निर्णय से मैडिकल बोर्ड की रिपोर्ट पर विचार करने के साथ किसी उम्मीदवार को स्वीकार या अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार रखती है।

1. नियुक्ति के योग्य ठहराए जाने के लिए यह जरूरी है कि उम्मीदवार का मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य ठीक हो और उम्मीदवार में कोई ऐसा शारीरिक दोष न हो जिसे नियुक्ति के बाद दक्षतापूर्वक काम करने में बाधा पड़ने की संभावना हो।

2. भारतीय (एंग्लो इंडियन समेत) जाति के उम्मीदवारों के आयु, कद और छाती के घेरे के परस्पर संबंध के बारे में मेडिकल बोर्ड के ऊपर यह बात छोड़ दी गई है कि वह उम्मीदवारों की परीक्षा में मार्गदर्शन के रूप में जो भी परस्पर संबंधी आंकड़े सब से अधिक उपयुक्त समझे व्यवहार में लाए। यदि वजन, कद और छाती के घेर में विषमता हो तो जांच के लिए उम्मीदवार को अस्पताल में रखना चाहिए और छाती का एक्सरे लेना चाहिए। ऐसा करने के बाद ही बोर्ड उम्मीदवार को योग्य अथवा अयोग्य घोषित करेगा।

3. उम्मीदवार का कद निम्नलिखित विधि से नापा जाएगा :—

वह अपने जूते उतार देगा और उसे माप दण्ड (स्टैन्डर्ड) से इस प्रकार सटा कर खड़ा किया जाएगा कि उसके पांव आपस में जुड़े रहें और उसका वजन सिवाए एड़ियों के, पांवों की ऊंगलियों या किसी और हिस्से पर न पड़े। यह बिना अकड़ सीधा खड़ा होगा और उसकी एंड़ियां, पिंडलियां, नितंब और कंधे माप दण्ड के साथ लगे होंगे। उसकी ठोढी नीची रखी जाएगी ताकि सिर का स्तर (वर्टेक्स आफ वि हैड लेवल) हारिजेंटल बार (आड़ी छड़) के नीचे आ जाए। कद सेंटीमीटरों और आधे सेंटीमीटरों में नापा जाएगा।

4. उम्मीदवार की छाती नापने का तरीका इस प्रकार है :—

उसे इस भाँति सीधा खड़ा किया जाएगा कि उसके पांव जुड़े हों और उसकी भुजाएं सिर से ऊपर सटी हों। फीते को छाती के गिर्द इस तरह से लगाया जाएगा कि पीछे की ओर इसका ऊपरी किनारा असफलक (शोल्डर ब्लेड) के निम्न कोणों (इन्फीरियर एंगल्स) से लगा रहे और यह फीते की छाती के गिर्द ले जाने पर उसी आड़ समतल (हारिजेंटल प्लेन) में रहे। फिर भुजाओं को नीचे किया जाएगा। और उन्हें शरीर के साथ ढीला लटका रहने दिया जाएगा किन्तु इस बात का ध्यान रखा जाएगा कि कंधे ऊपर या पीछे की ओर न किए जाएं जिससे कि फीता न हिले। जब उम्मीदवार को कई बार गहरा सांस लेने के लिए कहा जाएगा और छाती का अधिक से अधिक फैलाव सेंटीमीटरों में रिकार्ड किया जाएगा, 84–89, 86–93 आदि। नाप को रिकार्ड करते समय एक सेंटीमीटर से कम के भिन्न (फ्रेक्शन) को नोट नहीं करना चाहिए।

नोट :— अंतिम निर्णय लेने से पहले उम्मीदवार की ऊंचाई और छाती दो बार नापी जाएगी।

5. उम्मीदवार का वजन भी लिया जाएगा और उसका वजन किलोग्रामों में रिकार्ड किया जाएगा। आधे किलोग्राम से कम के फ्रेक्शन को नोट नहीं करना चाहिए।

6. (क) उम्मीदवार की नजर की जांच निम्नलिखित नियमों के अनुसार की जाएगी। प्रत्येक का परिणाम रिकार्ड किया जाएगा।

(ख) चश्में के बिना नजर (नेकेड आई विजन) की कोई न्यूनतम सीमा (मिनिमम लिमिट) नहीं होगी, किन्तु प्रत्येक केस में मैडिकल बोर्ड या अन्य मैडिकल प्राधिकारी दूर से उसे रिकार्ड किया जाएगा। क्योंकि इससे आंख की हालत के बारे में मूल सूचना (बेसिक इन्फार्मेशन) मिल जाएगी।

(ग) चश्में के साथ और चश्में के बिना दूर और नजदीक की नजर की निम्नलिखित मानक निर्धारित किया जाता है :—

दूर की नजर		नजदीक की नजर	
अच्छी आंख	खराब आंख (संशोधित दृष्टि)	अच्छी आंख (संशोधित दृष्टि)	खराब आंख
6/9	6/9		
	अथवा		
6/9	6/12	जे० I	जे० II

(घ) निकट दृष्टि के प्रत्येक मामले में, फंडस परीक्षा की जानी चाहिये और उसका परिणाम रिकार्ड किए जाना चाहिये। व्याधिकृत दशा मौजूद होने पर जो कि बढ़ सकती है और उम्मीदवार की दक्षता पर प्रभाव डाल सकती है, उसे अयोग्य घोषित किया जाए।

(ङ) दृष्टि क्षेत्र:—सम्मुखन विधि (कन्फ्रंटेशन मैथड) द्वारा क्षेत्र की जांच की जाएगी। जब ऐसी जांच का नतीजा असंतोषजनक या संदिग्ध हो तब दृष्टि क्षेत्र को परिमापी (पैरोमीटर) पर निर्धारित किया जाना चाहिये।

(च) रतौंधी (नाइट-ब्लाइंडनस) साधारणतया रतौंधी दो प्रकार होती है (क) विटामिन (ए) की कमी होने के कारण और रेटीना के व्यावहारिक रोग के कारण रेटीनीटिस प्रिगमेन्टोसा होता है। जिसका सामान्य कारण उपर बताई गई (1) की स्थिति में फंडस में प्रसामान्य होता है, साधारणतया छोटी आयु वाले व्यक्तियों में और कम खुराक खाने वाले व्यक्तियों में दिखाई देता है और अधिक मात्रा में विटामिन 'ए' के खाने से ठीक हो जाता है, ऊपर बताई गई (2) की स्थिति में फंडस की खराबी होती है और अधिकांश मामलों में केवल फंडस की परीक्षा से ही स्थिति का पता चल जाता है। इस श्रेणी का रोगी प्रौढ़ होता है और खुराक की कमी से पीड़ित नहीं होता है। सरकार में ऊंची नौकरियों के लिये प्रयत्न करने वाले व्यक्ति इस वर्ग में आते हैं।

उपर्युक्त (1) और (2) दोनों के लिये अंधेरा अनुकूलन परीक्षा से स्थिति का पता चल जाएगा। उपर्युक्त (2) के लिये विशेष तथा फंडस खराब नहीं हो तो इलैक्ट्रो-रेटीनोग्राफी किए जाने की आवश्यकता होती है। इन दोनों जांचों में (अंधेरा अनुकूलन और रेटीनोग्राफी) में समय अधिक लगता है और विशेष प्रबन्ध और सामान की आवश्यकता होती है और इसलिये साधारण चिकित्सक जांच के लिये ये दोनों संभव नहीं। तकनीकी वार्ता को ध्यान में रखते हुए मंत्रालय/विभाग को चाहिये कि वे बताएं कि रतौंधी के लिये इन जांचों का करना अनिवार्य है या नहीं, यह इस बात पर निर्भर होगा कि पद से संबंध काम की आवश्यकता क्या है और जिन व्यक्तियों को सरकारी नौकरी दी जाने वाली है उनकी ड्यूटी किस तरह की होगी।

(छ) दृष्टि की पकड़ से भिन्न आंख की व्यवस्थाएं (आक्यूलर कंडीशन्स) :—

(i) आंख की उस बीमारी को या बढ़ती हुई वर्तन त्रुटि (प्रोग्रेसिव रिफ्रेक्टव एरर) को, जिसके परिणामस्वरूप दृष्टि की पकड़ कम होने की संभावना हो, अयोग्यता का कारण समझना चाहिये।

(ii) भेंगापन (स्किवंट) : तकनीकी सेवाओं में जहां द्विनेत्री (बाइनोकुलर) दृष्टि का होना अनिवार्य हो, दृष्टि की पकड़ निर्धारित स्तर की होने पर भी भेंगापन अयोग्यता का कारण समझना चाहिये।

(iii) एक आंख वाले व्यक्ति—यदि किसी व्यक्ति की एक आंख हो अथवा एक आंख की दृष्टि सामान्य हो और दूसरी आंख की दृष्टि एम्बल्यामिक अथवा अर्द्ध-सामान्य हो तो आमतौर पर उसका प्रभाव यह होता है कि गहराई को देखने के लिये स्टीरियों स्कोपिक दृष्टि उसकी कमजोर होती है। अनेक सिविल पदों के लिये इसकी आवश्यकता नहीं होती, मैडिकल बोर्ड ऐसे व्यक्तियों की सिफारिश कर सकते हैं यदि उनकी सामान्य आँख में :—

(i) ऐनक के साथ या ऐनक के बिना दूर की दृष्टि 6/6 और समीप की दृष्टि जे०-I हो, परन्तु शर्त यह है कि किसी भी मेरीडियन में गलती दूर की दृष्टि के लिये 4 डायोप्टीयर से अधिक न हो।

(ii) उसकी दृष्टि का क्षेत्र पूरा हो।

(iii) रंगों की सामान्य पहचान हो, जहाँ भी इसकी आवश्यकता हो, परन्तु शर्त यह है कि कोई इस बात से संतुष्ट हो कि उम्मीदवार संबंधित पद के सभी कार्य करने में समर्थ हो।

(ज) कोन्टेक्ट लैंस:—(Contact lenses)—उम्मीदवार की स्वास्थ्य परीक्षा के समय कोन्टेक्ट लैंस के प्रयोग की आज्ञा नहीं होगी। आंख की जाँच करते समय यह आवश्यक है कि दूर की नजर के लिये टाइप किए हुए अक्षर 15 पादवर्ती (फुट केन्डलस) से प्रकाशित हो।

7. रक्त दाब (ब्लड प्रेशर)।

रक्त दाब के संबंध में बोर्ड अपने निर्णय से काम लेगा।

नार्मल उच्चतम सिस्टोलिक प्रेशर के आकलन की काम चलाऊ विधि नीचे दी जाती है।

(i) 15 से 25 वर्ष के आयु वाले व्यक्तियों को औसत ब्लड प्रेशर लगभग 100 होता है।

(ii) 25 वर्ष से ऊपर की आयु वाले व्यक्तियों में ब्लड प्रेशर के आकलन का सामान्य नियम यह है कि 110 में आधी आयु सम्मिलित करें। यह तरीका बिल्कुल संतोषजनक दिखाई पड़ता है।

ध्यान दीजिये:—सामान्य नियम के रूप में 140 से सिस्टालिक प्रेशर को 90 के ऊपर के डायस्टालिक प्रेशर को संदिग्ध समझ लेना चाहिये और उम्मीदवार के योग्य या अयोग्य होने के संबंध में अपनी अंतिम राय देने से पहले बोर्ड को चाहिये कि वह उम्मीदवार को अस्पताल में रखे। अस्पताल में रखने की रिपोर्ट से यह पता लगना चाहिये कि घबराहट (एक्साइटमेंट) आदि के कारण ब्लड प्रेशर थोड़े समय रहने वाला है या उसका कारण कोई कायिक (आंगिक) बीमारी है। ऐसे सभी केसों में हृदय का एक्सरे और विद्युत हृदय लेखी (इलेक्ट्रो कार्डियो ग्राफिक) परीक्षाएं और रक्त यूरिया निकास (क्लायरेंस) की जाँच भी नैमी रूप से की जानी चाहिये। फिर भी उम्मीदवार के योग्य होने पर या न होने के बारे में अंतिम फैसला मैडिकल बोर्ड ही करेगा।

रक्त (दाब ब्लड प्रेशर) लेने का तरीका

नियमत: पारे वाली दावमापी (मर्करी मेनोमीटर) किस्म का आला (इंस्ट्रूमेंट) इस्तेमाल करना चाहिये। किसी किस्म के व्यायाम या घबराहट के बाद पन्द्रह मिनट तक रक्त दाब नहीं लेना चाहिए। रोगी बैठा या लेटा हो बशर्ते कि वह और विशेषकर उसकी भुजा पर से कंधे तक कपड़े उतार देने चाहिये। कफ से पूरी तरह हवा निकालकर बीच की रबड़ को भुजा के अन्दर की ओर रख कर और इसके निचले किनारे को कोहनी के मोड़ के एक या दो इंच ऊपर करके लगाना चाहिये। इसके बाद कपड़े की पट्टी को फैलाकर समान रूप से लपेटना चाहिये। ताकि हवा भरने पर कोई हिस्सा फूल कर बाहर को न निकले।

कोहनी के मोड़ पर प्रचंड धमनी (ब्रिकअल आर्टरी) को दबा कर ढूंढा जाता है और तब उसके ऊपर बीचों बीच स्टेथस्कोप को हल्के से लगाया जाता है जो कफ के साथ न लगे। कफ में लगभग 200 एम० एम० एच० जी० हवा भरी जाती है और इसके बाद इसमें से धीरे धीरे हवा निकाली जाती है। इसकी क्रमिक ध्वनियाँ सुनाई पड़ने पर जिस स्तर पर पारे का कालम टिका होता है वह सिस्टालिक प्रेशर दर्शाता है। जब और हवा निकाली जायेगी तो ध्वनियाँ तेज सुनाई पड़ेंगी। जिस स्तर पर ये साफ और अच्छी सुनाई पड़ने वाली ध्वनियाँ हल्की दबी हुई सी लुप्तप्राय हो जाएं, वह डायस्टालिक प्रेशर है। ब्लड प्रेशर काफी थोड़ी अवधि में से ही ले लेना चाहिये। क्योंकि कफल के लम्बे समय का दबाव रोगी के लिये क्षोभकर होता है और इससे रीडिंग गलत हो जाती है। यदि दोबारा पड़ताल हो तो कफ में से पूरी हवा निकाल कर कुछ मिनट के बाद ही ऐसा किया जाय। (कभी कभी कफ में से हवा निकालने पर एक निश्चित स्तर पर ध्वनियाँ सुनाई पड़ती हैं। दाब गिरने पर वे गायब हो जाती हैं और निम्नतर स्तर पर पुन: प्रकट होती हैं। इस साइलेन्ट गप से रीडिंग में गलती हो सकती है।

8. परीक्षक की उपस्थिति में किये गये मूत्र की परीक्षा की जानी चाहिये और परिणाम रिकार्ड किया जाना चाहिये। अब मैडिकल बोर्ड को किसी उम्मीदवार के मूत्र में रसायनिक जांच द्वारा शक्कर को पता चले तो बोर्ड इसके दूसरे सभी पहलुओं की परीक्षा करेगा और मधुमेह (डायबिटीज) के द्योतक चिन्हों और लक्षणों को भी विशेष रूप से नोट करेगा। यदि कोई उम्मीदवार को ग्लूकोज (ग्लाइकोयूरिया) के सिवाय, अपेक्षित मैडिकल फिटनेस के स्टैंडर्ड के अनुरूप जाए तो वह उम्मीदवार को इस शर्त के साथ फिट घोषित कर सकता है कि ग्लूकोज में अमधुमेह (नान डायबेटिक) हो और बोर्ड केस को मैडिसन के किसी ऐसे निर्दिष्ट विशेषज्ञ के पास भेजेगा जिसके अस्पताल और प्रयोगशाला की सुविधाएं हों। मैडिकल स्टैंडर्ड ब्लड शूगर टालरेंस टेस्ट समेत जो भी बिल निकलने या लेबोरेटरी परीक्षाएं जरूरी समझेगा करेगा और अपनी रिपोर्ट मैडिकल बोर्ड को भेज देगा जिस पर मैडिकल बोर्ड का "योग्य" या "अयोग्य" की अंतिम राय आधारित होगी। दूसरे अवसर पर उम्मीदवार के लिये बोर्ड के सामने स्वयं उपस्थित होना जरूरी नहीं होगा। औषधि के प्रभाव को समाप्त करने के लिये यह जरूरी हो सकता है कि उम्मीदवार को कई दिन अस्पताल में पूरी देख रेख में रखा जाए।

9. जो स्त्री उम्मीदवार जांचों के फलस्वरूप 12 सप्ताह या उससे अधिक अवधि की गर्भवती पाई जाए उसे तब तक के लिये अस्थायी रूप से अयोग्य घोषित कर दिया जाए जब तक इसकी गर्भावस्था समाप्त न हो जाए। गर्भाशय के समाप्त होने के 9 सप्ताह बाद यदि पंजीकृत चिकित्सक के स्वस्थता प्रमाण-पत्र प्रस्तुत कर दे तो आरोग्य प्रमाण-पत्र के लिये उसकी फिर से जांच कीजिए।

10. निम्नलिखित अतिरिक्त बातों का प्रेक्षण करना चाहिये,

(क) उम्मीदवार को दोनों कानों से अच्छा सुनाई पड़ता है या नहीं और कान की बीमारी का कोई चिन्ह है या नहीं। यदि कोई कान की खराबी हो तो इसकी परीक्षा कान विशेषज्ञ द्वारा की जानी चाहिये। यदि सुनने की खराबी का इलाज शल्य क्रिया (आपरेशन) या हियरिंग ऐड के इस्तेमाल से हो सके तो उम्मीदवार को इस आधार पर अयोग्य घोषित नहीं किया जा सकता बशर्ते कि उस के कान की बीमारी बढ़ने वाली न हो। चिकित्सा परीक्षा प्राधिकारी के मार्गदर्शन के लिये इस संबंध में निम्नलिखित मार्गदर्शक जानकारी दी जाती है :—

(1)	एक कान में प्रकट अथवा पूर्ण बहरापन, दूसरा कान सामान्य होना।	यदि उच्च फ्रीक्वेंसी में बहरापन 30 डेसीबेल तक हो तो गैर-तकनीकी काम के लिये योग्य।
(2)	दोनों कानों में बहरेपन का प्रत्यक्ष बोध, जिसमें श्रवण यंत्र (हियरिंग एड) द्वारा कुछ सुधार संभव हो।	यदि 1000 से 4000 तक की स्पीच फ्रीक्वेंसी में बहरापन 30 डेसीबेल तक हो तो तकनीकी तथा गैर-तकनीकी दोनों प्रकार के काम के लिये योग्य।

(3) सैन्ट्रल अथवा मार्जिनल टाइम के टिम्पेनिक मेम्बरेन में छिद्र ।	(I) एक कान सामान्य हो दूसरे कान में टिम्पेनिक मेम्बरेन छिद्र विद्यमान हो तो अस्थायी रूप में अयोग्य । कान की शल्य चिकित्सा की स्थिति सुधरने से दोनों कानों में मार्जिनता या अन्य छिद्र वाले उम्मीदवार को अस्थायी रूप में अयोग्य घोषित करके उस पर नीचे दिये गये नियम 4 (II) के अधीन विचार किया जा सकता है ।	
	(II) दोनों कानों में मार्जिनल या एटिक छिद्र होने पर अयोग्य ।	
	(III) दोनों कानों में सैन्ट्रल छिद्र होने पर अस्थायी रूप में अयोग्य ।	
(4) एक ओर से/दोनों ओर से मस्टायड केविटी सबनार्मल श्रवण वाले कान ।	(I) किसी एक कान से सामान्य रूप से सुनाई देता हो, दूसरे कान में मस्टायड केविटी होने पर तकनीकी तथा गैर-तकनीकी दोनों प्रकार के कामों के लिये योग्य ।	
	(II) दोनों ओर से मस्टायड केविटी तकनीकी काम के लिये अयोग्य, यदि किसी भी कान की श्रवणता श्रवण यंत्र लगाकर अथवा बिना लगाए सुधर कर 30 डेसीबेल हो जाने पर गैर-तकनीकी कामों के लिये योग्य ।	
(5) बहते रहने वाला कान/आपरेशन किया गया/बिना आपरेशन वाला ।	तकनीकी तथा गैर-तकनीकी दोनों प्रकार कानों के लिये अस्थायी रूप में अयोग्य ।	
(6) नासा-पट की हड्डी संबंधी विषमताओं (बोनी डिफार्मिज) सहित अथवा उससे रहित नाम की जीर्ण प्रदाहक/एलर्जिक दशा ।	(I) प्रत्येक मामले की परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लिया जाएगा ।	
	(II) यदि लक्षणों सहित नासा-पट अपसरण विद्यमान होने पर अस्थायी रूप में अयोग्य ।	
(7) टांसिल्स और/अथवा स्वर-यंत्र (लेन्सि) की जीर्ण प्रवाहक दशा ।	(I) टांसिल्स और/अथवा स्वरयंत्र की जीर्ण प्रदाहक दशा—योग्य ।	
	(II) यदि आवाज में अत्यधिक कर्कशता विद्यमान हो तो अस्थायी रूप में अयोग्य ।	
(8) कान, नाक गले (ई०एन० टी०) के हल्के अथवा अपने स्थान पर दुर्दम्य ट्यूमर ।	(I) हल्का ट्यूमर—अस्थायी रूप में अयोग्य ।	
	(II) दुर्दम्य ट्यूमर-अयोग्य ।	
(9) आस्टोक्लिशसिस	श्रवण यंत्र की सहायता से या आपरेशन के बाद श्रवणता 30 डेसीबेल के अन्दर होने पर योग्य ।	
(10) कान, नाक अथवा गले के जन्मजात दोष	(I) यदि कामकाज में बाधक न हो तो अयोग्य ।	
	(II) भारी मात्रा में हकलाहट हो तो अयोग्य ।	
(11) नेजल पौली	अस्थायी रूप में अयोग्य	

(ख) कि वह बिना किसी बाधा के बोल सकता है ।

(ग) उसके दांत अच्छी हालत में हैं या नहीं, और अच्छी तरह चबाने के लिये जरूरी होने पर नकली दांत लगे हैं या नहीं । (अच्छी तरह भरे हुए दांतों को ठीक समझा जायेगा ।)

(घ) उसकी छाती की बनावट अच्छी है या नहीं और छाती काफी फैलती है या नहीं तथा उसका दिल और फेफड़े ठीक है या नहीं ।

(ङ) उसे पेट की कोई बीमारी है या नहीं ।

(च) उसे रप्चर (हर्निया या फटन) है या नहीं ।

(छ) उसे हाइड्रोसील, बढ़ी हुई वेरिकोसील कैरिकोज शिरा (वेन) या बवासीर है या नहीं ।

(ज) उस के अंगों, हाथों और पैरों की बनावट और विकास अच्छा है या नहीं और सभी ग्रंथियाँ भली भांति स्वतंत्र रूप में हिलती हैं या नहीं ।

(झ) उसे कोई चिरस्थायी त्वचा की बीमारी है या नहीं ।

(ञ) उसे कोई जन्मजात कुचना या दोष है या नहीं ।

(ट) उसमें किसी उग्र या जीर्ण बीमारी के निशान हैं या नहीं जिनसे कमजोर गठन का पता लगे ।

(ठ) कारगर टीके निशान हैं या नहीं ।

(ड) उसे कोई संचारी (कम्यूनिकेबल) रोग है या नहीं ।

11. दिल और फेफड़ों को किसी ऐसी विलक्षणता का पता लगाने के लिये जो साधारण शारीरिक परीक्षा से ज्ञात न हो सभी मामलों (केसेज) में नेमी रूप से छाती की पटक्षेत्र (स्क्रीनिंग) की जानी चाहिये, जहां आवश्यक समझा जाए, एक छायाचित्र (स्काय ग्राम) लिया जाना चाहिये ।

जब कोई दोष मिले तो इसे प्रमाण पत्र में अवश्य ही नोट किया जाय । मेडिकल परीक्षक को अपनी राय लिख देना चाहिये कि उम्मीदवार से अपेक्षित दक्षतापूर्ण ड्यूटी में इससे बाधा पड़ने की संभावना है या नहीं ।

12. जहां तक मिलीजुली प्रतियोगिता परीक्षा के उम्मीदवारों का संबंध है उनके लिये ऊपर पैरा II की नीचे की टिप्पणी में बताई गई अपील करने की कार्यविधि लागू नहीं होती। इस परीक्षा के उम्मीदवारों को अपील शुल्क 50 रुपये भारत सरकार के इस संबंध मे निर्धारित ढंग से जमा करना होता है। यह फीस केवल उन उम्मीदवारों को वापस मिलेगी जो अपीलीय स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड द्वारा अयोग्य घोषित किये जाएंगे। शेष दूसरों के मामलों में यह जब्त कर ली जायेगी। यदि उम्मीदवार चाहे तो अपने अयोग्य होने के दावे के समर्थन में स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड द्वारा भेजे गए निर्णय के 21 दिन के अन्दर अपीलें पेश करनी चाहिये अन्यथा दूसरे स्वास्थ्य परीक्षा केवल नई दिल्ली में ही होगी और उसका खर्चा उम्मीदवार को ही देना पड़ेगा। दूसरी स्वास्थ्य परीक्षा के संबंध में की जाने वाली यात्राओं के लिये कोई यात्रा भत्ता या दैनिक भत्ता नहीं दिया जायेगा। अपीलों के निर्धारित शुल्क के साथ प्राप्त होने पर अपीलीय स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड द्वारा की जाने वाली स्वास्थ्य परीक्षा के प्रबन्ध के लिये मंत्रिमण्डल सचिवालय (कार्मिक और प्रशासनिक सुधार विभाग) द्वारा आवश्यक कार्यवाही की जायेगी)।

मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट

मैडिकल परीक्षक के मार्ग दर्शन के लिये निम्नलिखित सूचना दी जाती है :—

शारीरिक योग्यताएं (फिटनेस) के लिये अपनाई जाने वाले स्टैंडर्ड में संबंधित उम्मीदवार की आयु और सेवा काल (यदि हो) के लिये उचित गुंजाइश रखनी चाहिये।

किसी ऐसे व्यक्ति को पब्लिक सर्विस में भर्ती के लिये योग्य नहीं समझा जाएगा जिसके बारे में यथास्थिति सरकार या नियुक्ति प्राधिकारी (अप्वाटिंग अथारिटी) को, यह तसल्ली नहीं होगी कि उसे ऐसी कोई बीमारी या शारीरिक दुर्बलता (बाडिली इनफर्मिटी) नहीं जिसे वह उस सेवा के लिए अयोग्य हो या उसके अयोग्य होने की संभावना हो।

यह बात समझ लेनी चाहिये कि योग्यता का प्रश्न भविष्य से भी उतना ही संबंध है जितना कि वर्तमान से है और मैडिकल परीक्षा का एक मुख्य उद्देश्य निरंतर कारगर सेवा प्राप्त करना और स्थायी नियुक्ति के उम्मीदवारों के मामले में अकाल मृत्यु होने पर समय पूर्व पेंशन या अदायगियों को रोकना है। साथ ही यह भी नोट किया जाये कि जहां प्रश्न केवल निरंतर कारगर सेवा की संभावना का है और उम्मीदवार को अस्वीकृत करने की सलाह उस हालत में नहीं दी जानी चाहिये जब कि उसमें कोई ऐसा दोष हो जो केवल बहुत कम स्थितियों में निरंतर कारगर सेवा में बाधक पाया गया हो।

बोर्ड में साधारणतया तीन सदस्य होंगे (i) एक चिकित्सक (ii) एक शल्य चिकित्सक और (iii) एक नेत्र चिकित्सक। ये सभी यथा संभव साध्य समान स्तर के होने चाहिये। महिला उम्मीदवार की परीक्षा के लिये किसी महिला चिकित्सक (लेडी डाक्टर) को स्वास्थ्य बोर्ड के सदस्य के रूप में सहयोजित किया जायेगा।

भारतीय अर्थ सेवा (इंडियन इकानोमिक सर्विस) भारतीय सांख्यिकीय सेवा (इंडियन स्टेटिस्टीकल सर्विस) के उम्मीदवारों को भारत में और भारत से बाहर क्षेत्र सेवा (फिल्ड सर्विस) करनी होगी। इस प्रकार के किसी उम्मीदवार के बारे में मैडिकल बोर्ड को इस बारे में अपनी राय विशेष रूप से रिकार्ड करनी चाहिये कि उम्मीदवार क्षेत्र सेवा (फील्ड सर्विस) के लिये योग्य है या नहीं।

डाक्टरी बोर्ड की रिपोर्ट को गोपनीय रखना चाहिये।

ऐसे मामलों में जब कि कोई उम्मीदवार सरकारी सेवा में नियुक्ति के लिये अयोग्य करार दिया जाता है तो मोटे तौर पर उसके अस्वीकार किये जाने के आधार उम्मीदवार को बताये जा सकते हैं किन्तु डाक्टरी बोर्ड ने जो खराबी बताई हो उनका विस्तृत ब्यौरा नहीं दिया जा सकता।

ऐसे मामलों में जहां डाक्टरी बोर्ड का यह विचार हो कि सरकारी सेवा के लिये उम्मीदवार को अयोग्य बताने वाली छोटी मोटी खराबी चिकित्सा (औषध या शल्य) द्वारा दूर हो सकती है वहां डाक्टरी बोर्ड द्वारा इस आशय का कथन रिकार्ड किया जाना चाहिये। नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा इस बारे में उम्मीदवार को बोर्ड की राय सूचित किये जाने में कोई आपत्ति नहीं है और जब वह खराबी दूर हो जाय जो एक दूसरे डाक्टरी बोर्ड के सामने उस व्यक्ति को उपस्थित होने के लिये कहने में संबंधित प्राधिकारी स्वतंत्र है।

यदि कोई उम्मीदवार अस्थायी रूप से अयोग्य करार दिया जाये तो दुबारा परीक्षा की अवधि साधारणतया कम से कम छः महीने से कम नहीं होनी चाहिये। निश्चित अवधि के बाद जब दुबारा परीक्षा होती है ऐसे उम्मीदवार को और आगे की अवधि के लिये अस्थायी तौर पर अयोग्य घोषित न कर नियुक्ति के लिये उसकी योग्यता के संबंध में अथवा वे इस नियुक्ति के लिये अयोग्य है ऐसा निर्णय अंतिम रूप से किया जाना चाहिये।

(क) उम्मीदवार का कथन और घोषणा :—

अपनी मैडिकल परीक्षा से पूर्व उम्मीदवार को निम्नलिखित अपेक्षित स्टेटमेंट देना चाहिये और उसे साथ लगी हुई घोषणा (डिक्लेरेशन) पर हस्ताक्षर करने चाहिये। नीचे दिये गये नोट में उल्लिखित चेतावनी की ओर उम्मीदवार को विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।

1. अपना पूरा नाम लिखें—

(साफ अक्षरों में)

2. अपनी आयु और जन्म स्थान बताएं—

2(क) क्या आप गोरखा, गढ़वाली, असमी, नागालैंड आदिम जाति आदि से संबंधित हैं जिनका औसत कद दूसरों से छोटा होता है। 'हां' या 'नहीं' में उत्तर दीजिए और यदि उत्तर 'हां' में है तो उस जाति का नाम बतलाइये।

3(क) क्या आपको कभी चेचक, रुक रुक कर होने वाला या कोई दूसरा बुखार, ग्रंथियों (ग्लैन्डस) का बढ़ाना या इनमें पीप पड़ना, थूक में खून आना, दमा दिल की बीमारी, फेफड़े की बीमारी, मूर्छा के दौरे, स्पेरिज्य, स्पेडिसाइटिस हुआ है :—

अथवा

(ख) दूसरी ऐसी कोई बीमारी या दुर्घटना, जिसके कारण शय्या पर लेटे रहना पड़ता हो और जिसका मेडिकल या सर्जिकल इलाज किया गया हो, हुई है, :—

4. आपको चेचक आदि का अंतिम टीका कब लगा था ?

5. क्या आपको अधिक कार्य या किसी दूसरे कारण से किसी किस्म की अधीरता (नर्वसनेस) हुई है :—

6. अपने परिवार के संबंध में निम्नलिखित ब्यौरा है :—

यदि पिता जीवित हो तो उसकी आयु और स्वास्थ्य की की अवस्था	यदि पिता की मृत्यु हो चुकी हो तो मृत्यु के समय पिता की आयु और मृत्यु का कारण	आपके कितने भाई जीवित हैं, उनकी आयु और स्वास्थ्य की अवस्था	आपके कितने भाइयों की मृत्यु हो चुकी है मृत्यु के समय उनकी आयु और मृत्यु का कारण

यदि माता जीवित हो तो उसकी आयु और स्वास्थ्य की अवस्था	यदि माता की मृत्यु हो चुकी हो तो मृत्यु के समय उसकी आयु और मृत्यु का कारण	आपकी कितनी बहनें जीवित हैं, उनकी आयु और स्वास्थ्य की अवस्था	आपकी कितनी बहनों की मृत्यु हो चुकी है मृत्यु के समय उनकी आयु और मृत्यु का कारण

क्या इसके पहले किसी मैडिकल बोर्ड ने आपकी परीक्षा की है ? ————————

यदि ऊपर के प्रश्न का उत्तर 'हां' हो तो बताइये कि किस सेवा/सेवाओं के लिये आपकी परीक्षा की गयी थी ? ————————

परीक्षा लेने वाला प्राधिकारी कौन था ? ————————

कब और कहां मैडिकल बोर्ड हुआ ? ————————

मैडिकल बोर्ड की परीक्षा का परिणाम यदि आपको बताया गया हो अथवा आपको मालूम हो————————

मैं घोषित करता हूं कि जहां तक मेरा विश्वास है, ऊपर दिये गये सभी जवाब सही और ठीक हैं।

उम्मीदवार के हस्ताक्षर ————————

मेरे सामने हस्ताक्षर किये।

बोर्ड के चेयरमैन के हस्ताक्षर

————————

नोट :—उपर्युक्त कथन की यथार्थता का उम्मीदवार जिम्मेदार होगा। जान बूझ कर किसी सूचना को छिपाने से यह नियुक्ति खो बैठने की जोखिम लेगा और यदि वह नियुक्त हो भी जाये तो वार्धक्य नियुक्ति भत्ता (सुपरएन्युशन अलाउंसेज) या उपदान (ग्रेचुटी) के सभी दावों से हाथ धो बैठेगा।

(ख) ————————की शारीरिक परीक्षा की।

मैडिकल बोर्ड की रिपोर्ट

सामान्य विकास :—

अच्छा साधारण निम्न

घोषणा :—

पतला———————— औसत ————————

मोटा———————— कद (जूते उतार कर)————

वजन———————— अत्युत्तम वजन————————

कब था———————— वजन में कोई हाल ही में हुआ

परिवर्तन ————————

तापमान ————————

छाती का घेर :—

(1) पूरा सांस खींचने पर————————

(2) पूरा सांस निकालने पर————————

(3) कलर विजन का दोष————————

(4) दृष्टि क्षेत्र (फील्ड आफ विजन)————————

(5) दृष्टि की पकड़ (विजुएल एक्विटी)————————

(6) फंडस की जांच ————————

पकड़	चश्मे के बिना	चश्मे से	चश्मे की पावर गोल	सिलि०	अक्ष
नजर दा० ने०					
काया ने०					
दा० ने					
बा० ने०					

(4) कान निरीक्षण————————सुनना

दायां कान————————बाया कान————

(5) ग्रंथियां————थाइराइड————————

(6) दांतों की हालत ————————

(7) श्वसन तंत्र (रेस्पिरेटरि सिस्टम) क्या शारीरिक परीक्षा लेने पर सांस के अंगों में किसी विलक्षणता का पूरा ब्यौरा है।

(8) परिसंचय-रण (सर्क्युलेटरी सिस्टम)

(ख) हृदय: कोई आंगिक क्षति (आर्गेनिक लीजन)

————

गति (रेट)

खड़े होने पर :

25 बार कुदाए जाने के बाद————————

कुदाए जाने के दो मिनट बाद————————

(ख) ब्लड प्रेशर————————सिस्टालिक————

डायस्टालिक ————————

(9) उदर (पेट) : घेर————————दाब-वेदना (टेंपरनेस)

————————

हार्निया ————————

(क) दबा कर मालूम पड़ना, जिगर ————————

तिल्ली ————————गुर्दे————————

ट्यूमर ————————

(ख) बवासीर के मस्से————फिस्टुला ————

(10) तांत्रि तंत्र (नर्वस सिस्टम) तांत्रिक या मानसिक अशक्ततता का संकेत ————————

(11) चाल तंत्र (लोकोमीटर सिस्टम)

कोई विलक्षणता ————————

(12) जनन मूत्र तंत्र (जेनिटी यूरिनरी सिस्टम)

हाइड्रोसील वेरिकोसिल आदि का कोई संकेत।

मूत्र परीक्षा

(क) कैसा दिखायी पड़ता है।

(ख) स्पेसिफिक ग्रेविटी (आपेक्षित गुरुत्व)

(ग) हल्ब्युमेन

(घ) शक्कर

(ङ) कास्ट (सेल्स)

(13) छाती का पटेक्ष (स्क्रीनिंग) एक्सरे परीक्षा की रिपोर्ट

(14) क्या उम्मीदवार के स्वास्थ्य में कोई ऐसी बात है जिससे वह उसें सेवा को दक्षतापूर्वक निभाने के लिये अयोग्य हो सकता है जिसके लिये वह उम्मीदवार है ।

नोट :—यदि उम्मीदवार कोई महिला है और यदि वह 12 सप्ताह या उससे अधिक समय से गर्भवती है तो उसे विनियम 9 के अनुसार अस्थायी रूप से अयोग्य घोषित कर दिया जाए ।

(15) (I) क्या वह भारतीय अर्थ/सेवा भारतीय सांख्यिकीय सेवा में दक्षतापूर्वक और निरंतर कार्य करने के लिये सब तरह से योग्य पाया गया है ।

(II) क्या उम्मीदवार क्षेत्र सेवा (फील्ड सर्विस) के लिये योग्य है ।

नोट :—बोर्ड को अपना जांच परिणाम निम्नलिखित तीन वर्गों में से किसी एक वर्ग में रिकार्ड करना चाहिये ।

(I) योग्य (फिट)

(II) अयोग्य (अनफिट) जिसका कारण ————

(III) अस्थायी रूप से अयोग्य जिसका कारण ————

स्थान———— अध्यक्ष ————

दिनांक———— (प्रेसीडेंट)

सदस्य ————

सदस्य ————

स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्रालय

(परिवार नियोजन विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक मई 1974

सं० 5-9/71-ए० पी०—आन्ध्र प्रदेश में बाल परिचर्या परियोजना से संबंधित नीती और तकनीकी मामलों में सलाह देने के लिए भारतीय सलाहकार बोर्ड के गठन से संबंधित इस मंत्रालय की दिनांक 29 जनवरी, 1974 की अधिसूचना संख्या 5-9/71-ए०पी० में आंशिक संशोधन करते हुए यह निर्णय किया गया है कि निम्नलिखित सदस्य को इसमें शामिल कर के बोर्ड की रचना का विस्तार किया जाए :—

15. आयुक्त (आर० एच० एस०/एम० एच०),
स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय,
नई दिल्ली ।

पी० एल० जोशी
अवर सचिव

(संस्कृति विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक मई 1984

सं० एफ० 22-2/72-सी० ए० 1 (2)—संस्कृति विभाग की अधिसूचना सं० एफ० 22-2/72-सी० ए० 1 (2) दिनांक 27 नवम्बर, 1972 में आंशिक संशोधन करते हुए निम्नलिखित व्यक्तियों को, भारतीय ऐतिहासिक अभिलेख आयोग के संविधान की धारा 3 I ए० (3) के अन्तर्गत भारतीय ऐतिहासिक अभिलेख आयोग के सदस्यों के रूप में तत्काल नियुक्त किया जाता है :—

1. तमिलनाडु— श्री एस० सिन्धारागजन के स्थान पर, श्री बद्रीनाथ, कमिश्नर तमिलनाडु पुरातत्व तथा ऐतिहासिक अनुसंधान, तमिलनाडु पुरातत्व, एगमोर, मद्रास-8

2. केरल— श्रीमती पद्मा रामचन्द्रन के स्थान पर, श्री पी० के० उमाशंकर, सरकार के सचिव (उच्च शिक्षा) तथा राज्य पुरातत्व त्रिवेन्द्रम के पदेन निदेशक ।

उनकी नियुक्ति की अवधि 25 सितम्बर, 1977 तक रहेगी ।

के० के० बक्शी
उपं सचिव

सिंचाई और विद्युत मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 4 जून 1974

संकल्प

सं० 1/13/74-जे० आर० सी०—भारत के राजपत्र भाग एक खण्ड एक में प्रकाशित इस मंत्रालय के संकल्प सं० 8 (1)/72-गं०वे० दिनांक 22 जून, 1972 में क्र० सं० I पर दिखाए गए श्री एन० जी० के० मूर्ति के नाम के स्थान पर निम्नलिखित को लिख दिया जाए :—

"श्री सी० सी० पटेल, सह-अध्यक्ष/अध्यक्ष" ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति सभी राज्य सरकारों को सूचनार्थ भेज दी जाए ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत के राजपत्र में सामान्य सूचना के लिए प्रकाशित कर दिया जाए ।

आनन्द स्वरूप शर्मा,
संयुक्त सचिव

श्रम मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 1974

स० जी०-250 12/1/73-एच० आई०—जैसा कि कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948 (1948 का 34) की धारा 36 में अपेक्षित है, कर्मचारी राज्य बीमा निगम के वर्ष 1970-71 संबंधी संपरीक्षित लेखे एतद्द्वारा आम सूचना के लिए प्रकाशित किए जाते हैं ।

(कर्मचारी राज्य बीमा निगम के वर्ष 1970-71 संबंधी संलग्न संपरीक्षित लेखे यहां प्रदर्शित करें)

लालफक जुआला,
अवर सचिव

कर्मचारी राज्य

कर्मचारी राज्य बीमा निगम का

31 मार्च, 1971 को समाप्त होने वाले

आय

पिछला वर्ष (1969-70)	लेखा के शीर्ष	राशि	योग
रुपये		रुपये	रुपये
	अंशदान द्वारा		
21,25,42,559	केवल नियोक्ताओं का अंश	29,55,06,981	
15,20,48,404	केवल कर्मचारियों का अंश	16,49,66,819	
36,45,90,963	कुल अंशदान		46,04,73,800
6,84,513	निगम द्वारा चिकित्सा हितलाभ पर प्रारम्भिक रूप से किये गये व्यय में राज्य सरकार का अंश . . .	14,29,296	14,29,296
	राजस्व के अन्य शीर्ष		
3,346	ब्याज तथा लाभांश	37,82,273	
21	क्षतिपूर्ति	4,12,671	
	किराया, महसूल तथा कर		
03	(i) निगम के कार्यालय (कर्मचारियों के क्वार्टरों सहित) .	2,14,769	
1,15,99,250	(ii) चिकित्सालय, औषधालय तथा कर्मचारियों के क्वार्टर .	2,91,12,763	
32,977	शुल्क, जुर्माना तथा अधिहरण	18,866	
5,28,852	विविध	5,44,410	
1,77,58,570	राजस्व के अन्य शीर्षों का कुल योग . . .		3,40,85,752

परिशिष्ट 'अ'

वर्ष 1970-71 का लेखा

बीमा निगम

वर्ष के आय और व्यय का लेखा

व्यय

पिछला वर्ष (1969-70)	लेखा के शीर्ष	राशि	योग
रुपये		रुपये	रुपये
	(1) **बीमाकृत व्यक्तियों तथा उनके परिवारों को हितलाभ**		
	(अ) **चिकित्सा हितलाभ**		
14,42,32,703	(i) चिकित्सा उपचार तथा मातृत्व हितलाभ आदि पर राज्य में होने वाले खर्च में निगम के अंश को राज्य सरकार को अदायगी।	24,13,55,195	
	जमा—राज्य सरकारों को वर्ष के मध्य चिकित्सा सुविधा संबंधी भुगतान जो पूंजीगत निर्माण/चिकित्सा (संचित) दायित्व आरक्षित निधि को हस्तांतरित है। . .	(—) 10,40,19,294	
		13,73,35,901	
73,98,467	(ii) चिकित्सा उपचार व सुविधा व मातृत्व हितलाभ (निगम द्वारा प्रत्यक्ष रूप से वहन किया गया व्यय) .	75,34,675	
15,16,31,170	कुल अ—चिकित्सा हितलाभ		14,48,70,576

आय

पिछला वर्ष (1969-70)	लेखा के शीर्ष	राशि	योग
रुपये		रुपये	रुपये

व्यय

पिछला वर्ष (1969-70)	लेखा के शीर्ष	राशि	योग
रुपये		रुपये	रुपये
	ब—नकद लाभ		
11,62,25,881	1. बीमारी हितलाभ	13,71,00,949	
96,31,862	2. विस्तरित बीमारी हितलाभ	1,00,86,820	
61,02,649	3. मातृत्व हितलाभ	60,23,031	
	4. अपंगता हितलाभ:—		
1,96,16,014	(क) अस्थाई	2,89,90,066	
2,40,03,000	(ख) स्थाई (पूंजीकृत मूल्य)	3,16,94,000	
49,79,000	5. आश्रितजन हितलाभ (पूंजीकृत मूल्य)	66,59,000	
7,26,322	6. अन्त्येष्टि हितलाभ	7,84,637	
18,12,84,728	कुल ब—नकद लाभ		22,13,38,503
	स—अन्य हितलाभ		
79,693	(क) अपंगबीमाकृत व्यक्तियों के पुनर्वास पर व्यय	25,875	
1,71,216	(ख) चिकित्सा मंडल तथा अपील अधिकरण	2,31,843	
	(ग) बीमाकृत व्यक्तियों को अदायगी:—		
1,15,854	(1) सवारी शुल्क तथा/या मजदूरी की हानि	1,22,746	
2,12,308	(2) परिवार नियोजन के अन्तर्गत प्रासंगिक व्यय	316	
—	(घ) सहायक अनुदान	—	
2,98,023	(ङ) विविध	2,99,021	
8,77,094	कुल स—अन्य हितलाभ		6,79,801
33,37,92,992	बीमाकृत व्यक्तियों व उनके परिवारों के लिये कुल लाभ		36,68,88,880
	2. प्रशासन व्यय		
	अ—अधीक्षण		
32,136	1. निगम, स्थायी समिति, क्षेत्रीय मंडल आदि	39,525	
1,77,724	2. प्रधान अधिकारी	1,49,017	
20,75,740	3. अन्य अधिकारी	24,36,891	
(—) 1,000	4. अभियंता कोष्ठ	—	
90,48,133	5. लिपिक वर्गीय स्थापना	1,03,15,177	
16,16,472	6. चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	17,85,629	
28,35,783	7. आकस्मिक व्यय	27,97,927	
1,57,84,988	कुल अ—अधीक्षण		1,75,24,166

पिछला वर्ष (1969-70)	लेखा के शीर्ष	राशि	योग
रुपये		रुपये	रुपये
38,30,34,046	महा योग		49,59,88,848

नई दिल्ली
दिनांक 31 मई, 1971

पिछला वर्ष (1969-70)	लेखा के शीर्ष	राशि	योग
रुपये		रुपये	रुपये
	ब—क्षेत्रीय कार्य		
5,56,310	1. अधिकारी	6,63,745	
1,06,67,221	2. लिपिक वर्गीय स्थापना	1,20,01,780	
18,78,766	3. चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	21,03,181	
15,19,278	4. आकस्मिक व्यय	15,04,946	
1,46,21,575	कुल ब—क्षेत्रीय कार्य		1,62,73,652
	स—अन्य खर्चे		
1,74,275	1. विधि खर्चे	1,71,986	
1,12,857	2. बीमा न्यायालय	—	
5,984	3. प्रचार तथा विज्ञापन	6,598	
7,305	4. बैंकिंग लेखा रखने के व्यय	37,358	
42,103	5. लेखा परीक्षा शुल्क	83,590	
83,472	6. छुट्टी वेतन तथा पेंशन अंशदान	1,26,961	
1,67,835	7. कार्यालयों की इमारतों/स्टाफ कारों का मूल्यह्रास	1,71,335	
4,20,700	8. कार्यालय की इमारतों की मरम्मत व अनुरक्षण	4,28,693	
	9. अवकाश प्राप्ति हितलाभ:—		
55,78,500	क. निगम के कर्मचारियों के लिये पेंशन आरक्षित निधि	21,70,700	
2,15,290	ख. कर्मचारी राज्य बीमा निगम भविष्य निधि में निगम का अंशदान	2,06,610	
6,20,233	ग. क० रा० बी० नि० भविष्य निधि में दिया गया ब्याज	7,63,217	
(—) 4,75,981	घ. कम—भविष्य निधि के अतिशेषों के विनियोग द्वारा प्राप्त ब्याज	(—) 7,91,495	
700	10. अनुकंपा आरक्षित निधि	1,230	
8	11. विविध	7,545	
—	12. हानियां	9,143	
69,53,281	कुल स—अन्य खर्चे		33,93,471
3,73,59,844	कुल शीर्ष—2 प्रशासन खर्चे		3,71,91,289
	3. चिकित्सालय व औषधालय व संचित दायित्व आदि		
15,18,356	(1) चिकित्सालय की इमारतों व उपकरणों का मूल्यह्रास	16,39,457	
43,45,746	(2) चिकित्सालय की इमारतों/औषधालयों की मरम्मत व अनुरक्षण	47,17,209	
—	(3) पूंजीगत निर्माण/चिकित्सा दायित्व आदि	3,69,64,000	
58,64,102	कुल शीर्ष—3 चिकित्सालय व औषधालय व संचित दायित्व आदि		4,33,20,666
37,70,16,938	राजस्व लेखा पर कुल व्यय		44,74,00,835
60,17,108	व्यय से अधिक आय को तुलनपत्र पर आगे ले जाया गया		4,85,88,013
38,30,34,046	महायोग		49,59,88,848

हस्ताक्षरित/—
वी० एम० के० मट्टू,
वित्तीय सलाहकार व मुख्य लेखा अधिकारी,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम

परिशिष्ट

कर्मचारी राज्य

31 मार्च, 1971 को जैसा था—

पिछला वर्ष (1969-70)	दायित्व	राशि	योग
रुपये		रुपये	रुपये
	व्यय से अधिक आय का अतिशेष		
35,91,34,716	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	36,51,51,824	
60,17,108	वर्ष के दौरान संचयन	4,85,88,013	
36,51,51,824		41,37,39,837	
	कम-पूंजीगत निर्माण/चिकित्सा (संचित) दायित्व आरक्षित निधि को हस्तांतरित राशि ।		
--	(क) पिछले वर्ष के संचयन से	(-) 3,01,39,082	
--	(ख) इस वर्ष के संचयन से	(-) 4,62,82,348	
36,51,51,824			33,73,18,407
	पूंजीगत निर्माण/चिकित्सा (संचित) दायित्व आरक्षित निधि		
	आदि शेष	3,01,39,082	
--	व्यय से अधिक आय के अतिशेष से हस्तान्तरित राशि .	4,62,82,348	
--	स्थायी अपंगता हितलाभ आरक्षित निधि से हस्तांतरित राशि .	--	
--	जमा—वर्ष में किया गया उपबंध (नि० बि० अंशदान की बढ़ी हुई दर का 0.5%)	3,69,64,000	
--		11,33,85,430	
--	कम—वर्ष में किया गया भुगतान	(-) 10,40,19,294	
			93,66,136
	(स्थाई आंशिक तथा पूर्ण) अपंगता हितलाभ आरक्षित निधि		
5,03,83,531	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	5,90,93,644	
2,40,03,000	वर्ष के दौरान किया गया उपबंध	3,16,94,000	
25,21,369	विनियोग से प्राप्त ब्याज	27,91,535	
7,69,07,900		9,35,79,179	
(-) 1,78,14,256	कम —वर्ष के दौरान अदायगी	(-) 1,99,87,882	
5,90,93,644			7,35,91,297

"ब"

बीमा निगम

तुलनपत्र

पिछला वर्ष (1969-70)	परिसम्पत्ति	राशि	योग
रुपये		रुपये	रुपये
	भूमि व भवन (निगम के पूर्ण रूप से निजी)		
	(क) निगम के कार्यालयों के लिये भवन		
1,09,30,627	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	1,09,52,783	
22,156	वर्ष में संकलन	—	
1,09,52,783		1,09,52,783	
	(ख) चिकित्सालय और औषधालय		
12,86,87,751	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	15,08,75,470	
2,21,87,719	वर्ष में संकलन	1,26,59,638	
15,08,75,470		16,35,35,108	
	(ग) चिकित्सालयों के लिये उपस्कर आदि		
—	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	—	
—	वर्ष में संकलन	49,542	
16,18,28,253			17,45,37,433
	भूमि व भवन (निगम तथा राज्य सरकारों द्वारा संयुक्त रूप से ली गई) में निगम का भाग		
	(क) चिकित्सालय तथा औषधालय		
7,95,250	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	7,95,250	
—	वर्ष में संकलन	—	
7,95,250		7,95,250	
	(ख) चिकित्सालयों आदि के लिये उपस्कर		
49,680	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	49,680	
—	वर्ष मे संकलन	—	
49,680		49,680	
8,44,930			8,44,930
	उचित (I) पूंजीगत व्यय के लिये दी गई अग्रिम राशि		
12,85,42,353	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	11,95,06,736	
1,33,76,845	जमा वर्ष में की गई अदायगी	—	
14,19,19,198		11,95,06,736	

पिछला वर्ष (1969-70)	दायित्व	राशि	योग
रुपये		रुपये	रुपये
	आश्रितजन हितलाभ आरक्षित निधि		
2,21,94,863	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	2,62,19,906	
49,79,000	जमा—वर्ष में आंकलित राशि	66,59,000	
11,51,704	विनियोग से प्राप्त ब्याज	12,49,353	
2,83,25,567		3,41,28,159	
(—) 21,05,661	कम—वर्ष के दौरान अदायगी	(—) 25,54,162	
2,62,19,906			3,15,73,997
	कर्मचारी राज्य बीमा निगम भविष्य निधि		
1,17,43,202	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	1,32,80,277	
	जमा—वर्ष में आंकलित राशि:—		
31,33,976	(i) कर्मचारी चन्दा	36,23,861	
2,15,290	(ii) निगम का अंशदान	2,06,610	
6,20,233	(iii) ब्याज (कर्मचारी तथा निगम के अंशदान पर)	7,63,217	
1,57,12,701		1,78,73,965	
(—) 23,60,796	कम—वर्ष में की गई अदायगी	(—) 24,19,406	
1,33,51,905		1,54,54,559	
(—) 71,628	कम—पेंशन आरक्षित निधि में हस्तांतरित राशि	(—) 2,957	
1,32,80,277			1,54,51,602
	निगम के कार्यालयों की इमारतों (स्टाफ क्वार्टरों सहित) का मूल्यह्रास आरक्षित निधि		
4,51,085	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	6,17,209	
1,45,860	वर्ष में किया गया उपबन्ध	1,48,616	
20,264	विनियोग से प्राप्त ब्याज तथा लाभ	38,695	
6,17,209			8,04,520
	चिकित्सालयों तथा परीक्षण केन्द्रों के उपस्कर का मूल्यह्रास आरक्षित निधि		
59,371	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	66,022	
4,052	वर्ष में किया गया उपबन्ध	2,068	
2,599	विनियोग से प्राप्त ब्याज	2,599	
66,022			70,689

पिछला वर्ष (1969-70)	परिसम्पत्ति	राशि	योग
रुपये		रुपये	रुपये
	(II) पूंजीगत निर्माण चिकित्सा (संचित) दायित्व आरक्षित निधि में दी गई अग्रिम राशि		
—	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	—	
—	जमा वर्ष के दौरान की गई अदायगी . . .	93,66,136	
(−) 2,24,12,462	कम—समायोजन तथा वसूली	(−) 1,29,75,495	
11,95,06,736			11,58,97,377
	स्टाफ कारें		
1,63,514	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	2,01,217	
37,703	जमा—वर्ष में की गई अदायगी . . .	26,096	
2,01,217			2,27,313
	निगम के कार्यालयों के अध्यक्षों को स्थाई अग्रिम अदायगी		
27,112	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	29,112	
2,145	जमा वर्ष में की गई अदायगी	1,805	
29,257		30,917	
(−) 145	कम—वर्ष के दौरान की गई वसूली . . .	(−) 285	
29,112			30,632
	निगम के कर्मचारियों के स्थानान्तरण के लिए अग्रिम वेतन अदायगी		
39,988	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	22,601	
62,769	जमा—वर्ष के दौरान की गई अदायगी . . .	74,572	
1,02,757		97,173	
(−) 80,156	कम—वर्ष के दौरान की गई वसूली . . .	(−) 81,595	
22,601			15,578
	निगम के कर्मचारियों के स्थानान्तरण के लिये अग्रिम यात्रा भत्ता		
50,237	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	25,650	
66,203	जमा वर्ष के दौरान की गई अदायगी . . .	1,00,161	
1,16,440		1,25,811	
(−) 90,790	कम—वर्ष में हुई वसूली	(−) 91,141	
25,650			34,670

पिछला वर्ष (1969-70)	दायित्व	राशि	योग
रुपये		रुपये	रुपये
	चिकित्सालयों की इमारतों का मूल्यह्रास आरक्षित निधि		
36,02,874	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	53,05,679	
15,14,304	वर्ष में किया गया उपबन्ध	16,37,389	
1,88,501	विनियोग से प्राप्त ब्याज	4,13,446	
53,05,679			73,56,514
	स्टाफ कारों का मूल्यह्रास आरक्षित निधि		
84,676	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	1,11,284	
21,975	वर्ष में किया गया उपबन्ध	22,719	
4,633	विनियोग से प्राप्त ब्याज	5,556	
1,11,284			1,39,559
	निगम के कार्यालयों की इमारतों (स्टाफ क्वार्टर सहित) की मरम्मत व अनुरक्षण आरक्षित निधि		
9,33,454	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	13,94,857	
4,20,700	वर्ष में किया गया उपबन्ध	4,28,693	
45,739	विनियोग से प्राप्त ब्याज	54,648	
13,99,893		18,78,198	
(−) 5,036	कम—वर्ष में की गई अदायगी	(−) 1,35,482	
13,94,857			17,42,716
	चिकित्सालयों की इमारतों की मरम्मत व अनुरक्षण आरक्षित निधि का लेखा		
87,69,884	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	1,34,24,772	
43,45,746	वर्ष में किया गया उपबन्ध	47,17,209	
3,27,713	विनियोग से प्राप्त ब्याज	5,45,948	
1,34,43,343		1,86,87,929	
(−) 18,571	कम—वर्ष में अदायगी	(−) 79,417	
1,34,24,772			1,86,08,512
	निगम के कर्मचारियों की पेंशन आरक्षित निधि		
1,08,98,726	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	1,69,59,023	
57,13,940	वर्ष में किया गया उपबन्ध	24,60,390	
5,50,407	विनियोग से प्राप्त ब्याज	9,52,887	
1,71,63,073		2,03,72,300	
(−) 2,75,678	कम—वर्ष में अदायगी	(−) 1,60,709	
1,68,87,395		2,02,11,591	
71,628	जमा—निगम भविष्य निधि से हस्तांतरित निधि . .	2,957	
1,69,59,023			2,02,14,548

पिछला वर्ष (1969-70)	परिसम्पत्ति	राशि	योग
रुपये		रुपये	रुपये
	निगम के कर्मचारियों को वाहन क्रयण के लिये अग्रिम राशि		
5,28,810	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	7,36,580	
5,87,904	जमा—वर्ष में की गई अदायगी	6,34,385	
11,16,714		13,70,965	
(−) 3,80,134	कम—वर्ष में की गई वसूली	(−) 4,67,062	
7,36,580			9,03,903
	निगम के कर्मचारियों को विविध अग्रिम राशि (त्यौहार अग्रिम राशि)		
1,40,618	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	2,37,493	
4,47,152	जमा—वर्ष में की गई अदायगी . . .	9,44,550	
5,87,770		11,82,043	
(−) 3,50,277	कम—वर्ष में की गई वसूली	(−) 5,53,556	
2,37,493			6,28,487
	मकान निर्माण हेतु अग्रिम राशि		
1,07,406	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	1,54,571	
90,556	जमा—वर्ष में की गई अदायगी . . .	2,74,127	
1,97,962		4,28,698	
(−) 43,391	कम—वर्ष में की गई वसूली	(−) 37,925	
1,54,571			3,90,773
	राज्य सरकारों की ओर से अग्रिम अदायगी		
1,377	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	2,772	
4,830	जमा—वर्ष में की गई अदायगी . . .	4,387	
6,207		7,159	
(−) 3,435	कम—वर्ष में की गई वसूली	(−) 3,932	
2,772			3,227
	चिकित्सालयों, औषधालयों, निगम के कार्यालयों तथा स्टाफ क्वार्टरों की मरम्मत व अनुरक्षण के लिये राज्य सरकारों को राज्य लोक निर्माण विभाग आदि को अग्रिम राशि		
	(क) निगम के कार्यालय		
2,69,840	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	6,39,414	
3,69,574	जमा—वर्ष में की गई अदायगी . . .	1,00,656	
6,39,414		7,40,070	
—	कम—वर्ष में वसूली/समायोजन . . .	(−) 1,67,325	
6,39,414			5,72,745

पिछला वर्ष (1969-70)	दायित्व	राशि	योग
रुपये		रुपये	रुपये
	निगम के कर्मचारियों के लिये अनुकंपा आरक्षित निधि		
10,000	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	10,000	
700	वर्ष में किया गया उपबन्ध	1,230	
10,700		11,230	
(−) 700	कम—वर्ष में अदायगी	(−) 1,230	
10,000			10,000
	जमानत जमा जैसे कि ठेकेदार		
1,09,377	पिछले तुलनपत्र के अनुसार . . .	1,50,247	
1,20,702	जमा—वर्ष में जमानत जमा	1,34,386	
2,30,079		2,84,633	
(−) 79,832	कम—वर्ष में जमानत जमा की प्रति अदायगी . .	(−) 85,422	
1,50,247			1,99,211
	अन्य पार्टियों को देय बिलों से कटौती		
15,826	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	11,900	
4,98,149	जमा—वर्ष में आंकलित राशि	5,30,247	
5,13,975		5,42,147	
(−) 5,02,075	कम—वर्ष में की गई अदायगी	(−) 5,23,577	
11,900			18,570
	क० रा० बी० नि० भविष्य निधि में अवाची जमा		
5,471	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	7,322	
1,863	जमा—वर्ष में आंकलित राशि	1,775	
7,334		9,097	
(−) 12	कम—वर्ष में अदायगी	(−) 3,313	
7,322			5,784
	विविध जमा		
1,47,547	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	1,17,175	
38,519	कम—वर्ष में जमा राशि की पुनः अदायगी . .	2,390	
1,09,028		1,14,785	
8,147	जमा—वर्ष में प्राप्त जमा	1,83,510	
1,17,175			2,98,295

पिछला वर्ष (1969-70)	परिसम्पत्ति	राशि	योग
रुपये		रुपये	रुपये
	(ख) चिकित्सालय/औषधालय/अनेक्सियां		
19,16,913	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	23,45,286	
4,46,945	जमा—वर्ष में की गई अदायगी . . .	13,52,978	
23,63,858		36,98,264	
(–) 18,572	कम—वर्ष में हुई वसूली	(–) 12,195	
23,45,286			36,86,869
	विविध अग्रिम		
8,96,085	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	7,54,469	
51,579	जमा—वर्ष में की गई अदायगी . . .	3,74,778	
9,47,664		11,29,247	
(–) 1,93,195	कम—वर्ष में हुई वसूली	(–) 1,25,113	
7,54,469			10,04,134
	राज्य सरकारों को ऋण		
83,69,766	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	1,00,00,000	
16,30,234	जमा—वर्ष में की गई अदायगी . . .	—	
1,00,00,000	कम वर्ष के अन्तर्गत ऋण की वापसी . . .	1,00,00,000	98,33,333
—		(–) 1,66,667	
1,00,00,000			
	प्रेषित धन		
	नकद प्रेषित धन		
6,89,355	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	4,34,601	
57,46,61,839	जमा वर्ष में समायोजित विकलन . . .	75,93,71,486	
57,53,51,194		75,98,07,087	
(–) 57,49,16,593	कम—वर्ष में समायोजित आंकलन (–) . . .	(–) 75,88,85,232	
4,34,601			9,20,855
	अन्य प्रेषित धन-विनियम लेखा		
2,051	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	(–) 2,643	
1,72,18,499	जमा वर्ष में विकलन	1,62,93,398	
1,72,20,550		1,62,90,755	
(–) 1,72,23,193	कम—विनियोग के पिछले बिक्री या परिणाक पर वसूली .	(1) 1,62,90,995	
(–) 2,643			(–) 240

पिछला वर्ष (1969-70)	दायित्व	राशि	योग
रुपये		रुपये	रुपये

पिछला वर्ष (1969-70)	परिसम्पत्ति	राशि	योग
रुपये		रुपये	रुपये
	विनियोग—लागत पर		
	1. स्थायी (आंशिक तथा पूर्ण) अपंगता हितलाभ आरक्षित निधि		
5,03,82,916	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	5,90,75,991	
86,93,075	जमा-वर्ष में किया गया विनियोग . . .	1,50,43,000	
5,90,75,991		7,41,18,991	
—	कम—विनियोग के बिक्री या परिपाक पर वसूली . .	(−) 50,21,225	
5,90,75,991			6,90,97,766
	2. आश्रितजन हितलाभ आरक्षित निधि		
2,21,93,543	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	2,62,19,618	
40,26,075	जमा-वर्ष में किया गया विनियोग . . .	89,31,700	
2,62,19,618		3,51,51,318	
—	कम—विनियोग के बिक्री या परिपाक पर वसूली . .	(−) 35,76,947	
2,62,19,618			3,15,72,371
	3. कर्मचारी राज्य बीमा निगम भविष्य निधि		
1,17,09,740	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	1,32,69,740	
19,50,000	जमा—वर्ष में किया गया विनियोग . . .	57,56,900	
1,36,59,740		1,90,26,640	
(−) 3,90,000	कम—विनियोग के बिक्री या परिपाक पर वसूली . .	(−) 35,96,890	
1,32,69,740			1,54,29,750
	4. निगम के कार्यालयों की इमारतों (स्टाफ क्वार्टर सहित) की मूल्यह्रास आरक्षित निधि		
4,48,198	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	6,15,636	
1,85,363	जमा-वर्ष में किया गया विनियोग . . .	6,73,880	
6,33,561		12,89,516	
(−) 17,925	कम—विनियोग से बिक्री या परिपाक पर वसूली . .	(−) 4,85,601	
6,15,636			8,03,915

पिछला वर्ष (1969-70)	दायित्व	राशि	योग
रुपये		रुपये	रुपये

पिछला वर्ष (1969-70)	परिसम्पत्ति	राशि	योग
रुपये		रुपये	रुपये
	5. चिकित्सालयों व परिक्षण केन्द्रों के उपस्करों की मूल्य ह्रास आरक्षित निधि		
52,600	पिछले तुलनपत्र के अनुसार . . .	52 600	
—	जमा—वर्ष में किया गया विनियोग . . .	20,500	
52,600		73,100	
—	कम—विनियोग के बिक्री या परिपाक पर वसूली . .	(–) 10,000	
52,600			63,100
	6. चिकित्सालयों की इमारतों की मूल्य ह्रास आरक्षित निधि		
35,85,854	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	52,93,469	
17,07,615	जमा-वर्ष में किया गया विनियोग . . .	59,51,700	
52,93,469		1,12,45,169	
—	कम—विनियोग के बिक्री या परिपाक पर वसूली . .	(–) 39,08,227	
52,93,469			73,36,942
	7. स्टाफ कारों की मूल्य ह्रास आरक्षित निधि		
84,159	पिछले तुलनपत्र के अनुसार . . .	1,07,217	
23,058	जमा-वर्ष में किया गया विनियोग . . .	52,500	
1,07,217		1,59,717	
—	कम-विनियोग के बिक्री या परिपाक पर वसूली . .	(–) 21,000	
1,07,217			1,38,717
	8. निगम के कार्यालयों की इमारतों (स्टाफ क्वार्टरों सहित) की मरम्मत व अनुरक्षण आरक्षित निधि		
9,18,092	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	10,41,556	
1,43,939	जमा वर्ष में किया गया विनियोग . . .	3,93,700	
10,62,031		14,35,256	
(–) 20,475	कम—विनियोग के बिक्री या परिपाक पर वसूली . .	(–) 2,67,290	
10,41,556			11,67,966
	9. चिकित्सालयों की इमारतों की मरम्मत व अनुरक्षण आरक्षित निधि		
67,24,387	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	1,07,85,952	
40,61,565	जमा—वर्ष में किया गया विनियोग . . .	79,00,000	
1,07,85,952		1,86,85,952	
—	कम—विनियोग के बिक्री या परिपाक पर वसूली .	(–) 38,00,000	
1,07,85,952			1,48,85,952

पिछला वर्ष (1969-70)	दायित्व	राशि	योग
रुपये		रुपये	रुपये
50,19,21,141	महा योग		51,67,70,357

नई दिल्ली
दिनांक 31 मई, 1971

पिछला वर्ष (1969-70)	परिसम्पत्ति	राशि	योग
रुपये		रुपये	रुपये
	10. निगम के कर्मचारियों की पेंशन आरक्षित निधि		
1,08,96,015	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	1,68,79,698	
60,31,683	जमा—वर्ष में किया गया विनियोग . . .	96,48,300	
1,69,27,698		2,65,27,998	
(–) 48,000	कम—विनियोग के बिक्री या परिपाक पर वसूली . .	(–) 63,32,088	
1,68,79,698			2,01,95,910
	सामान्य रोकड़ शेष		
4,39,19,793	पिछले तुलनपत्र के अनुसार	3,01,39,082	
5,39,18,227	जमा—वर्ष में किया गया विनियोग . . .	4,91,64,500	
9,78,38,020		7,93,03,582	
(–) 6,76,98,938	कम—विनियोग के बिक्री या परिपाक पर वसूली . .	(–) 7,93,03,582	
3,01,39,082		—	
8,52,215	हाथ रोकड़	17,64,197	
3,98,27,325	बैंक के पास रोकड़	4,47,82,552	
4,06,79,540		4,65,46,749	
7,08,18,622	कुल रोकड़ अतिशेष		4,65,46,749
89,19,21,141	महा योग		61,67,70,357

हस्ताक्षरित /–
बी० एम० के० भट्ट
वित्तीय सलाहकार तथा मुख्य लेखा अधिकारी,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम

लेखा परीक्षा प्रमाण पत्र

मैंने कर्मचारी राज्य बीमा निगम के पूर्ववर्ती लेखाओं तथा तुलनपत्र की जांच की है तथा मुझे जिस जिस सूचना एवं स्पष्टीकरण की आवश्यकता थी प्राप्त की और संलग्न लेखा परीक्षा रिपोर्ट में दिये गये विचारों के पालन की शर्तों पर मैं प्रमाणित करता हूं कि मेरे लेखा परीक्षा के परिणामस्वरूप मेरी राय में मेरी अधिकतम सूचना तथा दिये गये स्पष्टीकरण के अनुसार और जैसा कि कर्मचारी राज्य बीमा निगम की पुस्तकों में दिखाया गया है, वे लेखा तथा तुलनपत्र सही प्रकार से बनाये गये हैं और वे कर्मचारी राज्य बीमा निगम की परिस्थिति के सच्चे एवं स्पष्ट उद्देश्य को दर्शाते हैं।

हस्ताक्षरित/
पी० पी० मंगाधरण,
महालेखाकार केन्द्रीय राजस्व

नई दिल्ली
दिनांक ——————

परिशिष्ट 'त'

कर्मचारी राज्य बीमा निगम के लेखा की वर्ष 1970–71 की लेखा-परीक्षा रिपोर्ट

1. **सामान्य**

(क) कर्मचारी राज्य बीमा निगम अक्तूबर सन् 1948 में कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948 के अन्तर्गत स्थापित हुई थी। यह अधिनियम जो कि कर्मचारी राज्य बीमा (संशोधित) अधिनियम, 1951 तथा 1966 द्वारा संशोधित किया गया था, उन सभी कारखानो पर, मौसमी कारखानों को छोड़कर, लागू होता है, जिनमें 20 या अधिक व्यक्ति वेतन पर काम करते हैं या करते थे और जिनमें विद्युत शक्ति का प्रयोग होता है। इस अधिनियम का विस्तार किसी भी अन्य संस्थापनाओं पर या संस्थापनाओं के वर्गों पर किया जा सकता है। चाहे वे औद्योगिक, व्यापारिक, कृषीय या कोई अन्य हों।

(ख) वर्ष 1970-71 के अन्तर्गत अधिनियम, के उपबन्धों का विस्तार 1313 कारखानों पर, 1.83 लाख कर्मचारियों पर लागू हो चुका था। 31 मार्च, 1971 तक कारखानों की संख्या जिन पर अधिनियम का विस्तार हो चुका है 21,856 थी जिसमें (20217 कार्यान्वयन क्षेत्रों में और 1639 अकार्यान्वयन क्षेत्रों में) जिनमें कि 44.63 लाख कर्मचारी (38.39 लाख कार्यान्वयन क्षेत्रों के कर्मचारियों सहित) काम करते थे।

(ग) निगम के वर्ष 1969-70 तथा 1970-71 के आय व व्यय का ब्यौरा विश्लेषण नीचे दिया गया है :—

आय			व्यय		
	(लाख रुपयों में)			(लाख रुपयों में)	
	1969-70	1970-71		1969-70	1970-71
नियोजक विशेष अंशदान	2,125	2,955			
			चिकित्सा हित लाभ		
			(क) चिकित्सा उपचार आदि पर किये गये खर्च के लिये निगम के अंश की राज्य सरकारों को अदायगी	1,650	1,650
कर्मचारी अंशदान	1,521	1,650		1,442	1,374
विनियोजन से प्राप्त ब्याज तथा लाभांश	33	38	(ख) चिकित्सा उपचार व देख-रेख पर निगम द्वारा प्रत्यक्ष रूप से वहां किया गया व्यय	74	75
			निगम द्वारा प्रत्यक्ष रूप से बीमाकृत व्यक्तियों तथा उनके परिवारों को दिये नकद व अन्य लाभ	1,822	2,220
चिकित्सा लाभ पर निगम द्वारा प्रारम्भिक रूप से किये गये व्यय में राज्य सरकार का अंश	7	14	**प्रशासन व्यय**		
			अधीक्षण	158	175
			क्षेत्रीय कार्य	146	163
			अन्य खर्चे	69	34
			चिकित्सालय व औषधालय	59	433
			व्यय से अधिक आय का अतिशोध	60	486
विविध (करों और किराये की दर मिलाकर)	144	303			
योग	3,830	4,960		3,830	4,960

2. **अंशदान के बकाया**

कर्मचारियों और नियोजकों के 30-9-1970 तक के बकाया अंशदान निम्न प्रकार थे:—

बकाया अंशदान जो कि 31-3-1972 तक प्राप्त नहीं हुआ

	30-9-68 तक	30-9-69 तक	30-9-70 तक
		(लाख रुपयों में)	
नियोजक विशेष अंशदान	179-71	298.13	517.69
कर्मचारी अंशदान	67.74	105.86	171.85
	247.45	403.99	689.54

नवम्बर, 1972 में 253 सरकारी/अर्द्ध सरकारी तथा निजी कारखाने 0.50 लाख रुपये से अधिक के लिये प्रत्येक देनदार थे। वर्ष 1952 तथा 1971 के मध्य में 455.61 लाख रुपये (नियोजक विशेष अंशदान) तथा 143.99 लाख रुपये (कर्मचारी अंशदान) के लिये कानूनी कार्रवाई की गई।

पश्चिमी बंगाल, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, गुजरात, मध्य प्रदेश, केरल, आन्ध्र प्रदेश, पंजाब तथा बिहार के नियोक्ता विशेष अंशदान के बकाया 14.38 लाख रुपये से 215.60 लाख रुपये श्रेणी के निजी कारखानों से प्राप्त होना है तथा पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब, केरल, गुजरात, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, दिल्ली तथा बिहार में कर्मचारी अंशदान के बकाया 6.08 लाख रुपये से 38.86 लाख रुपये तक की श्रेणी के निजी कारखानों से प्राप्त होना है।

देनदार नियोजकों से 27.85 लाख रुपये की डिग्री (30 सितम्बर, 1972) भुगतान के लिये निरपादित करनी शेष रह गई थीं। जिसका वार्षिक ब्यौरा निम्न प्रकार है :—

	(लाख रुपयों में)
1964-65 तक	5.35
1965-66 तक	1.00
1966-67 तक	3.31
1967-68 तक	4.50
1968-69 तक	9.85
1969-70 तक	3.84
योग	27.85

3. **चिकित्सालयों की स्थापना**

(क) जून, 1967 में राजामुन्द्री (आन्ध्र प्रदेश) में चिकित्सालय भवन का निर्माण करने के लिये 6.05 एकड़ जमीन 1.54 लाख रुपये की खरीदी गई। भवन का निर्माण (अप्रैल, 1973) नहीं हुआ निगम ने अप्रैल, 1973 में बताया तो इस प्रकार है — "राजामुन्द्री में कर्मचारी राज्य बीमा चिकित्सालय के निर्माण का प्रस्ताव निगम की कड़ी आर्थिक स्थिति के कारण निगम द्वारा आस्थगित कर दिया। वर्ष 1972 में, वित्तीय स्थिति के पुनरीक्षण के पश्चात् यह देखा जाता है कि इस राज्य में अगले 5 वर्ष के लिये आगे कोई निर्माण कार्य आने की सम्भावना नहीं है क्यों कि इस राज्य में प्रति व्यक्ति व्यय 217.73 है जो कि स्थायी समिति द्वारा निर्धारित 140 रुपये की उच्चक मूल्य से अधिक है। इस प्लाट पर निर्माण के कार्य के लिये पुनरीक्षण करने के पश्चात् तथा उपरिलिखित उच्चक मूल्य को परिशोधित करने के पश्चात् ही विचार किया जायेगा।

(ख) अक्तूबर, 1963 में निगम ने मध्य प्रदेश आवास बोर्ड की एजेंसी द्वारा 17.07 लाख रुपये के अनुमानित खर्च पर उज्जैन में एक 65 पलंगों का चिकित्सालय तथा स्टाफ क्वार्टर्ज के निर्माण के लिये मध्य प्रदेश के एक प्रस्ताव को स्वीकृत किया। निर्माण कार्य दिसम्बर, 1964 में आरम्भ हुआ तथा मई, 1966 तक उसे पूरा करना था। मार्च, 1971 में निर्माण कार्य वास्तव में 17.50 लाख रुपये की कीमत पर पूर्ण हुआ। अस्पताल ने उसी मास से कार्य करना आरम्भ कर दिया। अप्रैल, 1972 में भरे हुये पलंगों की संख्या केवल 25 थी।

(ग) फरवरी, 1966 में निगम ने मध्य प्रदेश आवास बोर्ड द्वारा 13.81 लाख रुपये के अनुमानित खर्च पर रामपुर में एक 75 पलंगों का टी० बी० अस्पताल तथा 61 क्वार्टर्स (हर प्रकार के) बनवाने के एक प्रस्ताव को स्वीकृत किया। निर्माण-कार्य अप्रैल, 1967 में आरम्भ हुआ तथा दिसम्बर, 1970 तक पूरा किया जाना था। जनवरी, 1969 में, निगम ने चिकित्सा सुविधाओं के मान का पुनरीक्षण किया। परिशोधित मान के अनुसार अस्पताल के लिये क्योंकि केवल 26 पलंग ही उचित थे, निगम ने जनवरी, 1969 में राज्य सरकार को केवल 30 पलंगों के लिये एक भवन को पूरा करने का सुझाव दिया। इस समय तक 75 पलंगों वाला चिकित्सालय पूरा होने के समीप था। क्योंकि उस समय तक भवन पूरा होने के समीप था, यह सम्भव नहीं था कि केवल 30 पलंगों के लिये भवन के निर्माण को प्रतिबन्धित किया जाये। नवम्बर, 1972 में निगम ने कहा कि उसे काम में नहीं लाया गया है क्योंकि अस्पताल की कोई उपयोगिता नहीं थी। भवन की कीमत लगभग 16.34 लाख रुपये है।

(घ) दिसम्बर, 1963 में निगम ने मण्डसाउर में मध्य प्रदेश आवास बोर्ड के माध्यम द्वारा 2.72 लाख रुपये की अनुमानित लागत पर 5 पलंग अंतरंगवार्ड तथा 14 स्टाफ क्वार्टर्स सहित दो डाक्टर औषधालय के निर्माण के लिये मध्य प्रदेश सरकार की योजना स्वीकृत की तदनन्तर —1967 में 1.06 लाख रुपये अतिरिक्त अनुमानित व्यय पर 15 पलंगों का एक अंतरंग वार्ड के लिये योजना का परिशोधन किया।

भवन का आधिपत्य जो अगस्त, 1967 में 4.06 लाख रुपये के खर्च पर निर्माण हुआ था भी उसी मास में दे दिया गया, यद्यपि अगस्त, 1967 से ही औषधालय ने कार्य करना आरम्भ कर दिया था, स्टाफ तथा विशेषज्ञ व उपकरण की कमी के कारण 15 पलंग अंतरंग को चालू नहीं किया जा सका बाद में यह पता चला कि अंतरंग वार्ड की आवश्यकता नहीं थी। फलत:/अत: अगस्त, 1970 में अन्तरंग वार्ड के लिये आवास/जगह राज्य सरकार के कृषि विभाग को कराये के लिये दे दी गई थी।

पी० पी० गंगाधरण,
महालेखाकार,
केन्द्रीय राजस्व

नई दिल्ली,

दिनांक ——————————

टिप्पणी:—हिन्दी अनुवाद में किसी प्रकार की भिन्नता होने पर अंग्रेजी में लिखित विवरण को ही शुद्ध माना जावे।

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 17th June 1974

No. 84.—Pres/74.—The President is pleased to approve the award of the "SENA MEDAL"/"ARMY MEDAL" to the undermentioned personnel for act of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Lieutenant Colonel ANTHONY BRAZ CEOIL D'MELLO (IC-4912)

Sikh Light Infantry.

Lieutenant Colonel Anthony Braz Ceoil D'Mello was commanding a battalion which was ordered, on the 6th December, 1971, to capture Durgabarkati, a most vital and formidably defended area in the Jessore Sector. No sooner had the battalion formed up for the attack when the enemy brought down heavy artillery shelling and intensive mashine gun fire. Undeterred, he personally led the assault, displaying extreme valour and complete disregard of personal safety. Under his inspiring leadership, the battalion captured the feature and held on to it despite continuous enemy shelling and determined counter-attacks, inflicting heavy casualties. The fall of Durgabarkati contributed, in a large measure, to the crambling of enemy defences at Jassore.

In this action, Lieutenant Colonel Anthony Braz Ceoil D'Mello displayed courage and leadership.

2. Lieutenant Colonel HARISH CHANDAR SACHDEV (IC-6848)

Maratha Light Infantry.

Lieutenant Colonel Harish Chandar Sachdev was commanding a Battalion of the Maratha Light Infantry, which had recaptured and was holding the Burj Post in the Western Sector. On the 9th December 1971, the enemy launched a series of determined counter attacks in the area and in a fast action under intense artillery fire overran Vera and Burj and posed a direct threat to our forces at Bhindi Pulakh. At this stage, Lieutenant Colonel Sachdev assumed control of the situation and with his reassuring prensence and inspiring leadership, soon turned the situation to his own advantage. He defeated repeated enemy attacks causing severe losses. The enemy battalion was completely disorganised and fled in panic leaving behind even their Commanding Officer's jeep.

In this action, Lieutenant Colonel Harish Chandar Sachdev displayed courage, leadership and initiative.

3. Major VIJAY SINGH ABASAHEB MISAL (SS-19456)

Maratha Light Infantry.

On the 17th December 1971, Major Vijay Singh Abasaheb Misal, who was commanding a company of his Battalion, was given the task of occupying a feature which is located at a height of over 10,000 feet in Lipa Valley, with a view to cut the enemy's line of communications in the area. After negotiating the hazardous and

treacherous high altitude terrain, Major Misal succeeded in capturing a company defence position. The enemy then subjected the Company to very heavy and accurate artillery and mortar shelling. Undeterred, he successfully repulsed the enemy attacks and he'd the occupied ground against difficult odds for over twelve hours. As a result, the position remained in our hands at the time of cease-fire and it gave us considerable tactical advantage.

In this action, Major Vijay Singh Abasaheb Misal displayed courage, determination and leadership.

4. Acting Major KALP NATH RAI (IC-20515)
The Jat Regiment

On the 7th December, 1971, Major Kalp Nath Rai was commanding a company of a battalion which was ordered to capture Comilla. The battalion reached south of Comilla at 0230 hours on the 8th December, 1971 and came face to face with the enemy defences based on pucca houses and wel-fortified bunkers. He led the assault on the enemy defence. As soon as his company crossed the assault line, heavy automatic and semi-automatic fire was brought down by the enemy killing three men and injuring another five within a minute. Undeterred, he pressed home the attack, inspiring and encouraging his men. He was subjected to heavy medium machine gun fire from the left, but under his courageous leadership, his men succeeded in silencing the gun although at the cost of several lives. At this stage the company came under heavy Medium Machine Gun fire from the right. Seeing that it would be impossible to reach the Medium Machine Gun post from the front, he crawled all alone towards the bunker from extreme right and threw grenades inside the bunker followed by sten burst and pulled the Medium Machine Gun out of the bunker. In this bold and determined action, the company led by Major Kalp Nath Rai killed 23 enemy personnel and captured a large number of rifles and guns.

Throughout the operation, Major Kalp Nath Rai displayed courage, determination and leadership.

5. Major SHIVINDER PAL SINGH (JC-16144)
(*Posthumous*)
5 Gorkha Rifles.

During the operations against Pakistan in 1971, Major Shivinder Pal Singh was commanding a company of his battalion which came under intense enemy automatic and artillery fire at Kapaura and Radhanagar. Undeterred he continued advance towards the objective with his leading men and closed in with the enemy starting a bunker to bunker fight. When one of his Platoon Commanders was badly wounded he attended to his wounds, arranged his evacuation and then went ahead with the attack. In the process he was himself also fatally wounded but, undeterred by his wounds, he continued to provide inspiring and determined leadership to his men and executed his task briiliantly clearing five bunkers and killing nearly thirty enemy personnel. He went ahead fighting until he succumbed to his wounds.

In this action, Major Shivinder Pal Singh displayed gallantry, leadership and determination.

6. Major PARKASH SINGH RAJPUT (IC-17822)
The Jat Regiment.

Major Parkash Singh Rajput was commanding a company of his battalion spearheading the advance to Chittagong. On the 13th December, 1971, while advancing towards Kumiraghat he was ordered to move along the rail track axis to establish contact with the enemy. As the company approached a Sanitorium, it was fired upon by enemy medium machine guns and small arms from shell proof bunkers about 150 metres away. Ordering his left forward Platoon to cover his advance, he himself charged with two platoons on the enemy position, reached the enemy bunkers and started destroying them one by one. He was personally responsible for destroying two bunkers and killing one of the enemy in hand to-hand fight. Due to sure and systematic elimination of their strong bunkers, the enemy fled. This attack resulted in the death of 13 enemy personnel and capture of sizeable quantities of arms and ammunition and greatly assisted in the reduction of the Kumiraghat enemy position.

In this action, Major Parkash Singh Rajput displayed courage, determination and leadership.

7. Major NARENDAR MOHAN SHARMA (IC-15082)
Engineers.

During the operations against Pakistan in 1971, Major Narendar Mohan Sharma was commanding a Field Company during the advance along Jaintiapur-Sylhet axis. Expecting advance along this axis, the enemy had demolished eight major bridges having spans ranging from 100 feet to 400 feet, thus delaying the advance as the field guns could not move along the demolished bridges. In carrying out his task of preparing roads and ferries to the advancing troops, Major Sharma displayed outstanding zeal, drive and devotion to duty. The first approach road and a ferry across a 150 feet water gap was completed in four hours and thereafter the remaining seven crossings were effected in 42 hours. He worked continuously without rest and, in the absence of standard equipment, had to effect improvisations at enery stage. He repeatedly went forward under enemy fire to carry out reconnaissance of demolished bridges. It was largely due to his personal example of leadership, anticipation and sound planning that swift advance was maintained despite demolished bridges and the guns and vehicles were able to keep pace with the advancing infantry. On the 14th December, 1971, when the advance was stalled by strong enemy positions at Khadimnagar, Major Narendar Mohan Sharma even volunteered to take a platoon of his field Company for the capture of a position on one flank. He personally led his platoon and went with the assault with the infantry company, thus contributing to the ultimate capture of Khadimnagar.

Throughout, Major Narendar Mohan Sharma displayed courage, determination and leadership.

8. Major SURINDER PRAKASH MARWAH (IC-15918)
The Brigade of Guards.

On the 8th December, 1971, Major Surinder Prakash Marwah, who was commanding a company of his battalion, was given the task of establishing a helipad in area Gaurnagar and also to reconnaissance ferry sites over the Pagla river at Rasulpur and Gosainpur. Leading his company, he marched over 50 kilometres in 18 hours and carried out his allotted task. However, plans were changed at this stage as the enemy fell back prematurely and the drive for Ashuganj was ordered. While regrouping his company, Major Surinder Prakash Marwah and his party were ambushed by the enemy. He boldly charged the enemy, killed three of them and broken the ambush, capturing one Medium Machine Gun, one Light Machine Gun and a number of rifles. On another occasion, he attacked an enemy position and unmindful of the enemy small arms and mortar fire, led his attack boldly and captured the objective.

Major Surinder Prakash Marwah displayed commendable courage, determination and leadership.

9. Major BAHADUR SINGH BHATI (IC-22548)
The Jat Regiment.

On the night of 13th December, 1971, the company led by Major Bahadur Singh Bhati was ordered to fill a gap in the defences of his battalion which was regrouping preparatory to an attack in Lalmai Hill Area. While approaching suitable ground in the gap, the company came under heavy cross fire of enemy small arms. In spite of 18 casualties, Major Bhati relentlessly led his men in the open and by his personal example and bravery not only succeeded in occupying the ground against overwhelming odds but also managed to inflict heavy casualties on the enemy and destroyed four enemy bunkers.

In this action, Major Bahadur Singh Bhati displayed courage, determination and inspiring leadership.

10. Major BIKRAM SINGH (IC-14632)
Maratha Light Infantry.

Major Bikram Singh was in command of a company of a battalion of Maratha Light Infantry when, on 1st December, 1971, it encountered an enemy platoon entrenched in a defensive position near Arpara with protective mine-fields around it. When the enemy started shelling causing heavy casualties, he skilfully kept advancing and cleared the enemy position and contacted the enemy defences at Arpara. As he was entrenching in this position, his platoon came under very heavy artillery and machine gun fire and suffered about ten casualties. Realising the seriousness on the situation, he went from trench to trench enthusing his men with courage and confidence, with least regard to his personal safety. He kept moving under intense enemy fire, organising and encouraging his company and through his personal example, succeeded in taking up a defensive position under very difficult circumstances.

In this action, Major Bikram Singh displayed exemplary courage, determination and leadership.

11. Major AKHAURI ANIL SHEKHAR SINHA (IC-16553)
Kumaon Regiment.

Major Akhauri Anil Shekhar Sinha was commanding a company of a battalion of Kumaon Regiment, which formed part of the task force for the capture of Daudkandi in Bangladesh. At about 1700 hours on the 7th December, 1971, when the column approached a bridge, it came under heavy automatic fire from the bunkers alongside the road. Water channels astride the road and the built-up area restricted the movement of tanks and the fading light hindered accurate fire on the bunkers. Without adequate reconnaissance and in failing light, Major Akhauri Anil Shekar Sinha dismounted from the tanks and led his company in a quick attack on enemy bunkers. He resolutely and boldly handled his company with no regard to his personal safety and cleared the built-up area in spite of his own mounting casualties. On the 8th December, 1971, when the advance of tanks was again stopped by a rickety bridge and water channels, he again cleared every building from which enemy fire was coming. As the local population gathered to pay ovation to the company, the enemy made a fierce counter-attack, but Major Sinha kept absolutely calm and cool and pursued the enemy from house to house and got them destroyed by tanks, inflicting heavy casualties. Again, on the 12th December, 1971, when ordered to encircle and force the surrender of a retreating company column of the enemy, Major Sinha was surprised by elements of three enemy battalions and of some para-military force. Unnerved and keeping absolutely calm and notwithstanding the small strength of his Company, he organised and carried out the disarming of the entire enemy column.

Throughout, Major Akhauri Anil Shekhar Sinha displayed courage, initiative and leadership.

12. Major EUSTACE WILLIAM FERNANDEZ (IC-12335)
Artillery.

Major Eustace William Fernandez was commanding a Mountain Battery in support of Infantry units operating on two widely separate axis in Bangladesh. On the 7th December, 1971, one of his troops was ordered to move in support of Infantry on Jaintipur-Sylhet Sector. This involved moving guns, ammunition and vehicles across a major river where no bridge or ferry existed. With commendable resourcefulness, he improvised a raft and moved his guns and vehicles overnight to the given location in record time and deployed his guns on a suitable 'Gun Area', notwithstanding longer range enemy guns in operation. On the 12th December 1971, in the face of effective enemy automatic and mortar fire, he personally directed artillery fire on an enemy stronghold at Balipara and brought forward a pistol gun and took direct shot at enemy bunkers. This shattered the morale of the enemy who abandoned the position and retreated in haste. Again, during the attack on Khadimpur, he provided continuous and effective artillery support and also engaged important targets in Sylhet, which largely contributed to the capitulation of the enemy in that Sector.

Throughout these operations, Major Eustace William Fernandez displayed courage, leadership and devotion to duty.

13. Major HARISH CHANDRA SHARMA (IC-14766)
Punjab Regiment.

On the 18th December 1971, the Pakistani troops committed a serious cease-fire violation in Mamdot Bulge, infilterating one platoon strength with five medium machine guns. Major Harish Chandra Sharma, who was out on a patrol with ten Other Ranks, noticed the enemy platoon which had taken up a defensive position. He immediately got behind the enemy position and made the enemy believe that they were surrounded by a large force by giving orders to non-existent sub-units and calling for artillery fire. The enemy opened fire with medium machine Guns. Though outnumbered, Major Sharma, boldly made a bayonet charge on the enemy position. Completely unnerved by this heroic action, some of the enemy threw their arms and the others tried to escape. Major Sharma and his men chased the enemy and succeeded in overpowering them. He captured 26 men, all the five medium machine guns and other arms and ammunition. Soon after this encounter, he was again confronted by a superior enemy force and once again he succeeded in foiling the enemy's designs by adopting aggressive and bold measures.

In this action, Major Harish Chandra Sharma displayed courage, initiative and leadership.

14. Captain MUCKTIRA AIYAPPA KARIAPPA-(IC-14600)
Para Regiment.

Captain Mucktira Aiyappa Kariappa was commanding a platoon of the Command group defending the Sukh Tau Nala crossing on Manawar Tawi. On the 5th December 1971, the enemy attacked this position twice and captured the forward trenches of his platoon locality. Undeterred, he led a counter-attack with a handful of men and regained the lost positions. Although wounded himself, he continued to encourage his men to hold on the position until the enemy attack was beaten back.

In this action, Captain Mucktira Aiyappa Kariappa displayed courage, determination and leadership.

15. Captain BALKAR SINGH (SS-21201)
Engineers.

On the 13th December 1971, when the advance of an infantry Brigade in Jammu and Kashmir Sector was held up on account of an enemy mine-field, Captain Balkar Singh was detailed to carry out a reconnaissance of the mine-field. He carried out the reconnaissance for a distance of 200 yards under heavy enemy shelling. As the area was under enemy observation and intense shelling, reconnaissance by daylight was almost impossible. However, in view of the importance and urgency of making a lane across the mine-field, he volunteered to carry out the task by day. He took his party into the mine-field and although the enemy was bringing down fire in the area, he continued the breaching in broad daylight and personally neutralised and disarmed a number of anti-personnel and anti-tank mines. Although, in view of the grave risk involved, he had been given a limited task of clearing a 2 feet wide infantry safe lane, he attempted and succeeded in making a 400 yards and 24 feet wide safe lane for vehicles. He had been at the task for 24 hours when he was wounded and had to be evacuated to hospital.

Captain Balkar Singh thus displayed commendable courage, determination and leadership.

16. Captain RAJINDER SINGH JAMWAL (IC-19390)
Engineers.

Captain Rajinder Singh Jamwal was serving with 4 para during the attack in the Ganga Nagar Sector during the operations against Pakistan in December 1971. The task given to Captain Jamwal was to clear safe lanes through enemy mine-fields, for infantry and vehicles. He accomplished this task successfully despite severe artillery and Medium Machine Gun fire directed on him. This helped the assaulting companies to get reorganisation stores and ammunition in time. Further, beyond the task given to him and at great personal risk, he organised evacuation of casualties suffered by the battalion who were lying wounded in the mine-field, again under strong enemy interference.

In this action, Captain Rajinder Singh Jamwal displayed courage, determination and devotion to duty.

17. Captain DIBYENDU KUMAR SENGUPTA (MR-2909)
Army Medical Corps.

Captain Dibyendu Kumar Sengupta was serving with his battalion operating in the Eastern Sector during the defensive operations in that Sector. Throughout the operations, he displayed a high degree of dedication to service in carrying out his duties of evacuating and treating casualties by constantly remaining under enemy's effective machine gun and artillery fire. The task was particularly difficult as casualties were very heavy and scattered over a wide area, and adequate means of evacuation were not readily available.

Throughout, Captain Dibyendu Kumar Sengupta displayed courage and devotion to duty.

18. Captain HARA GOPAL MUKHOPADHYAY (MR-2632)
Army Medical Corps.

Captain Hara Gopal Mukhopadhyay was serving with battalion in Bangladesh during the operations in December 1971. During an attack on the night of 2nd/3rd December 1971, despite enemy's severe artillery machine gun and small arms fire, he was attending the wounded following closely behind assaulting companies. Again on the 15th December 1971, when the battalion had laid an ambush for the withdrawing enemy, he attended to the casualties while fighing was still going on.

Throughout, Captain Hara Gopal Mukhopadhyay displayed courage and devotion to duty.

19. Captain SUBRATA RAY (SS-22471)
Artillery.

Captain Subrata Ray was serving in an artillery regiment in the Daudkandi Sector in Bangladesh during the operations in December 1971. On the 12th December 1971, his troops with ammunition were air-lifted by helicopters and dropped near Bidya Bazar. All the three guns and the ammunition landed in different places in a wide area spread over a distance of 42 kilometres where the enemy was still holding out. With great determination, initiative and devotion to duty; he carried out the task of collection and deployment of his guns and in a short time of 6 hours he had reassembled his troops and ammunition and deployed them for subsequent operations.

In this action, Captain Subrata Ray displayed courage, initiative and leadership.

20. Captain PALGHAT SUBRAMANIAM SURENDRANATH (MR-2691)
Army Medical Corps.

Captain Palghat Subramaniam Surendranath was serving in the Khulna Sector in Bangladesh during the operations in December 1971. He was attached to 26 Madras to provide Medical cover during the two battalion attacks on the 13th and 15th December 1971. On both the occasions, he established his aid post well forward under enemy's artillery fire to provide quick medical attention to casualties. Although under constant heavy shelling and small arms fire, he attended to nearly one hundred casualties during both the attacks, in total disregard to his personal safety.

In these actions, Captain Palghat Subramaniam Surendranath displayed courage and devotion to duty.

21. Captain HARDEV SINGH KLAIR (SS-20324)
3 Gorkha Rifles.

Captain Hardev Singh Klair was serving with an infantry battalion as mortar platoon commander in the Eastern Sector. During earlier part of the operations, he was given 4.2 inch mortars for which his men were not fully trained. He trained his men in their handling and very creditably employed them in subsequent operations, often directing the fire of his mortar platoon from tree tops in the vicinity of forward most trenches, regardless of enemy shelling. On the 15th December 1971, he was detailed to lead to patrol to Cox Bazar after landing on Ukhia Beach in Landing Craft Tanks. Through ingenious use of rappling ropes, he led his men to the shore through swelling waves and pushed his way forward, through hills and jungle overcoming water obstacles, covering 28 miles of enemy territory and reached Cox Bazar long before schedule.

In this action, Captain Hardev Singh Klair displayed courage, initiative and determination.

22. Captain SHIVRAM PATHAK (IC-21591)
Artillery.

Captain Shivram Pathak was serving in the Eastern Sector during the defensive operations in the Sector. He was attached as Forward Observation Officer with a battalion of Kumaon Regiment. On the 14th December 1971, while he was moving with the companies to which

he was attached, the enemy opened up with Artillery, Machine Gun and small arms fire thus holding up the advance. Taking great personal risk, he moved from one position to another, in the face of intense enemy shelling and without effective cover, to accurately observe and direct fire of his gun on enemy weapons. He did this most effectively and was able to silence several enemy machine guns.

In these actions, Captain Shivram Pathak displayed courage and devotion to duty.

23. Captain JAGDISH CHANDRA SHARMA (SS-19458)

Artillery.

Captain Jagdish Chandra Sharma was serving in the Eastern Sector with a mountain regiment, during the defensive operations in that Sector. He was attached as a Forward Observation Officer with a mortar fire company which was attacking the town of Kasba. The attacking force had advanced some distance when heavy small arms and artillery fire was opened up on it by the enemy. Captain Sharma, though himself under heavy fire, directed own guns so effectively that he silenced the opposition and his company successfuly captured its objective. Again as a Forward Observation Officer with a company of an infantry battalion during an attack, he silenced enemy opposition and effectively pressed home the attack after the company commander was killed in action and the company second-in-command was isolated from the company.

In these actions, Captain Jagdish Chandra Sharma displayed courage, leadership and devotion to duty.

24. Captain KUTTAN MAHADEVAN (SS-20538) Artillery.

Captain Kuttan Mahadevan was serving with a Mountain Regiment in the Eastern Sector during the operations in December 1971. On the 3rd December 1971, while he was acting as a Forward Observation Officer with one of the assaulting companies of a battalion of Dogra Regiment, he was wounded. In spite of the injury, he kept up with the assaulting troops and continued to direct artillery fire on the objective ultimately assisting the company to successfully capture the objective.

In this action, Captain Kuttan Mahadevan displayed courage and devotion to duty.

25. Captain PALLAIHODIYIL MOHMED HAMEED (IC-23401)

Artillery.

Captain Pallaihodiyil Mohmed Hameed was commanda mix force approximately two companies during the defensive operations in the Eastern Sector. The tasks of this force were to gain intelligence, lay ambushes and road blocks behind the enemy. This being a semi-trained force, Captain Hameed deliberately exposed himself to additional dangers to set a personal example, thus inspiring his men and ultimately contributing significantly to the success of operational plans.

Captain Pallaihodiyil Mohmed Hameed thus displayed courage, leadership and devotion to duty.

26. Captain SUBASH CHANDER KALRA (SS-21546)

Artillery.

Captain Subash Chander Kalra was serving in the Eastern Sector attached with an Infantry Battalion during the operations in December 1971. On the 11th December 1971, in a daylight attack across a river, Captain Kalra who was a Forward Observation Officer, kept moving forward for better observation of the objective. In doing this, he and a member of his party were injured. After giving first aid to the other casualty, he unmindful of his own injuries, continued to direct fire of his guns forcing the enemy to withdraw and enabling own Companies to capture the objective.

In this action, Captain Subash Chander Kalra displayed courage and devotion to duty.

27. Captain GHOGALE ARVIND VASUDEO (SS-21162)

Artillery.

Captain Ghogale Arvind Vasudeo was fighting in the Eastern Sector as a Forward Observation Officer with an Infantry Battalion. In an encounter with the enemy, there was hand-to-hand fight in which the Company Commander, the Platoon Commander and the Platoon Havildar were killed. Captain Vasudeo organised the remaining platoon and courageously carried out defensive fire tasks all around moving about in a fire-swept open area.

In this action, Captain Ghogale Arvind Vasudeo displayed courage, initiative and devotion to duty.

28. Captain AVTAR SINGH (IC-16120)

Artillery

Captain Avtar Singh was serving in a Mountain Regiment during the defensive operations in the Eastern Sector. He was given the task of infilterating behind enemy lines and causing maximum possible damage to the enemy. He successfully accomplished this task by staying behind enemy lines for five days. He was able to destroy an enemy godown, artillery guns, railway wagons and an engine and a number of vehicles. In addition, he inflicted casualties on enemy troops.

Throughout, Captain Avtar Singh displayed cool courage and devotion to duty of a very high order.

29. Captain HARISH CHANDER SETH (IC-19966) Artillery

Captain Harish Chander Seth was serving in a Mountain Regiment during the defensive operations in the Eastern Sector. He was acting as the Forward Observation Officer with a Company. On the night of 5th/6th November 1971, when the Company had entered a round block behind the enemy, a counter-attack was launched by the enemy, preceded by artillery shelling. Under intense fire and against heavy odds, his troops began to withdraw, but Captain Seth personally rallied his men and reorganised them. He successfully beat back this and several subsequent attacks, forcing the enemy to leave behind his dead and wounded personnel, and also arms and ammunition.

In this action, Captain Harish Chander Seth displayed cool courage, devotion to duty and complete disregard for his personal safety.

30. Captain INDER PAL SHARMA (IC-20632)

Artillery

Captain Inder Pal Sharma was serving in a Medium Regiment during the operation in the Western Sector in December 1971. He was attached to a Border Security Force battalion as Forward Observation Officer for the recapture of the border post at Rajamohtam. On the night of 6th/7th December, 1971 at 0330 hours, when the attack was in progress, enemy opened up with medium machine gun fire forcing the attacking troops to

halt. Captain Sharma effectively directed artillery fire on enemy to extricate own troops. Later, when the attack was launched from another flank, it was again held up, but Captain Sharma moving to a flank directed our artillery fire and silenced the opposition enabling the assaulting troops to capture the objective.

In this action, Captain Inder Pal Sharma displayed courage, determination and devotion to duty.

31. Lieutenant SHIV SHANKAR KUNDU (IC-24551)
Engineers

Lieutenant Shiv Shankar Kundu was serving with an Engineer Plant Company at Hussainiwala in the Western Sector during the operations in December 1971. On the night of 8th December 1971, he accompanied two parties detailed to open sluice gates of Hussainiwala Headworks which, at the far end, was occupied and dominated effectively by the enemy. As he led his party to the sluice gates, he came under heavy enemy fire. With cool courage and determination, he carried out the allotted task magnificently under intense and concentrated enemy small arms and artillery fire. While accomplishing the task, he was seriously wounded.

In this action, Lieutenant Shiv Shankar Kundu displayed courage and leadership.

32. Lieutenant AKHILESH KUMAR DUBE (IC-24409)
63 Cavalry

Lieutenant Akhilesh Kumar Dube was serving with an Armoured Crops unit in the Eastern Sector during the operations in December 1971. On the 7th December, 1971, he was the leading tank troop commander advancing to the Jessore Air Field. Despite the presence of enemy guns in thickly wooded groves and indiscriminately laid mines, he led his troops with great courage. Spotting an enemy bunker with a rocket launcher, he quickly knocked it out and sprayed the enemy forward defended localities with machine gun fire. He succeeded in striking terror in enemy ranks.

In this action, Lieutenant Akhilesh Kumar Dube displayed courage, initiative and devotion to duty.

33. Second Lieutenant JAIPAL SINGH SISODIA (IC-24017)

The Jat Regiment

Second Lieutenant Jaipal Singh Sisodia was serving with an Infantry battalion in the Poonch Sector during the operations in December 1971. On the 4th December 1971, timely re-inforcement provided by his platoon to one of our piquets helped in repulsing the enemy attack. The same night the enemy again launched three attacks on the piquets, the platoon under command of Second Lieutenant Sisodia inflicted very heavy casualties on the enemy. His platoon was again asked to occupy an area where the enemy was trying to interpose for isolating own posts. He charged the enemy with swift and resolute action and forced him to abandon the position.

In this action, Second Lieutenant Jaipal Singh Sisodia displayed courage, initiative and leadership.

34. Second Lieutenant ROSHAN LAL MANN (IC-24385)

Brigade of the Guards.

Second Lieutenant Roshan Lal Mann was serving with an Infantry Battalion in Sialkot Sector during the operations in December 1971. On the 14th December 1971, while in command of a Platoon, he was ordered to join another Platoon which had come under heavy enemy machine gun fire. He showed great courage and disregard for personal safety in personally launching a quick attack on an enemy post along with only two other ranks. His personal example inspired his platoon, who assaulted the enemy's Medium Machine Gun posts, and captured three Medium Machine Guns killing a number of enemy personnel. This brave action resulted in extricating the other platoon from the heavy Medium Machine Gun fire from a well defended enemy post.

In this action, Second Lieutenant Roshan Lal Mann displayed courage and leadership.

35. Second Lieutenant PUSHPINDER (IC-24378) Sikh Regiment.

On the night of 6th/7th December 1971, Second Lieutenant Pushpinder, after capturing Kaiyan in the Western Sector, reorganised his defences on the objective effectively and beat back a fierce enemy counter-attack. Again on the night of 15th/16th December 1971, he led an attack on enemy post of Naukot. He led his platoon with courage and was mainly responsible in capturing the post with his daring leadership.

In both these actions, Second Lieutenant Pushpinder displayed courage, determination and devotion to duty.

36. Second Lieutenant BIKRAM CHAND RANA (IC-23677)

The Dogra Regiment.

Second Lieutenant Bikram Chand Rana was serving with an Infantry battalion in the Faridkot Sector during the operations in December 1971. He was primarily responsible for the success achieved by his battalion in capturing important posts in his sector. In the initial stages, he collected useful information by closing up with the enemy and having a close look at his defences, unmindful of his personal safety. During the attack, his company Commander was mortally wounded. He took over command and inspired his men by bold and courageous action and led them to the successful capture of the objective. He was again responsible for the supply of useful information about an enemy anti-tank minefield, which was collected purely on his own initiative. While returning however, his left foot was injured by a mine blast. Ignoring his own injuries he provided first aid to the injured men till they were evacuated by another party.

Throughout, Second Lieutenant Bikram Chand Rana displayed courage, initiative and devotion to duty.

37. Second Lieutenant CLAYTON SOLOMON (SS24345)

The Brigade of Guards.

Second Lieutenant Clayton Solomon was commanding a platoon of a Battalion of the Brigade of Guards in the Eastern Sector during the operations in December 1971. On the night of 3rd/4th December 1971 he was ordered to clear three well defended enemy posts. In spite of the effective fire of light machine guns, this officer got his platoon to crawl from bunker to bunker neutralising them. He was personally responsible in silencing a pair of these guns. By this action, his company was able to clear the rest of the objective with ease.

In this action, Second Lieutenant Clayton Solomon displayed cool courage, determination and leadership.

38. Second Lieutenant SAMIR RAMMOHAN CHANDAVARKAR (SS 23578)
(*Posthumous*)

45 Cav

Second Lieutenant Samir Rammohan Chandavarkar, who was commanding a troop attached to a battalion of the Rajput Regiment, was given the task of assaulting a well fortified feature in the Eastern Sector during the operations in December 1971. On reaching near the objective, his tank was hit and caught fire. Unmindful of the fire and the heavy enemy shelling, he helped his men extricate from the tank to safety. Thereafter, he led his crew to the objective and helped in its capture. During this action he was mortally wounded.

In this action, Second Lieutenant Samir Rammohan Chandavarkar displayed, courage, determination and leadership.

39. Second Lieutenant BALBIR SINGH (IC-24401) The Dogra Regiment.

Second Lieutenant Balbir Singh was commanding a platoon of an Infantry battalion in Comilla Sector during the operations against Pakistan in 1971. His company was given the task of establishing a road block behind the enemy defences. He was throughout in the forefront and played a leading part in the successful establishment of the road block. Although attacked in much superior numerical strength by the enemy, he stood fast to beat back the enemy attack and moved from trench to trench inspiring his men and personally supervising and directing the fire. In the process, he got injured but stuck on to the task till the enemy attack was beaten back.

In this action, Second Lieutenant Balbir Singh displayed courage, leadership and devotion to duty.

40. Second Lieutenant BOTTALANDA MACHAIAH, MUTHAPPA (SS 22909)

Engineer.

Second Lieutenant Bottalanda Machaiah Muthappa was serving in an Engineer Regiment during the operations in December 1971. On the 4th December 1971, the 7th Cavalry were in contact with enemy at Mian Bazar in the Easern Sector, when two of their tanks got trapped in enemy minefield. Second Lieutenant Muthappa was ordered to clear the mines to make the passage for the tanks. One of these tanks was burning in a mined paddy field and an individual was lying close to it. With complete disregard to his personal safety, he entered the minefield, breached a safe lane upto the wounded individual and evacuated him to a safe place. He accomplished the feat of breaching the safe lane without complete breaching equipment and party, while there was imminent danger of the ammunition exploding in the tank. The tank exploded immediately after the casualty had been rescued.

In this act, Second Lieutenant Bottalanda Machaiah Muthappa displayed courage, determination and devotion to duty.

41. Second Lieutenant VISHNU KANT CHATURVEDI (IC-25135)

Artillery.

Second Lieutenant Vishnu Kant Chaturvedi was detailed as Forward Observation Officer with an Infantry battalion, which was given the task of clearing the enemy from an important objective in the Sylhet Sector during defensive operations in the Eastern Sector. During the attack, he directed the Artillery fire most effectively moving in the open, unmindful of heavy enemy fire. When the Company Commander of the company, which he was supporting, was killed during the last stages of the attack, he took over the command and successfully delivered the attack home by his inspiring leadership.

In this action, Second Lieutenant Vishnu Kant Chaturvedi displayed courage, leadership and devotion to duty.

42. Second Lieutenant JOHN TERENCE D'SOUZA (IC-23758)

7 Cavalry

Second Lieutenant John Terence D'Souza was serving with an Independent Armoured Squadron in the Eastern Sector during the operations in December 1971. On the 4th December, 1971, while advancing towards the enemy at Mian Bazar, he saw the tank of another brother office being hit. Despite heavy enemy fire and in utter disregard of his personal safety, he succeeded in picking up the officer and crew of his tank. As he was withdrawing, his own tank was blown up. Undaunted by enemy fire and despite being seriously injured himself, he lifted the other officer and brought him to safety.

In this action, Second Lieutenant John Terence D' Souza displayed courage, determination and leadership.

43. Second Lieutenant ASHOK VASUDEO TASKR (IC-25280)

Parachute Regiment

Second Lieutenant Ashok Vasudeo Taskar was serving in the Poonch Sector during the operations in December, 1971. On the night of 3rd/4th December 1971, enemy troops had occupied heights overlooking Nagali Sahib. Our troops were at lower heights and the enemy was bringing effective fire on them from an advantageous position. Realising the seriousness of the situation, Second Lieutenant Taskar quickly organised a determined assault on the enemy. While doing so, he was wounded. Despite his injuries, he continued to load a determined assault and succeeded in evicting the enemy, inflicting heavy casualties and capturing a number of weapons and equipment.

In this action, Second Lieutenant Ashok Vasudeo Taskar displayed courage and devotion to duty.

44. JC 36215 Subedar GANGE GURUNG

4 Gorkha Rifles.

Subedar Gange Gurung was serving with an Infantry battalion in the Western Sector during the operations in December 1971. On the 10th December 1971, when his company was assaulting the enemy at Darh crossing, he noticed some enemy Infantry on the left flank. Immediately, he manouvered his troops to engage the enemy. This quick reaction on his part unnerved the enemy who withdrew. Later, after the death of the Company Commander, Subedar Gurung continued engaging the enemy. When he was surrounded by enemy tanks, he organised extrication of his company with great skill and presence of mind. Despite enemy air strafing, he succeeded in bringing his troops to a place of safety.

In these actions, Subedar Gange Gurung displayed courage and determination.

45. JC 19772 Subedar AYUDHBIR SINGH
Punjab Regiment.

Subedar Ayudhbir Singh was serving with an Infantry battalion in the Eastern Sector during the operations in December 1971. On the 7th December 1971, his battalion was advancing from Sultanpur towards Brahman Baria. He was commanding the leading platoon, which was suddenly subjected to heavy enemy fire. Disregarding his personal safety, he moved about in the open under intense enemy fire and led his troops to a covered position, where the rest of the battalion subsequently firmed in.

In this action, Subedar Ayudhbir Singh displayed courage, organising ability and devotion to duty.

46. JC 19027 Subedar (Svr field) AMRIK SINGH

General Reserve Engineer Force.

Subedar Amrik Singh was serving with a construction company at Agartala in the Eastern Sector during the operations in December, 1971. His company, which was given the task of extension of Agartala Air Field, was subjected to heavy shelling by the enemy. Unmindful of this, he with his men, continued to carry out the assigned task. The same night, when the Air Field was again subjected to heavy enemy shelling, he ensured that his men were safe before taking shelter himself. He organised the work of extension of the runway and continued to work round the clock, without rest, for sixty hours.

Because of the personal example set by Subedar Amrik Singh, the men under his command worked with utmost zeal and the task was completed well within time. In carrying out this task, he displayed initiative, determination and exceptional devotion to duty.

47. JC 31463 Subedar SADHU SINGH HIRA

(*Posthumous*)

Sikh Light Infantry.

On the 15th December 1971, Subedar Sadhu Singh Hira was commanding the platoon leading the attack of the rifle company of a Battalion of the Sikh Light Infantry on Arpara in the Eastern Sector. The enemy opened up with heavy machine gun fire from the objective, stalling the attack. The junior Commissioned Officer, with his platoon moving stealthily, closed on to the proximity of the machine gun position. In doing so, he was hit by an enemy bullet. Undeterred, he dashed on to the enemy machine gun leading the charge. Having destroyed the heavy machine gun, he succumbed to his injuries.

In this action, Subedar Sadhu Singh Hira displayed courage, leadership and devotion to duty.

48. JC 23817 Subedar BIKRAMJIT SINGH

The Punjab Regiment.

On the 7th December 1971, Subedar Bikramjit Singh was commanding a platoon of a battalion of the Punjab Regiment. While his company was establishing a firm base, he was ordered to close in to the enemy which had been bringing heavy and effective small arms fire. Leading his platoon, he closed on to the enemy position, which was bringing on intense machine gun fire. Undaunted, he dashed on to the machine gun position with one of his sections and silenced it. In doing so, he inflicted heavy casualties on the enemy but was wounded by an enemy bullet.

In this action, Subedar Bikramjit Singh displayed courage, leadership and devotion to duty.

49. JC 44936 Subedar AJAIB SINGH

Sikh Light Infantry.

On the 6th December 1971, Subedar Ajaib Singh was the Second-in-Command of the Company of a battalion of the Sikh Light Infantry, leading the right flank of the battalion attack on Durgabarkati in the Eastern Sector. The enemy brought the attack to a near halt by bringing on heavy and effective machine gun fire. In the thick of the enemy fire, he, with complete disregard to his personal safety and undeterred by the injury received by him, rushed on to the machine gun bunker, lobbed a grenade inside and silenced the enemy medium machine gun which enabled the battalion to capture the objective.

In this action, Subedar Ajaib Singh displayed courage, leadership and devotion to duty.

50. JC 20128 Subedar PAKALAPATI JOSEPH DAVID SUNDARA RAJU

Signals.

On the night of 3rd December 1971, Subedar Pakalapati Joseph David Sundara Raju was assigned the task of restoring the line communication to the Infantry battalions in Poonch-Banawat area which was under heavy enemy shelling. Undeterred by the heavy enemy fire, he led the line party and completed the task and also laid a fresh lateral line of communication which proved of immense value as an alternative means of communication.

In carrying out this task in difficult terrain and under heavy enemy shelling, Subedar Pakalapati Joseph David Sundara Raju displayed courage, leadership and devotion to duty.

51. JC 59195 Naib Subedar KARNAIL SINGH

(*Posthumous*)

Corps of Engineers.

On the night of 8th December 1971, Naib Subedar Karnail Singh, who was commanding an engineer party, was assigned the task of opening the Sluice gate of the Hussainwala Headworks to flood the river Sutlej. The gallery over which the party had to manoeuvre had been extensively damaged and was dominated by enemy fire. In the face of heavy enemy fire, showing complete disregard for his own safety, he led his party and succeeded in accomplishing his task. While returning, he was hit by an enemy artillery shell and was killed on the spot.

In this action, Naib Subedar Karnail Singh displayed courage, leadership and devotion to duty.

52. JC 51857 Naib Subedar ANTHONY HORO

(*Posthumous*)

Bihar Regiment.

On the 9th December 1971, Naib Subedar Anthony Horo was commanding the Machine Gun Section of a battalion of the Bihar Regiment. Having captured Sohagpur in the Eastern Sector, the Battalion was reorganising on the objective. The casualties suffered during the attack had been left inside the school building in the village. As the enemy was shelling this village heavily, it became necessary to move the casualties to a safer place. This Junior Commissioned Officer, with selfless devotion and undeterred by the enemy firm, undertook the task of evacuating the casualties from the school building. In doing so, he was hit on the chest by enemy machine gun fire and died on the spot.

In this action, Naib Subedar Anthony Horo displayed exceptional courage, comradeship and selfless devotion to duty.

53. 3943841 Naib Subedar RACHHPAL SINGH

Dogra Regiment.

On the 16th December 1971, Naib Subedar Rachhpal Singh was a platoon commander in the company of a Battalion of the Dogra Regiment attacking Siramani in the Eastern Sector. As the attack progressed, the enemy brought on heavy and effective fire. Though wounded by a grenade splinter he charged on to enemy trench from where the grenade had been lobbed at him and bayoneted the two enemy soldiers to death. Seeing this courageous act and daring of the Junior Commissioned Officer, his men rallied behind him to capture the objective.

In this action, Naib Subedar Rachhpal Singh displayed exemplary courage, leadership and devotion to duty.

54. JC 39317 Naib Subedar RAMESHWAR SINGH

Kumaon Regiment.

On the 6th December 1971, Naib Subedar Rameshwar Singh of a Battalion of the Kumaon Regiment was assigned the task of extricating a platoon which was caught and pinned down under enemy fire barely 15 yards from the enemy defences. He manoeuvred his party with exceptional skill and courage, and engaged the enemy's machine guns on both flanks. Despite heavy enemy fire, he established contact with the platoon and assisted it not only to extricate itself from the enemy but also to evacuate the wounded personnel.

In this action, Naib Subedar Rameshwar Singh displayed courage, leadership and devotion to duty.

55. JC 57352 Naib Subedar RAMA CHANDRAN

Corps of Engineers.

On the night of 10th December 1971, Naib Subedar Rama Chandran of an Engineer Regiment was assigned the task of clearing mines from the road Parikot-Laksham in the Eastern Sector, which the enemy had heavily mined while withdrawing. Setting to the task immediately with two engineer sections, he inspired and encouraged his men by moving himself well ahead of the breaching party.

In clearing the mines in total darkness and with exceptional skill, Naib Subedar Rama Chandran displayed courage, leadership and devotion to duty.

56. 4154794 Lance Havildar YESWANT SINGH

The Parachute Regiment.

On the night of 4th December 1971, Pakistan Commands raided and occupied heights overlooking Nagali Sahib in Poonch in the Western Sector. The enemy brought heavy and effective fire on our troops from these heights. In this grave situation, Lance Havildar Yeshwant Singh of Parachute Regiment (Commandos) along with a Para-trooper crawled behind the enemy position and overpowered them. In a hand to hand fight that ensued, he and his commrade killed four enemy soldiers and captured the machine gun.

In this action, Lance Havildar Yeshwant Singh displayed examplary courage, and devotion to duty.

57. 2947852 Havildar CHHOTE SINGH

The Rajput Regiment.

On the 4th December 1971, Havildar Chhote Singh was the commander of a platoon which was assigned the task of securing the Teetas Bridge, immediately after his Battalion had captured Akhaura in the Eastern Sector. This bridge had been prepared for demolition by the enemy. In this face of enemy opposition, he dashed with his platoon across the bridge, taking the enemy by surprise. Although under constant enemy fire from bunkers, he consolidated his position and reacted sharply to cut the set charges so that his company could follow across the bridge.

In this action, Havildar Chhote Singh displayed courage, leadership and devotion to duty.

58. 5435167 Havildar NARAIN SINGH GURUNG

5 Gorkha Rifles.

During the defensive operations in the Eastern Sector, Havildar Narain Singh Gurung was the recoilless rifles detatchment commander with the company which cleared enemy from defensive position. When the enemy opend up with machine gun and mortar fire from a locality three hundred yards away, he crawled up to the nearest enemy position and destroyed two enemy bunkers. Thereafter, leaving his rifle, since it had stopped firing due to some fault, he crawled upto the third bunker, lobbed a grenade inside killing all its occupants.

In this action, Havildar Narain Singh Gurung displayed courage, leadership and devotion to duty.

59. 1025792 Dafadar MIT SINGH

63 Cavalary.

On the 11th December 1971, Dafadar Mit Singh of the 63 Cavalary was the tank commander in support of an infantry battalion in the Eastern Sector. The enemy in its effort to cut off the rear of this battalion sent out a company. Immediately with his tank he dashed along with the infantry platoon to contain the enemy column. With complete disregard to his personal safety in the face of heavy enemy fire, he along with the infantry platoon, rushed over the enemy position with his tank. The enemy abondoned its position leaving behind a large number of dead and large quantity of equipment.

In this action Dafadar Mit Singh displayed courage, and devotion to duty.

60. 1141436 Havildar BASTI RAM

Regiment of Artillery.

On the 9th December 1971, two guns of a Mountain Regiment, which had been landed by helicopter the previous night, were required to be moved to a covered position from the helipad. The enemy brought on heavy and effective artillery fire making all movement in that area difficult. Havildar Basti Ram, who was with the crew of the gun, exhorted and encouraged his men, bringing the gun to a covered position. Having sent the crew back to help the other gun, he manned the gun in position single handed to bring accurate fire on the enemy position.

In this action, Havildar Basti Ram exhibited courage, leadership and devotion to duty.

61. 1563252 Havildar SURINDER DASS

Corps of Engineers.

On the 12th December 1971, Havildar Surinder Dass with an Engineer Detachment was assigned the task of constructing an improvised bridge on the Sadi Nadi in the Eastern Sector. This bridge had been blown up by the retreating enemy. Realising the importance of the bridge, he immediately set himself to work, showing exceptional skill and ingenuity, and in the face of heavy enemy fire he improvised the bridge and ensured that the guns and vehicles crossed the river without delay.

In this action, Havildar Surinder Dass displayed Professional skill, leadreship and devotion to duty of a very high order.

62. 2847486 Havildar LATOOR SINGH RANA

The Rajputana Rifles.

Havildar Latoor Singh Rana was the Recoilles Rifles Detachment Commander with the company of a Battalion of the Rajputana Rifles attacking Bahadurgar in the Eastern Sector on 6th December 1971. The enemy brought on heavy machine gun and mortar fire on the attacking troops. With utter disregard to his personal safety, he brought his detachment to a position on the road effectively covered by enemy fire. Showing exceptional courage and skill, he destroyed three enemy bunkers. Though wounded, he led his detachment, encouraging and inspiring them till the objective was captured.

In this action, Havildar Latoor Singh Rana displayed courage, leadership and devotion to duty.

63. 3344915 Havildar SHAMSHER SINGH, SM

Sikh Regiment.

On the 15th December 1971, Havildar Shamsher Singh was the Recoilless Rifles Detachment Commander with a Company of a battalion of the Sikh Regiment firming in after having captured its objective in the Eastern Sector. In the face of enemy counter-attack on this position supported by tank fire, he picked up the rocket launcher, crawled near to the advancing enemy tank and fired the rocket destroying the tank.

In this action, Havildar Shamsher Singh displayed courage and devotion to duty.

64. 1315998 Havildar GEORGE

Corps of Engineers.

On the 10th December, 1971, Havildar George was with an engineer party which was ambushed by the enemy while on its way to repair the bridge constructed earlier on the road to Hajiganj in the Eastern Sector. Showing exceptional presence of mind and courage, he exhorted his men to get out of the vehicles and engage the enemy. He moved out on the embankment exposing himself to the enemy fire, thus diverting their attention. Taking a position on the flank, he along with his men opened fire on the enemy who abandoned the ambush position. In doing so, he was seriously wounded.

In this action, Havildar George displayed courage, leadership and devotion to duty.

65. 1152901 Havildar (Gunnner) GURBAX SINGH Artillery.

Havildar Gurbax Singh was serving with a Medium Regiment in the Buschi area in the Eastern Sector during the operations in December 1971. On the 8th December, 1971, at about 1000 hours, due to enemy shelling of the wagon lines of a Mountain Artillery Brigade, some vehicles loaded with ammunition caught fire. Havildar Gurbax Singh, who was commanding a gun within 30 yards of the place of the incident, took immediate action by employing his men amidst exploding ammunition and prevented the fire from spreading and thereby saved his gun, men, ammunition and equipment from damage.

In this action, Havildar Gurbax Singh displayed courage, initiative and devotion to his duty.

66. 6759456 Havildar Nursing Assistant KUSUM KUMAR DAS

Army Medical Corps.

Havildar Nursing Assistant Kusum Kumar Das was employed during the period 1st November to 16th December, 1971 as in-charge of nursing duties in the acute surgical ward of a General Hospital in the Eastern Sector. No nursing officer was posted in the hospital at that time and nursing sepoys under him were inexperienced. In spite of all these handicaps, he carried out his professional duties with a high standard of efficiency and guided his junior staff offectively. In addition to nursing duties, he attended to the personal comforts of the battle casualties received in his hospital.

Havildar Nursing Assistant Kusum Kumar Das thus displayed professional skill, initiative and devotion to duty.

67. 4150390 Havildar DIWAN SINGH

Kumaon Regiment.

Havildar Diwan Singh was serving with an Infantry Battalion in the Eastern Sector during the operation in December, 1971. While he was commanding a platoon in his company during its attack on a Bridge and his platoon approached within 50 yards of the Bridge, it came under heavy enemy fire. Undeterred by the enemy action, he kept on exhorting his men to the various enemy bunkers and eliminated many of them. At great risk to his own safety, he personally led his grenade team in distroying enemy bunkers.

In this action, Havildar Diwan Singh displayed courage, leadership and devotion to duty.

68. 6271672 Havildar BAKSHISH SINGH

Signals.

Havildar Bakshish Singh was serving with a Signals Regiment in the Eastern Sector during the operations in December, 1971. He was charged with the task of developing the main cable artery for the advance of a mountain division into the enemy territory. He performed this task with untiring physical effort and a great deal of pluck and courage. He had to work in areas infested with the enemy stragglers and unrecovered mines. His personally working at the cable route, sometimes for 18 hours a day, was a source of great inspiration to his men.

In this task, Havildar Bakshish Singh displayed courage, initiative and leadership.

69. 6588234 Havildar BAMAN CHANDRA MAHAPATRA.

. The Intelligence Corps.

Havildar Baman Chandra Mahapatra was serving with a Mountain Division Intelligence and Field Security Company in the Eastern Sector during the operations in December, 1971. He had obtained information concerning topography, enemy strength and dispositions fairly accurately, which was of immense value to the Division Headquarters in assessing enemy capabilities. He had to work in areas where enemy saboteurs, agents and Razakar groups were very active. He carried out his task with a sense of dedication and in complete disregard to his personal safety.

In this task, Havildar Baman Chandra Mahapatra displayed courage and devotion to duty.

70. 6872884 Havildar (SKT/Amn) KRISHNA PILLAI

Army Ordnance Corps.

Havildar Krishna Pillai was employed with a corps Ordnance Maintenance Platoon on duties of storekeeper ammunition in the Eastern Sector during the operations in December, 1971. On the 19th December, 1971, while returning to his unit lines, he heard an explosion in which five vehicles of captured ammunition were involved. Havildar Pillai at great personal risk, crawled inside the affected area where shells were exploding and debris and missiles flying about and removed one body from inside the fire. With the help of other men, he fought the dreadful fire and evacuated the wounded.

In this action, Havildar Krishna Pillai displayed courage, determination and devotion to duty.

71. 2838433 Company Havildar Major JAI LAL *(Posthumo*

Rajputana Rifles.

Company Havildar Major Jai Lal was serving with

an Infantry Battalion in the Eastern Sector during the operations in December, 1971. On the 15th December, 1971, the advance of the battalion along the rail axis to Tangi was held up due to stiff enemy resistance and accurate firing. Company Havildar Major Jai Lal, along with two riflemen, charged headlong into the enemy MMG bunkers. He killed five enemy soldires and captured the MMG. In this encounter, he was himself wounded seriously but he continued to advance with his platoon for 20 minutes and completely cleared the objective before he succumbed to his injuries. The enemy, who was more than 100 strong, fled in panic leaving behind all his dead and wounded.

In this action, Company Havildar Major Jai Lal displayed courage, leadership and devotion to duty.

72. 2944513 Havildar PRAYAG SINGH

Rajput Regiment.

Havildar Prayag Singh was serving with an Infantry Battalion in the Eastern Sector during the operations in December, 1971. He was the Section Commander of an Infantry Company and was given the charge of protection of a FAUJ, which was holding a Road Block, at DIGHI. As the Pakistani forces attacked the Road Block, the FAUJ fell back. Havildar Pravag Singh encouraged his men to fight back the enemy on slaught. When one enemy machine gunner with MMG reached his trench, he got out of the trench and killed the gunner and captured the MMG. But for his undaunted courage, the road block would have been cleared by the enemy, thus jeopardising the whole operations.

In this action, Havildar Prayag Singh displayed indomitable courage and devotion to duty in the best traditions of the Army.

73. 1138323 Havildar RAM CHANDER

Artillery.

Havildar Ram chander was serving with a Mountain Regiment during the defensive operations in the Eastern Sector. He was ordered to engage the enemy which was defending a railway station, and holding up the advance of our troops by effective small arms and machine gun fire from well fortified and shell-proof bunkers. He bravely manned his gun and brought it into action within close range of the enemy. Within a short time, he destroyed thirteen bunkers and caused considerable enemy casualties and damage to their weapons. The enemy was forced to abadon the defences and give up the fight.

In this action, Havildar Ram Chander displayed courage, leadership and devotion to duty.

74. 1028678 Dafadar UTTAM SINGH,

70 Armoured Regiment.

Dafadar Uttam Singh was serving with an Armoured Regiment in the Fazilka Sector during the operations in December 1971. He was commanding a ground missile detachment. On the morning of the 7th December 1971, when he came to know about the presence of an enemy tank near an infantry battalion, he moved his gun detachment and destroyed the enemy tank. Later in the day, he engaged two more enemy tanks from pill box. During this action, some officers and men of his Regiment suffered casualties. Disregarding his personal safety, he carried three wounded officers of his regiment out of the danger zone and thus saved their lives.

In this action, Dafadar Uttam Singh displayed courage and devotion to duty.

75. 1169602 Havildar (Gunner) MUTHAIAH NAGALINGAM,

63/45 Air Defence Regiment.

Havildar (Gunner) Muthaiah Nagalingam was serving wih an Air Defence Regiment in the Western Sector during the operations in December, 1971. His battery was giving Air Defence Protection to Armoured Brigade tanks. On the evening of the 14th December, 1971, four enemy MIG heavily attacked his gun position. He kept his presence of mind and engage the enemy aircraft and shot one of them, which was seen burning in the air.

In this operation, Havildar (Gunner) Muthaiah Nagalingam displayed courage and professional skill.

76. 1120003, Havildar (Gunner) N. J. GEORGE,

63/45 Air Defence Regiment.

Havildar (Gunner) N. J. George was serving with an Air Defence Regiment in the Western Sector during the operations in December, 1971. His gun was giving air protection to some tanks of an Armoured Brigade. On the 4th December, 1971, at about 1230 hours, four enemy MIG attacked his gun position. Havildar George engaged the enemy aircraft and shot down one of them.

In this operation, Havildar (Gunner) N. J. George displayed courage and devotion to duty.

77. 4238627 Lance Havildar RAM KATHIN PANDEY, Bihar Regiment.

Lance Havildar Ram Kathin Pandev was serving with an Infantry Battalion in the Akhaura Sector during the operations in December, 1971. On the night of 3rd/4th December, 1971, he was accompanying his Commanding Officer with the forward Company during an attack on a village. He got a splinter injury on his head and began to bleed profusely. However, he refused to be evacuated and requested that his wound be bandaged. Inspite of loss of blood and consequent weakness, he kept on advancing with his party till they occupied the objective.

In this action, Lance Havildar Ram Kathin Pandey displayed exemplary courage, determination and devotion to duty.

78. 1563792 Lance Havildar RAM RAO MORE

Engineers.

Lance Havildar Ram Rao More was with an Engineer Regiment in the Eastern Sector during the operations in December, 1971. On the 6th December, 1971, he was serving as a Section Commander of an engineer platoon employed in breaching a safe lane in a mine-field. When the breaching party reached within 100 yards of the objective, the enemy opened heavy automatic fire. Lance Havildar Ram Rao More however, continued to advance. Soon an enemy BMG in a bunker fired at him. Unmindful of the grave danger, he went straight at the BMC and shot and killed the enemy behind it. When another enemy soldier tried to operate the BMG, he killed him also. Some equipment and ammunition of the enemy were also captured.

In this action, Lance Havildar Ram Rao More displayed courage and devotion to duty.

79. 4442263 Naik GURBACHAN SINGH

(Posthumous)

Sikh Light Infantry.

Naik Gurbachan Singh was serving with an Infantry Battalion in the Uri Sector during the operations in December, 1971. On the night of 4th/5th December,

1971, he was commanding a leading section of a Company, which was ordered to capture a snow-bound feature. During the fierce fighting, he charged a Machine Gun bunker of the enemy, which was interfering with the assault, with a hand grenade and silenced it. In the process, he was wounded and was profusely bleeding, yet he went to the rescue of his Company Commander, who had been hit by a Machine Gun brust. While he was recovering his Company Commander, he himself go the burst of enemy Medium Machine gun fire and was killed instantaneously.

In this action, Naik Gubachan Singh displayed courage and determination of a very high order.

80. 6278578 Naik GOPAL SINGH

Signals.

Naik Gopal Singh was serving with an Infantry Brigade signal Company of a Signal Regiment in the Western Sector during the operations in December, 1971. On the night of 3rd/4th December, 1971, the enemy shelled three platoon localities of an Infantry Battalion and disrupted our signal line of communication. Naik Gopal Singh in utter disregard to his personal safety, went on checking the line from pole to pole. He was successful in restoring speedly the line of communication.

In this action, Naik Gopal Singh displayed determination and devotion to dtuy.

81. 4336015 Naik LAL BUANGA LUBHAI

2 Assam.

During the operations in 1971, Naik Lal Buanga Lubhai as a Section Commander in a company which occupied a position in Western Sector, successfully engaged the enemy and killed seven other ranks. He was responsible for bringing one enemy dead body, one Light Machine Gun with six magazines, one rifle and two hand grenades.

In this action Naik Lal Buanga Lubhai displayed courage and leadership.

82. 1320293 Naik GOVIND RAMAKANTH CHANDER KAMATH

5 Engineer Regiment.

Naik Govind Ramakanth Chander Kamath was incharge of a Breaching party which was detailed to breach a lane through the enemy minefield along River Basantar in the Western Sector during the operations in December, 1971. Unmindful of heavy artillery fire, he led his party into the minefield and continued to breach the lane till the task was completed. As there was no time for demarcating the safe lane, he positioned his men on both sides of the lane to guide the tanks through. He did this despite heavy shelling till all the tanks had gone across.

In this action, Naik Govind Ramakanth Chander Kamath displayed courage, leadership and devotion to duty.

83. 1174635 Naik RAM KISHAN YADAV

Artillery.

On the 8th December 1971, the Wagon Lines of a light Battalion in support of the attack on Laksham, came under heavy enemy shelling. One vehicle loaded with ammunition caught fire near Sasanpur. The fire spread to other vehicles parked nearby as well as to thatched huts, resulting in the exploding of ammunition. Naik Ram Kishan Yadav moved from trench to trench disregarding his personal safety and urged the drivers to remove their vehicles. By his timely action and initiative he succeeded in saving three vehicle and other important equipment from certain destruction.

In this action, Naik Ram Kishan Yadav displayed courage and devotion to duty.

84. 4155986 Naik NARAIN SINGH (*Posthumous*)

Kumaon Regiment.

During the operations in December, 1971, a platoon of a Battalion of Kumaon Regiment, was ordered to reinforce Kalirhat one of the vital link in the Eastern Sector which was encircled by the enemy and a close fight was going on. The leading section of this platoon under Naik Narain Singh rushed to the scene at top speed. When he was asked to engage the encircling enemy on the South, he grabbed the Light Machine Gun of the Section and without wasting any time pushed his section ahead under intense enemy fire. He kept on firing on the enemy as he advanced. When he had proceeded for over 500 yards he was shot at and wounded. Even as he fell, he kept on firing effectively till he succumbed to his injuries.

In this action, Naik Narain Singh displayed courage, leadership and devotion to duty of a high order.

85. 3147611 Naik BAJRANG LAL (*Posthumous*)

Jat Regiment.

Naik Bajrang Lal was commanding a section of a battalion of Jat Regiment during an attack on Bandar Railway Station in the Eastern Sector. When he was just about 20 yards from the objective, an enemy Medium Machine Gun opened up from west flank causing heavy casualties. He charged fearlessly leading the platoon and silenced the Medium Machine Gun, but was himself wounded. Undaunted, he charged on his original objective and his platoon succeeded in capturing it. In the process, he died of excessive bleeding.

In this action, Naik Ram Singh displayed courage, leadership and devotion to duty.

86. 2851602 Naik RAM SINGH (*Posthumous*)

Rajputana Rifles.

Naik Ram Singh was serving as a Medium Machine Gun Detachment Commander of his Company, during the operations in the Eastern Sector. Due to an enemy Medium Machine Gun, the advance of the Company was held up near Talutia Railway Station. Naik Ram Singh charged the enemy Medium Machine Gun position and continued his advance till he reached the enemy bunker. He silenced the enemy Medium Machine Gun by throwing grenade into the bunker. In this process, he was fatally wounded by an enemy bullet.

In this action, Naik Ram Singh displayed courage, determination and devotion to duty of a very high order.

87. 3950128 Naik ROSHAN LAL

Dogra Regiment.

On the 4th December 1971, a Battalion of the Dogra Regiment was given the task of clearing the enemy from Railway Bridge North of Madarbere in the Eastern Sector. When the attack was launched, enemy opened up suddenly from all flanks. An enemy Medium Machine Gun was inflicting heavy casualties. Naik Roshan Lal was commanding a section of the platoon which was ordered to destroy this Medium Machine Gun. He charged the enemy firing his Light Machine Gun from the hip. When he was 100 yards short of the enemy bunker he was hit by a burst. Despite his injuries, he kept on advancing till the enemy bunker was neutralised.

In this action, Naik Roshan Lal displayed courage, determination and leadership.

88. 2553087 Naik MATHAI JACOB MATHEW
Madras Regiment.

On the 16th December 1971, a Battalion of the Madras Regiment was in contact with the enemy in village Gilatala in the Eastern Sector. When a company of Dogras started forming up for attack near this location, the enemy brought heavy and accurate artillery fire on this company causing heavy casualties. Naik Mathai Jacob Mathew, who was with the battalion of Madras Regiment, came forward and started dragging the wounded to the nearby shelters despite heavy enemy fire. In this process, he lost his left arm due to a splinter wound.

In rescuing the wounded personnel of another battalion at great risk to his personal safety, Naik Mathai Jacob Mathew displayed courage, a spirit of commradeship in the best traditions of the Indian Army.

89. 3145533 Naik BALJIT SINGH (*Posthumous*)
Jat Regiment.

On the 6th December 1971, Naik Baljit Singh, along with his anti tank detachment, was assigned the task of blocking the road on enemy axis of retreat near Kandirpur in the Eastern Sector. The retreating enemy launched a determined attack to clear the road block. Naik Baljit Singh inflicted heavy casualties on the enemy with his Light Machine Gun and prevented the enemy from clearing the road block. In this process, he was fatally injured.

In this action, Naik Baljit Singh displayed courage and determination.

90. 7044870 Naik RAJPAL SINGH
Corps of Electrical and Mechanical Engineers.

Naik Rajpal Singh volunteered to recover tanks during defensive operations in the Hilli Sector during the operations in December, 1971. He completed the recovery of two tanks in front of the enemy, amidst continuous shelling and small arms fire. But for this prompt and speedy action in the face of heavy and effective fire, the tanks would have been destroyed by the enemy.

In this act, Naik Rajpal Singh displayed courage, determination and devotion to duty.

91. 1518753 Naik BABAN CHAWAN (*Posthumous*)
Engineers.

Naik Baban Chawan was commanding a Breaching Party for making safe lanes in Naushera Sector during the operations in 1971. He completed the task of making the safe lanes at a number of places. On the 5th December 1971, he carried out skillful and swift defusing charges put by enemy agents on a culvert on Road Rajauri-Thanamandi. Later, on the 20th December 1971, he was killed in a mine accident when breaching an infantry safe lane in a captured locality.

Naik Baban Chawan displayed courage, leadership and devotion to duty.

92. 4240236 Lance Naik RAM CHANDER PANDEY
Bihar Regiment.

On the night of 15th/16th December 1971, Lance Naik Ram Chander Pandey was a Section Commander during a company attack on enemy position at Wanjal in the Eastern Sector. When his section was held up by heavy enemy machine gun fire, he crawled forward and silenced the gun post by lobbing a hand grenade.

In this action, Lance Naik Ram Chander Pandey displayed courage, leadership and devotion to duty.

93. 4339957 Lance Naik SANGTHANGA LUSHAI
Assam Regiment.

On the night of 7th/8th December 1971, Lance Naik Sangthanga Lushai was a member of a reconnaissance patrol deep inside enemy localities in the Eastern Sector. When the patrol was returning after successfully completing the task, it strayed into a minefield. Patrol leader and one other rank got injured while negotiating the mine field. Lance Naik Lushai also suffered splinter injuries on his face, leg and arms. Unmindful of his own injuries and with utter disregard to his own safety, he successfully extricated the patrol leader and the other rank from the minefield and arranged their evacuation thus saving valuable lives of his comrades.

In this act, Lance Naik Sangthanga Lushai displayed courage and determination.

94. 9405856 Lance Naik GURDAS RAI
11, Gorkha Rifles.

Lance Naik Gurdas Rai was detailed to a commando group of a special patrol which was given the task of destroying a Medium Machine Gun during defensive operations in the Eastern Sector. At a distance of about 100 yards from the enemy bunker the patrol leader halted the patrol to avoid detection and himself moved ahead accompanied only by Lance Naik Rai. At this stage, they realised that another enemy Light Machine Gun was also firing from a bunker adjacent to the Medium Machine Gun bunker and further progress was not possible unless the Light Machine Gun was silenced. Lance Naik Rai crawled forward and silenced the Light Machine Gun by throwing a hand grenade. In this process, the patrol leader was wounded seriously by an enemy grenade. Lance Naik Gurdas Rai came to help the patrol leader immediately and rescued him safely to the commando base.

Lance Naik Gurdas Rai displayed cool courage, solid determination, utter disregard to his personal safety and a deep sense of comradeship in helping back his wounded patrol leader.

95. 1341568 Lance Naik RAMAN
4 Engineer Regiment.

On the 13th December 1971, Lance Naik Raman was engaged along, with his company, in clearing the passageway for five steamer launchers at Brahman Baria in the Eastern Sector. Unmindful of swift current and intense cold, he remained in water continuously for sixteen hours, diving repeatedly to remove large boulders from under water to increase the depth of the navigational passageway required for the motor launchers.

In this operation, Lance Naik Raman displayed courage, determination and devotion to duty.

96. 4158281 Lance Naik UMED SINGH (*Posthmous*)
14 Kumaon Regiment.

Lance Naik Umed Singh was the Section Second-in-Command of a Section of a Platoon of a battalion of Kumaon Regiment which was orderd to capture a post in the Nilakai feature during defensive operations in Eastern Sector. During the assault, his section was pinned down due to heavy shelling and automatic fire, but he kept the enemy engaged by his Light Machine Gun fire. When his gunner, manning the Light Machine Gun, was mortally wounded, he himself crawled to the

gun and started firing on the enemy. Although wounded in the arm by a bullet, he continued firing on the enemy till an automatic burst from the enemy killed him on the spot.

In this action, Lance Naik Umed Singh displayed exemplary courage and determination.

97. 1526465 Lance Naik SAMBHAJI BHOSLE Engineers.

On the night of 13th/14th December 1971, 9 Para Commandos was given the task of liquidating enemy guns located at Mandhole in the Poonch Sector in the Western Sector. Lance Naik Sambhaji Bhosle, along with an other Rank, boldly assaulted the enemy gun position, pursued the enemy beyond the guns, and in hand to hand fight killed three enemy personnel. Continuing the assault, he destroyed another 122 mm enemy gun and blew up an enemy ammunition dump.

In this action, Lance Naik Sambhaji Bhosle displayed courage and determination.

98. 3951963 Lance Naik RAPHO RAM Dogra Regiment.

On the night of 14th/15th December 1971, Lance Naik Rapho Ram was incharge of a Stretcher Squad with a company of a battalion of the Dogra Regiment. During the attack, the Company suffered heavy casualties due to enemy minefield and automatic and small arms fire. Lance Naik Rapho Ram, unmindful of his personal safety, went inside the minefield and started evacuating the casualties, under enemy shelling. While bringing a casualty through the minefield, he stepped over an anti-personnel mine and his foot was blown off.

In this action, Lance Naik Rapho Ram displayed courage and devotion to duty of a high order.

99. 6610254 Lance Naik (Dvr MT) SURESH PAL Army Service Corps.

On the 17th December 1971, an infantry battalion was under heavy pressure from the enemy in the Shakargarh Sector. Lance Naik Suresh Pal was ordered to deliver mines to this Battalion. As he was taking mines in his vehicle, he came under heavy air attack and was seriously wounded. Realizing the urgency of his mission, he continued to drive his vehicle unmindful of his own injuries till the vehicle received another direct hit and was destroyed.

In this action, Lance Naik Suresh Pal displayed exemplary courage and devotion to duty.

100. 2963472 Sepoy MAQSOOD KHAN Rajput Regiment.

On the night of 13th/14th December 1971, Sepoy Maqsood Khan was with a Company of a Battalion of the Rajput Regiment which attacked an enemy position in the Fazilka Sector. As the attack was pressed, enemy light machine gun from the flanks started inflicting heavy casualties on own troops. Sepoy Maqsood Khan showed exemplary courage by assaulting the light machine gun post and killing the occupants of the post; he snatched the light machine gun thus facilitating the attack of the Company.

In this action, Sepoy Maqsood Khan displayed commendable courage and devotion to duty.

101. 3967854 Sepoy ANGAT RAM Dogra Regiment. (*Posthumous*)

On the night of 10th/11th December, 1971, a Company of a Battalion of the Dogra Regiment attacked an enemy position in the Ferozepur Sector. After gaining a foothold, the Company came under heavy enemy medium machine gun and small arms fire. Sepoy Angat Ram, with another Sepoy, went with his Company Commander to silence the medium machine gun. As he crawled forward, he was hit on the left shoulder but continued to crawl in utter disregard to personal safety and was successful in lobbying a grenade and destroying the medium machine gun. In doing so, he was hit again and died on the spot. Due to his brave action, the Company was able to occupy the objective.

In this action, Sepoy Angat Ram displayed exemplary courage, determination and devotion to duty.

102. 2451285. Sepoy CHAMEL SINGH Punjab Regiment.

During the operations in December, 1971, as part of our defensive operation, a Company of a battalion of the Punjab Regiment attacked an enemy position in Agartala Sector. Due to heavy enemy fire, the attack was held up near the objective. Sepoy Chamel Singh rushed to the first enemy bunker, caught the barrel of the light machine gun, snatched it out and lobbed a grenade into the bunker killing all the occupants.

In this brave action, Sepoy Chamel Singh displayed commendable courage, great presence of mind and devotion to duty.

103. 3161165 Sepoy UDMI RAM Jat Regiment.

During the operations in December, 1971, the Jat Regiment was occupying a defended area during defensive operations in the Eastern Sector. Sepoy Udmi Ram was with a Section which was out of communication and isolated. He was on sentry duty when he saw fewer persons approaching his position. When one of the enemy soldiers was close enough, he pounced on him and snatched his light machine gun and forced him to surrender with his three civilian guides. After another fifteen minutes, he observed large numbers of the enemy approaching his position. He signalled the Section to stand to when the enemy was well within killing range; the Section opened concentrated fire which resulted in another ten enemy soldiers surrendering to them with weapons.

In this action, Sepoy Udmi Ram displayed commendable courage and presence of mind.

104. 3960184 Sepoy RAM CHAND Dogra Regiment.

On the 11th December 1971, a Company of a Battalion of the Dogra Regiment attacked an enemy position in Khulna Sector. The assault came under heavy enemy shelling and small arms fire. One light machine gun of the enemy was interfering with the assault to a great extent and had already caused a number of casualties. Sepoy Ram Chand, who was Light Machine Gun No. 1 of the Platoon of the assaulting Company, charged forward with his LMG completely disregarding his personal safety and silenced the enemy position and in the process sustained serious injuries.

In this action, Sepoy Ram Chand displayed commendable courage, determination and devotion to duty.

105. 13911001 Sepoy/Nursing Assistant RAM CHAND Army Medical Corps.

On the 16th December 1971, a Battalion of the Dogra Regiment was given the task of attacking and clearing the enemy defences in Khulna Sector. The Battalion captured the objective but suffered heavy casualties. As the enemy shelling was going on, Sep/Nursing Assistant Ram Chand was detailed with his party to render first aid to the wounded and evacuate them. He moved

under heavy shelling from one wounded to another in the battle area rendering first aid and cheering them. Due to his timely and courageous action, lives of many wounded soldiers were saved.

In this action, Sep/Nursing Assistant Ram Chand displayed courage and devotion to duty.

106. 13831396 Sepoy Driver (MT) NARAYAN SONJI KAKULTE Army Service Corps.

Sepoy Driver Narayan Sonji Kakulte was detailed to bring defence stores during the operations in Khalsihat in the Eastern Sector in December 1971. When heavy enemy shelling was on. Sepoy Driver Narayan Sonji Kakulte volunteered to carry defence stores to the forward localities. During his second trip his vehicle bogged down but despite heavy gun shelling he recovered the vehicle and proceeded to his destination. The leading vehicle got a direct hit and was blown off. Inspite of this, he took his vehicle to the desired place and delivered the stores. He subsequently volunteered to go and search for the body of the dead comrade, which he recovered under intense enemy shelling.

In this action, Sepoy Driver Narayan Sonji Kakulte displayed courage and devotion to duty.

107. 1526174 Sapper BABURAO PATIL Engineers

During the operations in 1971, Sapper Baburao Patil was with an Engineer Task Force providing close support to a Battalion of the Punjab Regiment in Khulna Sector. On the night of 11th/12th December 1971, the advance of the Battalion was held up due to a bridge having been blown up by the retreating enemy. This bridge was also covered by enemy small arms fire. Sapper Baburao Patil, with three other Sappers, was ordered to find out the exact damage to the bridge. Under intense small arms fire and shelling by the enemy, Sapper Baburao Patil crawled towards the bridge. About 50 yards from the bridge, when one of his comrades was hit and fatally wounded, he asked the remaining Sappers to take position where they were and himself continued crawling towards the bridge. He thus succeeded in obtaining the required information.

In this action, Sapper Baburao Patil displayed courage, leadership and devotion to duty.

108. 2754589 Sepoy JANU AJGEKAR Maratha Light Infantry.

On the 13th December 1971, a company of a Battalion of the Maratha Light Infantry was ordered to firm in within 50 meters of an enemy position in Khulna Sector. While the company was digging in, one enemy light machine gun effectively opened fire causing two casualties in the right platoon of the company. The enemy light machine gun was making it impossible for own troops to continue working. Sepoy Janu Ajgekar volunteered and crawled under covering fire to the enemy bunker and lobbed two granades therein, killing two enemy personnel and silencing the machine gun. His courageous act saved the company from suffering more casualties.

In this action, Sepoy Janu Ajgekar displayed courage and devotion to duty.

109. 1039153 Sowar DAULAT SINGH 7th Cavalry.

(*Posthumous*)

On the 4th December 1971, Sowar Daulat Singh was ordered to drive his armoured fighting vehicle through a heavily fortified enemy defensive complex in the Eastern Sector. With utter disregard to his personal safety, he drove his vehicle skilfully avoiding the enemy minefield belt, shelling and anti-tank gun fire. Meanwhile, another armoured fighting vehicle of the same squadron was hit and Sowar Daulat Singh helped in evacuating its crew to safety endangering his own life. On his way back his own armoured fighting vehicle was also hit by two anti-tank mines and he was killed on the spot.

In this action, Sowar Daulat Singh displayed exemplary courage and devotion to duty.

110. 7070418 Craftsman/Vehicle Mechanic LAZER NADAR THOBIAS Electrical and Mechanical Engineers.

Craftsman/Vehicle Mechanic Lazer Nadar Thobias was a member of an Advance Workshop detachment providing Electrical Mechanical Engineer cover to a Battalion of Army Service Corps in the Bogra Sector. He worked nearly sixteen to eighteen hours a day so as to make each and every vehicle available with least delay and was always willing to accept duty cheerfully. In his work, he showed great enthusiasm and keenness to undertake repairs at all hours at any place. It was because of the enthusiasm and inspiring example of Craftsman/Vehicle Mechanic Lazer Nadar Thobias that Advance Workshop detachment was able to discharge its work with commendable speed and efficiency to ensure quick moves of advancing columns.

Craftsman/Vehicle Mechanic Lazer Nadar Thobias displayed courage, initiative and devotion to duty.

111. 2459989 Sepoy MILAP CHAND Punjab Regiment.

Sepoy Milap Chand was a member of a patrol party in the Ferozepore Sector. The enemy in platoon strength infiltrated in own territory to provide flank protection to capture a feature. Our patrol got behind the enemy platoon which was in a defensive position. Inspite of the enemy medium machine gun fire, he, in utter disregard to personal safety, fixed his bayonet and charged the enemy. He was successful in catching an enemy medium machine gunner. This completely surprised the enemy and they surrendered to the patrol.

In this action, Sepoy Milap Chand displayed courage and devotion to duty.

112. 2863656 Sepoy RAM PAL Rajputana Rifles.

Craftsman/Vehicle Mechanic Lazer Nadar Thobias defended locality occupied by a company of a Battalion of the Rajputana Rifles in Mendhar Sector was subjected to an attack by the Pakistani forces and the enemy was successful in overrunning a part of the defended locality. The defences were immediately rallied by the company commander and Sepoy Ram Pal took position with his LMG and brought down intense fire on the enemy. The enemy brought in two light machine guns and one medium machine gun and directed the fire against him, but he thrice changed his position and kept on delivering a heavy volume of fire on the enemy and thus repulsed the attack.

In this action, Sepoy Ram Pal displayed courage and devotion to duty of a high order.

113. 1280853 Gunner (GD) RAMA MURTI Artillery.

Gunner (GD) Rama Murti was with a battery deployed in the Poonch Sector for direct engagement of enemy bunkers at short range. On the 9th December 1971, he was given the task of destroying five enemy pill boxes and bunkers which if not destroyed would have interfered with the progress of an attack planned for the same night. The task involved sitting the guns in hastily prepared positions well within the range of enemy light machine

guns and mortars. As soon as Gunner Rama Murti opened fire, enemy brought down effective automatic machine gun, artillery and Mortar fire on his gun emplacement. Inspite of the heavy odds and in complete disregard to his personal safety, he stuck to his post until he successfully destroyed all the five enemy pill boxes.

In this action, Gunner Rama Murti displayed courage and devotion to duty.

114. 5237629 Rifleman DEO BAHADUR CHHETRI 273 Battalion, Border Security Force.

Shri Dhan Bahadur Subba, Commandant of a Battalion of the Gorkha Rifles was to attack a post in the Kargil Sector which dominated the main highway. Without capturing this enemy post further operations were not possible. Three attempts made earlier to capture this post had failed. Rifleman Deo Bahadur Chhetri was leading the company assault along a narrow path. As his section was nearing the objective, it came under intense and effective enemy medium machine gun fire which held up the attack. He dashed forward to destroy the enemy medium machine gun post but was badly wounded. Undettered, he continued to crawl and was successful in silencing the enemy medium machine gun by lobbing a grenade. The company could thus carry on with the advance.

In this action, Rifleman Deo Bahadur Chhetri displayed courage and devotion to duty.

115. 4159154 Sepoy SAMAI SINGH Kumaon Regiment.

On the 5th December 1971, Sepoy Samai Singh was a member of a party which was given the task of raiding an enemy position in Suchetgarh Sector. As the party approached the position, a grenade was hurled at Sepoy Samai Singh causing severe wound on his right thigh. Undaunted, he rushed forward to the enemy bunker and lobbed a grenade through the loop hole. As he moved into the post two enemy soldiers rushed at him. He stepped back, and then charged the attackers and bayoneted both of them. He killed 3 more enemy soldiers during the raid although he was himself injured in the process.

In this action, Sepoy Samai Singh displayed exemplary courage and devotion to duty.

116. 4153407 Sepoy JAGAT SINGH Kumaon Regiment. (*Posthumous*)

The Pakistani forces, after their unsuccessful attack in Chhamb Sector had left small parties to ambush our troops. Sepoy Jagat Singh was part of the force carrying out combing operation. While carrying out the task he was fired at by an enemy light machine gun and was wounded. Despite his wounds, he assaulted the enemy light machine gun post, lobbed grenades at it and killed its occupants. Soon after, Sepoy Jagat Singh succumbed to his wounds.

In this action, Sepoy Jagat Singh displayed commendable courage, determination and devotion to duty.

117. 4243447 Sepoy PRABHUDAN HEMBROM Bihar Regiment. (*Posthumous*)

Sepoy Prabhudan Hembrom was forming a part of the force, company strong, given the task to capture an important and well fortified position in Mymensingh in the Eastern Sector during the operations in December 1971. After having successfully completed the task his platoon was reorganizing on the objective when the enemy made a bid to recapture the objective. Sepoy Prabhudan Hembrom brought down effective fire on the advancing enemy, in the process exposing himself. He was hit at close range by a medium machine gun burst sustaining severe injuries. Undaunted, he crawled upto the enemy medium machine gun and destroyed it by bursting a grenade. Shortly after this action he succumbed to his wound.

In this action, Sepoy Prabhudan Hembrom displayed courage and determination.

118. Shri DHAN BAHADUR SUBBA Commandant, 73 Battalion, Border Security Force.

Shri Dhan Bahadur Subba, Commandant of a Battalion of the Border Security Force, was given the task of advancing independently along the axis ATWARI—THAKURGAON without any artillery support for his two companies during the operations in 1971. After the capture of Birganj he was allotted the task of advancing again independently towards Biral. He carried out these tasks expeditiously with commendable speed, clearing many enemy pockets including a 222 strong enemy detachment at Balaidangi, and made it possible for the Regular Army formations to concentrate their attention on the main axis.

During these operations, Shri Dhan Bahadur Subba displayed courage, determination and leadership.

119. Shri JOGINDER SINGH SIDHU Deputy Commandant, 77 Battalion, Border Security Force.

Shri Joginder Singh Sidhu was commanding a company of a Battalion of Border Security Force when, on the night of 12th/13th November 1971, his company was subjected to heavy fire from an enemy post at Khanpur. He immediately formed up his company, though under heavy enemy shelling, and charged on the enemy post. Under his gallant leadership, his company engaged the enemy in close fighting and succeeded in clearing thirteen well built and dug in bunkers and in capturing the enemy post.

In this action, Shri Joginder Singh Sidhu displayed courage, leadership and devotion to duty.

120. No 60844009 Sub Inspector GOPAL SINGH 86 Battalion, Border Security Force.

(*Posthumous*)

On the 12th December 1971, a Battalion of Border Security Force was allotted the task of clearing in Broad day light a strongly held enemy pocket in Haripur-Belipara ara on the Dawki-Sylhet axis. The attack was launched at 1540 hours. On account of intense and accurate enemy fire, two platoons of the attacking company were pinned down about 200 yards from the enemy. At this juncture, Sub Inspector Gopal Singh, along with his platoon, dashed forward and struck terror in the hearts of the enemy. He came under the fire of enemy medium mortar gun, but continued his advance undaunted. A shower of bullets hit him as he was rushing forward and he fell dead on the spot. His courageous dash had, however, already given momentum to the attack and the enemy fled from the position which was over-run by his company.

In this action, Sub Inspector Gopal Singh displayed courage, determination and leadership.

121. No. 49310004 Sub Inspector IQBAL SINGH 31 Battalion, Border Security Force.

(*Posthumous*)

Sub Inspector Iqbal Singh was Platoon Commander of one of the platoons detailed for capturing the enemy post at Raja Mohtam in Mamdot area, which had been

occupied by the enemy during the operations in December, 1971. Despite heavy enemy machine gun fire, he led his men through heavily mined and barbed wire obstacle area, towards the objective with determination to capture the post. He was fired upon from all directions, but undaunted he charged the enemy and inflicted heavy casualties. In hand to hand fight, he personally captured an enemy soldier. The charge made by his company completely demoralised the enemy who abandoned the picket leaving behind large quantities of arms and ammunition. On the 10th December 1971, the enemy made another attempt to recapture the post. There was heavy enemy shelling and machine gun fire. Sub Inspecor Iqbal Singh, whose platoon was defending the post, went from bunker to bunker, completely disregarding his own safety, to boost up the morale of his men in order to repulse the enemy attack. In this process, he was fatally wounded by an enemy shell and later succumbed to his injuries.

In this action, Sub Inspector Iqbal Singh displayed courage, determination and devotion to duty.

122. No. 667770423 Head Constable DEBI SINGH 77 Battalion, Border Security Force.

Head Constable Debi Singh was Section Commander of a platoon of Border Security Force during an attack on enemy post at Khanpur during the operations in 1971. Under his brave leadership, his section advanced from bunker to bunker, under heavy enemy fire, and chased the enemy out after heavy fighting. While engaging the enemy in the last bunker, a bullet hit him on his right leg. Disregarding his injury, he continued to guide the attack encouraging his men and refused to be evacuated till the objective had been captured. He could be evacuated only when he became unconscious due to excessive bleeding.

In this action, Head Constable Debi Singh displayed courage, leadership and devotion to duty.

123. No. 66006559 Head Constable SULTAN SINGH 103 Battalion, Border Security Force.

During the operations in 1971, the Medium Machine Gun detachment of a battalion of Border Security Force under the command of Head Constable Sultan Singh was allotted the task of defending an Observation Post which was being shelled heavily by the enemy. As a result of heavy shelling, the Post building was completely destroyed. Head Constable Sultan Singh, with his detachment, stayed in the area which was being heavily shelled and held the area till the enemy shelling ceased.

In this action, Head Constable Sultan Singh displayed courage, determination and devotion to duty of a very high order.

124. No. 713100120 Constable RAM SINGH, 31 Battalion, Border Security Force.

(Posthumous)

Constable Ram Singh was one of the riflemen of a platoon of the Border Security Force which was allotted the task of capturing the Raja Mohtam picket in Mamdot area on the night of 6th/7th December, 1971. Despite heavy enemy shelling and machine gun fire, the platoon moved to the farming place and launched the attack. In this attack, Constable Ram Singh received bullet injuries. Despite his injuries, and in spite of heavy and accurate enemy fire. Constable Ram Singh crawled through heavily mined and barbed wire obstacle area and charged on the enemy. He inflicted several casualties and captured an enemy machine gun, killing the enemy Sepoy manning it. Later he succumbed to his injuries.

In this action, Constable Ram Singh displayed courage, determination and devotion to duty.

125. JC 229 Naib Subedar ABDUL GANI BAXI, Jammu & Kashmir Militia.

On the night of 8th/9th December, 1971, Naib Subedar Abdul Gani Baxi was detailed with his platoon to raid and destroy an enemy post in Kalal Sector in Jammu and Kashmir. The enemy used to occupy this post at night and harass our pickets with Light Machine Gun and small arms fire. Naib Subedar Abdul Gani Baxi with his platoon, stealthily approached the enemy position and was detected by the enemy only when he was 100 yards away. When the enemy opened fire, he ordered his platoon to storm the post. He himself led the charge firing from his sten-gun. The enemy was completely unnerved and fled. The enemy post was destroyed and, in addition, while returning to own defended position, also set fire to three houses from which the enemy used to snipe at our patrols during day time.

In this action, Naib Subedar Abdul Gani Baxi displayed exemplary courage and initiative.

126. No. 68158006 Jemadar JAGMEHAR SINGH, Central Reserve Police Force.

Jemadar Jagmehar Singh was commanding a vulnerable post in Narainpur Sector in Jammu and Kashmir. Throughout the period of operations in December, 1971, he displayed extra-ordinary courage and leadership. It was due to his inspiring leadership that his men at the post bravely faced enemy shelling, straffing and small arms fire and withstood threats to this highly vulnerable post hardly 400 yards from the International Border.

127. No. 65016144 Constable DAVID VARGHESE, Central Reserve Police Force.

On the 5th December, 1971, Constable David Varghese was detailed to go to a Platoon at the Ammunition Point at Samba to deliver a message. A rocket attack by enemy aircraft on the Ammunition Depot caused a fire in the immediate vicinity of this vital installation. Constable David Varghese, instinctively appreciating the gravity of the situation, ran to the scene of the fire ahead of every one and started putting off the rapidly spreading fire without the least concern about his personal safety. He displayed commendable courage and initiative which helped to save the ammunition point from destruction by fire.

A. MITRA,
Secretary to the President.

CABINET SECRETARIAT

(Department of Personnel and Administrative Reforms)

New Delhi, the 29th June 1974

RULES

No. 11013/1/74-Estt.(E).—The rules for a competitive examination to be held by the Union Public Service Commission in 1975 for the purpose for filling vacancies in Grade IV of the following Services are published for general information :—

(i) The Indian Economic Service, and

(ii) The Indian Statistical Service.

2. The number of vacancies to be filled on the results of the examination will be specified in the Notice issued by the Commission. Reservation will be made for candidates belonging to the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes in respect of vacancies as may be fixed by the Government.

Scheduled Castes/Tribes mean any of the Castes/Tribes mentioned in the Constitution (Scheduled Castes) Order, 1950, the Constitution (Scheduled Castes) (Part C States) Order, 1951, the Constitution (Scheduled Tribes) Order, 1950, the Constitution (Scheduled Castes) (Part C States).

Order 1951, as amended by the Scheduled Castes and Scheduled Tribes Lists (Modification) Order, 1956 read with the Bombay Reorganisation Act, 1960 and the Punjab Reorganisation Act, 1966; the Constitution (Jammu and Kashmir) Order, 1962, the Constitution (Dadra and Nagar Haveli Scheduled Castes Ordere, 1956, the Constitution (Andaman and Nicobar Islands) Scheduled Tribes Order, 1959, the Constitution (Dadra and Nagar Haveli) Scheduled Castes Order, 1962, the Constitution (Dadra and Nagar Haveli) Scheduled Tribes Order, 1962, the Constitution (Pondicherry) Scheduled Castes Order, 1964, the Constitution (Scheduled Tribes) (Uttar Pradesh) Order, 1967, the Constitution (Goa, Daman and Diu) Scheduled Castes Order 1968, the Constitution (Goa, Daman and Diu) Scheduled Tribes Order, 1968 and the Constitution (Nagaland) Scheduled Tribes Order, 1970.

3. The examination will be conducted by the Union Public Service Commission in the manner prescribed in Appendix II to these rules.

The dates on which and the places at which the examination will be held shall be fixed by the Commission.

4. A candidate must be either :—

(a) a citizen of India, or

(b) a subject of Sikkim, or

(c) a subject of Nepal, or

(d) a subject of Bhutan, or

(e) a Tibetan refugee who came over to India, before the 1st January, 1962, with the intention of permanently settling in India, or

(f) a person of Indian origin who has migrated from Pakistan, Burma, Sri Lanka (formerly known as Ceylon) and East African countries of Kenya, Uganda and the United Republic of Tanzania (formerly Tanganyika and Zanzibar) with the intention of permanently settling in India.

Provided that a candidate belonging to categories (c), (d), (e) and (f) above shall be a person in whose favour a certificate of eligibility has been issued by the Government of India.

A candidate in whose case a certificate of eligibility is necessary may be admitted to the examination and he may also provisionally be appointed subject to the necessary certificate being given to him by the Government.

5. (a) A candidate for admission to this examination must have attained the age of 21 years and must not have attained the age of 26 years on 1st January, 1975 i.e., he must have been born not earlier than 2nd January, 1949, and not later than 1st January, 1954.

(b) The upper age limit prescribed above will be relaxable :—

(i) up to a maximum of five years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe;

(ii) up to a maximum of three years if a candidate is a *bona fide* displaced person from erstwhile East Pakistan and had migrated to India on or after 1st January, 1964 but before 25th March, 1971;

(iii) up to a maximum of eight years if a candidate belongs to a Scheduled Castes or a Scheduled Tribe and is also a *bona fide* displaced person from erstwhile East Pakistan and had migrated to India on or after 1st January, 1964 but before 25th March, 1971;

(iv) up to a maximum of three years if a candidate is a resident of the Union Territory of Pondicherry and has received education through the medium of French at some stage;

(v) up to a maximum of three years if a candidate is a *bona fide* repatriate of Indian origin from Sri Lanka (formerly known as Ceylon) and has migrated to India on or after 1st November, 1964 under the Indo-Ceylon Agreement of October, 1964;

(vi) up to a maximum of eight years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and is also a *bona fide* repatriate of Indian origin from Sri Lanka (formerly known as Ceylon) and has migrated to India on or after 1st November, 1964, under the Indo-Ceylon Agreement of October, 1964;

(vii) up to a maximum of three years if a candidate is a resident of the Union Territory of Goa, Daman and Diu;

(viii) up to a maximum of three years if a candidate is of Indian origin and has migrated from Kenya, Uganda and the United Republic of Tanzania (formerly Tanganyika and Zanzibar);

(ix) up to a maximum of three years if candidate is a *bona fide* repatriate of Indian origin from Burma and has migrated to India on or after 1st June, 1963;

(x) up to a maximum of eight years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and is also a *bona fide* repatriate of Indian origin from Burma and has migrated to India on or after 1st June, 1963;

(xi) up to a maximum of three years in the case of Defence Services personnel disabled in operations during hostilities with any foreign country or in a disturbed area, and released as a consequence thereof;

(xii) up to a maximum of eight years in the case of Defence Services personnel disabled in operations during hostilities with any foreign country or in a disturbed area, and released as a consequence thereof, who belong to the Scheduled Castes or the Scheduled Tribes;

(xiii) up to a maximum of three years in the case of Border Security Force personnel disabled in operations during Indo-Pak hostilities of 1971 and released as a consequence thereof; and

(xiv) up to a maximum of eight years in the case of Border Security Force personnel disabled in operations during Indo-Pak hostilities of 1971, and released as a consequence thereof who belong to the Scheduled Castes or the Scheduled Tribes.

SAVE AS PROVIDED ABOVE THE AGE LIMITS PRESCRIBED CAN IN NO CASE BE RELAXED.

6. (a) A candidate for the Indian Economic Service must have obtained a degree with Economics or Statistics as a subject from any of the Universities enumerated in Appendix I.

(b) A candidate for the Indian Statistical Service must have obtained a degree with Statistics or Mathematics or Economics as a subject from any of the Universities enumerated in Appendix I or possess any of the qualifications mentioned in Appendix I-A.

NOTE I.—A candidate who has appeared at an examination the passing of which would render him eligible to appear at this examination but has not been informed of the result may apply for admission to the examination. A candidate who intends to appear at such a qualifying examination may also apply provided the qualifying examination is completed before the commencement of this examination. Such candidates will be admitted to the examination, if otherwise eligible, but the

admission would be deemed to be provisional and subject to cancellation if they do not produce proof of having passed the examination, as soon as possible, and in any case not later than two months after the commencement of this examination.

NOTE II.—In exceptional cases the Union Public Service Commission may treat a candidate, who has not any of the foregoing qualifications, as a qualified candidate provided that he has passed examinations conducted by other institutions, the standard of which in the opinion of the Commission, justifies his admission to the examination.

NOTE III—A candidate who is otherwise qualified but who has taken a degree from a foreign university which is not included in Appendix I may also apply to the Commission and may be admitted to the examination at the discretion of the Commission.

7. Candidates must pay the fee prescribed in Annexure I to the Commission's Notice.

8. A candidate already in Government Service, whether in a permanent or a temporary capacity or as a work-charged employee other than a casual or daily rated employee, must obtain prior permission of the Head of the Department to appear for the Examination.

9. The decision of the Commission as to the eligibility or otherwise of a candidate for admission to the examination shall be final.

10. No candidate will be admitted to the examination unless he holds a certificate of admission from the Commission.

11. A candidate who is or has been declared by the Commission to be guilty of—

(i) obtaining support for his candidature by any means, or

(ii) impersonating, or

(iii) procuring impersonation by any person, or

(iv) submitting fabricating documents or documents which have been tampered with, or

(v) making statements which are incorrect or false, or suppressing material information, or

(vi) resorting to any other irregular or improper means in connection with his candidature for the examination, or

(vii) using unfair means in the examination hall, or

(viii) misbehaving in the examinaton hall, or

(xi) attempting to commit or, as the case may be, abetting the commission of all or any of the acts specified in the foregoing clauses,

may, in addition to rendering himself liable to criminal prosecution, be liable—

(a) to be disqualified by the Commission from the examination for which he is a candidate; or

(b) to be debarred either permanently or for a specified period—

(i) by the Commission, from any examination or selection held by them;

(ii) by the Central Government, from any employment under them; and

(c) if he is already in service under Government, to disciplinary action under the appropriate rules.

12. Candidates who obtain such minimum qualifying marks in the written examination as may be fixed by the Commission in their discretion shall be summoned by them for *viva voce*.

13. After the examination, the candidates will be arranged by the Commission in the order of merit as disclosed by the aggregate marks finally awarded to each candidate and in that order so many candidates as are found by the Commission to be qualified by the examination shall be recommended for appointment up to the number of unreserved vacancies decided to be filled on the results of the examination.

Provided that candidates belonging to the Scheduled Castes or the Scheduled Tribes may, to the extent the number of vacancies reserved for the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes can not be filled on the basis of the general standard, be recommended by the Commission by a relaxed standard to make up the deficiency in the reserved quota, subject to the fitness of these candidates for appointment to the Services irrespective of their ranks in the order of merit at examination.

14. The form and manner of communication of the result of the examination to individual candidates shall be decided by the Commission in their discretion and the Commission will not enter into correspondence with them regarding the result.

15. In the case of the candidates competing for both the Services, due consideration will be given to the order of preference expressed by a candidate at the time of his application.

16. Success in the examination confers no right to appointment, unless Government are satisfied after such enquiry as may be considered necessary, that the candidate is suitable in all respects for appointment to the Service.

17. A candidate must be in good mental and bodily health and free from any physical defect likely to interfere with the discharge of his duties as an officer of the Service. A candidate who after such physical examination as Government or the appointing authority, as the case may be, may prescribe is found not to satisfy these requirements, will not be appointed. Any candidate called for *viva voce* by the Commission may be required to undergo physical examination.

NOTE.—In order to prevent disappointment candidates are advised to have themselves examined by a Government Medical Officer of the standing of a Civil Surgeon, before applying for admission to the examination. Particulars of the nature of medical test to which candidates will be subjected before appointment and of the standards required are given in Appendix IV to these Rules. For the disabled ex-Defence Services personnel the standards will be relaxed consistent with the requirements of the Service(s).

18. No person :

(a) who has entered into or contracted a marriage with a person having a spouse living or

(b) who, having a spouse living has entered into or contracted a marriage with any person.

shall be eligible for appointment to service.

Provided that the Central Government may, if satisfied that such marriage is permissible under the personal law applicable to such person and the other party to the marriage and there are other grounds for so doing, exempt any person from the operation of this rule.

19. Brief particulars relating to the Services to which recruitment is being made through this examination are stated in Appendix III.

M. R. BHARDWAJ,
Under Secy.

APPENDIX I

List of Universities approved by the Government of India (*Vide* Rule 6)

INDIAN UNIVERSITIES

Any University incorporated by an Act of the Central or State Legislature in India or other educational institution established by an Act of Parliament or declared to be deemed as Universities under Section 3 of the University Grants Commission Act 1956.

UNIVERSITIES IN BURMA

The University of Rangoon.

The University of Mandalay.

ENGLISH AND WELSH UNIVERSITIES

The Universities of Birmingham, Bristol, Cambridge, Durham, Leeds, Liverpool, London, Manchester, Oxford, Reading Sheffield and Wales.

SCOTTISH UNIVERSITIES

Universities of Aberdeen, Edinburgh, Glasgow and St. Andrews.

IRISH UNIVERSITIES

The University of Dublin (Trinity College).

The National University of Ireland.

The Queen's University, Belfast.

UNIVERSITY IN PAKISTAN

The University of Punjab.

The University of Sind.

UNIVERSITY IN PAKISTAN

The Rajshahi University.

The Dacca University.

UNIVERSITY IN NEPAL

The Tribhuvan University, Kathmandu.

APPENDIX I-A

List of qualifications recognised for admission to the examination for the Indian Statistical Service only
[*Vide* Rule 6(b)]

(i) Statisticians Diploma of the Indian Statistical Institute, Calcutta.

(ii) Professional Statisticians Certificate of the Institute of Agricultural Research Statistics, ICAR, New Delhi.

APPENDIX II

SECTION I

Plan of the Examination

The competitive examination for the Indian Economic Service and the Indian Statistical Service comprises :—

(I) Writen Examination in—

(i) compulsory subjects as set out in Sub-Sections (A) (a) and (B)(a) respectively of Section II below carrying a maximum of 700 marks.

(ii) A selection from the optional subjects set out in Sub-Sections (A)(b) and (B)(b) respectively of Section II below. Subject to the provisions of those Sub-Sections, candidates may take optional subjects up to a total of 400 marks for each Service.

(II) *Viva voce* (*vide* Part B of the Schedule to this Appendix) of such candidates as may be called by the Commission, carrying a maximum of 250 marks.

SECTION II

Examination Subjects

(A) The Indian Economic Service

(a) Compulsory subjects [*vide* Sub-Section (I)(i) of Section I above]

	Maximum Marks
(1) General English	150
(2) General Knowledge	150
(3) Economics I	200
(4) Economics II	200

(b) Optional subjects (*vide* Sub-Section (I) (ii) of Section I above).

	Maximum Marks
(1) Comparative Economic Development	200
(2) Money and Public Finance	200
(3) Rural Economics and Co-operation	200
(4) International Economics	200
(5) Statistics I	200
*(6) Statistics II	200
(7) Mathematical Economics and Econometrics	200
(8) Sample Surveys	200
(9) Industrial Economics	200
(10) Theory and Practice of Trade	200
(11) Business Finance and Accounts	200
(12) Business Management and Commercial Law	200

Provided that no candidate shall be allowed to offer both "International Economics" (4) and Theory and Practice of "Trade" (10).

*In this subject there will be separate papers on each of the following five branches, viz., (i) Industrial Statistics, (including statistical quality control) (ii) Economic Statistics, (iii) Educational Statistics (including Psychometry),(iv) Genetical Statistics and (v) Demography and Vital Statistics, of which a candidate is required to choose any two. Each paper will carry a maximum of 100 marks.

(B) The Indian Statistical Service.

(a) Compulsory Subjects [*vide* Sub-Section (I)(i) of Section I above].

	Maximum Marks
(1) General English	150
(2) General Knowledge	150
(3) Statistics I	200
*(4) Statistics II	200

(b) Optional subjects (*vide* Sub-Section (I) (ii) of Section I above).

	Maximum Marks
(1) Advanced Probability and Stochastic Processes	200
(2) Statistical Inference	200
(3) Design of Experiments	200
(4) Sample Surveys	200
(5) Economics I	200
(6) Economics II	200
(7) Mathematical Economics and Econometrics	200
(8) Comparative Economic Development	200
(9) Pure Mathematics I	200
(10) Pure Mathematics II	200
(11) Pure Mathematics III	200
(12) Applied Mathematics	200

*In this subject, there will be separate papers on each of the following five branches, viz., (i) Industrial Statistics (including statistical quality control) (ii) Economic Statistics (iii) Educational Statistics (including Psychometry), (iv) Genetical Statistics and (v) Demography and Vital Statistics, of which a candidate is required to choose any two. Each paper will carry a maximum of 100 marks.

NOTE.—The standard and syllabi of the subjects mentioned in this Section are given in Part A of the Schedule to this Appendix.

SECTION III

General

1. ALL QUESTION PAPERS MUST BE ANSWERED IN ENGLISH.

2. There will be one paper of three hours' duration in each of the subjects referred to in Section II above, except in the subject Statistics II. In Statistics II, there will be five papers, each of 1½ hours' duration vide Note under this subject at item 6 of Part A of the Schedule to this Appendix.

3. Candidates must write the papers in their own hand. In no circumstances, will they be allowed the help of a scribe to write the answers for them.

4. The Commission have discretion to fix qualifying marks in any or all the subjects of the examination.

5. For the Indian Economic Service, the papers in the optional subjects and in the following compulsory subjects, *viz.*, General English and General Knowledge of only such candidates will be examined and marked as attain such minimum standard as may be fixed by the Commission in their discretion at the written examination in the following compulsory subjects, *viz.*, Economics I and Economics II.

For the Indian Statistical Service, the papers in the optional subjects and in the following compulsory subjects *viz.* General English and General Knowledge of only such candidates will be examined and marked as attain such minimum standard as may be fixed by the Commission in their discretion at the written examination in the following compulsory subjects, *viz.*, Statistics I and Statistics II.

6. If a candidate's handwriting is not easily legible, a deduction will be made on this account, from the total marks otherwise accruing to him.

7. Marks will not be allotted for mere superficial knowledge.

8. Credit will be given for orderly, effective and exact expression combined with due economy of words in all subjects of the examination.

9. Candidates are expected to be familiar with the metric system of weights and measures. In the question papers, wherever necessary, questions involving the use of metric system of weights and measures may be set.

SCHEDULE

PART A

The standard of papers in English and General Knowledge will be such as may be expected of a graduate of an Indian University.

The standard of papers in the other subjects will be that of the Master's degree examination of an Indian University in the relevant disciplines. The candidates will be expected, to illustrate theory by facts, and to analyse problems with the held of theory. They will be expected to be particularly conversant with Indian problems in the fields(s) of Economics/Statistics.

1. General English.—

Candidates will be required to write an essay in English. Other questions will be designed to test their understanding of English and workmanlike use of words. Passages will usually be set for summary or precis.

2. General Knowledge.—

The paper will consist of two parts.

In the first part candidates will be required to answer questions designed to test their knowledge of current events and of such matters of every day observation and experience in their scientific aspects as may be expected of an educated person who has not made a special study of any scientific subject. Questions may also be set on History of India and Geography of a nature which candidates should be able to answer without special study.

In the second part candidates will be required to answer questions designed to test their ability to deal with facts and figures and to make logical deductions therefrom, their capacity to perceive implications, and their ability to distinguish between the important and the less important.

3. *Economics I.*—

Scope and methology.

Equilibrium analysis.

Theory of consumers' demand. Indifference curve analysis. Revealed preference approach. Consumer's surplus.

Theory of production. Factors of production. Production functions. Laws of returns. Equilibrium of the firm and the industry.

Pricing under various forms of market organisation. Pricing in a socialist economy. Pricing in a mixed economy.

Public utilities : economic characteristics of public utilities; price determination in public utilities; regulation of public utilities.

Theory of distribution. Pricing of factors of production. Theories of rent, wages, interest and profit. Macrodistribution theory. Share of wages in national income. Profits and economic progress. Inequalities in income distribution.

Theory of employment and output—the classical and neo-classical approaches. Keynesian theory of employment. Post-Keynesian developments.

Economic fluctuations. Theories of business cycle. Fiscal and monetary policies for control of business cycles.

Welfare economics : scope of welfare economics ; classical and neo-classical approaches; New welfare economics and the compensation principles; optimum conditions; policy implications.

4. *Economics II.*—

Concept of economic growth and its measurement.

Social accounts; national income accounts; flow of funds; accounts input-output accounting.

Social institutions and economic growth. Characteristics and problems of developing economies.

Population growth and economic development.

Theories of growth. Growth models.

Planning—Concept and methods. Planning under Capitalist and Socialist forms of economic organisation. Planning in a mixed economy. Perspective planning. Regional planning. Investment criteria and choice of techniques; Cost-benefit analysis. Planning models.

Planning in India. Evolution of Planning. Five Year Plans, Objectives and techniques. Problems of resource mobilization, administration and public co-operation. Role of monetary and fiscal policies; price policy, controls and market mechanism. Trade policy and Balance of payments. Role of public enterprise.

5. *Statistics I.*—

Different types of numerical approximations; finite differences, standard interpolation formulae and their accuracies; inverse interpolation, Numerical methods of differentiation and integration.

Definition of probability. Classical approach, axiomatic approach. Sample space. Laws of total and compound probability. Conditional probability. Independent events. Bay's formula. Random variables; probability distributions; Mathematical expectation. Moment generating functions and characteristic functions. Inversion theorem. Tchebychev's inequality. Conditional distributions. Laws of large numbers and central limit theorems.

Standard distributions : Binomial, Poisson Normal Rectangular. Exponential, Negative binomial, Hypergeometric Cauchy Laplace, Beta and Gamma distributions, Bivariate and Multivariable normal distributions.

Large and small sample theory : Asymptotic sampling distributions and large sample tests. Standard sampling distributions such as t, χ^2, F, and tests of significance based on them. Association and analysis of contingency tables.

Correlation coefficient and its distribution; Fisher's 'Z' transformation. Regression : linear and polynomial : multiple regression—partial and multiple correlation coefficient including their distributions in null cases, intra class correlation. Curve fitting and orthogonal polynomials.

Analysis of variance. Theory of linear estimation. Two-way classification with interaction. Analysis of covariance. Basic principles of design of experiments. Layout and analysis of common designs such as randomised blocks. Latin square Factorial experiments and confounding Missing plot techniques.

Sampling techniques : Simple random sampling with and without replacement. Stratified sampling. Ratio and regression estimates. Cluster sampling, multistage sampling and systematic sampling. Non-sampling errors.

Estimation : Basic concepts Characteristics of a good estimate. Point and interval estimates, Maximum likelihood estimates and their properties.

Tests of hypotheses. Statistical hypotheses : Simple and composite. Concept of a statistical test. Two kinds of error Power function. Likelihood ratio tests. Confidence interval estimation. Optimum confidence bounds.

Common non-parametric test such as sign test median test and run test. Wald's sequential probability ratio test for testing a simple hypothesis against a simple alternative OC & ASN functions and their approximations.

6. *Statistics II.*—

NOTE :—In this subject, there will be separate papers on each of the following five branches, *viz.* (i) Industrial Statistics (including Statistical Quality Control), (ii) Economic Statistics, (iii) Educational Statistics (including Psychometry), (iv) Genetical Statistics, and (v) Demography and Vital Statistics.

Candidates offering this subject, whether as a compulsory or as an optional subject, are required to choose any two of the above papers, which they must indicate in their applications. No change in the selection of papers once made will be allowed.

(i) *Industrial Statistics (Including Statistical Quality Control).*

Theoretical basis of quality control in industry. Tolerance limits. Different kinds of control charts—X, R charts, p and c charts, group control charts.

Acceptance sampling. Single, double, multiple and sequential sampling plans OC and ASN functions. Sampling by attributes and by variables. Use of Dodge-Roming and other tables.

Design of industrial experimentation. Use of regression techniques and analysis of variance techniques in industry.

Applications of Operational research techniques including linear programming in industry.

(ii) *Economic Statistics*

Index numbers of prices and quantities. Different types of index numbers *e.g.* index numbers of wholesale prices and cost of living index numbers Theory of index numbers.

Income distributions. Pareto and other curves. Concentration curves and their uses.

National Income. Different sectors of national income. Methods of estimating national income. Inter-sectoral flows. Problems of regional income estimates Inter-industry table. Applications of input-output analysis and linear programming.

Analysis and interpretation of economic time series. The four components of an economic time series. Multiplicative and additive models. Trends determination by curve fitting and by moving average method. Determination of constant and moving seasonal indices. Auto-correlation, periodogram analysis, tests of randomness.

Theory of consumption and demand, demand function, elasticities of demand, statistical analysis of demand with the help of time series and family budget data.

(iii) *Educational Statistics (including Psychometry)*

Scaling of test items. Scores, standard scores, normal scores. T and C scales, stanine scale, percentile scale.

Mental tests. Reliability and validity of tests. Different methods for computing reliability. Index of reliability. Procedures for determining validity. Validation of a test battery. Speed versus power tests.

Factor Analysis Item analysis. Use of correlation methods in aptitude tests.

Measurement of learning and forgetting. Learning models. Attitude and opinion measurement. Measurements of group behaviour.

(iv) *Genetical Statistics*

Physical basis of heredity. Mendels laws. Linkage Analysis of segregation, detection and estimation of linkage.

Polygenic inheritance. Components of phenotypic variation. Estimation of heritability. Selection Basis of selection. Progeny testing. Selection for combination of characters.

Population genetics. Gene frequency. Inbreeding. Random meeting. Linkage disequilibrium.

Elements of human genetics. Study of blood groups, disease traits and aberrations.

(v) *Demography and Vital Statistics*

The life table, its construction and properties. Makeham's and Compertz curves. Derivation of annual and central rates of mortality. National life tables. U.N. model life tables. Abridged life tables. Stable population. Stationary population.

Crude fertility rates, specific fertility rates, gross and net reproduction rates; family size; crude mortality rate, infant mortality rates; Mortality by cause of death; Standardised rates.

Internal and international migration; net migration; backward and forward survivorship ratio methods.

Demographic transition; Social and economic determinants of population.

Population projections. Mathematical and Component methods. Logistic curve fitting.

7. *Comparative Economic Development*

A comparative and historical study of modern economic development under different social systems with special reference to India, Japan, France, U.K., USA and USSR. The candidates will be expected to make a critical appraisal of the historical evolution and operational features of the various types of economics *e.g.* market-oriented free enterprize economy, centrally planned economy and their variations, particularly from the point of view of the lessons that they have for developing economics.

8. *Money and Public Finance*

Nature and functions of money. Value of money. Money, output and prices. The multiplier and the process of income generation. Trade cycles and price movements. Inflation.

Objectices and mechanism of monetary policy. Bank rate and open market operations. Central Bank techniques : general and selective credit controls. Monetary policy in a developing economy. Money and capital markets in developed and developing economics. Organisation of the Indian money market.

Public finance : nature, scope, importance and objectives.

Theory of taxation : effects and incidence of taxation. Taxable capacity and double taxation. Effects and importance of public expenditure. Fiscal policy for full employment and economic development. Deficit financing. Revenue from public enterprises.

Theory of public debt. Internal and foreign loans debt management.

Theory of federal finance.

9. *Rural Economics and Co-operation*

Role of agriculture in economic development.

Agricultural production and resources use, production functions, returns to scale, cost and supply curves; factor combination and selection of techniques under uncertainty. Crop planning.

Factor markets : Land market, land value and rent. Labour market, wages and employment, unemployment and underemployment Capital market, savings and capital formations.

Commodity demands; demand for food.

International trade in agricultural commodities—prices, tariffs, commodity agreements. International programmes for agricultural development.

Problems of Indian rural economy. Agricultural holdings. Land utilisation Cropping pattern. Problems of agricultural inputs, land tenure reforms. Community Development and Panchayati Raj. Agricultural Labour. Subsidiary occupations and rural industries, Rural indebtedness. Agricultural credit. Agricultural marketing and price spread. Commodity demands and demand for food. Price support and stabilisation. Taxation of agricultural land and income. Growth rate in Indian agriculture under planning.

Agriculture in Five Year Plans. Major programmes of agricultural development.

Co-operation : Principles, origin and development. Comparative study of co-operation in India and abroad. Structure Organisation and working of various types of co-operative institutions in India. Role of these institutions in the rural economy. The State and the co-operative movement. Role of the Reserve Bank of India.

10. *International Economics*

International trade. Theories of international trade. Gains from trade. Terms of trade. Trade policy. International trade and economic development. Theory of tariffs. Quantitative trade restrictions. Customs unions. Free trade areas. European Common Market.

Balance of payments. Disequilibrium in balance payments. Mechanism of adjustments. Foreign trade multiplier. Exchange rates. Import and exchange controls. Trade agreements. Key currency standard. External and international balance.

International institutions. International liquidity and I.M.R. International monetary reforms. Secular trends in terms of trade of developing countries. Export instability and stabilisation of commodity prices. G.A.T.T. Movements of international capital private and public. International aid for economic growth. I.B.R.D. and its affiliates. Asian Development Bank.

11. *Mathematical Economics and Econometrics*

Role of mathematics and statistics in economics : Measurement in economics. Role of mathematics in economics Statistical methods and techniques of inference in measuring economic relationships.

Demand analysis : General theory and measurement of demand; dynamic and static demand functions. Interrelated demand and supply functions under conditions of planning methods of estimation of demand and supply relationships. Demand projections and short term outlook for prices and demand.

Production functions : Concept of production and transformation functions methods of fitting production functions; mathematical methods of production planning and control.

linear programming : Activity analysis; linear programming and its applications. Input-output analysis; elements of game theory—their application in economic planning.

Mathematical models of Keynesian and classical economics: Concept of multiplier; acceleration principle. Equilibrium analysis; equilibrium of the consumer, stability conditions, effect on demand of increases in income and prices, complements and substitutes. Market demand; equilibrium of exchange, equilibrium of the firm. Equilibrium of production and exchange in the economy generalized law of demand and supply.

Concept of structure and model; Different concepts of structure—distinction between structure and model. Estimation of parameters in single equation and simultaneous equation models.

Planning models : Different types of growth models, capital output ratios and their use in economic planning. Planning models. Long term projections and perspective; short term economic forecasting.

12. *Sample Surveys*

Place of sampling in census and survey work. Concept of frame and sampling unit.

Sampling techniques : Random sampling, stratified sampling, choice of strata, multistage sampling, cluster sampling, systematic sampling, double sampling, variable sampling, fraction sampling with the probability proportional to size, multiphase sampling inverse sampling.

Estimation procedures : Estimates of population total and mean; bias in estimates; standard error of estimates. Ratio regression and product estimates.

Optimum designs : Cost and variance functions. Use of pilot surveys. Optimum size and structure of sampling units. Optimum allocation in stratified. Multiphase and multistage designs. Optimum replacement fraction in repetitive surveys.

Non-sampling errors and their control, theory of non-response, inter-penetrating samples.

Design and organisation of pilot and large scale sample surveys. Operational procedures for drawing samples; use of random sampling numbers; various methods of drawing p p s samples. Procedures for collection and tabulation of data. Analysis of survey data and preparation of reports.

13. *Industrial Economics*

Industry. Structure of competitive industry. Theory of the size of an industrial unit. Theory of industrial location. Regional development of industry. Industrial integration. Combination and monopoly.

Problems of industrial production. Productivity—concept and measurement. Techniques of raising productivity. Cost structure and pricing policies.

Structure of Indian industry—size, location, integration and regional balance.

Problems of Indian Industry—finance; inputs; utilisation of capacity. Industrial policy. Private and public sectors. Industrial licensing. Foreign capital and technical collaboration.

Problems of public enterprises—organisation, management, control and accountability.

Problems of small scale industries and Industrial Estates.

Labour and economic development. Labour productivity and incentives. Industrial relations in India. Organisation

and structure of trade unions. Trade Unions and the State. Settlement of industrial disputes. Minimum and fair wages. State regulation of wages and working conditions. Labour welfare.

14. *Theory and Practice of Trade*

Marketing. The concept of marketing; characteristics of a market. Marketing functions; marketing process, concentration and dispersion, buying, selling, transportation, storage, grading and finance. Customer behaviour and decision. Marketing information and research. Channels of distribution. Marketing cost and efficiency. Sales forecasting and planning Sales promotion; advertising and salesmanship. State regulated marketing.

Marketing in India. Marketing of agricultural produce and manufactured products. Organised markets in India—stock exchanges and produce exchanges, their functions and processes. State policy; governmental marketing organisations and State trading.

Foreign trade. Characteristics of an international market. Special problems of foreign trade as distinct from domestic trade; transport; finance and insurance; risks in respect of credit exchange fluctuations and transfer of payments, Documents used in foreign trade. Organisation and structure of export and import houses. Techniques of import and export control.

Chief feature of India's foreign trade—Commodity composition| Value and directions. Operation of export and import controls during the last ten years. Licensing procedures and criteria. Foreign trade finance. Export Risks Guarantee System. Methods of export promotion adopted in recent years. India's trade agreement. Functions of the State Trading Corporation.

15. *Business Finance and Accounts*

Financial needs of modern industry. Sources of industrial finance in India. Indian capital market. Institutional financing Foreign capital; Sources interest rates and terms of repayment.

Budgeting capital requirements of a firm. Optional capital structure. Sources and use of funds in a firm; Self-financing. Depriciation policy. Reserves and dividends. Taxation and financial policy.

Capital budgeting. Preparation, analysis and interpretation of financial statements. Valuation of goodwill and shares. Preparation of schemes of reconstruction, amalgamation and absorption; recording the effect in books of account.

Preparation of costing statements, treatment and control of overheads. Principles of budgetary control. Standard costing. Reconciliation of financial and cost accounts.

16. *Business Management and Commercial Law*

The management process and managerial functions. Formulation of policy and goals of enterprise. Leadership and morale; control and decision-making. Authority relationships, delegation of authority, levels of authority and responsibility, span of control. The role of the supervisor. Problems of communication and motivation.

Production and inventory control. Quality control. Time and motion study. Plant layout and work measurement.

Managerial problems in marketing operations. Selection and control of channels of distribution; product line, pricing and sales promotion policy. Demand analysis and advertising.

Personnel management. Problems of selection, placement, promotion, transfer and retirement. Job evaluation and merit rating. Union-management relations.

Loyal framework of business activities in India.

Law relating to contracts and companies.

17. *Advanced Probability and Stochastic Processes*

(a) Advanced Probability.—Probability as measure; random variables; decomposition of distribution functions; expectation of a random variable; the conditional probability and conditional expectations; convergence of sequesce and some of independent radom variables; Kolmogorow's inequality; strong and weak laws of large numbers; Convergence in distribution; Theorems of convergence and continuity; Characteristic functions; Uniqueness theorem; inversion formula; central limit theorems; Problem of moments.

(b) Stochastic Processes

Definition and classification of stochastic processes.

Stochastic processes as a family of real-valued random variables indexed by an ordered set (discrete or an interval of the real time). The class of finite-dimensional distribution functions and statement of Kolmogorov's Consistency theorem.

Various types of dependence among the random variables: independence, independent increments, martingales, Markow dependence, wide and strict sense stationarity.

Markow Processes

Strictly stationary Markow process with discrete parameter and with finite and denumerable statespaces (also called Markow chains); transition probability matrices; classification of states and classes of states.

Markow process with continuous parameter and discrete state space: Kolmogorov forward and backward equations; Simple time dependent stochastic processes regarding population growth; Poisson process; Pure birth process; Birth and death process (complete solution in the case of linear processes of the two latter types).

Wide sense stationary process with discrete parameter

Covariance functions; spectral representation of the covariance function and of the process; examples of correlation functions of stationary processes; linear prediction of stationary process; examples in the case of general rational spectral density.

18. *Statistical Inference*

Note: Candidates will be required to answer questions from Sections 'A' and 'B' of Sections 'A' & 'C'.

A.(i) *Estimation*

Different methods of estimation: method of maximum likelyhood-method of minimum-chi-square method of moments, method of least squares; asymptotic properties of maximum likelihood estimators. Cramer-Rao inequality and its generalization to the multiparametric case. Bhattacharya bounds. Sufficient Statistics; Factorization theorem. Pitman-Koopmam-Darmois form of distributions, minimal set of sufficient statistics. Rao-Blackwell theorem. Complete family of probability distributions, complete statistics. Lehmum-Scheffe' theorem on minimum variance estimation.

(ii) *Testing of hypotheses*

Neyman-Pearson theory of testing of hypotheses. Randomized and non-randomized tests.

Most powerful and uniformly most powerful tests. Neyman-Pearson fundamental lemma Unbiasedness, consistency and efficiency of tests. Similar regions, tests with locally optimum properties. Type A, A1, B, C and D critical regions. Relationship between notions of completeness and similarity. Likelihood-ratio principle of test construction and some of its applications. Bartlets test for homogeneity of variances.

(iii) *Non-parametric tests.*

Order statistics; Small sample and large sample distribution theory, distribution-free confidence intervals for quantiles. Distribution-free tests for

(i) goodness of fit: chi-square test, Kolmogorow-Simrnov test.

(ii) Comparison of two populations: Run test, Dixon's test, Wilcoxon's test, Median test, Sign test, Fisher-Pitman test.

(iii) Independence: contingency, chi-square, Spearman's and Kendall's rank correlation coefficients.

Large sample properties of non-parametric test, U-statistics and their limiting distributions.

B. *Decision Functions*

Statistical game and principles of choice associated with it. Formulation of statistical problems as a statistical game, decision functions, randomized and non-randomised decision rules. Minimax, Bayes and minimum regret decision rules, Admissible and minimax tests. Admissible and minimax estimates under square error loss function. Minimal complete class of tests.

Principle of sufficiency and principle of invariance. Hunt-stein theorem. Minimax invariant decision rules.

C. *Multivariate Analysis*

Multivariate Mormal Distributions Estimation of mean vector and covariance matrix; Distribution of Sample mean vector and inference relating to mean vector with unknown matrix; Hotelling's Tests based on T_0; Power functions of T_0 and F; Optimum properties of T_0. Partial and multiple regression coefficients in normal correlation; Behren's—Fisher problem; Wishart distribution; Reproductive property of Wishart; Generalised analysis variance; Mahalanobis's D_0 Discriminan functions; Principal component analysis; Canonical variates and canonical correlation; equality of several covariance matrices.

19. *Design of Experiments*

Principles of experimentation: randomisation, replication and error control. Techniques for error control; choice of size, shape and structure of experimental units grouping of experimental units.

Basic assumptions of analysis of variance. Effects of non-addivity, variance, heterogeneity and non-normality. Trans formation. Pure and mixed models. Use of concomitant variables. Covariance analysis.

Construction and analysis of incomplete block designs (with and without recovery of inter block information), latice designs partially balanced incomplete block designs Hyper-Graeco-Latin Squares and other designs for elimination of heterogeneity in several directions.

Construction of factorial designs and their analysis; confounding in symmetrical ractorical experiments; total and partial; balanced confounding. Confounding of main effects. split plot, strip-plot and other designs. Fractional replication. Experiments with qualitative and quantitative factors.

Techniques for analysis for experiments with missing or mixed up yields. Analysis of non-orthogonal data. Combination of results of groups of experiments. Response curves and standardisation of response.

20. *Pure Mathematics I*

Functions of a real variable; Construction of system of real numbers from rational numbers by Dedekinds method, Bounds and limits of sequences and functions. Convergence point-wise and uniform of sequences, infinite serics and infinite products.

Metric spaces; open and closed sets, continuous functions and homomorphism: convergence and completeness, theorem on nested closed sets in complete metric spaces. Compactness for metric spaces and euclidean spaces. Uniform continuity and Arzela's theorem. Connected sets in metric spaces.

Differentiability of functions, of one and several real variables. Mean value theorems. Taylor expansion of functions of one and more variables. Extreme values of functions in including method of Lagrange multipliers. Implicit and inverse function theorems, Functional dependence and Jacobian

Riemann integration, mean value theorems of integral calculus. Improper integrals. Convergence of integral. Differentiation and integration under the integral sign. Line and surface integrals. Multiple integrals. Green's and Stokes theorems.

Measure Theory : Lebesgue measure, measurable sets and their properties. Measurable functions. Lebesgue integral of bounded functions over sets of finite measure. The integral of a non-negative function. The general Lebesgue integral. Convergence in measures. Fatou's lemma. Monotone, dominated and bounded convergence theorems. Vitali covering theorem. Functions of bounded variation. Absolutely continuous functions. Fundamental theorem of integral calculus, Stieltjes-integral.

Function of a complex Variable : Analytic functions, Cauchy-Riemann equations. Integration of complex functions. Cauchy's fundamental theorem and integral formulae, Morera's theorem. Taylor and Laurent expansions. Zeros and poles. Singularities. The Residue Theorem and its applications. Argument principle. Rouches theorem. Maximum modulus priciples and Schwarz lemma.

Bilinear transformations, Conformal representation.

Doubly periodic functions. Weierstrass's functions. Jacobi's S_n, C_n, d_n functions. Elliptic integrals.

21. *Pure Mathematics II*

Modern Algebra including Matrices and Determinants—Semi groups and groups : Isomorphism. Transformation group Cayley's theorem. Cyclic groups. Permutations; even and odd permutations. Coset decomposition of groups. Lagrange's theorem. Invariant subgroups and factor groups Homomorphism and Automorphism. Conjugate elements. Normal series, composition series and Jordan—Molder theorem.

Rings : Integral domain. Division rings. Fields. Matrix rings. Quaternions. Sub rings. Ideals : maximal, Prime and principal ideals. Unique factorization domains. Difference rings. Ideals and difference rings of integers. Format's theorem Homomorphism of rings.

Fields extensions—algebriac and transcendental field extension. Elements of Galosis theory and its applications to solution of equations by radicals.

Vector spaces over a field. Sub spaces and their algebra-Linear independence, basis, dimension. Factor spaces. Isomorphism of vector spaces.

System of linear equations. Rank of a matrix. Equivalence relations on matrics elementary matrices, raw equivalence, equivalence, similarity.

Linear transformation on vector spaces, their rank and nullity. Dual spaces and dual basis. Linear. Bilinear and quadratic forms. Rank and signature. Reduction of a quadratic form to canonical form and simultaneous reduction of two quadratic forms.

Determinant functions. Its existence and uniqueness. Lapace's method of expanding a determinant. Product of two determinals. Binet-Cauchy formula. Characteristics and minimal polynomials, eigen values and eigen vectors. Cayley-Hamilton theorem. Diagonalization theorems.

n-dimensional geometry—Elements of the geometry of n-dimension, Desargues' theorem. Degrees of freedom of linear spaces. Duality parallel lines. Elliptic hyperbolic, euclidean and projective geometries. Line normal to (n—1) Flat. System of n-mutually orthogonal lines. Distances and angles between flat spaces.

Convex sets and convex cones. Convex hull. Theorems on separating hyperplanes. Theorem that a closed convex set which is bounded from below has extreme points in every supporting hyperplans. Convex hull of extreme points. Convex polyhedral cones. Linear transformations of regions.

Differential geometry.—Curves in space. Envelopes, Developable surfaces. Developable associated with a curve. Curvilinear coordinates on a surface. First and second fundamental forms. Curvature of normal section. Lines of curvature. Conjugate systems. Asymptotic lines. The equations of gauss and of Codazzi. Geodesics and Geodesic parallels. Ruled surfaces.

22. *Pure Mathematics III*

Numerical Analysis and Difference Equations.—Finite differences. Interpolation. Extrapolation Inverse interpolation Numerical differentiation and numerical integration. Solution of difference equations of the first order. General properties of the linear difference equation. Linear difference equations with constant coefficients.

Solution of ordinary differential equations. Methods of starting the solution and continuing the solution. Simultaneous linear equations and their solution. Roots of polynomial equations. Solution of simple problems by relaxation method Nomograms.

Differential Equations.—Existence theorem for the solution of $dy/dx = f(x,y)$.

First order linear and non-linear equations. Linear equations with constant coefficients. Homogeneous linear equations. Second order linear equations. Frobenius method of integration in series. Solutions of Legendre. Bessel and Hermite equations. Elementary properties of Legendre and Hermite polynomials and Bessel functions. Systems of simultaneous linear equations. Total differential equations with three variables.

Partial differential equations : partial differential equations of first and second order Lagrange's Charpit's and Monge's method. Linear partial differential equations with constant coefficients. Solutions of Laplace's wave and diffusion equations by separation of variables.

Calculus of Variations.—Necessary conditions for a minimum. Derivation of the Euler-equations. Hamilton's principle. Hamiltonian. Isoperimetric problems. Variable and point problems. Minima of functions of integrals. Bolza's problems. Multiple integral problem. Direct method in calculus of variations. Second variation and legendre's necessary condition for a minimum.

Harmonic Analysis.—The representation of a function by Fourier series. Dirichlet integral. Reimann Lebesque Theorem. Riemann's localization theorem. Sufficient conditions for the convergence of Fourier series (Jordan, Dini & de la vales Poussin). Fourier integrals. Sampling theorem Power Spectrum Auto-correlation and cross-correlation.

23. *Applied Mathematics*

Statics.—Vector treatment of equilibrium of a rigid body under forces not necessarily coplanner. Central axis. Principles of virtual work. Stability. Strings under central forces, equilibrium of strings on rough and smooth plane curves Elastic strings. Attractions and potentials of a rod, disc and sphere.

Dynamics.—Newton's laws of motion. D'Alembert's principle. Rectilinear motion. Motion in two dimensions. Motion in a resisting medium. Planetary motion. Impulsive forces and impacts. Principle of momentum and energy. Degrees of freedom and constraints. Generalised coordinates. Lagrange's equations for holonomic system. Euler's dynamical and geometrical equations. Hamilton's principle. Hamiltons equations Introduction to many-body problem.

Hydrodynamics.—Eulerian and Lagragian equations of motion. Stream lines. Vorticity and circulation and their constancy in ideal fluid.

Electricity and magnetism.—Coulomb-Law. Charges, Conductors and condensers. Dielectrics. Steady currents. application. Techniques of images and conformal transformation for solution of hydrodynamical problems. Simple properties of vortex motion. uniqueness theorem. Viscous-fluid. Napier Stockes equation. Flow between parallel walls and straight pipes. Oseen and Stokes approximations. Slow motion past a sphere.

Electricity and magnetism.—Coulomb-Law. Charges, Conductors and condensers. Dielectrics. Steady currents. Magnetic effects of currents. Induced currents and fields. Maxwell equations. Electromagnetic conditions at an interface between two media. Electromagnetic potentials, stresses and energy. Poyniting's theorem Joule heat. Alternating currents. Electromagnetic waves in an isotropic dielectric. Reflection and refraction of electromagnetic waves. Waves in conducting media.

Thermodynamics.—Concepts of quantity of heat, temperature and entropy. First and second laws of thermodynamics. Specific heats. Change of phase. Vapour pressure. Conduction of heat. Radiation. Planck's law. Stefan's law. Thermodynamic functions and potentials. Heterogenous systems and Gibb's phase rule.

Statistical Mechanics.—Geometry and kinematics of the phase space. Maxwell-Boltzmann Bose Einstein and Fermi-Dirac statistics.

PART B

Viva Voce.—The candidate will be interviewed by a Board of competent and unbiased observers who will have before them a record of his career. The object of the interview is to assess his suitability for the Service or Services for which he has competed. The interview is intended to supplement the written examination for testing the general and specialised knowledge and abilities of the candidate. The candidate will be expected to have taken an intelligent interest not only in his subjects of academic study, but also in events which are happening around him both within and without his own state or country, as well as in modern currents of thought and in new discoveries which should rouse the curiosity of well-educated youth.

The technique of the interview is not that of strict cross examination, but of a natural, though directed and purposive conversation, intended to reveal the candidate's mental qualities and his grasp of problems. The Board will pay special attention to assessing the intellectual curiosity, critical Powers of assimilation, balance of judgment and alertness of mind, the ability for social cohesion; integrity of character, initiative and capacity for leadership.

APPENDIX III

Brief particulars relating to the two Services to which recruitment is being made through this examination :

1. Candidates selected for appointment to either of the two Services will be appointed to Grade IV of the Service on probation for a period of two years which may be extended if necessary. During the period of probation, the candidates will be required to undergo such courses of training and instruction and to pass such examination and tests as the Government may determine.

2. If in the opinion of Government the work or conduct of the officer on probation is unsatisfactory or shows that he is unlikely to become efficient Government may discharge him forthwith.

3. On the expiry of the period of probation or of any extension, if the Government are of opinion that a candidate is not fit for permanent appointment, Government may discharge him.

4. On completion of the period of probation to the satisfaction of Government, the candidate shall if considered fit for permanent appointment be confirmed in his appointment subject to the availability of substantive vacancies in permanent posts.

5. Prescribed scales of pay for both the Indian Statistical Service and the Indian Economic Service are as follows :

Selection Grade Rs. 2000—125/2—2250.

Grade I—Director Rs. 1800—100—2000.

Grade II—Joint Director Rs. 1500—60—1800.

Grade III—Deputy Director Rs. 1100—50—1600.

Grade IV—Assistant Director Rs. 700—40—900—EB—40—1100—50—1300.

6. Promotion to the next Grade of the Service will be made in accordance with the provisions of Indian Economic Service/Indian Statistical Service Rules, as amended from time to time.

An officer belonging to the Indian Statistical Service/Indian Economic Service will be liable to serve anywhere in India or abroad under the Central Government and may be required to serve in any post on deputation for a specified period.

7. Conditions of service and leave and pension for officers of the two Services are the same as those described in the Fundamental Rules and Civil Service Regulations of Government of India respectively subject to such modifications as may be made by Government from time to time.

8. Conditions of Provident Fund are the same as laid down in the General Provident Fund (Central Services) Rules subject to such modifications as may be made by Government from time to time.

APPENDIX IV

REGULATIONS RELATING TO THE PHYSICAL EXAMINATION OF CANDIDATES

These regulations are published for the convenience of candidates and in order to enable them to ascertain the probability of their coming up to the required physical standard. The regulations are also intended to provide guidelines to the medical examiners and a candidate who does not satisfy the minimum requirement prescribed in the regulations cannot be declared fit by the medical examiners. However, while holding that a candidate is not fit according to the norms laid down in these regulations, it would be the permissible for a Medical Board to recommend to the Government of India for reasons specifically recorded in writing that he may be admitted to service without disadvantage to Government.

2. It should, however, be clearly understood that the Government of India reserves to themselves absolute discretion to reject or accept any candidate after considering the report of the Medical Board.

1. To be passed as fit for appointment a candidate must be in good mental and bodily health and free from any physical defect likely to interfere with the efficient performance of the duties of his appointment.

2. In the matter of the correlation of age, height and chest girth of candidates of Indian (including Anglo-Indian) race it is left to the Medical Board to use whatever correlation figures are considered most suitable as a guide in the examination of the candidates. If there be any disproportion with regard to height, weight and chest girth, the candidate should be hospitalised for investigation and X-ray of the chest taken before the candidate is declared fit or not fit by the Board.

3. The candidates height will be measured as follows :—

He will remove his shoes and be placed against the standard with his feet together and the weight thrown on the heels and not on the toes or other side of the feet. He will stand erect without rigidity and with the heels, calves, buttocks and shoulders touching the standard the chin will be depressed to bring the vertex of the head level under the horizontal bar and the height will be recorded in centimeters and parts of a centimetre to halves.

4. The candidate's chest will be measured as follows :—

He will be made to stand erect with his feet together, and to raise his arms over his head. The tape will be so adjusted round the chest that its upper edge touches the interior angles of the shoulder blades behind and lies in the same horizontal plane when the tape is taken round the chest. The arms will then be lowered to hang loosely by the side, and care will be taken that the shoulders are not thrown upwards or backwards so as to displace the tape. The candidate will then be directed to take a deep inspiration several times and the maximum expansion of the chest will be carefully noted and the minimum and maximum will then be recorded in centimetres 84—89, 86—93 etc. In recording the measurements, fractions of less than a centimetre should not be noted.

N.B.—The height and chest of the candidate should be measured twice before coming to a final decision.

5. The candidates will also be weighed and his weight recorded in kilograms; fractions of half of a kilogram should not be noted.

6. (a) The candidate's eye-sight will be tested in accordance with the following rules. The result of each test will be recorded.

(b) There shall be no limit for minimum naked eye vision but the naked eye vision of the candidates shall, however, be recorded by the Medical Board or other medical authority in every case, as it will furnish the basic information in regard to the condition of the eye.

(c) The following standards are prescribed for distant and near vision with or without glasses.

Distant vision		Near vision	
Better eye (Corrected vision)	Worse eye (Corrected vision)	Better eye (Corrected vision)	Worse eye (Corrected vision)
6/9	6/9 or 6/12	J.I	J.II

(d) In every case of myopia, fundus examination should be carried out and the results recorded. In the event of pathological condition being present which is likely to be progressive and affect the efficiency of the candidate, he should be declared unfit.

(e) *Field of vision.*—The field of vision shall be tested by the confrontation method. When such test gives unsatisfactory or doubtful results the field of vision should be determined on the perimeter.

(f) *Night Blindness.*—Broadly there are two types of night blindness, (1) as a result of vit. A deficiency and (2) as a result of Organic Disease of Retina—a common cause being Retinitis pigmentosa, in (1) the fundus is normal, generally seen in younger age-group and ill-nourished persons and improves by large doses of Vit. A. in (2) the fundus is often involved and mere fundus examination will reveal the condition in majority of cases. The patient in this category is an adult, and may not suffer from malnutrition. Persons seeking employment for higher posts in the Government will fall in this category. For both (1) and (2) dark adaptation test will reveal the condition. For (2) specially when fundus is not involved electro-Retinography is required to be done. Both these tests (dark adaptation and retinography) are time-consuming and required specialized set-up and equipment, and thus are not possible as a routine test in a medical check-up. Because of these technical consideration it is for the Ministry/Department to indicate if these tests for night blindness are required to be done. This will depend upon the job requirement and nature of duties to be performed by the prospective Government employee.

(g) *Ocular condition other than visual acuity.*—(i) Any organic disease or a progressive refractive error which is likely to result in lowering the visual acuity should be considered a disqualification.

(ii) *Squint.*—For technical services where the presence of binocular vision is essential, squint, even if the visual acuity in each eye is of the prescribed standard should be considered a disqualification. For other services the presence of squint should not be considered as a disqualification, if the visual acuity is of the prescribed standard.

(iii) *One eye.*—If a person has one eye or if he has one eye which has normal vision and the other eye is embylyopic or has subnormal vision, the usual effect is that the person lacks streoscopic vision for perception of depth. Such vision is not necessary for many civil posts. The medical board may recommend as fit such persons provided the normal eye has

(i) 6/6 distant vision and JI near vision with or without glasses, provided the error in any meridian is not more than 4 diopteres for distant vision.

(ii) has full field of vision.

(iii) normal colour vision wherever required.

Provided the board is satisfied that the candidate can perform all the functions for the particular job in question.

(h) *Contact Lenses.*—During the medical examination of a candidate, the use of contact lenses is not to be allowed. It is necessary that when conducting eye test, the illumination of the type letters for distant vision should have an illumination of 15 foot-candles.

7. *Blood Pressure.*

The Board will use its discretion regarding Blood Pressure.

A rough method of calculating normal maximum systolic pressure is as follows :—

(i) With young subjects 15—25 years of age the average is about 100 plus the age.

(ii) With subjects over 25 years of the age the general rule of 110 plus half the age seems quite satisfactory.

N.B.—As a general rule any systolic pressure over 140 and diastolic over 90 should be regarded as suspicious and the candidate should be hospitalised by the Board before giving their final opinion regarding the candidate's fitness or otherwise. The hospitalization report should indicate whether the rise in blood pressure is of a transient nature due to excitement etc. or whether it is due to any organic disease. In all such cases X-ray and electrocardiographic examination, of heart and blood urea clearance test should also be done as a routine. The final decision as to the fitness or otherwise of a candidate will, however, rest with the Medical Board only.

Method of taking Blood Pressure

The mercury manometer type of instrument should be used as a rule. The measurement should not be taken within fifteen minutes of any exercise or excitement. Provided the patient, and particularly his arm is relaxed he may be either lying or sitting. The arm is supported comfortably at the patients side in a more or less horizontal position. The arm should be freed from clothes to the shoulder. The cuff completely deflated should be applied with the middle of the rubber over the inner side of the arm, and its lower edge an inch or two above the bend of the elbow. The following turns of cloth bandage should spread evenly over the bag to avoid bulging during inflation.

The brachial artery is located by palpitation at the bend of the elbow and the stethoscope is then applied lightly and centrally over it below, but not in contact with the cuff. The cuff is inflated to about 200 mm. Hg. and then slowly deflated. The level at which the column stands when soft successive sounds are heard represents the Systolic Pressure. When more air is allowed to escape the sounds will be heard to increase in intensity. The level of the column at which the well-heard clear sounds change to soft muffled fading sounds represents the diastolic pressure. The measurements should be taken in a fairly brief period of time as prolonged pressure of the cuff is irritating to the patient and will vitiate the readings. Rechecking, if necessary, should be done only a few minutes after complete deflation of the cuff. (Sometimes as the cuff is deflated sounds are heard, at a certain level : they may disappear as pressure falls and reappear at a still lower level. This 'Silent Gap' may cause error in reading).

8. The urine (passed in the presence of the examiner) should be examined and the result recorded. Where a Medical Board finds sugar present in a candidate's urine by the usual chemical tests the Board will proceed with the examination with all its other aspects and will also specially note any signs or symptoms suggestive of diabetes. If, except for the glycosuria the Board finds the candidate conforms to the standard of medical fitness required they may pass the candidate "fit subject to the glycosuria being non-diabetic" and the Board will refer the case to a specified specialist in Medicine who has hospital and laboratory facilities at his disposal. The Medical Specialist will carry out whatever examinations clinical and laboratory he considers necessary including a standard blood sugar tolerance test, and will submit his opinion to the Medical Board upon which the Medical Board will base its final opinion "fit" or "unfit". The candidate will not be required to appear in person before the Board on the second occasion. To exclude the effects of medication it may be necessary to retain a candidate for several days in hospital under strict supervision.

9. A woman candidate who as a result of tests is found to be pregnant of 12 weeks standing or over should be declared temporarily unfit until the confinement is over. She should be re-examined for a fitness certificate six weeks after the date of confinement subject to the production of a medical certificate of fitness from a registered medical practitioner.

10. The following additional points should be observed :—

(a) that the candidate's hearing in each ear is good and that there is no sign of disease of the ear. In case it is defective the candidate should be got examined by the ear specialist: provided that if the defect in hearing is remediable by operation or by use of a hearing aid, a candidate cannot be declared unfit on that account provide he/she has no progressive disease in the ear. The following are the guidelines for the medical examining authority in this regard :—

1. Marked or total deafness in one ear, other ear being normal.	Fit for non-technical jobs the deafness is upto 30 decibel in higher frequency.
2. Perceptive deafness in both ears in which some improvement is possible by a hearing aid.	Fit in respect of both technical and non-technical jobs if the deafness is upto 30 Decibel in speech frequencies of 1000 to 4000.
3. Perforation of tympanic membrane Central or marginal type.	(i) One ear normal other ear perforation of tympenic membrane present-temporarily unfit. Under improved conditions of Ear Surgery a candidate with marginal or other perforation in both ears should be given a chance by declaring him temporarily unfit and then he may be considered under 4 (ii) below. (ii) Marginal or attic perforation in both ears—Unfit. (iii) Central perforation both ears -Temporarily unfit.
4. Ears with mastoid cavity subnormal hearing on one side both sides.	(i) Either ear normal hearing other ear Mastoid cavity—Fit for both technical and non-technical jobs. (ii) Mastoid cavity of both sides. Unfit for technical job. Fit for non-technical jobs if hearing improves to 30 Decibels in either ear with or without hearing aid.
5. Persistently discharging ear-operated/unoperated.	Temporarily Unfit for both technical and non-technical jobs.
6. Chronic inflammatory/ allergic conditions of nose with or without bony deformities of nasal septum.	(i) A decision will be taken as per circumstances of individual cases. (ii) If deviated nasal septum is present with symptoms—Temporarily unfit.

7. Chronic inflammatory conditions of tonsils and/or Larynx.	(i) Chronic inflammatory conditions of tonsils and/or Larynx-Fit. (ii) Hoarseness of voice of severe degree if present then—Temporarily unfit.
8. Benign or locally malignant tumours of the E.N.T.	(i) Benign tumours—Temporarily unfit. (ii) Malignant Tumours—Unfit.
9. Otosclerosis	If the hearing is within 30 Decibels after operation or with the help of hearing aid—Fit.
10. Congenital defects of ear, nose or throat;	(i) If not interfering with functions—Fit. (ii) Stuttering of severe degree—Unfit.
11. Nasal Poly	Temporarily Unfit.

(b) that his speech is without impediment;

(c) that his teeth are in good order that he is provided with dentures where necessary for effective mastication (well filled teeth will be considered as sound);

(d) that the chest is well formed and his chest expansion sufficient; and that his heart and lungs are sound;

(e) that there is no evidence of any abdominal disease;

(f) that he is not ruptured;

(g) that he does not suffer from hydrocele, a severe degree of varicocele, varicose veins or piles;

(h) that his limbs, hands and feet are well formed and developed and that there is free and perfect motion of all joints;

(i) that he does not suffer from any inveterate skin disease;

(j) that there is no congenital malformation or defect;

(k) that he does not bear traces of acute or chronic disease pointing to an impaired constitution;

(l) that he bears marks of efficient vaccination; and

(m) that he is free from communicable disease.

11. Screening of the chest should be done as a routine in all cases for detecting any abnormality of the heart and lungs which may not be apparent by ordinary physical examination, where it is considered necessary, a skiagram should be taken.

When any defect is found it must be noted in the certificate and the medical examiner should state his opinion whether or not it is likely to interfere with the efficient performance of the duties which will be required of the candidate.

12. The candidates filing an appeal against the decision of the Medical Board have to deposit an appeal fee of Rs. 50 in such manner as may be prescribed by the Government of India in this behalf. This fee would be refunded if the candidate is declared fit by the Appellate Medical Board. The candidate may, if they like, enclose medical certificate in support of their claim of being fit. Appeals should be submitted within 21 days of the date of the communication in which the decision of the Medical Board is communicated to the candidates, otherwise, requests for second medical examination by an Appellate Medical Board will not be entertained. The medical examination by the Appellate Medical Boards would be arranged at New Delhi only and no travelling allowance or daily allowance will be admissible for the journeys performed in connection with the medical examination. Necessary action to arrange medical examination by Appellate Medical Boards would be taken by the Cabinet Secft. (Deptt. of Personnel and Administrative Reforms) on receipt of appeals accompanied by the prescribed fee.

Medical Boards Report

The following intimation is made for the guidance of the Medical Examiner :—

The standard of physical fitness to be adopted should make due allowance for the age and length of service, if any, of the candidate concerned.

No person will be deemed qualified for admission to the Public Service who shall not satisfy Government, or the appointing authority, as the case may be that he has no disease, constitutional affection, or bodily infirmity unfitting him, or likely to unfit him for that service.

It should be understood that the question of fitness involves the future as well as the present and that one of the main objects of medical examination is to secure continuous effective service, and in the case of candidates for permanent appointment to prevent early pension or payments in case of premature death. It is at the same time to be noted that the question is one of the likelihood of continuous effective service, and that rejection of a candidate need not be advised on account of the presence of a defect which is only a small proportion of cases is found to interfere with continuous effective service.

The Board should normally consist of three members a physician, (ii) a Surgeon and (iii) an Ophthalmologist all of whom should as far as practicable, be of equal status. A lady doctor will be coopted as a member of the Medical Board wherever a woman candidate is to be examined.

Candidates appointed to the Indian Economic Service/Indian Statistical Service are liable for field service in or out of India. In case of such a candidate the Medical Board should specially record their opinion as to his fitness or otherwise for field service. The report of the Medical Board should be treated as confidential.

In cases where a candidate is declared unfit for appointment in the Government Service, the grounds for rejection may be communicated to the candidate in broad terms without giving minute details regarding the defects pointed out by the Medical Board.

In cases where a Medical Board considers that a minor disability disqualifying a candidate for Government service can be cured by treatment (medical or surgical) a statement to that effect should be recorded by the Medical Board. There is no objection to a candidate being informed of the Board's opinion to this effect by the appointing authority and when a cure has been effected it will be open to the authority concerned to ask for another Medical Board.

In the case of candidates who are to be declared 'Temporary Unfit' the period specified for re-examination should not ordinarily exceed six months at the maximum. On re-examination after the specified period these candidates should not be declared temporarily unfit for a further period but a final decision in regard to their fitness for appointment or otherwise should be given.

(a) *Candidate's statement and declaration*

The candidate must make the statement required below prior to his Medical Examination and must sign the Declaration appended thereto. His attention is specially directed to the warning contained in the Note below :

1. State your name in full (in block letters) ....

2. State your age and birth place ... .

2. (a) Do you belong to races such as Gorkhas, Garhwalis, Assamese, Nagaland Tribals etc. whose average height is distinctly lower? Answer 'Yes' or 'No' and if the answer is 'Yes', state the name of the race ....

3. (a) Have you ever had small pox, intermittent or any other fever, enlargement or suppuration of glands, spitting of blood, asthma, heart disease, lung disease, fainting attacks, rheumatism, appendicitis! ....

(b) Any other disease or accident requiring confinement to bed and medical or surgical treatment? ....

4. When were you last vaccinated? ....

5. Have you suffered from any form of nervousness due to overwork or any other cause? ....

6. Furnish the following particulars concerning your family :—

Father's age if living and state of health	Father's age at death and cause of death	No. of brothers living, their ages and state of health	No. of brothers dead, their ages at, and cause of death

Mother's age if living and state of health	Mother's age at death and cause of death	No. of sisters living, their ages and state of health	No. of sisters dead, their ages at and cause of death

7. Have you been examined by a Medical Board before? ... .

8. If answer to the above is 'Yes', please state what Service/Services, you were examined for? ....

9. Who was the examining authority? ....

10 When and where was the Medical Board held? . ...

11. Result of the Medical Board's examination, if communicated to you or if known. ... ...

I declare that all the above answers are to the best of my belief, true and correct.

Candidate's signature..............

Signed in my presence......... ....

Signature of the Chairman of the Board

NOTE—The candidate will be held responsible for the accuracy of the above statement. By wilfully suppressing any information he will incur the risk of losing the appointment and, if appointed, of forfeiting all claims to Superannuation Allowance or Gratuity.

Report of the Medical Board on (name of candidate)...... .... Physical Examination

1. General development : Good.... ..... fair . ... Poor ....
Nutrition : Thin .... Average. .... Obese......
Height (without shoes)................ Weight ....
Best Weight .... When .... any recent.
Change in weight ... . Temperature ....
Girth of Chest :

(1) (After full inspiration) ....

(2) (After full expiration) ....

2. Skin : Any obvious disease ....

3. Eyes :

(1) Any disease ....

(2) Night blindness ....

(3) Defect in colour vision

(4) Field of vision

(5) Visual acuity

(6) Fundus Examination...............................

Acuity of vision	Naked eye	With glasses	Strength of glass Sph. Cyl. axis
Distant vision	R.E. L.E.		
Near Vision	R.E. L.E.		

4. Ears : Inspection .....Hearing : Right Ear.....
Left Ear .....

5. Glands .... Thyroid .....

6. Condition of teeth .....

7. Respiratory System : Does physical examination reveal anything abnormal in the respiratory organs ?.....
If yes, explain fully .....

8. Circulatory System :

(*a*) Heart : Any organic lessions ? ..... Rate
Standing .....
After hopping 25 times..... .....
2 minutes after hopping.....

(*b*) Blood Pressure : Systolic.....Distolic ..... :..

9. Abdomen : Girth .....Tenderness ....
Hernia .....

(*a*) Palpable : Liver ..... Spleen .....
Kidneys ..... Tumours .....

(*b*) Haemorrhoids ..... Fistula ....

10. Nervous System : Indication of nervous or mentaldisabilities.....

11. Loco-Motor System : Any abnormality .....

12. Genito Urinary System : Any evidence of Hydrocele, varicocele, etc.

Urine Analysis :

(*a*) Physical appearance .....

(*b*) Sp. Gr. .....

(*c*) Albumen .....

(*d*) Sugar .....

(*e*) Casts .....

(*f*) Cells..... .....

13. Report of Screening/X-ray Examination of Chest.

14. Is there anything in the health of the candidate likely to render him unfit for the efficient discharge of his duties in the service for which he is a candidate?

NOTE.—In the case of a female candidate, if it is found that she is pregnant of 12 weeks standing or over, she should be declared temporarily unfit, *vide* Regulation 9

15. (*i*) Has he been found qualified in all respects for the efficient and continuous discharge of his duties in the Indian Economic Service & Indian Statistical Service.

(*ii*) Is the candidate fit for FIELD SERVICE.....

NOTE.—The Board should record their findings under one of the following three categories :

(*i*) Fit .....

(*ii*) Unfit on account of .....

(*iii*) Temporarily unfit on account of .....

Place .....

Date .....

Chairman

Member

Member

MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY PLANNING

(Department of Family Planning)

New Delhi, the 24th May 1974

No. 5-9/71-AP—In partial modification of this Ministry's notification No. 5-9/71-AP, dated the 29th January, 1973 relating to the constitution of an Indian Advisory Board to advise on the policy and technical matters relating to the child care project in Andhra Pradesh, it has been decided to enlarge the composition of the Board with the inclusion of the following member.

15. Commissioner (RHS&MH)
Directorate General of Health Services
New Delhi.

P. L. JOSHI, Under Secy.

Department of Culture

New Delhi, the 10th June 1974

No. F.22-2/72-CAI(2)—In partial modification of the Department of Culture Notification No. 22-2/72-CAI(2), dated the 27th November, 1972 the following persons are appointed as Members of the Indian Historical Records Commission

under clause 3.1(A)(3) of the Constitution of the Indian Historical Records Commission with immediate effect :—

(1). Tamil Nadu	- Shri Badrinath, Commissioner of Tamil Nadu Archives and Historical Research, Tamil Nadu, Archives, Egmore, Madras-8, *vice* Shri Singarajan.
(2). Kerala	—Shri P. K. Umashanker, Secretary to Government (Higher education) and *Ex-Officio* Director of the State Archives, Trivandrum-1 *vice* Smt. Padma Ramachandran.

The term of their appointment will be upto 25th September, 1977.

K. K. BAKSI, Deputy Secy.

MINISTRY OF IRRIGATION & POWER

New Delhi, the 4th June 1974

RESOLUTION

No. 1/13/74-JRC—In this Ministry's Resolution No. 8(1)-72-GB, dated the 22nd June, 1972 published in the Gazette of India, Part I, Section 1, the name of Shri N. G. K. Murti appearing at serial No. 1 thereof may be substituted by the following :

"Shri C. C. Patel, Co-Chairman/Chairman ".

ORDER

Ordered that the copy of the Resolution be communicated to all State Governments for information.

Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for General information.

A. S. SHRAMA Joint Secy.

MINISTRY OF LABOUR

New Delhi, the 10th April 1974

No. G-25012/1/73-HI—The audited accounts of the Employees' State Insurance Corporation for the year 1970-71 are hereby published for general information as required by section 36 of the Employees' State Insurance Act, 1948 (34 of 1948).

[Here set out the enclosed audited Accounts of the Employees' State Insurance Corporation for the year 1970-71]

LALFAK ZUALA, Under Secy.

ACCOUNTS OF THE

EMPLOYEES' STATE

FOR THE

Income and Expenditure Account fo[r]

INCOME

Previous Year (1969-70)	*Heads of Account*	*Amount*	*Total*
Rs.		Rs.	Rs.
	By Contributions		
21,25,42,559	Employers' Share only	29,55,06,981	
15,20,48,404	Employees' Share only	16,49,66,819	
36,45,90,963	*Total Contributions*		46,04,73,800
6,84,513	State Govts. Union Territories share towards medical benefits initially incurred by the Corporation	14,29,296	14,29,296
	Other Heads of Revenue		
33,46,082	Interest & Dividends	37,82,273	
21,17,306	Compensations	4,12,671	
	Rents, Rates & Taxes		
1,34,103	(*i*) Office of the Corporation (including staff quarters)	2,14,769	
1,15,99,250	(*ii*) Hospitals, Dispensaries & staff quarters	2,91,12,763	
32,977	Fees, Fines & Forefeitures	18,866	
5,28,852	Miscellaneous	5,44,410	
1,77,58,570	Total of other Heads of Revenue		3,40,85,752
38,30,34,046	Total Carried over		49,59,88,848

INSURANCE CORPORATION

YEAR 1970-71.

the year ended 31 March 1971

EXPENDITURE

Previous Year (1969-70)	*Heads of Account*	*Amount*	*Total*
Rs.		Rs.	Rs.
	1. Benefits to Insured Persons & their families		
	A—Medical Benefits		
14,42,32,703	(*i*) Payments to State Govts. etc. as Corporations' share of their expenses on providing medical treatment maternity facilities	24,13,55,195	
	Deduct : Payments to State Govts. towards Medical care during the year transferred to the Capital Construction/Medical (accumulated) liabilities Reserve Fund	(—)10,40,19,294	
		13,73,35,901	
73,98,467	(*ii*) Medical treatment & care & maternity facilities (expenses incurred direct by the Corporation)	75,34,675	
15,16,31,170	*Total A- Medical Benefits*		14,48,70,576
	B—Cash Benefits		
11,62,25,881	1. Sickness Benefits	13,71,00,949	
96,31,862	2. Extended Sickness Benefit	1,00,86,820	
61,02,649	3. Maternity Benefit	60,23,031	
	4. *Disablement Benefit*		
1,96,16,014	(a) Temporary	2,89,90,066	
2,40,03,000	(b) Permanent (Capitalised Value)	3,16,94,000	
49,79,000	5. Dependants' Benefit (Capitalised Value)	66,59,000	
7,26,322	6. Funeral Benefit	7,84,637	
18,12,84,728	*Total B-Cash Benefits*		22,13,38,503
	C—Other Benefits		
79,693	(a) Expenditure on the Rehabilitation of Disabled insured persons	25,875	
1,71,216	(b) Medical Boards and Appeal Tribunals	2,31,843	
	(c) Payments to Insured Persons		
1,15,854	(1) Conveyance charges and/or loss of wages	1,22,746	
2,12,308	(2) Incidental charges under family planning	316	
—	(d) Grants-in-aid	—	
2,98,023	(e) Miscellaneous	2,99,021	
8,77,094	*Total C—Other Benefits*		6,79,801
33,37,92,992	Total Benefits to Insured Persons and their families		36,68,88,880
	2. Administration Expenses		
	A—Superintendence		
32,136	1. Corporation, Standing Committee, Regional Boards, etc.	39,525	
1,77,724	2. Principal Officers	1,49,017	
20,75,740	3. Other Officers	24,36,891	
(—)1,000	4. Engineering Cell	—	
90,48,133	5. Ministerial Establishment	1,03,15,177	
16,16,472	6. Class IV Servants.	17,85,629	
28,35,783	7. Contingencies	27,97,927	
1,57,84,988	*Total A—Superintendence*		1,75,24,166
	B—Field Work		
5,56,310	1. Officers	6,63,745	
1,06,67,221	2. Ministerial Establishment	1,20,01,780	
18,78,766	3. Class IV Servants.	21,03,181	
15,19,278	4. Contingencies	15,04,946	
1,46,21,575	*Total B—Field Work*		1,62,73,652

Previous Year (1969-70)	*Heads of Account*	*Amount*	*Total*
Rs.		Rs.	Rs.
38,30,34,046	Total Brought Forward		49,59,88,848

38,30,34,046	Grand Total	49,59,88,848

New Delhi
Dated 31st May, 1971.

Previous Year (1969-70)	*Heads of Account*	*Amount*	*Total*
	C—Other Charges		
1,74,275	1. Legal Charges	1,71,986	
1,12,857	2. Insurance Courts	—	
5,984	3. Publicity & Advertisement	6,598	
7,305	4. Charges for maintaining Banking Accounts	37,358	
42,103	5. Audit Fees	83,590	
83,472	6. Leave Salary & Pension Contributions	1,26,961	
1,67,835	7. Depreciation of Office Buildings/Staff Cars	1,71,335	
4,20,700	8. Repairs and Maintenance of Office Buildings	4,28,693	
	9. *Retirement Benefits*		
55,78,500	(a) Pension Reserve Fund for the Employees' of the Corporation	21,70,700	
	(b) Corporations' Contribution towards Employees' State Insurance Corporation Provident Fund		
2,15,290		2,06,610	
6,20,233	(c) Interest paid to ESIC Provident Fund	7,63,217	
(—)4,75,981	(d) *LESS* Interest realised on investments of Provident Fund Balances	(—)7,91,495	
700	10. Compassionate Reserve Fund	1,230	
8	11. Miscellaneous	7,545	
—	12. Losses	9,143	
69,53,281	*Total C—Other Charges*		33,93,471
3,73,59,844	Total-Head-2—Administration Expenses		3,71,91,289
	3—*Hospitals and Dispensaries & Accumulated Liabilities*		
15,18,356	(1) Depreciation of Hospital Buildings & Equipments	16,39,457	
43,45,746	(2) Repair & Maintenance of Hospital Buildings/Dispensaries	47,17,209	
—	(3) Capital Construction/Medical Liabilities etc.	3,69,64,000	
58,64,102	*Total Head-3 Hospitals & Accumulated Liabilities*		4,33,20,666
37,70,16,938	*Total Expenditure on Revenue Account*		44,74,00,835
60,17,108	To excess of Income over Expenditure carried over to Balance Sheet		4,85,88,013
38,30,34,046	Grand Total		49,59,88,848

(B. M. K. MATTOO)
Financial Adviser & Chief Accounts Officer
Employees' State Insurance Corporation

EMPLOYEES' STATE

Balance Sheet as

Previous Year (1969-70)	*Liabilities*	*Amount*	*Total*
Rs.		Rs.	Rs.
	Balance of Excess of Income over Expenditure		
35,91,34,716	As per last Balance Sheet	36,51,51,824	
60,17,108	Accumulations during the year	4,85,88,013	
36,51,51,824		41,37,39,837	
	LESS Amount transferred to Capital Construction/Medical (Accumulated) Liabilities Reserve Fund		
—	(a) From last year's accumulations	(—)3,01,39,082	
—	(b) From this year's accumulations	(—)4,62,82,348	
36,51,51,824			33,73,18,407
	Capital Construction/Medical (Accumulated) Liabilities Reserve Fund		
	Opening Balance	3,01,39,082	
—	Amount transferred from balance of Excess of Income over Expenditure	4,62,82,348	
—	Amount transferred from Permanent Disablement Benefit Reserve Fund	—	
—	*ADD* Provision made during the year (0·5% of enhanced rate of E.S.C.)	3,69,64,000	
—		11,33,85,430	
—	*LESS* Payments made during the year	(—)10,40,19,294	
			93,66,136
	Permanent (Partial & Total) Disablement Benefit Reserve Fund		
5,03,83,531	As per last Balance Sheet	5,90,93,644	
2,40,03,000	Provision made during the year	3,16,94,000	
25,21,369	Interest received from investments	27,91,535	
7,69,07,900		9,35,79,179	
(—)1,78,14,256	*LESS* Payments made during the year	(—)1,99,87,882	
5,90,93,644			7,35,91,297
	Dependants' Benefit Reserve Fund		
2,21,94,863	As per last Balance Sheet	2,62,19,906	
49,79,000	Provision made during the year	66,59,000	
11,51,704	Interest received from investments	12,49,253	
2,83,25,567		3,41,28,159	
2,83,25,567	Total Brought forward of this head	3,41,28,159	
(—)21,05,661	*LESS* payments made during the year	(—)25,54,162	
2,62,19,906			3,15,73,997
	Employees' State Insurance Corporation Provident Fund		
1,17,43,202	As per last Balance Sheet	1,32,80,277	
	ADD amount credited during the year		
31,33,976	(*i*) Employees' Subscription	36,23,861	
2,15,290	(*ii*) Corporation's Contribution	2,06,610	
6,20,233	(*iii*) Interest on (Employees' and Corporation's Shares)	7,63,217	
1,57,12,701		1,78,73,965	
(—)23,60,796	*LESS* Payments made during the year	(—)24,19,406	
1,33,51,905		1,54,54,559	
(—)71,628	*LESS* Amount transferred to Pension Reserve Fund	(—)2,957	
1,32,80,277			1,54,51,602

INSURANCE CORPORATION
on 31 March 1971

Previous Year (1969-70)	*Assets*	*Amount*	*Total*
Rs.		Rs.	Rs.
	Lands and Buildings (*wholly owned by the Corporation*)		
	(*a*) *Buildings for offices of the Corporation*		
1,09,30,627	As per last Balance Sheet	1,09,52,783	
22,156	Additions during the year	—	
1,09,52,783		1,09,52,783	
	(*b*) *Hospital & Dispensaries*		
12,86,87,751	As per last Balance Sheet	15,08,75,470	
2,21,87,719	Additions during the year	1,26,59,638	
15,08,75,470		16,35,35,108	
	(*c*) *Equipments for Hospitals etc.*		
—	As per last Balance Sheet	—	
—	Additions during the year	49,542	
16,18,28,253			17,45,37,433
	Lands & Buildings (*Jointly owned by the Corporation and State Governments*) *Corpns. Share.*		
	(*a*) *Hospital and Dispensaries*		
7,95,250	As per last Balance Sheet	7,95,250	
—	Additions during the year	—	
7,95,250		7,95,250	
	(*b*) *Equipments' for Hospitals etc.*		
49,680	As per last Balance Sheet	49,680	
—	Additions during the year	—	
49,680		49,680	
8,44,930			8,44,930
	Suspense—(i) Amount advanced for Capital Expenditure		
12,85,42,353	As per last Balance Sheet	11,95,06,736	
1,33,76,845	*ADD* payments made during the year.	—	
14,19,19,198	(*ii*) *Amount advanced from: Capital Construction/Medical/(Accumulated) Liabilities Reserve Fund*	11,95,06,736	
—	As per last Balance Sheet	—	
—	*ADD* payments made during the year	93,66,136	
(—)2,24,12,462	*LESS* Adjustments & Recoveries	(—)1,29,75,495	
11,95,06,736			11,58,97,377
	Staff Cars		
1,63,514	As per last Balance Sheet	2,01,217	
37,703	*ADD* payments made during the year.	26,096	
2,01,217			2,27,313
	Permanent Advance to the Heads of Offices of the Corporation		
27,112	As per last Balance Sheet	29,112	
2,145	*ADD* payments made during the year.	1,805	
29,257		30,917	
(—)145	*LESS* Recoveries made during the year	(—)285	
29,112			30,632

Previous Year (1969-70)	Liabilities	Amount	Total
Rs.		Rs.	Rs.
	Depreciation Reserve Fund of Buildings for the Offices of the Corporation (including staff quarters)		
4,51,085	As per last Balance Sheet	6,17,209	
1,45,860	Provision made during the year	1,48,616	
20,264	Interest and gain received from investments	38,695	
6,17,209			8,04,520
	Depreciation Reserve Fund of Equipments in Hospitals and Examination Centres		
59,371	As per last Balance Sheet	66,022	
4,052	Provision made during the year	2,068	
2,599	Interest received from investments	2,599	
66,022			70,689
	Depreciation Reserve Fund of Hospital Buildings.		
36,02,874	As per last Balance Sheet.	53,05,679	
15,14,304	Provision made during the year.	16,37,389	
1,88,501	Interest received from investments	4,13,446	
53,05,679			73,56,514
	Depreciation Reserve Fund of Staff Cars.		
84,676	As per last Balance Sheet.	1,11,284	
21,975	Provision made during the year.	22,719	
4,633	Interest received from investments	5,556	
1,11,284			1,39,559
	Repairs & Maintenance Reserve Fund of Buildings for the Offices of the Corporation (including Staff Quarters).		
9,33,454	As per last Balance Sheet.	13,94,857	
4,20,700	Provision made during the year.	4,28,693	
45,739	Interest received from investments	54,648	
13,99,893		18,78,198	
(—)5,036	*LESS* Payments made during the year.	(—)1,35,482	
13,94,857			**17,42,716**
	Repairs & Maintenance Reserve Fund Account of Hospital Buildings.		
87,69,884	As per last Balance Sheet	1,34,24,772	
43,45,746	Provision made during the year	47,17,209	
3,27,713	Interest received from investments	5,45,948	
1,34,43,343		1,86,87,929	
(—)18,571	*LESS* Payments made during the year	(—)79,417	
1,34,24,772			1,86,08,512
	Pension Reserve Fund for the Employees' of the Corporation		
1,08,98,726	As per last Balance Sheet	1,69,59,023	
57,13,940	Provision made during the year	24,60,390	
5,50,407	Interest received from Investments	9,52,887	
1,71,63,073		2,03,72,300	
(—)2,75,678	*LESS* Payments made during the year	(—)1,60,709	
1,68,87,395		2,02,11,591	
71,628	*ADD* Amount transferred from ESIC Provident Fund	2,957	
1,69,59,023			2,02,14,548

Previous Year (1969-70)	*Assets*	*Amount*	*Total*
Rs.		Rs.	Rs.
	Advance of Pay on transfer to the Employees' of the Corporation		
39,988	As per last Balance Sheet	22,601	
62,769	*ADD* Payments made during the year	74,572	
1,02,757		97,173	
(—)80,156	*LESS* Recoveries made during the year	(—)81,595	
22,601			15,578
	Advance of T. A. on transfer to the Employees' of the Corporation		
50,237	As per last Balance Sheet	25,650	
66,203	*ADD* Payments made during the year	1,00,161	
1,16,440		1,25,811	
(—)90,790	*LESS* Recoveries made during the year	(—)91,141	
25,650			34,670
	Advance for purchase of Conveyance to the Employees' of the Corporation		
5,28,810	As per last Balance Sheet	7,36,580	
5,87,904	*ADD* Payments made during the year	6,34,385	
11,16,714		13,70,965	
(—)3,80,134	*LESS* Recoveries made during the year	(—)4,67,062	
7,36,580			9,03,903
	Miscellaneous Advances to the Employees' of the Corporation (Festival Advances etc.)		
1,40,618	As per last Balance Sheet	2,37,493	
4,47,152	*ADD* Payments made during the year	9,44,550	
5,87,770		11,82,043	
(—)3,50,277	*LESS* Recoveries made during the year	(—)5,53,556	
2,37,493			6,28,487
	House Building Advance		
1,07,406	As per last Balance Sheet	1,54,571	
90,556	*ADD* Payments made during the year	2,74,127	
1,97,962		4,28,698	
(—)43,391	*LESS* Recoveries made during the year	(—)37,925	
1,54,571			3,90,773
	Advance Payments on behalf of State Governments		
1,377	As per last Balance Sheet	2,772	
4,830	*ADD* Payments made during the year	4,387	
6,207		7,159	
(—)3,435	*LESS* Recoveries made during the year	(—)3,932	
2,772			3,227
	Amount advanced to State Govts./State P.W.D. etc. *towards Repairs and Maintenance of Hospitals/Dispensaries, Offices of the Corporation and Staff Quarters*		
	(*a*) *Offices of the Corporation*		
2,69,840	As per last Balance Sheet	6,39,414	
3,69,574	*ADD* Payments made during the year	1,00,656	
6,39,414		7,40,070	
—	*LESS* Recoveries/adjustments during the year	(—)1,67,325	
6,39,414			5,72,745

Previous Year (1969-70)	*Liabilities*	*Amount*	*Total*
Rs.		Rs.	Rs.
	Compassionate Reserve Fund for the Employees' of the Corporation		
10,000	As per last Balance Sheet	10,000	
700	Provision made during the year	1,230	
10,700		11,230	
(—)700	*LESS* Payments made during the year	(—)1,230	
10,000			10,000
	Deposits of Securities e.g. Contractors		
1,09,377	As per last Balance Sheet	1,50,247	
1,20,702	*ADD* Deposits during the year	1,34,386	
2,30,079		2,84,633	
(—)79,832	*LESS* Deposits repaid during the year	(—)85,422	
1,50,247			1,99,211
	Deductions from Bills Payable to other Parties		
15,826	As per last Balance Sheet	11,900	
4,98,149	*ADD* Amount credited during the year	5,30,247	
5,13,975		5,42,147	
(—)5,02,075	*LESS* Payments made during the year	(—)5,23,577	
11,900			18,570
	Unclaimed Deposits in the ESIC Provident Fund		
5,471	As per last Balance Sheet	7,322	
1,863	*ADD* Amount credited during the year	1,775	
7,334		9,097	
(—)12	*LESS* Payments made during the year	(—)3,313	
7,322			5,784
	Miscellaneous Deposits		
1,47,547	As per last Balance Sheet	1,17,175	
38,519	*LESS* Deposits repaid during the year	2,390	
1,09,028		1,14,785	
8,147	*ADD* Deposits Received during the year	1,83,510	
1,17,175			2,98,295
50,19,21,141	Total Carried Over		51,67,70,357

Previous Year (1969-70)	*Assets*	*Amount*	*Total*
Rs.		Rs.	Rs.
	(b) *Hospitals/Dispensaries/Annexies*		
19,16,913	As per last Balance Sheet	23,45,286	
4,46,945	*ADD* payments made during the year	13,52,978	
23,63,858		36,98,264	
(—)18,572	*LESS* Receipts during the year	(—)12,195	
23,45,286			36,86,069
	Miscellaneous Advances		
8,96,085	As per last Balance Sheet	7,54,469	
51,579	*ADD* Payments made during the year	3,74,778	
9,47,664		11,29,247	
(—)1,93,195	*LESS* Receipts during the year	(—)125,113	
7,54,469			10,04,134
	Loans to State Governments		
83,69,766	As per last Balance Sheet	1,00,00,000	
16,30,234	*ADD* Payments made during the year	—	
1,00,00,000		1,00,00,000	
—	*LESS* amount refunded by State Govts.	(—)1,66,667	
1,00,00,000			98,33,333
	Remittances		
	Cash Remittances		
6,89,355	As per last Balance Sheet.	4,34,601	
57,46,61,839	*ADD* Debits adjusted during the year	75,93,71,486	
57,53,51,194		75,98,06,087	
(—)57,49,16,593	*LESS* Credits adjusted during the year	(—)75,88,85,232	
4,34,601			9,20,855
	Other Remittances—Exchange Account		
2,051	As per last Balance Sheet	(—)2,643	
1,72,18,499	*ADD* Debits during the year	1,62,93,398	
1,72,20,550		1,62,90,755	
(—)1,72,23,193	*LESS* Credits during the year	(—)1,62,90,995	
(—)2,643			(—)240
	Investments at Cost		
	(1) *Permanent (Partial and Total) Disablement Benefit Reserve Fund*		
5,03,82,916	As per last Balance Sheet	5,90,75,991	
86,93,075	*ADD* Investments made during the year	1,50,43,000	
5,90,75,991		7,41,18,991	
—	*LESS* Realisation on maturity or Sale of Investments	(—)50,21,225	
5,90,75,991			6,90,97,766
	(2) *Dependants' Benefit Reserve Fund*		
2,21,93,543	As per last Balance Sheet	2,62,19,618	
40,26,075	*ADD* Investments made during the year	89,31,700	
2,62,19,618		3,51,51,318	
	LESS Realisation on Maturity or Sale of Investments	(—)35,78,947	3,15,72,371
2,62,19,618	(3) *Employees' State Insurance Corporation Provident Fund*		
1,17,09,740	As per last Balance Sheet	1,32,69,740	
19,50,000	*ADD* Investment made during the year	57,56,900	
1,36,59,740		1,90,26,640	
(—)3,90,000	*LESS* Realisation on Maturity or Sale of Investments	(—)35,96,890	
1,32,69,740			1,54,29,750
	(4) *Depreciation Reserve Fund of Buildings for the Offices of the Corporation (including Staff Quarters)*		
4,48,198	As per last Balance Sheet	6,15,636	
1,85,363	*ADD* Investments made during the year	6,73,880	
6,33,561		12,89,516	
(—)17,925	*LESS* Realisation on Maturity or Sale of Investments	(—)4,85,601	
6,15,636			8,03,915

Previous Year (1969-70)	*Liabilities*	*Amount*	*Total*
Rs.		Rs.	Rs.
50,19,21,141	Total Brought Forward		51,67,70,357
50,19,21,141	Total Carried Over		51,67,70,357

Previous Year (1969-70)	*Assets*	*Amount*	*Total*
Rs.		Rs.	Rs.
	(5) *Depreciation Reserve Fund of Equipment in Hospitals & Examination Centres*		
52,600	As per last Balance Sheet	52,600	
—	*ADD* Investments made during the year	20,500	
52,600		73,100	
—	*LESS* Realisation on Maturity or Sale of Investments	(—)10,000	
52,600			63,100
	(6) *Depreciation Reserve Fund of Hospital Buildings*		
35,85,854	As per last Balance Sheet	52,93,469	
17,07,615	*ADD* Investments made during the year	59,51,700	
52,93,469		1,12,45,169	
—	*LESS* Realisation on Maturity or Sale of Investments	(—)39,08,227	
52,93,469			73,36,942
	(7) *Depreciation Reserve Fund of Staff Cars*		
84,159	As per last Balance Sheet	1,07,217	
23,058	*ADD* Investments made during the year	52,500	
1,07,217		1,59,717	
—	*LESS* Realisation on Maturity or Sale of Investments	(—)21,000	
1,07,217			1,38,717
	(8) *Repairs & Maintenance Reserve Fund of Buildings for the Offices of the Corporation including Staff Quarters*		
9,18,092	As per last Balance Sheet	10,41,556	
1,43,939	*ADD* Investments made during the year	3,93,700	
10,62,031		14,35,256	
(—)20,475	*LESS* Realisation on Maturity or Sale of Investments	(—)2,67,290	
10,41,556			11,67,966
	(9) *Repairs & Maintenance Reserve Fund of Hospital Buildings*		
67,24,387	As per last Balance Sheet	1,07,85,952	
40,61,565	*ADD* Investments made during the year	79,00,000	
1,07,85,952		1,86,85,952	
—	*LESS* Realisation on Maturity or sale of Investments	(—) 38,00,000	
1,07,85,952			1,48,85,952
	(10) *Pension Reserve Fund for the Employees' of the Corporation*		
1,08,96,015	As per last Balance Sheet	1,68,79,698	
60,31,683	*ADD* Investments made during the year	96,48,300	
1,69,27,698		2,65,27,998	
(—)48,000	*LESS* Realisation on Maturity or Sale of Investments	(—)63,32,088	
1,68,79,698			2,01,95,910
	General Cash Balance		
4,39,19,793	Investments as per last Balance Sheet	3,01,39,082	
5,39,18,227	*ADD* Investments made during the year	4,91,64,500	
9,78,38,020	*LESS* Realisation on Maturity or Sale of	7,93,03,582	
(—)6,76,98,938	Investments	(—)7,93,03,582	

Previous Year (1969-70)	*Liabilities*	*Amount*	*Total*
Rs.		Rs.	Rs.
50,19,21,141	Total Brought Forward		51,67,70,357
50,19,21,141	Grand Total		51,67,70,357

New Delhi
Dated 31st May, 1971.

AUDIT CERTIFICATE

I have examined the foregoing accounts and the balance sheet of the Employees' State Insurance Corporation and obtained all the information and explanations that I have required and, subject to the observations in the Audit Report appended, I certify, as a result of my audit, that in my opinion these accounts and the balance sheet are properly drawn up so as to exhibit a true and fair view of the state of affairs of the Employees' State Insurance Corporation according to the best of my information and explanations given to me and as shown by the books of the Employees' State Insurance Corporation.

New Delhi.

Dated————————.

P. P. GANGADHRAN,
ACCOUNTANT GENERAL,
CENTRAL REVENUES

Previous Year (1969-70)	*Assets*	*Amount*	*Total*
Rs.		Rs.	Rs.
3,01,39,082		—	
8,52,215	Cash in hand	17,64,197	
3,98,27,325	Cash with Bankers	4,47,82,552	
4,06,79,540		4,65,46,749	
7,08,18,622	Total Cash Balance		4,65,46,749
50,19,21,141	Grand Total		51,67,70,357

B. M. K. MATTOO
Financial Adviser & Chief Accounts Officer
Employees' State Insurance Corporation

AUDIT REPORT ON THE EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION FOR THE YEAR 1970-71.

Consolidated Audit Report on the Accounts of the Employees' State Insurance Corporation, New Delhi for the year 1970-71 received through Ministry of Labour & Employment, New Delhi on 23-8-1973 alongwith A. G. C. R. confidential letter No. OAI/13-ESIC AR/71-72/592 dated 7th August, 1973.

1. General

(a) The Employees' State Insurance Corporation was set up in October, 1948 under the Employees' State Insurance Act., 1948. The Act, as amended by the Employees' State Insurance (Amendment) Acts of 1951 and 1966, applies to all factories, other than seasonal factories, which use power and where 20 or more persons are or were employed for wages. The Act can be extended to any other establishment or class of establishments-industrial, commercial, agricultural or otherwise.

(b) During 1970-71 the provisions of the Act were extended to 1313 factories covering 1·83 lakh employees. The number of factories covered by the Act on 31st March, 1971 was 21,856 (20,217. in implemented areas and 1639 in areas yet to be implemented) having 44·63 lakhs employees' (including 38·39 lakhs in implemented areas).

(c) An analysis of the income and expenditure of the Corporation for 1969-70 and 1970-71 is given below :—

Income (lakhs of rupees)	1969-70	1970-71	*Expenditure* (lakhs of rupees)	1969-70	1970-71
Employers' Special Contribution. . .	2,125	2,955	*Medical benefits*		
			(a) Payments to State Governments' as Corpn. share of expenses of	1442	1374
Employees' Contribution.	1,521	1,650	providing medical treatment etc.		
Interest and Dividends from investments.	33	38	(b) Medical treatment and care expense incurred directly by the Corporation.	74	75
			Cash and other benefits to insured persons and their dependents paid directly by the Corporation.	1822	2220
			Administrative Expenditure		
State Govts. share towards medical benefits initially borne by the Corporation	7	14	Superintendence	158	175
			Field Works	146	163
			Other Charges	69	34
Miscellaneous including rent, rates and taxes.	144	303	Hospital & Dispensaries.	59	433
			Excess of Income over expenditure	60	486
Total . . .	3,830	4,960		3,830	4,960

2. Arrears of contribution.

Arrears of Contribution from the employees and employers due upto 30th September, 1970 were as under :—

Contribution due but not paid till 31st March, 1972.

	Upto 30-9-68	Upto 30-9-69	Upto 30-9-70
	(lakhs of rupees)		
Employers' Special Contribution.	179·71	298·13	517·69
Employees' Contribution.	67·74	105·86	171·85
	247·45	403·99	689·54

253 Government/quasi-Government and private factories were in default (November, 1972) for more than Rs. 0·50 lakhs each legal action has been taken (between 1952 and 1971) for Rs. 455·61 lakhs (Employers' Special Contribution) and for Rs. 143·99 lakhs (Employees' Contribution).

Arrears of Employers' Special Contribution due from private factories ranged from Rs. 14·38 lakhs to Rs. 215·60 lakhs in West Bengal, Maharashtra, Tamil Nadu, Uttar Pradesh, Gujarat, Madhya Pradesh, Kerala, Andhra Pradesh, Punjab and Bihar and those of employees' Contribution in respect of private factories ranged from Rs. 6·08 lakhs to Rs. 38·86 lakhs in West Bengal, Uttar Pradesh, Maharashtra, Punjab, Kerala, Gujarat, Tamil Nadu, Madhya Pradesh, Andhra Pradesh, Delhi and Bihar.

Decrees worth Rs. 27·85 lakhs (year-wise details given below) remained to be executed (30th September, 1972) for recovery from defaulting employers.

Upto	(lakhs of rupees)
1964-65	5·35
1965-66	1·00
1966-67	3·31
1967-68	4·50
1968-69	9·85
1969-70	3·84
Total	27·85

3. Setting up of hospitals

(a) For construction of a hospital building at Rajahmundry (Andhra Pradesh) 6·25 acres of land were purchased for Rs. 1·54 lakhs in June, 1967. Construction of the building has not started (April 1973). The Corporation stated (April, 1973) as follows :—"The proposal for the construction of E. S. I. Hospital at Rajahmundry was deferred by the Corporation due to its tight financial position. Even after review of the financial position in 1972, it is observed that no further construction is likely to come up in this State for another 5 years as per capita expenditure in this State is 217·73 which is far in excess of the ceiling of Rs. 140 fixed by the Standing Committee. The construction on this plot will be considered only after another review is carried out and above ceilings are revised".

(b) In October, 1963 the Corporation approved a proposal of Madhya Pradesh Government for construction of a 65 beds hospital and staff quarters at Ujjain at an estimated cost of Rs. 17·07 lakhs through the agency of the Madhya Pradesh Housing Board. Construction was started in December, 1964 and was to be completed by May, 1966. Construction was actually completed in March, 1971 at a cost of Rs. 17·50 lakhs. The hospital started functioning from the same month. The numbers of beds occupied in April, 1972 was 25 only.

(c) In February, 1966 the Corporation approved a proposal of Madhya Pradesh Government for construction of a 75 beds T. B. Hospital and 61 quarters (of various types) for hospital staff at Raipur at an estimated cost of Rs. 13·81 lakhs through the Madhya Pradseh Housing Board. The work was started in April, 1967 and was to be completed by December, 1970.

In January, 1969 the Corporation revised the scale of Hospitalisation factilities. As 26 beds only were justified for the hospital according to the revised scale, the Corporation suggested to the State Government in January, 1969 that the building for 30 beds only may be completed. By then, however, the building (for 75 beds) was nearly completed. As the building was nearly completed by that time it was not possible to restrict construction of the building for 30 beds only. The Corporation stated (November, 1972) that it had not been put to use as there was no utility of the hospital there. The cost of the building is about Rs. 16·34 lakhs.

(d) In December, 1968 the Corporation approved a plan of Madhya Pradesh Government for construction of a two-doctor dispensary with a 5-bed indoor ward and 14 staff quarters at Mandsaur at an estimated cost of Rs. 2·72 lakhs through the agency of the Madhya Pradesh Housing Board. Subsequently, the plan was revised in 1967 to have an indoor ward with 15 beds at an additional estimated expenditure of Rs. 1·06 lakhs.

Possession of the building, constructed in August, 1967 at a cost of Rs. 4·06 lakhs, was given in the same month. Although the dispensary started functioning from August, 1967 itself, the 15 beds indoor ward could not be commissioned for lack of staff, specialist and equipment. Later it was found that the indoor ward was not required. Consequently, in August, 1970, the accommodation for indoor ward was let out to State Government's Department of Agriculture.

P. P. GANGADHRAN,
Accountant General,
Central Revenues.

New Delhi,
Dated.....